आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

(हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद की पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध)

1993

प्रस्तुतकर्त्री

कुमारी ए. पुष्पावल्ली, एम.ए.,एम.फिल्.

निर्देशक

प्रो. वें. वेंकटरमणा राव

एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (तेलुगु), पी-एच.डी.
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय,
हैदराबाद–500 134. (आं.प्र.)

विभागाध्यक्ष

प्रो. शशि मुदीराज

डी. लिट्.
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय,
हैदराबाद–500 134. (आ.प्र.)

DECLARATION

I, **A. Pushpavalli**, hereby declare that this thesis entitled **"Aatwe Dashak ke Hindi Upanyason ka Manovishleshanaathmak Adhyayan"** has been written by me during 1989-93 under the guidance and supervision of **Dr. Y. Venkataramana Rao, M.A.(Hindi), M.A.(Telugu), Ph.D.** Professor, Department of Hindi, School of Humanities, University of Hyderabad for the award of **Ph.D.** degree.

I also declare that this thesis is the result of my own effort and has not been submitted to any other University before for any degree or diploma.

A. Pushpavalli 30-7-93

(A. PUSHPAVALLI)

SUPERVISER CERTIFICATE

This is to certify that **Miss. A. Pushpavalli, M.A. M.Phil.** is a bonafide student of the Department of Hindi, University of Hyderabad. This thesis, entitled **"Aatwe Dashak ke Hindi Upanyason ka Manovishleshanaathmak Adhyayan"** is a bonafide record of the research work done under my supervision for the award of **Ph.D.** in fulfilment of the course.

PROF. Y. VENKATARAMANA RAO

Place : **Hyderabad**
Date :

विषयानुक्रम　　　　　　　　　　पृ.सं.

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय

उपन्यास और मनोविश्लेषण : उनमें अनुप्रयुक्त विभिन्न सिद्धान्त　1 - 102

1.0. प्रास्ताविक　1 - 4
1.1. आधुनिक युग और मनोविज्ञान　4 - 7
1.2. साहित्य की प्रमुख विधाएँ और मनोविज्ञान　7 - 10
1.3. मनोविज्ञान कला सम्बन्धी विचार-फ्रायड, एडलर, युंग
1.4. साहित्य विधाएँ : मनोविश्लेषणात्मक विवेचन-काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास　11 - 19
1.5. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास　20 - 21
1.6. मनोविश्लेषण : विभिन्न सिद्धान्त
1.6.1. फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त　21 - 22
1.6.1.1. सहजवृत्ति या मूलवृत्ति का महत्व　23
1.6.1.2. व्यक्तित्व संरचना-चेतन, अचेतन, अवचेतन　24 - 29
1.6.1.3. मानसिक संस्था - इदम, अहम, पराहम　30 - 34
1.6.1.4. रक्षा युक्तियाँ : मनोरचनाओं के प्रकार-दमन प्रतिगमन, उदात्तीकरण युक्तिकरण, प्रक्षेपण विस्थापन　35 - 44

पृ॰सं॰

1·6·1·5·	अन्य मनोरचनाएँ – आत्मीकरण या तादात्म्य, क्षतिपूर्ति, प्रत्याहार, वास्तविकता से पलायन, नकारात्मकता	44 – 49
1·6·1·6·	मनोलैंगिक विकास-मौखिक अवस्था, गुदा अवस्था, शैशनावस्था अवस्था, अव्यक्तता अवस्था, जनन अवस्था	49 – 53
1·6·2·	एडलर का वैयक्तिक मनोविज्ञान – एडलर के प्रमुख सिद्धान्त – रचनात्मक शक्ति, हीन भावना ग्रन्थि मध्यभाव, उच्चता या महत्ता प्राप्ति प्रयास, जीवन शैली, व्यक्तित्व संरचना	53 – 61
1·6·3·	युंग का सिद्धान्त – लिबिडो या काम शक्ति सिद्धान्त अहम, वैयक्तिक अचेतन, सामुहिक अचेतन, व्यक्तित्व प्रकार – बाहिर्मुखी, अन्तर्मुखी	61 – 69
1·6·4·	कैरेन हार्नी : सुरक्षा और सन्तोष, मूल चिन्ता, स्नायु रोगात्मक की विशेष दिशा, हार्नी-मानव का स्वभाव	69 – 74
1·6·5·	एरिक फ्राम : मूल स्थिति : अकेलापन, प्रेरणाएँ, व्यक्तित्व प्रकार	75 – 79
1·6·6·	हैरो स्टैक सुलीवन : मानव व्यवहार, व्यक्तित्व मानव के व्यवहार का लक्ष्य, व्यक्तित्व के प्रकार का स्वरूप, सन्तुष्टि और सुरक्षा, तनाव कमी का सिद्धान्त, सामाजिक व सांस्कृतिक कारक	79 – 83

पृ॰ सं॰

1•6•7• लैंगिक विपर्यास – समलैंगिकता, परपीडनररति, नारी सुलभ स्वपीडनरति, स्पर्श आसक्ति, प्रदर्शनवृत्ति प्रतिजातिय वस्त्रधारण, शिशु – कामुकता, पशुकामुकता, नग्नतादर्शन आसक्ति 83 – 87

1•6•8• स्वप्न सिद्धान्त : फ्रायड, युंग, एडलर 87 – 93

1•6•9• कुण्ठा और अन्तर्द्वन्द्व 93 – 95

1•6•10• असुरक्षित की भावना, ईर्ष्या 95 – 100

1•7• निष्कर्ष 101 – 102

अध्याय – 2

आठवें दशक के प्रमुख उपन्यास : मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के सूत्र 103 – 119

2•0• प्रास्ताविक 103

2•1• चयनित उपन्यास मनोविश्लेषण सिद्धान्त 103 – 106

2•2• उपन्यास : अनुप्रयुक्त सिद्धान्त एक विवरण 106 – 119

2•3• निष्कर्ष – 119

पृ•सं•

अध्याय - 3

आठवें दशक के उपन्यासों की मनोभूमि : कथावस्तु योजना

120 - 169

3•0• भूमिका 120 - 124

3•1• आठवें दशक के उपन्यासों की कथावस्तु : एक विवेचन

1• आपका बंटी 2• परत-दर-परत 3• अन्तराल
4• उस पार का अंधेरा 5• काली आंधी 6• रिश्ते
7• नावें 8• रेत की मछली 9• उसके हिस्से की धूप
10• अनामदास का पोथा 11• तीसरा आदमी
12• अकेली आवाज 13• उखड़े कदम 14• टुंडालाट
15• प्रतिध्वनियाँ 16• दूसरा सूत्र 17• किसमुली
18• परछाईयों के पीछे 19• कोई तो 20• सुबह के इंतजार तक 124 - 166

3•2• निष्कर्ष 166 - 169

अध्याय - 4

आठवें दशक के उपन्यासों के पात्र : मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन 170 - 382

4•0 प्रास्ताविक 170

4•1• फ्रायड के सिद्धान्त - व्यक्तित्व संरचना - पराहम, अचेतन 170 - 186

4•1•1• फ्रायड का स्वप्न और दिवास्वप्न से सम्बन्धित सिद्धान्त 186 - 199

		पृ॰ सं॰
	4॰1॰2॰ व्यक्तित्व विकास के स्तर मातृ मनोग्रन्थि और पितृ मनोग्रन्थि	199 - 202
	4॰1॰3॰ मनोरचनाओं के प्रकार	202 - 245
4॰2॰	अहम या अहंकार	246 - 258
4॰3॰	एडलर के हीन, उच्च ग्रन्थि और उच्चता की प्राप्ति के सिद्धान्त	250 - 276
4॰4॰	युंग के व्यक्तित्व प्रकार अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी	276 - 283
4॰5॰	कैरेन हॉर्नी - सुरक्षा और तृप्ति के सिद्धान्त, वातावरण और स्थिति का प्रभाव से सम्बन्धित सिद्धान्त	283 - 291
4॰6॰	एरिक फ्रॉम के द्वारा प्रतिपादित अकेलेपन का सिद्धान्त	291 - 300
	4॰6॰1॰ पहचान की आवश्यकता का सिद्धान्त	301 - 307
4॰7॰	अपराध की भावना, अन्तर्द्वन्द्व और कुण्ठा से पीड़ित पात्र	308 - 360
4॰8॰	मनोविकृति - निर्मूल भ्रम	360 - 362
4॰9॰	लैंगिक विपर्यास या विकृतियाँ	363 - 373
4॰10॰	मन: स्नायुविकृति - मनोग्रस्तता बाध्यता मन	373 - 374
4॰11॰	परिवार और सम्बन्धों के टूटने के कारण मूल्यों में परिवर्तन से सम्बन्धित स्थितियाँ	374 - 380
4॰12॰	निष्कर्ष	381 - 382

पृ॰ सं॰

अध्याय – 5

आठवें दशक के उपन्यासों में उभरे बाहरी सामाजिक संघर्ष : मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन 383 – 416

5॰0॰ प्रास्ताविक 383 – 386

5॰1॰ चयनित उपन्यासों में उभरे बाहरी सामाजिक संघर्ष 386 – 415

5॰2॰ निष्कर्ष 415 – 416

अध्याय – 6

6॰0॰ उपसंहार 417 – 420

सहायक ग्रन्थ सूची

प्राक्कथन

प्राक्कथन

शोध एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है । आधुनिक युग में साहित्य के क्षेत्र में इस दिशा में एक क्रान्ति दिखाई देती है । साहित्य को अन्य अनुशासनों में विकसित सैद्धान्तिक ज्ञान के आधार पर परखने का और उनके मूल्यांकन का कार्य आज बहुत आकर्षक है । मैंने स्नातकीय स्तर पर मनोविज्ञानशास्त्र को एक विशेष विषय के रूप में अध्ययन किया है । साहित्य के क्षेत्र में एम.ए. उपाधि पाने के बाद मेरे मन में मनोविज्ञान और साहित्य के अन्तःसम्बन्धों को देखने की इच्छा जागृत हुई ।

अनुसन्धान का क्षेत्र इस कार्य के लिए उपयुक्त है । मैंने एम.फिल में भी अन्तर अनुशासनिक अनुसन्धान की दिशा मे ही कार्य किया । तभी पी.एच.डी. में प्रवेश मिलने पर इस दिशा मे काम करने की इच्छा व्यक्त करने पर हैदराबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने इस दिशा में आगे बढ़ने का मार्गदर्शन दिया ।

शोध प्रबन्ध के लिए आठवें दशक के उपन्यासों को चुना है । इस विषय को चुनने का कारण यह है कि आधुनिक समाज का जीता-जागता उदाहरण इस काल के उपन्यासों में मिल जाता है । इतना ही नही भले ही मनोविश्लेषण का उदय कई वर्ष पहले हुआ हो उसके आधार पर वर्तमान काल के उपन्यासों का भी अध्ययन किया जा सकता है ।

मनोविज्ञान के सिद्धान्तों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध रखने वाली रचनाओं की आधुनिक साहित्य में कमी नहीं है । ऐसी हर विधा से सम्बन्धित रचनाओं पर मनोविज्ञान की दृष्टि से अध्ययन बहुमात्रा में हुआ भी है । उपन्यास के क्षेत्र में इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र आदि के उपन्यासों का अध्ययन इस दिशा में देखा जा सकता है । साहित्य के मनोवैज्ञानिक अध्ययन को साधारणत: मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के रूप में ही माना जाता है । साहित्य का मनोविज्ञान से गहरा सम्बन्ध है । लेखक प्राय: हर चीज को कल्पना के साथ जोडकर देखता है । परन्तु विचारने पर लगता है कि इसकी क्या आवश्यकता है ? इसकी आवश्यकता पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए होती है । पात्रों के अचेतन में छिपी बातों को चेतन स्तर पर लाकर ही व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों को समझा जा सकता है । उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को ध्यान में न रखकर भी अपने उपन्यासों की रचना कर सकता है, फिर भी उनमें मनोवैज्ञानिक तत्वों का समावेश हो ही जाता है । इसका कारण यह है कि मनोविज्ञान उस विज्ञान की शाखा है जो मनुष्य के इर्द-गिर्द घूमती है और उपन्यास की कथावस्तु सामान्यत: मनुष्य के साथ ही जुडी होती है । इसलिए कहा जा सकता है कि उपन्यास ही नही सम्पूर्ण साहित्य का मनोविज्ञान से सम्बन्ध होता है ।

आठवें दशक के उपन्यासों में शोध के लिए चयन किये गये उपन्यासों के अध्ययन बहुत कम हुए हैं । सातवें दशक तक के अध्ययन इस की आवश्यकता को सूचित करते हैं । यह अध्ययन इस दिशा में परिपूरक है । प्रस्तुत अध्ययन की योजना छ: अध्यायों में की गई है । अध्याय विवरण संक्षेप में इस प्रकार है ।

प्रथम अध्याय में मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण के बीच अन्तर स्पष्ट करते हुए साहित्य पर उनका प्रभाव को देखा गया है । मनोविश्लेषण का दाता फ्रायड और उनके द्वारा प्रतिपादित अनेक सिद्धान्तों का विवरण दिया गया है । फ्रायड के आलावा कई अन्य प्रसिद्ध मनो - विश्लेषक हुए हैं जैसे एडलर, युंग, करेन हार्नी, एरिक फ्राम, हैरी स्टैक सुलीवन आदि । इन के सिद्धान्तों का भी एक सामान्य परिचय दिया गया है ।

द्वितीय अध्याय को चार भागों में बाँटा गया है । सर्व प्रथम प्रास्ताविका या परिचय । आठवें दशक के चुनें गये बीस उपन्यासों का एक विवरण प्रस्तुत किया गया है । उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात यह देखा गया है कि मनोविश्लेषणा सिद्धान्तो के अनुकूल किस-किस उपन्यासों में सन्दर्भ मिलते हैं और उनका विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

तीसरे अध्याय में आठवें दशक के चुने गये उपन्यासों को कथा-वस्तु पर विशेष ध्यान दिया गया है । यह जानने की कोशिश की गयी है कि कथावस्तु किस विषय पर आधारित है । यह भी स्पष्ट रूप से देखा गया है कि उपन्यास की कथावस्तु में मनोवैज्ञानिक तथ्य मिलते है कि नहीं । अर्थात् अनेक प्रकार के मनोविकारों से ग्रस्त पात्र मिलते है कि नही । सामान्य अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष पाया गया है कि उपन्यासों में अन्तर होने पर भी मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से शोध किया जा सकता है ।

चौथा अध्याय शोध का प्रमुख भाग है जिसमें चयन किये गये उपन्यासों के पात्रों के व्यवहार, बोलने-सोचने आदि का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। इस अध्याय में फ्रायड और अन्य मनोविश्लेषकों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के अनुसार अध्ययन किया गया है।

पंचम अध्याय में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि उपन्यासकारों ने समाज पर पड़े बाहरी प्रभाव को ध्यान में रखकर उनका सजीव चित्रण किया है। इस प्रभाव के कारण कौन-कौन से परिवर्तन समाज मे और व्यक्ति के व्यक्तित्व में आया है। युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति और रीति-रिवाज की परवाह किस प्रकार और क्यों न कर आधुनिकता को अपना रही है। इस पर भी विचार किया गया है। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था से प्राप्त फायदे और नुकसान पर भी विचार किया गया है।

छठवा अध्याय उपसंहार है। अध्ययन के निष्कर्षों को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करना इस अध्याय का लक्ष्य रहा है।

सीमित समय में विस्तृत अध्ययन अनेक सीमाओं से बन्ध कर चलता है। आठवें दशक के उपन्यासों का समग्र अध्ययन अनेक संभावानाओं को लेकर है। मुझे विश्वास है कि शोध के लिए चुने गयें सभी उपन्यासों से प्राप्त सन्दर्भ जिनका मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है, किया गया है, फिर भी कुछ सन्दर्भ छूट भी गयें होंगे।

इस शोध प्रबन्ध लेखन कार्य की सफलता के पीछे कई लोगों ने मुझे सहायता की है । मैं सबसे पहले अपने सभी परिवार के सदस्यों के प्रति सहृदयपूर्वक आभारी हूँ, विशेषकर पूज्य माताजी और पिताजी के प्रति जिनके लगातार प्रोत्साहन के कारण ही यह कार्य सफल हो सका है । मैं अपने कालेज की प्रिंसिपल सिस्टर डोना के प्रति सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने प्रोत्साहन के साथ शोध कार्य करने के लिए विशेष छूट भी दी है । मेरी सहकर्मिणी और दोस्त पद्मजा की सहायता को भुलाया नहीं जा सकता है । श्रीमती और श्री सुब्बाराव के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने भी निरन्तर प्रेरणा दी है । मैं हिन्दी विभाग के सभी गुरुजनों के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ । निर्देशक डॉ॰वाई॰वेंकटरमणा राव जी के प्रति अत्यन्त आभारी हूँ । जिन्होंने अपना सहयोग दे कर मुझे इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया । पूर्ण रूप से व्यस्त होने पर भी हर समय मेरी मदद करने के लिए तैयार रहते थे । उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय वह कम ही होगी ।

अस्तु कार्य विज्ञों के हाथ में समर्पित है ।

शोध ग्रन्थ में प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक शब्द

1.	अन्तर्द्वन्द्व	Conflict
2.	अभिगम - अभिगम अन्तर्द्वन्द्व	Approach - approach conflict
3.	अनुनाद - अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व	Avoidance - avoidance conflict
4.	अभिगम - अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व	Approach - avoidance conflict
5.	अचेतन	Unconscious
6.	अवचेतन	Sub conscious
7.	अहम	Ego
8.	अपरिपक्व	Immature
9.	अतिक्रमण	Anal Aggressive
10.	अवरूद्धन	Suppression
11.	अतिदयालु माँ-बाप	Over indulgent parents
12.	अस्थिर घर की स्थितियाँ	Unstable home situation
13.	आदर्श अहम	Ideal Ego
14.	आत्मीकरण	Identification
15.	आत्मप्रदर्शन	Self display
16.	असुरक्षित की भावना	Insecurity
17.	आत्मा गतिशीलता	Self dyanamics
18.	अपराध की भावना	Guilt conscious
19.	इदम	Id
20.	ईर्ष्या	Jealousy

21.	उल्लासोन्माद	Euphoria
22.	उच्चता प्राप्ति का प्रयास	Striving for superiority
23.	उदातीकरण	Sublimation
24.	उपविस्तार	Secondary elaboration
25.	कामशक्ति	Libido
26.	कामोतेजक स्वपीडन रति	Erotogenic Mosochism
27.	कुंठा	Frustration
28.	गुदा अवस्था	Anal stage
29.	गतिशील	Dynamic
30.	गुदा धारण शील	Anal retentive
31.	चेतन	Conscious
32.	चेतन मानसिक प्रक्रिया	Conscious mental process
33.	चूषण स्तर	Sucking stage
34.	जनन अवस्था	Genital stage
35.	जीवन शैली	Style of life
36.	जीने का इच्छा	Will to live
37.	जमाखोर प्रकार	Hoarding type
38.	जीवन	Eros
39.	जाग्रतावस्था	Awakening
40.	तदनुभूति	Empathy
41.	तान्त्रिक तन्त्र	Neurology

42.	दमन	Repression
43.	नैसर्गिक व्यवहार	Unlearned behaviour
44.	निषेधात्मक सुधार	Negative Correction
45.	नाटकीकरण	Dramatization
46.	नग्नता दर्शन आसक्ति	Scopophilia
47.	नारी सुलभ स्वपीडनरति	Feminine mosochism
48.	नैतिक स्वपीडनरति	Moral mosochism
49.	नरारात्मकता	Negativism
50.	निरंतरता	Continuity
51.	पहचान	Identity
52.	पलायनवादी	Escapism
53.	परपीडनरति	Sadism
54.	पराहम	Superego
55.	पशुत्व	Animality
56.	पहचान की आवश्यकता	Need for identification
57.	पितृ मनोग्रन्थि	Electric Complex
58.	प्रतिगमन	Regression
59.	प्रक्षेपण	Projection
60.	प्रतिक्रिया-निर्माण	Reaction formation
61.	प्रत्याहार	Withdrawal
62.	प्रेरणाशक्ति	Motivating force

63.	प्रेरणाएँ	Motives
64.	प्राप्ति की इच्छा करनेवाला	Receiving type
65.	प्रदर्शनवृत्ति	Exhibitionism
66.	प्रजातिय वस्त्रधारण आसक्ति	Transvestism
67.	प्रतीकीकरण	Symbolization
68.	बद्धमूलता की आवश्यकता	Need for rootedness
69.	बाहिर्मुखी	Extrovert
70.	विक्रेता प्रकार	Marketing type
71.	मनोविज्ञान	Psychology
72.	महभाव	Superiority complex
73.	मनोविश्लेषण	Psychoanalysis
74.	मान्यताये	Recognition
75.	मृत्यु	Thanatos
76.	मनोग्रस्ति	Obsession
77.	मनोलैंगिक विकास	Psycho sexual development
78.	मौखिक अवस्था	Oral stage
79.	मूल चिन्ता	Basic anxiety
80.	मूल स्थिति : अकेलापन	Basic condition; lonliness
81.	मातृ मनोग्रन्थि	Oedipus complex
82.	मूल्याँ	Values
83.	मूलरूप	Aarch type

84.	युक्तिकरण	Rationalization
85.	रक्षा युक्तियाँ	Defence mechanism
86.	रोगात्मक	Neurotic
87.	लैंगिक विपर्यास	Sexual Perversion
88.	विस्थापन	Displacement
89.	वैयक्तिक अचेतन	Collective unconscious
90.	समलैंगिकता	Homosexuality
91.	संक्षेपण	Condensation
92.	सामुहिक अचेतन	Collective unconscious
93.	संलग्नता	Coherence
94.	सुरक्षा की आवश्यकता	Need for security
95.	सम्मोहनोत्तर घटनाओं	Post hypnotic phenomena
96.	स्वतन्त्र सहचर्य	Free association
97.	स्पर्श आसक्ति	Frotteurism
98.	स्नायु रोगात्मकता की विशेष दिशा	Neurotic trends

-:-

प्रथम अध्याय

उपन्यास और मनोविश्लेषण : उनमें अनुप्रयुक्त विभिन्न सिद्धान्त

-:-

उपन्यास और मनोविश्लेषण : अनुप्रयुक्त विभिन्न सिद्धान्त

1.0. प्रास्ताविक :-

परिवर्तन एक विश्वजनीन सत्य है । जड-चेतन सब परिवर्तनशील है । इसमें मानव एक सामाजिक एवं बुद्धि सम्पन्न प्राणी होने के कारण विशिष्ट दिशा में परिवर्तन (विकास) प्राप्त करता है विकास के नये चरण आधुनिक पुनर्जागरण के युग में पाये जा सकते है वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास ने मनुष्य को विचारवान और तार्किक भी बना दिया है ।

विज्ञान कई शाखाओं में अवतरित और विकसित है, इस के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टि भी । जिस प्रकार 16 वीं शताब्दी में खगोल, भूगोल तथा शरीर - शास्त्र की प्रधानता रही उसी प्रकार 17 वी शताब्दी में भौतिक तथा रसायनशास्त्र ने अपने विकास पाया । 18 वी शताब्दी में अर्थशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान का बोल-बाला रहा तो 19 वी में प्राणी विज्ञान तथा 20 वीं शताब्दी में मनो -

का ।

साहित्य की कई विधाएँ है । सामान्यत हर युग में किसी एक विशेष विधा को ही अधिक महत्व मिलता है । पाश्चात्य साहित्येतिहासज्ञो का कहना है कि इंगलैण्ड तथा फ्रांस में 16 वी तथा 17 वी शताब्दी में काव्य -रूप की प्रमुखता रही है और 18 वी शताब्दी में गद्य, पद्य, गीति एवं निबन्धों की इन साहित्य की विधाओं में यह देखने को मिलता कि उन्हे कई दृष्टियों को विचार धाराओं ने प्रभावित किया है । भले ही क्यों न कोई लेखक या कवि यह मान कर चले कि वह स्वतंत्र रचनाकार है किन्तु यह अवश्य देखने को मिलता है कि वह कुछ हद तक किसी-न-किसी विचारक से प्रभावित है । सामान्य तौर पर यह देखा जाता है कि किसी भी देश का साहित्य और कला अपने देश में विकसित या प्रसारित विचारों के बदलाव या आन्दोलनों को लेकर रचा जाता है । परन्तु हिन्दी साहित्य, अपने देश के महान व्यक्तियों की विचार-धाराओं से तो काफी प्रभावित हुआ ही साथ ही पश्चिमी देशों की विचारधाराएँ भी बहुत हद तक अपने प्रभाव के प्रवाह मे बहा कर ले गई है । उदाहरण के लिए भारतीय विचारधाराओं में ब्रह्मसमाज, आर्य समाज, गांधीवादी विचार धाराओं आदि को ले सकते है । ठीक उसी प्रकार जिन पाश्चात्य विचार धाराओं में मार्क्स का समाजवादी दृष्टिकोण फ्रायड का मनोविश्लेषणवाद, एडलर, युंग आदि का मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त, अस्तित्ववाद आदि ठहरते हैं ।

बीसवी शताब्दी मनोविज्ञान का युग माना जाता है । यह विज्ञान की नयी शाखा होते हुए भी बहुत ही सक्रिय और शक्तिशाली रही है । इसका अर्थ यह नहीं कि इसके पूर्व मनोविज्ञान का साहित्य से कोई वास्ता नहीं था । इन दोनो का सम्बध बहुत ही पुराना है । जैसे कि आदि कवि वाल्मीकि से लेकर आज तक के सभी कवियों और साहित्यकारों की कृतियों में लक्षित होता है । जहाँ तक साहित्य का सम्बन्ध है इसमें केवल सौन्दर्यभूति

ही नही बल्कि मनोविकरों और विचारो का भी समावेश होता है । डा॰ बलदेव उपाध्याय के अनुसार - " साहित्य में मनुष्य का जीवन ही नहीं बल्कि जीवन की कामनाएँ जो अनन्त जीवन मे पूरी नहीं हो सकती वे भी निहित रहती है । "[1] आज के मनुष्य के मन और मस्तिष्क पर अधिक जोर पड रहा है । ऐसी स्थिति में मनोवैज्ञानिक अध्ययन की ओर ध्यान देना चाहिए क्योंकि जीवन के हर क्षण में किसी-न-किसी प्रकार के संघर्ष का सामना करना पडता है । मन का वैज्ञानिक अध्ययन उन्नीसवी सदी के अंत तथा बीसवी सदी के प्रारंभ में विश्व में होकर अनेक प्रकार की चुनौतियाँ तथा नयी वैचारिक दिशाओं को लेकर बढा है । फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद ने पूरे समाज एवं व्यक्ति के चेतनशक्ति को चुनौति दी । इतना ही नहीं मनोविश्लेषण ने मनुष्य के बुद्धिशक्ति, स्त्री-पुरुषों के नैतिक प्रतिमानो और पारिवारिक पवित्र संबधो को बलपूर्वक चोट पहुँचाकर पूर्ण रूप से नये चिंतन को स्थापित किया ।

मार्क्स के सिद्धान्त के बाद साहित्य को अगर दूसरा मोड मिला है तो वह मनोविश्लेषण के कारण ही । इस दिशा में अध्ययन कुछ नये सिरे से होने लगा था । मानव मन को सभी कलाओं का जनक माना जाता है । अत: मनोवैज्ञानिक अध्ययन को साहित्य के अध्ययन का माध्यम बनना एक सीमा तक उचित ही नही बल्कि आवश्यक भी है । डा॰रामकुमार वर्मा के अनुसार - " मानव मन मनोविज्ञान का विश्लेषण है । यही मनःभाषा या मनोवर्गों का आश्रम मनोविकारों का स्त्रोत एवं अनुभूतियों का कोष है । साहित्य इन्हीं मनोविकारों और अनुभूतियों की (रोचक) कथा है । "[2]

1· भारतीय साहित्य शास्त्र, बलदेव उपाध्याय - पृ· 571·

2· हिन्दी की नई कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

फ्रायड के अनुसार साहित्यकार अपनी दमित वासनाओं को उदात्तिकृत रूप में प्रस्तुत करता है और पाठक भी उस साहित्य के द्वारा अपनी तिरस्कृत कामनाओं का सादृश्य पाता है । मनुष्य के बाह्य जीवन के संघर्षों के अलावा अन्तर्मन में भी एक प्रकार का खिंचाव लगातार महसूस करता है जिसको मनो - विज्ञान की सहायता के बिना सुलझाया नही जा सकता हैं ।

डा• देवराज उपाध्याय ने लिखा है - " 19 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध के मनुष्य अपने ही अन्दर वाले विशाल विश्व का आविष्कार कर रहा था जिसे हम आज की मनोविज्ञान की शब्दावली में अचेतन कहते है । " [1]

मनोविज्ञान सामान्य और असामान्य दोनो प्रकार के व्यक्तियों के जीवन का अध्ययन करता है और असामान्य व्यक्ति के मानसिक विकारों के कारण खोज कर उसको ठीक करने का समाधान प्रस्तुत करता है ।

1•1• आधुनिक युग और मनोविज्ञान :-

आधुनिक मनोविज्ञान का इतिहास लगभग सौ वर्षों का हैं । मनो - विज्ञान की एक प्रसिद्ध उपशाखा जिसे मनोविश्लेषण कहते है वह अपने सीमित अर्थ मे आधुनिक हैं ।

" मनोविज्ञान " का अंग्रेजी पर्याय " साइकॉलजी " है । यह शब्द दो ग्रीक शब्द " साइको " psyche-soul और " लागोस " Logos -dis- courseसे बना है । इससे पहले मन के विकास को मनोविज्ञान के नाम से

1• मिथलेश रोहतगी

जाना जाता था । परन्तु बाद की परिभाषा में परिवर्तन आने के कारण बीसवी शताब्दी में इसे " व्यवहार का विज्ञान "(Science of Behaviour) या " व्यवहार का वैज्ञानिक अनुसंधान " नाम से भी जाना जाता है । परिभाषा भले ही कुछ भी हो परन्तु मनोविज्ञान का लक्ष्य विभिन्न दिशाओं में मानव की समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करना है ।

साहित्य में विकसित अनेक वैज्ञानिक सिद्धान्तों में कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद ने साहित्य के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित किया जैसे चिकित्सा-गृह, कारखाने, स्कूलों तथा कालेजों कार्यालयों आदि ।

एक सामान्य प्रश्न हमेशा उठता है कि मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण और मनोचिकित्सा मे क्या अन्तर है । यद्यपि ये सब एक हो पथ के पाथिक है और एक ही समस्या का समाधान ढूँढते है । फिर भी इनमें अन्तर देखने को मिलता है ।

मनोविज्ञान (psychology) का अध्ययन क्षेत्र केवल स्वस्थ मानव से होता है । इसमें मनोवैज्ञानिक केवल यही देखना और जानना चाहता है कि मनुष्य किस तरह देखता, सुनता है, क्या यह केवल शरीरिक क्रिया है अथवा इसमें मन का भी सहयोग है ।यदि केवल शरिरिक क्रिया मात्र है तो यह क्यों देखने को मिलता है कि एक व्यक्ति टी॰वी॰ या रेडियो के कार्यक्रम को सुनते रहने पर जरा भी अपने काम से ध्यान हटाता नही वही जब कि दूसरा व्यक्ति अपने काम-काज को करना छोडकर कार्यक्रम में दिलचस्पी लेने लगता है । इन्हीं सब का अध्ययन इस क्षेत्र में होता है ।

मनोविज्ञान की कई अन्तर निहित शाखाएँ है परन्तु मनोविश्लेषण (psychoanalysis) का प्रभाव कुछ अधिक ही था। मनोविश्लेषण एक तरह की मानसिक चिकित्सा हैं। मानस-व्याधियों का निवारण करना इसका लक्ष्य होता है। यह एक विशेष पद्धति है जिसके आविष्कार का श्रेय सिगमण्ड फ्रायड(Sigmund Freud) को दिया जाता हैं। इस पद्धति में चिकित्सक मरीज से बातें करता है (Free Association) उसकी आदतों व्यवहारों की विशेषताओं, जीभ से फिसली बातों, शब्दों के प्रयोग, क्रिया पद्धतियों तथा स्वप्नों का अध्ययन करता है। उसके अचेतन में छिपी बातों को उभर अर्थात चेतन स्तर पर लाने की चेष्टा करता है। इस तरह व्यक्ति को उसके सच्चे स्वरूप का ज्ञात करा सकते है।

मनोचिकित्सा, मनोविज्ञान की ही एक उपशाखा हैं। इसका भी सम्बन्ध मानव मनोविज्ञान से ही हैं। परन्तु यह मनुष्य की मानसिक अस्वस्थता की दृष्टि से विचार करता है। इस शाखा का सिद्धान्त यह है कि रोग या विकृति का निवारण ही मानसिक स्वस्थता है। मनोविज्ञान के इन दोनों अन्तर्निहित शाखाओं के अलावा कई और भी शाखाएँ है जो अपने-अपने क्षेत्र में महत्व रखती हैं।

साहित्य का अगर अध्ययन मनोविज्ञान को लेकर किया जाता है तो वह मनोविश्लेषण की दृष्टि से होती है न कि मनोवैज्ञानिक या मनोचिकित्सा के रूप में। क्योंकि मनोविश्लेषण अध्ययनार्थी को यह विचार करने के लिए मजबूर करता है कि अगर कोई पात्र किसी प्रकार का व्यवहार कर रहा है तो उसका कोई-न-कोई निश्चित कारण हो सकता है। साथ ही व्यक्ति के चिंतन आदि का सम्बन्ध सीधे मस्तिष्क से होने के कारण दोनो क्रियाओं को समझना अति आवश्यक है। लेखक में इतनी क्षमता अवश्य होती है कि

वह हर एक वस्तु को अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखने और व्यक्त करने में समर्थ होता हैं।

1.2. साहित्य की प्रमुख विधाएँ और मनोविज्ञान :-

काव्य, नाटक कहानी, उपन्यास, निबंध आदि साहित्यिक विधाएँ है। हर विधा समयानुसार कई विचारधाराओं में मनोविज्ञान और मनो - विश्लेषण के सिद्धान्तों ने भी अपने प्रभावों से साहित्य को मण्डित किया है।

1.3. मनोविश्लेषण कला सम्बन्धी विचार :-

मनोवैज्ञानिकों का यह दावा है कि सृजन प्रक्रिया के रहस्य को वे लोग जितना जानते है उतना कलाकार को भी ज्ञात नहीं रहता है। इसका कारण यह है कि मनोवैज्ञानिक मानते है कि कला और साहित्य अवचेतन मन से उत्पन्न होते है। इसके पूर्ण विश्लेषण के लिए अवचेतन मन का पूरा ज्ञान होना जरूरी हैं। स्वप्न, दिवास्वप्न और अन्य तरीको से समस्या का हल किया जा सकता है।

फ्रायड :-

फ्रायड भी कला और क्रीडा को अपने चिन्तन का एक अंश माना है। उनका कहना है कि शुरू में बच्चो में खेलने की प्रवृत्ति है और वह लोगों और वातावरण से सीखता है। फ्रायड के अनुसार - " लेखक भी बालक की तरह अपनी मनः सृष्टि करता हैं। इस प्रक्रिया में वह उसी प्रकार तल्लीन

रहता है जिस प्रकार शिशु अपने खेल में । इस तल्लीनता की स्थिति में वह संसृति के यथार्थ स्वरूपों से अनभिज्ञ रहकर भाषा के माध्यम से ऐसे भावों को सजोने में समर्थ होता है जो उनकी आत्मतुष्टि के प्रमुख साधन सिद्ध होते है ।" [1]

फ्रायड के अनुसार मानव की हर इच्छा, अभिलाषा आदि की पूर्ति, भावना से परिचालित होती है । अगर वह इस कार्य में सफल नहीं होता है तो उसके जीवन में कटुता और विद्रूपता के गुण देखे जा सकते हैं । जो इच्छाएँ दैनिक जीवन में पूर्ति नही होती है वे ही स्वप्नो एवं दिवास्वप्न के रूप में परिणत होकर व्यक्ति के सामाजिक आत्म सन्तोष का कारक बनती हैं।

फ्रायड का मनाना है कि दिवास्वप्न और मनोसृष्टि की दृष्टि से कलाकार और सामान्य व्यक्ति में अन्तर नहीं होता । कलाकार यथार्थ के साथ दिवास्वप्न को भी महत्व देते हुए रचना करता है । इसलिए कलाकार और सामान्य मनुष्य में अंतर होता है । कलाकार में दिवास्वप्नों को परिष्कृत करने की अद्भुत क्षमता होती हैं जो सामान्य व्यक्ति में नहीं होती है । फ्रायड के अनुसार कलाकार अपनी कलाकृति से आनन्द प्रदान करता है । वह मन के गहनतम स्तरों में जा कर अत्याधिक आनन्द की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा देता हैं।

---

1. Now the writer does the same as child at play he creates a world of Phantory which he takes very seriously, i.e. he invests it with great deal of affect, while separating sharply from reality. The realities of the poet today - Dreaming called from Reader's A Back of Modern Aesthetics. Page No. 130

फ्रायड ने दो प्रकार के साहित्य सर्जको की कल्पना की है। एक तो वे लोग है जो पूर्ववर्त्ती त्रासदी और महाकाव्य के लेखकों की तरह प्रस्तुत सामग्री को ही अपना उपजीव्य बनाते है और दूसरे कलाकार वे है जिनके स्वत: स्फुरित स्रोत से सृजन संपन्न होता है। फ्रायड के अनुसार कलाकार को अपने पात्रों से एक प्रकार का लगाव रहता हैं।

एडलर :-

मनोविश्लेषको में एडलर ने प्रमुख रूप से अंह के प्रतिस्थापन और महं भाव (superiorty complex) तथा हीनता - ग्रंथि inferiority complex की चर्चा की है। इनकी मान्यतायें (recognition) साहित्य के क्षेत्र में भी मिलती है और इसके आधार पर सर्जन एवं समीक्षा के सिद्धान्तों का मूल्यांकन भी किया गया हैं। एडलर के विचार फ्रायड के विचारों से काफी अलग हैं। उनका मानना था कि व्यक्ति अपनी आत्महीनता की भावना से पलायन होने के परिणाम स्वरूप कल्पना लोक में प्रवेश करता है। उसके लिए कला आत्महीनता के भाव की क्षतिपूर्ति का साधन है। " एडलर " ने कलात्मक तादात्म्य के प्रभाव की चर्चा की है, और कृतिकार अपने व्यक्तित्व एवं कृति में अभिन्न सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करता हैं।

युंग :-

युंग का अन्य मनोविश्लेषकों की तुलना में कला और साहित्य सम्बन्धी विचार का महत्व कुछ अलग हैं। मानव मन ही सभी प्रकार के विज्ञान और कला का गर्भ माना जाता है। इस दृष्टि से मनोविज्ञान और साहित्य का महत्वपूर्ण सम्बन्ध स्थापित होता है। वस्तुत: मनोविज्ञान एक ओर कलाकृति

के निर्माण की व्याख्या करता है तो दूसरी ओर उन कारणों पर भी प्रकाश डालता है जो व्यक्ति विशेष को सर्जनशील बनाते हैं।

कलाकृति के संदर्भ में युंग का कहना है कि कलात्मक सर्जन के दो स्वरूप हैं। पहला मनोवैज्ञानिक तो दूसरा कल्पनिक। उनके द्वारा कलाकार मानव-चेतना के क्षेत्र से अपने उपजीव्य को ग्रहण कर अपनी अन्त: शक्ति द्वारा सामान्य स्तर से उठाकर उसे कलात्मक स्तर प्रदान करता है।

कला का काल्पनिक स्वरूप इससे सर्वथा भिन्न होता है। इस वर्ग के कलाकार अपनी कलाकृति की सामग्री को जीवन के असामान्य स्वरूप से ग्रहण करते हैं। इन सामग्रियों का सम्बन्ध मानव-मन के अन्त: स्वरूपों से होता है।

युंग के मत से मनोविज्ञान, व्याख्या में विशेष सहायता न देकर तुलनात्मक विवेचन के लिए सामग्री प्रदान करता है और उन्होंने सामूहिक अवचेतन की ओर ध्यान आकृष्ट किया।

युंग का मत है कि कलाकृति को वैयक्तिक जीवन स्तर से उच्च स्तर पर जा कर कवि के हृदय की आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति द्वारा मानवता के लिए प्रेरक माध्यम सिद्ध होना चाहिये। हर कलाकार का व्यक्तित्व दो विरोधी शक्तियों का प्रतिफल होता है। व्यक्ति होने के कारण कलाकार सभी अनुभवों को पहचान सकता है। मनोवैज्ञानिक व्यक्तिगत रहस्यों का उद्घाटन कर सकता है किन्तु कलाकार उन रहस्यों का अपनी सर्जनात्मक प्रक्रिया द्वारा मूल्यांकन करता है।

1.4. साहित्य विधाए - मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन :-

युग प्रवृत्तियों को साथ लेकर साहित्य जब विभिन्न विधाओं में उभरने लगता है तो उसके अध्ययन की दिशाओं में तथा दृष्टिकोणों में अन्तर भी उभरते है । साहित्य के मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के क्षेत्र में भी यह स्थिति देखी जा सकती है । प्रस्तुत अध्ययन उपन्यास के परिप्रेक्ष में होने के कारण यहाँ उपन्यासेतर साहित्य विधाओं और उपन्यास के सम्बन्ध में मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन में उभरने वाले अन्तरों पर भी विचार कर लेना समीचीन होगा । उपन्यासेतर विधाओं में प्रमुखत: काव्य (कविता), नाटक, एकांकी और कहानी को रख कर देखा जा सकता है और उपन्यास को एक विशिष्ट विधा के रुप में मनोविश्लेषण की कसौटी पर कसने के लिए उसकी उपयुक्ता पर विचार किया जा सकता है ।

काव्य :-

काव्य में प्रमुख रुप से भावना और कल्पना का योग होता है और इन दोनों का सम्बन्ध मन से होता है । मन में भावों का उदय होता है जो कल्पना के द्वारा साकार रुप धारण करने के लिए लगातार कोशिश करते है । कवि अपनी भावानुभूतियों को ही शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत कर अपने मन की इच्छा को पूरा करता है । इसलिए हर एक कवि के विचार दूसरे कवि से अलग होते हुए भी भावों के धरातल पर मिलते हैं । समय तथा कथ्य का प्रभाव कवि और काव्य पर पडना स्वाभाविक है ।

फ्रायड के अनुसार " व्यक्ति काम सम्बन्धी भावनाओं को प्रकट करने के लिए विभिन्न साधनों को अपनाता है तथा इन साधनों के द्वारा अपनी काम भावनाओं को व्यक्त करके आंतरिक आनन्दानुभूति को प्राप्त करता है । [1]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार " यदि काव्य की तह में जीवन का कोई सच्चा मार्मिक लक्ष्य सच्ची भावानुभूति नहीं हो तो इसका मूल्य मनोरंजन करने वाली सजावट या खेल तमाशों के मूल्य से कुछ भी अधिक नहीं है । " [2]

काव्य और मनोविश्लेषण का सम्बन्ध गहरा है क्योंकि कवि काव्य के माध्यम से अपनी आत्मानुभूति को उदात्तीकृत रूप में परिकल्पित करता है केवल इतना ही नहीं उसका प्रधान लक्ष्य कल्पना और सौन्दर्य के सहारे आकर्षक और उत्कृष्ट रूप में अपने भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त करना है । इस कारण काव्य के मनोविश्वलेषणात्मक अध्ययन की सम्भावना कुछ सीमित होती हैं ।

नाटक :-

नाटक एक ऐसी विधा है जिसमें नाटककार प्रत्यक्षत: पाठक या दर्शक के सामने न आकर कल्पित पात्रों के माध्यम से आता है । यहाँ जब नाटककार अपने दर्शकों के सामने मंचित नाटक के माध्यम से आता है तब मंचीय सहयोग

---

1. आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य - कमला - पृ. 229.
2. चिन्तामणि भाग-2, काव्य में अभिव्यंजनवाद - आचार्य शुक्ल - पृ. 110.

भी विशिष्टता पा जाता हैं। नाटककार अपनी आप बीती या अपनी कल्पना शक्ति से नाटक की रचना करता है। नाटक में पात्रों को इतनी सजीवता से दर्शाने की कोशिश करता है कि मानो यह सत्य है क्योंकि पात्र अपने निजी मानस की तरलता को दिखलाने का प्रयत्न करता है कला का मुख्य उद्देश्य मानव को मनोरंजन तथा ज्ञान प्रदान करना है। इस के लिए नाटक भी एक प्रभावशाली साधन है। मानव किसी वस्तु या भाव से प्रेरित होकर प्रसन्न या अप्रसन्न होता है। यह माना जाता है कि मानव में कुछ विशिष्ट प्रेरणाएँ होती है जो निश्चित दृश्य को देखकर (उत्तेजित) हो उठती है। जैसे नाटक के दुःखांत दृश्य को देखकर दर्शकगण भी दुख का अनुभव करते हैं और हास्यात्मक दृश्य को देखकर हँसने लगते हैं। काव्य की भाषा में इसे साधारणीकरण कहते हैं। यह वह स्थिति है जहाँ पात्र और दर्शक की भावनाएँ एकीकृत हो जाती हैं।

नाटक और मनोविज्ञान का सम्बन्ध इसलिए गहरा है क्योंकि नाटक के पात्र के मन में व्याप्त संवेगों को प्रत्यक्ष रूप से दिखाने के प्रयत्न निहित होते हैं।

" सिगमण्ड फ्रायड ने नाटक की कला पर विचार करते हुए एक लेख psychopathic characters on the stage लिखा है। इस लेख में विशिष्ट कला रूपों के बारे में मुख्यत: नाटक और दर्शकों पर उसका प्रभाव और पात्र अपने लक्ष्य की पूर्ति किस प्रकार करते है इसको दिखाने की कोशिश की है। " [1]

Ernest Jones writes that - "David Sievers detailed study of of the extraordinary influence of Freud's work has had or the drawn 1912 onward deserves special mention.Freud had early on in 1907,given an example of how useful actors could find the carrying out of conscious 'symptomatic actions' - Sigmund Freud: Life and Work - The Last Phase(1924 to 1939) by Ernest Jones. page No. 455

नाटककार नाटक में कथावस्तु पात्र और पात्र की प्रतिक्रियाएँ आदि का नियोजन, दृश्यों के माध्यम से करता है और दृश्यो का संबन्ध योजना से है, उसी से कथावस्तु का सम्प्रेषण होता है ऐसी स्थिति में मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के दायरे में आने वाली क्रिया प्रतिक्रियाएँ गौण हो जाती है। इसलिए नाटक के मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन की भी अपनी सीमाएँ बनती हैं।

कहानी :-

कहानी के माध्यम से विशिष्ट परिस्थितियों के बीच मानव को देखने का सच्चा प्रयास होने लगा है। प्रेमचन्द ने इस सन्दर्भ में ठीक ही कहा है कि " सबसे उत्तम कहानी वह होती है जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो " कहानी एक सूक्ष्म अभिव्यक्ति है जो सीमित परिस्थितियों और क्रिया प्रतिक्रियाओं से जुड कर चलती हैं। इससे पात्र भी सीमित हैं और उनकी मानसिक क्रिया प्रतिक्रियाएँ भी।

कहानी और मनोविश्लेषण का गहरा सम्बन्ध है क्योंकि इसमें किसी एक घटना को लेकर रचना होती है जिसमें पात्र की मन: स्थिति का सूक्ष्म वर्णन किया जाता है। कहानी के माध्यम से कहानीकार की भावनाओं या अनुभवों का ज्ञान होता है जिसे किसी कथा के रूप में पाया जाता है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो उपन्यास और कहानी के मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन में काफी अंतर है। यह सामान्य बात है कि उपन्यास और कहानी में किसी-न-किसी कथा का आधार ग्रहण किया जाता है। इसी कारण कई लोग इन दोनो विधाओ को एक समझते है और अगर अन्तर मानते है तो केवल

उनके आकार से । किन्तु उपन्यास में मानव जीवन के अनेक पक्षो का चित्रण विराट तथा बोध दायक रुप में होता है जबकि कहानी में मानव जीवन के एक ही पक्ष का या एक क्षण का । उपन्यास में किसी भी पात्र का शुरू से अंत तक कई तरह की मन: स्थितियों, आदतों, व्यवहारों आदि को देखा जा सकता है जहाँ कि कहानी में इतने अधिक मानसिक स्तरो में किसी पात्र का अध्ययन नहीं कर सकते है । इसलिए मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन उपन्यास का कहानी से कई गुणा बेहतर रुप से किया जा सकता है । इसका अर्थ यह नहीं कि कहानी का इस दृष्टि से अध्ययन नही हो सकता है, किन्तु विस्तार रुप में नहीं ।

कहानी में उपन्यास की तुलना में पात्रों की संख्या कम होने के कारण उन कम पात्रो द्वारा ही विभिन्न स्थितियों और प्रकृतियों को व्यक्त करता है । उन्ही पात्रो की दशा, द्वन्द्वों, तनावों तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को महत्त्व दे पाता है । इस प्रकार उपन्यास और कहानी में मनोविलेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन की क्षमता उपन्यास में अधिक है । उपन्यास एक विस्तृत कलात्मक अभिव्यक्ति है जब कि कहानी सीमित रुप से संकुचित और संश्लिष्ट अभिव्यक्ति है । परन्तु दोनों महत्त्वपूर्ण है । इस तरह कहानी संकुचित तथा अपूर्ण होने पर भी सूक्ष्मता की दृष्टि से पूर्ण है ।

उपन्यास :-

उपन्यास में विभिन्न घटनाएँ मुख्यत: किसी नायक या नायिका के जीवन से सम्बन्धित होती है उसके साथ सहायक पात्रों के जीवन का भी चित्रण मिलता है । उपन्यास में मानव जीवन के अनेक पक्षों का चित्रण विराट तथा बोध भय रुप में होता है । उपन्यास में पात्रों की बहुलता होती है तथा

स्थितियाँ तथा प्रवृत्तियों में वैविध्य होने के कारण हर स्थिति में हर पात्र के स्वभाव, मनस्थिति तथा मनोदशा आदि का चित्रण मिलता है। हर पात्र के तनाव, द्वन्द्व तथा मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया को उनके स्वभावों के अनुरूप अचेतनता तथा चेतनता की स्थितियों में दर्शाया जाता है। उपन्यास में स्वतंत्र रूप से विस्तृत कलात्मक अभिव्यक्ति हो सकती है। उपन्यास भाव को पात्रों के माध्यम से व्यक्त करता है उसका दृष्टिकोण अति सूक्ष्म होता हैं।

उपन्यास द्वारा लेखक अपने अनुभवों मनोभावों, अपनी शारीरिक विकृतियों को पूर्ण करने का प्रयत्न करता है। यानि उसके द्वारा जिस विकृति के फलस्वरूप जीवन भर अपने आप को अपूर्ण समझता है। उसे उपन्यास के माध्यम से पूरा करता है। उपन्यासकार अपने उपन्यास के पात्रों द्वारा पूर्णता का अनुभव करता हैं। इसे मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के अनुसार रक्षा युक्तियों के माध्यम से अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सन्तुष्टि को प्राप्त करता हैं।

उपन्यास का लक्ष्य मानव जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत करना है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने मानव को अपनी प्रयोगशाला में रखकर वैज्ञानिक ढंग से उसके प्रत्येक व्यवहार को परखने की कोशिश की है। अन्य उपन्यासकार मानव के बाहरी रूप तक सीमित रहते है जबकि मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार मनुष्य के बाहरी रूप से अधिक अन्तारिक, मानसिक सत्ता और क्रियायें होती है। इनकी दृष्टि में मनुष्य की अन्तस्थ और अज्ञात प्रवत्तियाँ ही सब कुछ होती हैं।

आधुनिक हिन्दी उपन्यास का विकास अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव और सम्पर्क से हुआ । यूरोप में उपन्यास साहित्य का विकास रोमांटिक कथा-साहित्य से हुआ है । विशेष रूप से 19 वीं शती के उपन्यास में नये दृष्टिकोण पाये जाते है । हिन्दी से पूर्व बंगला में उपन्यासों का सूत्रपात माना जाता है उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द को एक ऐसा बिन्दु माना जाता है जिनके दोनो ओर उपन्यास साहित्य की अलग-अलग रेखायें दिखाई देती हैं । इनसे पहले आचार, नीति, धर्म, तिलस्मी और अयारी तथा उपदेशात्मक उपन्यासो को रचा जाता था ।

प्रेमचन्द युग के अन्तिम चरण में उपन्यास साहित्य में मनोवैज्ञानिक, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद आदि नई प्रवृत्तियाँ जन्मी जो विषयवस्तु एवं लक्ष्य की दृष्टि से प्रेमचन्दोत्तर साहित्य को प्रेमचन्द युग के साहित्य से भिन्न कर देती हैं । प्रेमचन्द की लेखनी को इसलिए महत्व मिला कि वे मौलिक उपन्यासकार के साथ ही युग प्रवर्तक भी थे । उनकी भाषा जनता की भाषा होने के कारण कोई भी सामान्य व्यक्ति इनकी लिखित सामग्री को समझ सकता हैं । प्रेमचन्द ने मानव को पहचाने का प्रयत्न किया । इसलिए इनकी रचनाओं के पात्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जा सकता हैं ।

प्रेमचन्द युग में इनके आलावा अन्य प्रतिभाओं का भी उदय हुआ जैसे – जयशंकर प्रसाद, शिव पूजन सहाय, चतुरसेन शास्त्री आदि सामाजिक उपन्यासों ने समाज सुधारने के नाम पर यर्थाथ को बाहर ला खडा किया । सामाजिक उपन्यासों में कई लेखक हुए है जो महत्वपूर्ण स्थान रखते है जैसे भगवती चरण वर्मा, भगवती प्रसाद वाजपेयी, विष्णु प्रभाकर आदि ।

यह कहना तो बहुत कठिन है कि मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का सृजन कब से आरंभ हुआ । किन्तु कई आलोचकों का मानना है कि सेमूयल रिचर्डसन अंग्रेजी के प्रथम मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार है । इसका कारण यह है कि रिचर्डसन ने अपने सारे उपन्यासो की रचना पात्रात्मक शैली में की हैं ।

डॉ• धनराज मान धाने ने हिन्दी के प्रारम्भिक मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को ढूँढने का प्रयास किया है । उपन्यासकार तो अपने युग का विचारक होता हैं । वह अपने समय के बारे में सत्य का चित्रण और आदर्श की स्थापना करने की कोशिश करता है । उपन्यासकार चाहता है कि वह किसी-न-किसी प्रकार से पाठक के मन को सुख पहुँचाये । इसलिए वह जन सामान्य की रुचि को ध्यान में रखते हुए अपनी रचना करता है । उपन्यासों को ध्यान से पढ़ने से पता चलता है कि मनोविज्ञान के तथ्य अधिकांश उपन्यासो में देखने को मिलते है । किन्तु प्रत्येक उपन्यास को मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है । उन्हीं उपन्यासों को मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के अन्तर्गत विद्वानों और आलोचकों ने रखा है जो मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

डॉ•देवराज के अनुसार " मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार विषय को महत्व नहीं देते, जबकि भटट्लोलर, मैथ्यू अर्नाल्ड और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल विषय को ही विशेष महत्व देते है । विषय जटिल हो या सरल और नीरस हो या सरस मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में इस बात की परवाह नहीं की जाती । अर्थात् विषय को विशेष महत्व नही दिया जाता । उसकी परवाह किये बिना ही मनोविज्ञान के विषय बनते है जैसे एक प्रेमी की दो प्रेमिकाएँ, दो प्रेमिकाओं का एक प्रेमी, समाज का निरादृत व्यक्ति का चित्रण, बालकों के विशेषत: ज्येष्ठ,

कनिष्ठ या इकलौते बालकों के क्रिया-कलापों का वर्णन प्रचलित सामाजिक प्रथाओं और रूढियों के विरुद्ध क्रान्ति करने वाले पात्र, अकर्मण्य, आत्मलीन तथा हाथ पर हाथ धरे कल्पना जगत के प्राणी, परस्पर विरोधी आचरण निरत पात्र, किसी विशिष्ट मनोवृत्ति से संचलित न होकर एक वीर और दूसरे क्षण कायर की तरह आचरण करने वाले व्यक्ति आदि के क्रिया कलाप ही मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के विषय है । " [1]

सामान्यत: यह प्रश्न उठता है कि उपन्यासकार को मनोविश्लेषण की क्या जरूरत होती है ? पात्र के अचेतन में छिपी बातों को चेतन स्तर पर लाकर ही व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों को समझा जा सकता हैं । अगर उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को ध्यान में न रखकर रचना करता है तो भी उसके उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है । इसका कारण यह है कि कहानी सामान्यत: मनुष्य के साथ ही जुडी होती है । इसलिए कहा जा सकता है कि केवल उपन्यास का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण साहित्य का मनोविज्ञान से सम्बन्ध होता हैं ।

सफल मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार उसे माना जाता है जो अपने व्यक्तित्व के प्रति भी तटस्थ मनोवैज्ञानिक दृष्टि रखता है तथा हानि-लाभ से ऊपर उठकर वह अपनी मूल-प्रवृत्तियों को पहचानने का प्रयत्न करता है । ऐसा उपन्यासकार सामान्यत: वही है जो तटस्थ दृष्टि वाला हो और जिसमें अचेतन को चेतन स्तर पर लाने की क्षमता हो तथा दमित इच्छाओं की ग्रंथियों को खोल सकते हैं ।

1· उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी : मूल्यांकन - डॉ· सुधीर कुमार
पृ· - 36·

1·5· हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास :-

हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को मुख्य रूप से असामान्य मन: स्थिति वाले पात्रों को वर्णन का विषय बनाया गया है और यही प्रवृत्ति अभी भी वर्तमान है । आजकल के उपन्यासों में भले ही वे मनोविज्ञान या मनोविश्लेषण को लक्षित हो या न हो किन्तु इसी आधार पर कथा विकसित होती है और मूलरूप से कुछ प्रधान तत्व इस उपन्यासकारों की रचनाओं में मिलती है । मनोवैज्ञानिक लेखकों में जैनेन्द्र अज्ञेय और इलाचन्द्र जोशी के नाम बड़े गौरव से लिये जाते हैं ।

मनोवैज्ञानिक या मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन में असामान्य पात्र की मनोदशा की अपेक्षा व्यावहारिक जीवन में साधारण व्यक्ति को पढ़ना और चित्रित करना अधिक कठिन है । व्यावहारिक व्यक्ति अनेक असुविधाजनक या अप्रिय परिस्थितियों में किस प्रकार से मानसिक प्रतिक्रिया करता है इन सब का ही अध्ययन इस में होता है । किन्तु जब लेखक का इस सन्दर्भ में प्रश्न उठता है तो यह जरूरी है कि वह समाज के हलचलों को, व्यक्तियों को पूर्ण रूचि के साथ अवलोकित करने की शक्ति रखता हो । जैसे उदाहरण के लिए स्वास्थ्य-व्यक्ति का दुर्बल या बचपन में माँ-पिता का प्यार न मिलता या किसी तरह की शारीरिक कमी आदि, व्यक्ति के बाहरी व्यवहार को विशेष रूप से प्रभावित करता है । इतना ही नहीं लेखक को मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों का सामान्य रूप से ज्ञान होना चाहिए जिससे कथा में पात्रों के असामान्य व्यवहार और उनको सुधारने के तरीखों को भी दिखाया जा सकता है । इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र आदि ने लगभग यही किया है ।

मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी उपन्यास को देखा जाए तो वे दो प्रकार के है । पहला, वे उपन्यास जिनके लेखकों ने सिद्धान्तों से प्रभावित होकर अपनी रचना की है । दूसरे वे लेखक है जिन्होंने किसी भी सिद्धान्त से प्रभावित न होकर अपनी कथानुमक रचना की है । दोनो प्रकार के उपन्यासों का अध्ययन मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से हो सकता हैं ।

सामान्य तौर से जो मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए उपयोग किये जाने वाले मनोविश्लेषकों के सिद्धान्तों का एक विहंगावलोकन अध्ययन पूर्व असमीचिन न होगा । उनका एक परिचय आगे प्रस्तुत है ।

1•6• मनोविश्लेषण : विभिन्न सिद्धान्त :

1•6•1• फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त :-

मनोविश्लेषणवाद की शुरु आत औषधि विज्ञान की वैज्ञानिक दृष्टि की देन है । इस के प्रवर्तक अपने प्रयोग एवं निरोक्षण के आधार पर मनोविश्लेषण के रहस्यों को उद्घाटित कर अन्य मनोवैज्ञानिकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं । आरंभ में इस विज्ञान को " डेप्थ साइकोलॉजी और " इमोशनल साइकोलॉजी " के नाम से जाना-जाता था । इसके उद्भव में सम्मोहन सिद्धान्त का प्रमुख आधार है । सिगमण्ड फ्रायड को मनोविश्लेषणा का प्रवर्तक माना जाता है । वे पूर्ववर्ती मनोवैज्ञानिको से काफी प्रभावित हुए थे ।

" फ्रायड " के इस क्षेत्र में आने के कारण मनोविश्लेषणवादी चिन्तन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये । इसकी शुरूआत उन्नीसवी शती के अन्त में मानव के असामान्य व्यवहारों से सम्बन्धित सिद्धान्तों के प्रतिपादन से हुआ । फ्रायड पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह प्रमाणित कर दिखाया कि बाल्यावस्था में बीते अच्छे और बुरे दिनों का प्रभाव व्यक्ति के जीवन के अंत तक बना रहता है । उन्होंने अपने सिद्धान्त में व्यक्तित्व (personality) से सम्बन्धित कई मुख्य बातों को बताया । उनका कहना था कि मानसिक रोगों के कारणों को ज्ञात करके अगर उसकी इलाज की जाए तो व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक आराम मिल सकता है ।

फ्रायड ने मानव के मानसिक कष्टों के निवारण के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों को दिया तो इस कारण उन पर कई महान चिकित्सकों का प्रभाव पडा जैसे कि शार्को के निर्देशन में फ्रायड ने (तन्त्रिक तन्त्र (neurology) तथा मस्तिष्क सम्बन्धी कमीयों का विशेष अध्ययन किया । ब्रायर (Josef Brewer) के साथ काम कर फ्रायड ने यह प्रमाणित किया कि अगर रोगी के मन से पीडा देने वाली संवेगों और भावों को निकाल दिया जाए तो उसे हिस्टीरिया से छुटकारा दिला सकते हैं ।

इसके अलावा फ्रायड ने बर्नहाइम (Burn Heim) की सम्मोहन विधि का गहन अध्ययन किया और माना कि यदि अचेतन मन में दमित भावों तथा संवेगों को बाहर निकाला जाए तो रोगी निरोग हो सकता है । इस प्रणाली का नाम फ्रायड ने मनोविश्लेषण-विधि रखा । फ्रायड द्वारा प्रतिपादित कुछ प्रमुख सिद्धान्त इस प्रकार हैं ।

1·6·1·1· सहजवृत्ति या मूलवृत्ति का महत्त्व :-

सहजवृत्ति या मूलवृत्ति प्रत्येक व्यक्ति में जन्मजात होती है । ये नैसर्गिक व्यवहार (unlearned behaviour) होने के कारण हर प्रकार की जाति के सभी प्राणियों में सहज रूप में पायी जाती हैं ।

फ्रायड का कहना था कि व्यक्ति किसी भी कार्य मानसिक या शारीरिक को करने के लिए शक्ति की जरूरत होती है जो भोजन के पचाने के पश्चात प्राप्त होता हैं । शारीरिक कार्य करने के लिए जो शक्ति की जरूरत होती है उसे शारीरिक शक्ति कहते हैं । मानसिक कार्य करने के लिए जो शक्ति की आवश्यकता होती है उसे मानसिक या साइकी शक्ति कहते है । अत: ये दोनो एक दूसरे पर निर्भर रहती है । इसी निर्भरता को मूलवृत्ति कहते हैं ।

" लक्ष्य विशेष की ओर प्रेरित प्रकृत अभियोजनशील अपेक्षाकृत जटिल प्रतिक्रिया अथवा व्यवहार संघात जिनका दैहिक आधार सम्बद्ध अंगो की परि - पक्वता पर निर्भर हो यथा पक्षियों में घोंसला बनाने की प्रवृत्ति ।

मनोविज्ञान में मूलवृत्ति के सिद्धान्त के प्रवर्तक मेक्डूगल है । उन्होने 14 मूल वृत्तियाँ मानी है भोजन, ढूँढना, भागना, लडना, उत्सुकता रचना, संग्रह, विकर्षण, समर्पण, काम, वात्सल्य, सामाजिकता आत्मप्रकाशन, विनती और हँसना। मनोविश्लेषण से फ्रायड ने जीवन Eros और मृत्यु Thanatos की ही मूलवृत्तियाँ मानी है । ये जन्मजात होती है और मानव का समस्त व्यवहार इसी की नींव पर विकसित होता हैं । व्यवहारवादियों ने

विशेषकर वाटसन ने इस परम्परा का विरोध किया । उनके अनुसार व्यवहार सीखा जाता है जिसे व्यक्ति अपने जीवन-काल में किसी-न-किसी रूप में अर्जित करता है । "¹

1•6•1•2• व्यक्तित्व संरचना (Structure of Personality)

फ्रायड ने व्यक्तित्व संरचना की चेतनावास्था को तीन स्तरों में विभजित किया है - अचेतन (unconscious) अवचेतन (subconscious) और चेतन (conscious) इनको मन के स्थल रूपरेखीय पहलू भी कहा जा सकता है ।

चेतन :-

चेतनावस्था में व्यक्ति अपने चारों ओर के वातावरण को देखता है, समझता है और महसूस भी करता है । उदाहरण के लिए अगर व्यक्ति पेन से लिख रहा है तो ही वह पेन को महसूस करता है । उसकी नजर कागज पर होती है । साथ ही उसकी चिंतन प्रक्रिया भी चलती जाती है और अपने विचारों को लिखित रूप देता है । ये सभी क्रियायें चेतनावस्था में ही होती है ।

फ्रायड के अनुसार चेतन अवस्था बहुत कम समय के लिए होती है क्योंकि इस अवस्था में कुछ ही क्षण के लिए हमारे विचार, यादे उत्तेजनावर्धक होती है ।

1• मानविकि परिभाषा कोश सं नगेन्द्र - राजकमल प्रकाशन - प्र•स• 1968

चेतन मन का विश्लेषण मनोविज्ञान कोश में इस प्रकार दिया है˙-- " उन्नीसवी शताब्दी में मन और चेतना की धारणाएँ तद्रूप थी । चेतन भाग के अतिरिक्त मन के और किसी स्तर की कल्पना स्पष्ट रूप से नहीं हुई थी । बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही चेतन मन का एक छोटा-सा भाग समझा जाने लगा जिसमें चेतन मन का एक छोटा द्वीप-सा है । चेतन विचार शील है˙ । तर्कयुक्त है और नीति-अनीति का भाव इसमें सदा बना रहता है˙ । इसकी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ अनुभूतियाँ विचार गम्य होती है तर्क द्वारा समर्थन की जा सकती है । यह वास्तविकता सिद्धान्त से संचालित होती है । " 1

अंत: चेतन मानसिक प्रक्रियाओं का समूह है । जहाँ तर्क-वितर्क से काम होता है, अहम (ego) और पराहम (super ego) चेतन स्तर के ही अंग है˙ ।

अचेतन :-

फ्रायड के अनुसार मन के स्थल स्परेखीय पहलू में सबसे महत्वपूर्ण अचेतन होता है । इसका कारण यह है कि मन का सबसे अधिक भाग अचेतन का है तो सबसे छोटा चेतन का होता है˙ । प्रत्येक व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक क्रियाओं का कारण अचेतन मन माना जाता है˙ ।

1· मानविकि परिभाषिक कोश - पृ· 75·

अचेतन के बारे में पहले यह माना जाता है कि वह एक मानसिक क्रिया है जिसका जीवन में कोई महत्व नहीं होता । परन्तु फ्रायड ने इस मत को नहीं माना और यह बताया कि अचेतन क्रियाओं का व्यक्ति के जीवन में काफी महत्व है । यह एक सक्रिय मानसिक क्रिया है जसका प्रभाव मानव व्यावहार पर पड़ता है।

" अचेतन सम्पूर्ण मन का एक बड़ा लगभग तीन-चौथाई भाग है । युंग ने अचेतन की तुलना सागर से की है जिसमें चेतन मन केवल एक द्वीप के समान है । फ्रायड ने इसे एक बड़ा आइसबर्ग बतलाया है जिसका छोटा भाग नीचे है जो अचेतन मन का प्रतिनिधित्व करता है । अचेतन मन द्वारा सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक चेष्टात्मक, बोधात्मक और संवेगात्मक क्रियाओ का संचालन होता है । पहले अचेतन मन में संचालित क्रियाओं के कारण भूत-प्रेत समझा जाता था । अचेतन मन एक अनुभवात्मक मानसिक शक्ति है । यह निरी कल्पना नहीं, यह अनुभव का विषय है । इसका अस्तित्व स्वप्न समोहनोत्तर घटनाओं,(post hypnotic phenomena) मानसिक रोग के लक्षण दैनिक जीवन की नित्य-प्रति की भूलें इत्यादि द्वारा भली-भाँति प्रमाणित हो जाता है । अचेतन मन गतिशील (dynamic) है। इसमें सदा विरोधी इच्छाओं अथवा विचारों का संघर्ष चलता रहता है जिसको चेतना नहीं रहती । अचेतन मन कभी निश्चेष्ट नहीं रहता, कुछ न-कुछ क्रिया इसमें होती रहती है । अचेतन मन सुखेत्सा सिद्धान्त(pleasure principle) से संचलित होता है । वास्तविकता से इसका कोई सम्बन्ध नहीं । अचेतन मन सामाजिक नियमों से परिसीमित नहीं है । इसका काम केवल मूल प्रवृत्ति का समाधान करना है । अचेतन मन की इच्छाएँ वास्तविक रूप से

अधिकतर नही प्रकट होती क्योंकि इसमें संचित इच्छाएँ बहिष्कृत प्रकार की है। चेतन मन इन इच्छाओं को प्रकृत रूप से प्रकट होने में बाधा डालता है।

फ्रायड के अनुसार अचेतन-मन दमित काम-भाव का संग्रहालय है। "।

उक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि अचेतन का सम्बन्ध मनो-विश्लेषण[1] में स्मृति से किया जाता है। अचेतन स्तर पर छिपी हुई इच्छाएँ परिष्कृत होकर चेतन स्तर पर आने में असमर्थ हो जाये तो व्यक्ति में ग्रन्थि का उद्भव हो जाता है जिसके कारण मनुष्य मानसिक रोगी हो जाता है। अचेतन में मुख्यत: दो प्रकार की इच्छाएँ रहती है। पहली वे इच्छाएँ जो किसी समय चेतन में थी लेकिन बाद में अचेतन में चली गई। दूसरी इच्छाएँ वे होती है जो इतनी कमजोर है कि चेतन मन तक आ ही नही पाती। व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार विचार या इच्छा को व्यक्त नहीं कर सकता किन्तु वे स्वत: ही व्यक्त जरूर होते है।

फ्रायड ने अचेतन के अस्तित्व को दिखाने के लिए कई आधारों का सहारा लिया है जैसे --

1. <u>दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ</u> :-

चाभी का गुच्छा हाथ में घुमाना, तिनके तोड़ना, पैर हिलाना, दाढी पर हाथ फेरना आदि। हम इन्हें निरर्थक क्रियाएँ कह कर ध्यान भी नहीं देते है किन्तु इसके पीछे कुछ-न-कुछ कारण जरूर होता है।

---

1. मानविकी परिभाषिक कोश - पृ. 277 - 278.

2· निद्रा भ्रमण :-

कुछ लोग होते है जो सोने को अवस्था में उठ जाते है और जरूरी कार्य करके पुन: सो जाते है । ये कार्य अचेतन के माध्यम से होता है।

3· नामों का अचानक याद न आना :-

जब किसी व्यक्ति या चीज के बारे में याद करते है तो वह किसी भी हालत में याद नहीं आती है । क्योंकि वे अचेतन स्तर में वही छिपी होने के कारण अचानक स्मरण आते है ।

4· स्वतन्त्र साहचर्य :-(Free Association)

फ्रायड ने अचेतन के अस्तित्व को स्वतन्त्र साहचर्य को अवस्था पर भी देखा है । इसके द्वारा व्यक्ति अपने मन की सारी बातों को कह देता है। जिसका सम्बन्ध अचेतन से होता है ।

5· घबराहट :- Awareness

जब व्यक्ति घबराहट की स्थिति में रहता है तो वह उसके मन में छिपी हुई कई बातों को बोल देता है जो उसके अचेतन मन के स्तर में छिपा होता है ।

6• जागृतावस्था :-(Awakening)

कुछ व्यक्तियों में इतनी क्षमता होती है कि वे अपने महत्त्वपूर्ण कार्यों या समय के बारे में अपने-आप याद रखकर समयानुसार अपना कार्य करते भी है जैसे अगर व्यक्ति को रात के एक बजे भी किसी काम से बाहर जाना हो तो उसकी नींद अपने-आप खुल जाती है ऐसा जान कर आश्चर्य जरूर होता है । किन्तु अचेतन में कार्य के प्रति लगाव रहने के कारण ऐसा होता है । इसलिए यह जरूरी है कि अचेतन मन को पहचानने से अन्दर छिपी बातों को जाना जा सकता है ।

अवचेतन मन :-

चेतन और अचेतन स्तर के बीच को अवचेतन कहते है । यह ऐसा स्तर है जहाँ यादों, विचारों और कई ऐसी चीजों का ज्ञान होता है जिन्हे हम चेतनावस्था में जानते भी नही हैं । परन्तु उन्हें हमारी इच्छानुसार चेतन स्तर पर जब चाहे तब ला सकते है जिसे फ्रायड ने भी माना है । व्यक्ति जिन अनुभवों को याद करके अपने चेतन स्तर में लाता है वह दिमाग के इसी भाग में रहते हैं । यह बहुत सी आदतो से सम्बन्धित और अधिगमित कार्य को व्यक्ति मस्तिष्क के इसी स्तर में रखने में सहायता करती है क्योंकि इन सबको चेतन स्तर में रखना संभव नही होता है । उदाहरण के लिए परीक्षा में प्रश्न-पत्र हल करना हो, टाइपराइटर से टाइप करना हो, साईकिल या मोटर चलाना हो, इस प्रकार के कार्यों में अर्द्ध-चेतना मस्तिष्क से सहायता मिलती हैं ।

"उन मानसिक प्रक्रियाओं और धारणाओं का तात्कालिक रूप से सचेतन नहीं होती किन्तु चेतना के बहुत निकट रहती है और किसी भी क्षण उत्तेजना मिलने पर चेतना में आ सकती है, जैसे किसी समस्या के प्रस्तुत होते ही उससे सम्बन्धित अनेक स्मृतियों या विचार का चेतना में उभर आना । "[1]

1•6•1•3• मानसिक संरचना – इदम अहम और पराहम :-

फ्रायड अपने द्वारा बनाये गये सिद्धान्तों में ही कुछ सालों के बाद बदलाव लाये और उन्हें शल्य विज्ञान (Anatomy) की दृष्टि से तीन मूल व्यक्तित्व संरचनाओं में बांटा जिसे इदम (id) अहम (ego) और पराहम (super ego) कहा है ।

इदम

फ्रायड ने अपने व्यक्तित्व सिद्धान्त में इदम को शक्ति के रूप में महत्व दिया हैं । उनका मानना था कि यह जीवन व मृत्यु की मूलप्रवृत्ति का केन्द्र है साथ ही सारे मनोवैज्ञानिक शक्ति का मूल स्रोत है । दूसरे शब्दों में इदम को सही मानसिक सत्यता के रूप में माना जाता है । इसका कारण यह है कि बाहरी वास्तविकता से न होकर आन्तरिक जगत से होता है । इसकी उत्पत्ति बचपन में ही होती है और इसमें ही जन्मजात और वंशानुगत तत्व रहता है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए वंशानुक्रम का कार्य करती है । इस प्रकार फ्रायड

1• मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्दकोश – निर्मला –शेरजंग – पृ• 76

के अनुसार जन्म के समय बच्चे में पूर्ण रूप से इदम होता है । इसकी मुख्य रूप से विषय सामग्री कामशक्ति (Libido) से सम्बन्धित होती है और तुरन्त सन्तुष्टि का मार्ग चाहती है । इसका सम्बन्ध वास्तविकता से प्रभाव नही पड़ता और न ही भूतकाल का ही प्रभाव है ।

इसलिए इदम को इच्छाओं की जननी के रूप में माना जा सकता है । जो मनोवैज्ञानिक शक्तियों का मूल स्रोत होता है । और इसे तो स्थान, उचित-अनुचित, न्याय अन्याय आदि का ज्ञान भी नहीं होता है । वह केवल आनन्द की प्राप्ति का मार्ग मात्र ही चाहता है । उदाहरण के लिए बच्चे में इदम मात्र होने के कारण वह अपनी इच्छा की पूर्ति करना चाहता है वह वास्तविक कष्टों को बिलकुल देखना या सहना नहीं चाहता है ।

" प्राथमिक वासनाओं का केन्द्र फ्रायड के अनुसार मनुष्य के पशुत्व (animality) के सब गुण इसमें निहित हैं । इससे तात्कालिक सुख और सन्तोष की इच्छाओं का उद्दीपन होता है । इसमें शील, संयम, नैतिकता, सामाजिकता, वास्तविकता अर्थात् समय और स्थान का ज्ञान नही है । "

अहम

रिचर्ड डब्ल्यु - नैस Richard W. Nice के अनुसार

The ego is that portion of the Psyche which is in contact with the outside world on the one hand and the Id on the others. It attempts to keep thoughts, judgements, interpretation and behaviour practical and efficient in accordance with realistic living.
(A Handbook of Abnormal Psychology. p.71)

फ्रायड ने अहम की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह एक ऐसा स्तर है जो बाहरी वातावरण के साथ सम्पर्क स्थापित करता है और इसकी उत्पत्ति और विषय सामग्री भी बाहरी वातावरण के फलस्वरूप ही होती है । वास्तविकता के नियमों का पालन करता है किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि सुख-प्राप्ति के नियमों का विरोध करे । यह व्यक्ति के सभी सुखों की इच्छा को पूरा नहीं करता जिससे भविष्य में खतरों का सामना करना पड़े । यह अक्सर इच्छाओं और वास्तविकता के बीच एक सन्तुलन कायम करता है । इसलिए मन का मुख्य शासक कहा जाता है ।

अहम जीवन के अचेतन, अवचेतन तथा चेतन तीनों क्षेत्रों में विहार करता है । जब इदम यथार्थ के सम्पर्क में आकर परिवर्तित हो जाता है तब उसे अहम के रूप में जाना जाता है । यह बुद्धि या तर्क के आधार पर सजग भी रहता है इसलिए इदम की सभी तिरस्कृत इच्छाओं का दमन करता है । तभी मनुष्य में छिपी पशु-वृत्तियों को दबाने और समाज के अनुकूल चलने के काबिल मनुष्य को बनाता है और साथ कुछ इच्छाओं की पूर्ति भी करता है ।

फ्रायड के अनुसार " वास्तविक बाह्य-जगत के प्रभाव से इदम का एक अंश विशेष विकसित हो जाता है और इससे एक ऐसे संघटन का उद्भव होता है जो आगे चलकर इदं और बाहरी जगत के मध्य एक माध्यम का काम करता है । हमारे मानस जीवन के इस प्रदेश की अहम का नाम दिया जाता है । "[1]

1· असमान्य मनोविज्ञान के मूल सिद्धान्त - डा; लाम सिंह विनोद पुस्तक मन्दिर - तृ·सं· - 1978 - पृ· 154 - 155·

अंत में कहा जा सकता है कि अहम का नैतिकता अनैतिकता से सम्बन्ध नहीं होता बल्कि वह केवल इतना जानता है कि कार्य करने का यह उपयुक्त अवसर है या नहीं, अगर नहीं तो अवसर मिलने पर उन अनैतिक और सामाजिक कार्यों को भी कर लेता है। इसका कारण यह है कि यह समय और स्थान पर पूर्ण रूप से ध्यान रखता है।

परम अहम :-

व्यक्ति का नैतिक पक्ष का भार परम अहम था। नैतिक विवेक सम्भालता है। इसका विकास इदम और अहम से भी देर से होता है। बचपन में ही इसका भी विकास शुरू हो जाता है किन्तु इसे अहम के माध्यम से देखा जाता है। इसलिए बच्चा अपने माँ-बाप द्वारा दिये गये भले-बुरे उपदेशों आदि को अहम में सुरक्षित रखता है जो बाद में पराहम का रूप ले लेता है।

नैतिक विवेक या परमअहम का कार्य क्षेत्र भी अहम की तरह ही जीवन में अवचेतन और चेतन क्षेत्र होता है। इसमें एक मात्र अन्तर यह होता है कि पशु-तुल्य अविवेकी पक्ष नहीं होते हैं। नैतिक विवेक अहम का ही प्रतिफल होता है।

" अच्छे-बुरे, ऊँच-नीच, नैतिक-अनैतिक की विवेचना करने वाली चेतन मानसिक प्रक्रिया (conscious mental process) को फ्रायड ने सुपरईगो के नाम से मूर्तिमान किया है। पराहम में केवल विवेचना शक्ति

है प्रेरणा शक्ति (motivating force) नहीं । इसके निर्णय की अवहेलना करना संभव होता है, यद्यपि अवहेलना करने में मानसिक अशांति की संभावना है । सुपरईगो को प्रचलित भाषा में अन्त: करण (conscious) कहते हैं । " 1

रिचार्ड डब्ल्यू नाइस के अनुसार --

The super ego is that part of the psyche which has been termed the conscience. Its primary function is to make us behave like civilised human being. Thus it tries to hold the unreasonable out-bursts of the Id in check.

---

1. मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्दकोश - निर्मता पेरिजंग - पृ. 194.

2. A Handbook of Abnormal Psychology-Richard W.Nice

फ्रायड ने परम अहम को आदर्श अहम (ideal ego) माना है। इसका कारण यह है कि यह सभ्यता संस्कृति, धर्म, नैतिकता आदि से बहुत ही अधिक जुड़ा रहता है और इसका सम्बन्ध मुख्य रूप से उनसे होता है जिन आदर्शो या आचरणों को यह समाज तैयार करता है जिसके कारण व्यक्ति में पछतावे को भी देखा जा सकता है।

1·6·1·4· रक्षा युक्तियाँ :- (Defence Mechanism)

प्रत्येक व्यक्ति की प्रेरणाओं में हमेशा संघर्ष और अन्तर्द्वन्द्व चलता रहता है। जिसके कारण व्यक्ति का निजी सन्तुलन बिगड़ जाता है और यह संघर्ष सामान्य और असामान्य दोनों तरह के व्यक्तियों को करना पड़ता है। रक्षा युक्ति से व्यक्ति अपनी चिन्ताओं से मुक्ति पा सकता है और अनैतिक इच्छाओं की पूर्ति से अपने आप को मोड सकता है।

जीवन में किसी व्यक्ति के संघर्ष का सम्बन्ध चाहे चेतन स्तर से हो अचेतन से निश्चित ही वह व्यक्ति को अधिक परेशानी में डाल देता है और यह सहज है कि तनाव को हर व्यक्ति दूर करना चाहता है। जिसके लिए वह किसी भी मार्ग को अपनाता है जिससे वह चिंतित न रहें। इसलिए वह विकल्पो पर तर्क कर एक विशेष निर्णय में पहुँच जाता है जो वह हमेशा नही कर सकता है। इसका कारण यह कि व्यक्ति में कभी-कभी ऐसी इच्छाएँ पैदा होती है जो अहम और परह अहम को महत्त्व नही देता है। ऐसी स्थिति में दमन (repression) के माध्यम से बलपूर्वक इच्छा को अचेतन स्तर में दकेल दिया जाता है और इस तरह प्रबल इच्छाएँ अचेतन में रहती छुपी आपस में संघर्ष करती रहती है जिसके कारण कोई ऐसा मार्ग

निकाल ही आता है जिससे इच्छा की पूर्ति होने पर भी व्यक्तित्व पर कोई आक्षेप नही लगा सकता ।

इस प्रकार का सुरक्षात्मक प्रयास दोनो सामान्य और असामान्य व्यक्तियों द्वारा किया जाता है । अगर व्यक्ति जरूरत से अधिक मात्रा में रक्षा युक्तियो का प्रयोग करता है तो वास्तविकता से उसका सम्बन्ध अलग हो जाता है । वह असामान्य व्यवहार करने का आदी हो जाता है ।

फ्रायड के द्वारा दिये गये कुछ मुख्य मनोरचनाएँ इस प्रकार है जिसका सामान्य रूप से प्रयोग किया जाता है - दमन repression प्रतिगमन regression उदात्तीकरण sublimation युक्ति - करण rationalization प्रतिक्रिया-निर्माण reaction formation प्रक्षेपण projection और विस्थापन ।

मनोरचनाओ के प्रकार :-

मनोरचनाओ के दो प्रकार है - मुख्य और गौण । मुख्य के अन्तर्गत दमन, शमन अन्तर्बाधा, प्रतिगमन, रूपान्तर, उदात्तीकरण, युक्तीकरण और प्रतिक्रिया निर्माण आते है तो गौण में आत्मीकरण, प्रक्षेपण, अन्त क्षेपण, स्थानान्तरण, विस्थापन क्षतिपूर्ति, अतिपूर्ति, प्रत्याहार, कल्पना तरंग वास्तविकता से पलायन नकारात्मकता आदि ।

दमन

इस संसार में कुछ लोगों को छोडकर प्रत्येक व्यक्ति वास्तविकता से विमुख होना ही पसंद करता है और इससे बचने के लिए वह जो मार्ग अपनाता है उसी को दमन अन्तर्द्वन्द्वात्मक स्थितियों के प्रति कठिनाइयों दोषों, प्रेरणाओं आदि को स्वीकार नहीं करते है । वास्तव में ये लोग अपनी इच्छाओं को दमित कर देते हैं । उदाहरण के लिए डाक्टर ने किसी व्यक्ति से सिगरेट न पीने को कहा हो तो यह बलपूर्वक इच्छा को दमित करते हुए अपने मन को यह समझायेगा कि यह स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है ।

अत: दमन वह अचेतन प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने अनुभवों, घटनाओं इच्छाओं आदि को बाहर आने से रोकता है जो वह नहीं चाहता है कि वे उसके चेतन स्तर पर आये । फ्रायड ने दमन का पता लगा कर इसकी विशेषताओं को कुछ इस प्रकार बताया कि यह एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा चेतन मन के संघर्षों का समाधान होता है । अहम दु:ख या कष्टकर इच्छाओं को अचेतन मन में दमित कर देता है और व्यक्ति को इसका कुछ भी ज्ञात नहीं होता क्योंकि यह अचेतन स्तर में रहती हैं ।

दमन का चक्र हमेशा चलता रहता है चाहे व्यक्ति की इच्छा हो या न हो । क्योंकि मनुष्य में कुछ ऐसी जन्मजात प्रवृत्तियाँ होती है जिन्हे वह प्रदर्शन करना चाहता है । असुन्दर, अनैतिक और असामाजिक कामनाओं के संघर्ष के कारण दमन की इच्छा उत्पन्न करती हैं ।

फ्रायड के अनुसार दमन व्यक्ति का प्रश्न कामवृत्ति के प्रसंग में उठता है और अत्यधिक दमन के परिणामों से व्यक्ति मानसिक रोगों का शिकारी हो जाता है । फ्रायड के मानसिक रोग के सिद्धान्त में दमन की धारणा अत्यधिक महत्वपूर्ण है और बिना इसको समझे मानसिक रोग को समझाना कठिन है ।

दमन कि प्रक्रिया का प्रयोग करने की अदात पड जाने से इसे छुडाना बहुत ही मुश्किल होता है । किन्तु यह क्रिया अपने-आप ही जारी रहती है क्योंकि यह व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए सहायक के साथ हानि-कारक भी है ।

प्रतिगमन

यह एक ऐसी मनोरचना है जिसमें व्यक्ति किसी ऐसी घटना या कोई समाचार आदि को सुनने पर इस तरह से व्यवहार करने लगता है कि देखनेवाला भी आश्चर्य चकित हो जाता है कि यह व्यक्ति क्यों बच्चे की तरह बर्ताव कर रहा है । जैसे हाथ-पैर पटक पटककर रोना या चिल्लाना आदि । उदाहरण के लिए अगर किसी अफसर को अचानक इस्तीफा देने को कहा जाता है तो वह अपनी गलती को पहचानते हुए भी प्रतिगमन के स्तर पर पहुँच जाता है और अपनी उम्र, स्थान आदि को भूलकर जोर से सिर को पटक कर रोने लगेगा, साथ ही आस-पास रखी हुई चीजों को उठाकर फेंकने भी लगता है । यह जानते हुए भी कि इस तरह करने से उसका कुछ होने वाला नही है फिर भी वह इस प्रकार कर अपने दुख को कम करने को कोशिश

करता है। इस प्रकार व्यवहार करने का कारण यह है कि जब वह बचपन में हाथ पैर पटककर रोता था, तो उसकी इच्छाओं की पूर्ति उसको माँ के द्वारा तुरन्त हो जाती थी। इसलिए आदत से मजबूर होने के कारण वह उसी तरीके को अपनाता है।

साधारण शब्दों में अगर कहा जाये तो प्रतिगमन में व्यक्ति अपनी शैशवावस्था में पुन: लौट जाता है। अर्थात् वह शैशवकालीन अपरिपक्व (immature) व्यवहार का प्रदर्शक करता है। व्यक्ति की इच्छा पूर्ति न होने के कारण ही एक प्रकार का संघर्ष उत्पन्न होता है और इससे बचने के लिए ही वह प्राथमिक अवस्था में लौट जाता है।

मॉरगन के शब्दो में --

'Regression is the tendency to solve the problems of life by reverting to childhood

उदात्तीकरण

मनुष्य को अनेक इच्छाएँ सामाजिक मार्यादाओ के कारण पूरी नही हो पाती हैं तब वह इस मनोरचना के माध्यम से उन असन्तुष्ट इच्छाओ को समाज द्वारा मान्य तरीको से पूरा करना चाहता है। इस तरह के कई उदाहरण देखने को मिल जाते है। जैसे हिन्दी के महाकवि तुलसीदास को

The Psychology of Abnormal People - Morgan

अपनी पत्नी से बहुत ही अधिक प्रेम था किन्तु वह एक गुरू के रूप में उनको ईश्वर से प्रेम करने के लिए उपदेश देती है और इस उपदेश को अत्यधिक महत्व देने के कारण ऐसी रचनाओं का सृजन किया कि आज भी उनको लोग बडी श्रद्धा के साथ याद करते हैं ।

इसका कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसमें किसी प्रकार की कमी न हो और अगर है तो वह केवल समाज के कारण जो जबर्दस्ती दमित हो जाती है । इन दमित इच्छाओं के कोई उदात्त रूप के कार्य द्वारा परिवर्तित होना स्वाभाविक है । अक्सर यह देखा जाता है कि पढ़ाई मे तेज छात्र खेल-कूद की ओर अधिक रूचि नही दिखलाता हैं ।

उदात्तीकरण की परिभाषा कुछ इस प्रकार " अज्ञात मन की एक वाहानीय कार्य पद्वति जिसके कारण काम-शक्ति (libido) जैसी दशा ले लेती है जो अकामुक हो, सामाजिक दृष्टि से उपयोगी हो, नैतिक हो और सांस्कृतिक और, कलात्मक दृष्टि से श्रयस्कर हो । उदात्तीकरण का मुख्य प्रयोजन है कि कामशक्ति का ह्रास प्रकृत वर्ग के क्रिया व्यापार में न होने पावे । जिस व्यक्ति ने बाल्यावस्था से ही उपयुक्त शिक्षा पाई है उसकी कामशक्ति सरज ही अनजाने में परिमार्जित हो जाती है और व्यक्ति सुसंस्कृत अर्थ करता हैं । इसका प्रमाण कला और धर्म है । [1]

---

1. मानविकी परिभाषा कोश - 1968 - पृ॰ 262 - 263॰
Richard W. Nice: A Handbook of Abnormal Psychology p.8 - 'Sublimation is the transformation of an instinct into something useful'

युक्तिकरण

प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह सम्भव है कि वह परिस्थिति के अनुसार प्रत्यक्षीकरण कर अन्तर्द्वन्द के उत्पन्न होने से बच सकता है । फ्रायड के सिद्धान्त के अनुसार इदम् से सम्बन्धित आवेग में परम अहम आवेगों के साथ अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है ।

इस मनोरचना के द्वारा व्यक्ति अपने दोषों, त्रुटियों और असफलताओं को छिपाने के लिए बेहतरीन तर्क देता है जिसके कारण यथार्थ छिपा रह जाती है । उदाहरण के लिए दो दोस्त किसी नौकरी के साक्षात्कार के लिए गये और परीक्षा में अच्छा न करने के कारण नौकरी नहीं मिली । इस बात पर उनको दुख होने पर भी इसे न दिखा कर संस्थान के प्रति ही उलटी-सीधी बाते कहते है । इस तरीके से अपनी क्षमताहीन भाव को दबा देते है ।

अपने असंगत व्यवहार तथा असफल क्रियाओं का युक्तिपूर्ण स्पष्टीकरण यह दुष्कृत-भाव (guilt feeling) या हीन भावना बचने का एक अचेतन प्रयास है । व्यक्ति को अपनी युक्तियों पर विश्वास रहता है । " खट्टे अंगूर, सहज पके तो मीठा हो " ।

प्रक्षेपण या आरोपण

फ्रायड के अनुसार, प्रक्षेपण के माध्यम से व्यक्ति अपराध भावना से छुटकारा प्राप्त करता है[1]।

1· मानविकी पारिभाषिक कोश – पृ· 762·

अरोपण युक्तीकरण से अलग होता है इस मनोरचना के द्वारा व्यक्ति अपनी कमियाँ, गलतियाँ या दुर्बलताओं को पहचानने से इन्कार कर देता हैं। व्यक्ति अक्सर अपनी गलतियों को दूसरों पर आरोपित कर निन्दा करता है। जैसे बेटमेण्टन में जीतने के बाद खिलाड़ी अपने रैकिट को चूमता है मानों उसके जीतने का कारण केवल उसकी रैकिट हो।

पेज के अनुसार अपनी प्रवृत्तियों एवं गुणों को दूसरो पर आरोपित करना एवं देखना प्रदोपना कहलाता है। "1

अत: प्रक्षेपण एक प्रकार की रक्षा युक्ति है जिसमें व्यक्ति अपनी गलती को किसी दूसरे पर आरोपित करता है। इसके कई उदाहरण मिल जाते है जिसमें व्यक्ति इस रक्षा युक्ति को प्रयोग करता है जैसे इस वाक्य में " मै उससे नफरत नही करता है वह तो खुद ही मुझ से नफरत कर रहा है। असल में बात यह है कि जो व्यक्ति दूसरे से सही में नफरत करता है वह इस बात को कभी भी नही कह पाता है जिसके कारण वह घुमा-फिरा कर उसी को दोषित करता है।

फ्रायड का कहना था कि प्रक्षेपण के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी अपराध भावना से छुटकारा प्राप्त करता है क्योकि वह मन को झूठी दिलासा देकर ही सत्य को छिपा देता है। इस मनोरंचना के प्रयोग कर कई तरह की मनो भावनाओं को बदला जा सकता है।

---

1. असमान्य मनोविज्ञान के मूल आधार - पृ. 198.

विस्थापन Displacement

जब किसी कारण वश इदम की किसी माँग को पूर्ति न होने पर व्यक्ति इच्छा, पूर्ति के लिए दिशा परिवर्तन करता है । उसे विस्थापन कह सकते हैं । पेज के अनुसार " यह वह मनोरचना है जिसमें किसी विचार या वस्तु से सम्बन्धित संवेग किसी अन्य वस्तु या विचार या विचार पर स्थान्तरित हो जाता है । "[1]

सामान्य रूप से विस्थापन सभी लोगों के जीवन में किसी-न-किसी रूप में अवश्य दिखाई पड़ता है । इनसे सामान्यत: कोई हानि नहीं होती परन्तु अधिक सीमा तक विस्थापन होने पर मानसिक रोग से पीड़ित होने का भय लगा रहता है । अचेतन मन में छिपी हुई दमित और कुण्ठत इच्छाओं को विस्थापन के द्वारा प्रकट किया जाता है । यह दमित इच्छाओं और दमन करने कि शक्ति के बीच एक प्रकार का समझौता लगता हैं।

उदाहरण के लिए पिता अगर अपने बेटे पर गुस्सा उतारने के लिए मारता है तो बच्चा अपना गुस्सा पिता पर होने पर भी उनको कुछ नही कर सकता है जिसके कारण वह अपने से छोटे भाई-बहन को मारता है या उनके खिलौने छीन लेता हैं ।

1· आधुनिक समान्य मनोविज्ञान - पृ· 444·

मनोविज्ञान कोश के अनुसार " सन् 1900 में फ्रायड ने इस शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ से किया । विस्थापन एक मानसिक कार्य पद्धति है जिसमें अज्ञात मन की सम्पूर्ण या आंशीक इच्छा-कल्पना मूल विषय-वस्तु से हटकर अन्य विषय-वस्तु से जुटती है जो मूल विषय-मान्य रूप से स्थानापन्न कर सके । इससे संवेग-भाव का सम्बन्ध मूल वस्तु से न रहकर अन्य वस्तु विषय पर स्थानान्तरित हो जाता है । मनोग्रस्ति (obsession) में इससे सम्बन्धित कई उदाहरण मिल जाते हैं । "[1]

1.6.1.5
अन्य मनोरचनाएँ

आत्मीकरण या तादात्म्य (Identification)

रक्षा युक्ति सिद्धान्तों में यह उस प्रकार की मनोरचना है जिसमें व्यक्ति दूसरे व्यक्तित्व में अपने-आप को डाल कर देखता है । उसे जान कर खुशी भी होती है कि उसमें और दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व में बहुत समानता है । इतना ही नहीं जब व्यक्ति उपन्यास या नाटक पढ़ता है या चलचित्र देखता है तो किसी-न-किसी पात्र से तादात्मय स्थापित कर लेता है जिससे उसका चरित्र, स्वभाव मिलता-जुलता हो । कुरुप लोग अथवा प्रभावशाली व्यक्तित्व से रहित लोग चलचित्र जगत के सितारों की या अन्य महान व्यक्तियों की नकल करके अपनी कमियों को दूर करने की कोशिश करते हैं जिससे उनकी कमी दूर होने के साथ समाज में उनको स्थान भी मिले ।

---

1. मानविकी पारिभाषिक कोश — P. No. 90

इस मनोरचना में व्यक्ति के साथ आत्मीकरण करता है तो तादात्म्य करने वाले व्यक्ति से प्रेम या नफरत करता है । प्रेम इसलिए क्योंकि जिस व्यक्ति से आत्मीकरण करता है वह प्रख्यात या सम्माननीय व्यक्ति होता है और उस व्यक्ति के साथ उसका भी महत्व बढ़ जाता है । और नफरत इसलिए होती है कि दूसरे व्यक्ति की तुलना में उसमे कमिया है । जैसे योग्यता या सुन्दरता आदि इसी कारण ईर्ष्या से नफरत पैदा होती है । इस मनोरचना के द्वारा व्यक्ति के मन में यह भावना तो अवश्य जागृत होती है कि उसे अपनी कमियों को दूर करना है साथ ही यह सोचता है कि काश मैं उस व्यक्ति के जैसा होता तो ।

कई मनोविश्लेषकों ने तादात्म्य की परिभाषा दी है जैसे Brown के अनुसार 'Identification refers to the mechanism through which a person attempts to mould his own ego or self after that of someone else or believes himself to have some other person's personality." [1]

क्षतिपूर्ति (Compensation)

व्यक्तिगत या सामाजिक वास्तविकता से या सिर्फ कल्पना मात्र से जो हीनता भाव को दूर करने के लिए कार्य किये जाते है उसे क्षतिपूर्ति कहते है ।

---

1. असामान्य मनोविज्ञान की मूल आधार - पृ. 196
Ibid. P. North

कोलमैन के अनुसार इस मनोरचना के द्वारा अवांछनिय लक्षण को व्यक्ति अपनी हीनता और अनुपयुक्ता के लक्षणों से अपनी सुरक्षा करता है। इस मनोरचना को समझाते हुए कोलमैन ने कहा है कि --

Compensatory reactions are defence against feeling of inferiority and inadequacy growing out of real or imagined personal defects or weaknesses as well as out of our invisible failures and setback".

किसी शारीरिक या मानसिक कमजोरी की पूर्ति के लिए अथवा कुण्ठा पर विजय पाने के लिए किसी विशेष रीति या क्रिया को व्यक्ति अपनाता है। यह क्षति पूरक प्रक्रिया चेतन या अचेतन दोनों प्रकार से संभव है।

क्षतिपूर्ति के माध्यम से व्यक्ति अपनी हीनता की रक्षा करता है यह एक प्रकार की समयोग प्रवृत्ति है जिसके माध्यम से व्यक्ति में हीनता, विफलता उत्पन्न होती है। उन्हे अन्य संतोषजनक स्थिति के साथ चेतन या अचेतन रूप से पूर्ति करता है। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति किसी एक क्षेत्र में असफल हो तो उस हीनता को छिपाने के लिए वह किसी अन्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। जैसे कि डेनोस्थनीज ठीक ढंग से बोल नहीं पाता था। वह हकलाता था किन्तु बाद में वह अपने इस शारीरिक दोष को पहचान गया और कठिन परिश्रम के फलस्वरूप एक प्रसिद्ध वक्ता बन गया यहाँ चेतन और अचेतन रूप से इस शारीरिक दोष को दूर किया है जिसे

---

1. आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान - पृ. 444.

इच्छित क्षतिपूर्ति के नाम से जाना जाता है और अगर व्यक्ति अपनी शारीरिक दुर्बलता की पूर्ति बौद्धिक क्षेत्र में विशेष योग से प्राप्त करता है तो यह क्षति - पूर्ति परोक्ष रूप से होती है ।

प्रत्याहार (Withdrawal)

जब व्यक्ति अपने आप यह मान कर चलता है कि वह किसी स्थिति में असफल या आलोचना का पात्र बनेगा तब उसके मन में भय उत्पन्न होता है । ऐसे व्यक्ति उज्जालु एकाकी और भीरु स्वभाव के होते है । इस अवस्था को बड़ों में कम और बालकों में ज्यादा देखा जा सकता है । इस प्रकार का व्यक्ति किसी कार्य में रुचि नहीं लेता क्योंकि उसकी बुद्धि दुर्बल होती है । इसीलिए ऐसे व्यक्ति अक्सर यह कहते है कि " मैं यह काम करना नहीं जानता यह काम कठिन है किन्तु इस तरह के लोगों को ठीक करने के लिए केवल प्रोत्साहन या अच्छी शिक्षा की आवश्यकता होती है ।

वास्तविकता से पलायन (Reality Evasion)

इस तरह की मनोरचना में व्यक्ति अपने चारो ओर के वातावरण को परवाह नहीं करता है । अपनी अच्छाई मात्र सुनने के लिए तैयार रहता है किन्तु आलोचना आदि के लिए हमेशा कान बंद रखता है । इस तरह के व्यक्ति वास्तविकता से कोई वास्ता नहीं रखते है । इस लिए ऐसे व्यक्ति अपनी आलोचना सुनने को तैयार नहीं होते हैं । सामान्य तौर ऐसे व्यक्ति

किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से जी चुराते है । इसी कारण वे समय पर कभी कोई काम भी नहीं कर पाते है ।

इस मनोरचना के प्रयोग से व्यक्ति हमेशा असुखद वास्तविकताओं से बचने का उपाय खोजता है । इस तरह करने से खतरों का समाधान तो अवश्य नहीं होता है बल्कि वह मानसिक रोगी हो जायेगा । इस लिए व्यक्ति को चाहिए कि वह वास्तविकता के जो भी जीवन में परेशानियाँ आती है उनको निडर होकर सामना करे ऐसा करने पर ही व्यक्ति का भला हो सकता है । " मनोविश्लेषण वाद के अनुसार वास्तविकता का चेतन आभास अर्थात् परिवेश की यथार्थता और महत्व को समझना अपनी इच्छाओं को नियंत्रित रखना तथा उन्हें परिवेश के अनुकूल बनाना, इद (Id) की वासनाओं के निरूपण और उदात्तीकरण में इसका विशेष हाथ है ।[1]

नकारात्मकता (Negativism)

इस प्रकार की मनोरचना में व्यक्ति किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति नकारात्मक भाव पैदा कर लेता है । इस प्रकार की प्रवृत्ति बच्चों में भी देखने को मिलती है । वे केवल उन्हीं कार्यों को करते है जो उनके माता-पिता करने से मना करते है । इसका कारण यह है कि बच्चा सोचता है कि इस प्रकार करने से वह अपने बड़ो की आज्ञा का विरोध कर रहा है । दूसरों के द्वारा कथित अथवा निर्दिष्ट बातों का कड़ा विरोध करने की प्रवृत्ति कभी-कभी

---

1. मनोविज्ञान का परिभाषिक कोश - पृ. 162.

इतनी बढ़ जाती है कि व्यक्ति से जो कहो वह उसका उलटा करने लगता है । यह सामान्य § सभी बातों का विरोध § अथवा विशिष्ट § कार्य-विशेष का विरोध § दोनों ही रूपों में होता है । यह मानसिक रोग का एक प्रमुख लक्षण है । "[1]

1·6·1·6· मनोलैंगिक विकास (Psycho Sexual Development)

यह माना जाता है कि सामान्य व्यवहार की अपेक्षा असामान्य व्यवहार में लिंग का महत्व अधिक रहता है । इससे सम्बन्धित इच्छायें भी अधिक प्रबल होती है जिसके कारण सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है । इसका महत्व मात्र जीवन से न होकर मनोविज्ञान से भी जुड़ा होता है ।

फ्रायड़ की मान्यता है कि अगर केवल साधारण रूप से मनोलैंगिक विकास होता है तो आगे चल कर किसी भी रूप में व्यक्तित्व को हानि नहीं पहुँचती है किन्तु किसी भी स्तर में परिवर्तन हो तो व्यक्ति का विकास असाधारण रूप से होगा जिससे व्यक्तित्व में विकृति का उदय होता है ।

मनोलैंगिक विकास के विभिन्न स्तर --

1· मानविकी पारिभाषिक कोश - पृ· 184·

1. मौखिक अवस्था Oral Stage
2. गुदा अवस्था Anal stage
3. शैश्नावस्था Phallic stage
4. अव्यक्तता अवस्था Latency stage
5. जनन अवस्था Genital stage

मौखिक अवस्था

फ्रायड के अनुसार मनोलैंगिक विकास की प्रथम अवस्था मौखिक है । खाने की क्रिया में उपयोग होठ और अन्य मुख से सम्बन्धित अंग होते है । इस अवस्था के दो रूप होते है - चूषण स्तर (sucking stage) और काटना या दर्शन स्तर (biting stage) है ।

इस अवस्था को दो उपस्थाओं में बच्चे अपने काम शक्ति की संतुष्टि मुख, होंठ और जीभ के द्वारा चूस कर और निगल कर करते है । इस अवस्था के बच्चे का व्यक्तित्व पूर्णत: इद से प्रभावित होता है जो सुखवाद सिद्धांत से प्रभावित होता है । अगर कोई बचपन में इस अवस्था में स्थिर हो गया तो आगे के जीवन में उसके व्यक्तित्व में इन संदर्भों को देखा जा सकता है । जैसे - खाने, पीने, धूम्रपान या चुम्बन क्रिया में अधिक लिप्त होता है । स्वभावत: अगर इस प्रकार नहीं हुआ तो वह आगे के जीवन में आशावादी और निर्भर स्वभाव के व्यक्तित्व का होगा । मौखिक आक्रमणकारी स्थिति में बच्चे का दांत निकलता है जिसके कारण बच्चा माँ से प्यार और नफरत भी करता है, जो बच्चा इस स्तर में स्थिर हो जाता है वह बहुत बहुत ज्यादा ही निराशावादी, विरोधपूर्वक, जबर्दस्ती अतिक्रमण करने वाला होगा । साथ ही प्रति चीज को व्यक्तिपूर्ण और व्यंग्यपूर्वक देखता है और हृदय को हिला देने वाली बात करता है ।

गुदा अवस्था

यह मनोलैंगिक विकास को द्वितीय स्तर है। फ्रायड के अनुसार इस अवस्था में लैंगिक आनन्द मुख से हटकर गुदा में आ जाता है। गुदा को त्यागने की अवस्था से शिशु मल मूत्र त्यागने में लैंगिक आनन्द का अनुभव करता है। इसका कारण है शारीरिक तनाव की दूरी और आराम की प्राप्ति।

इस संदर्भ में एक और बात महत्त्वपूर्ण यह है कि माता-पिता इस अवस्था को अधिक ध्यान देने के कारण बच्चा यह समझने लगता है कियह कोई काफी महत्त्वपूर्ण क्रिया है इसके फलस्वरूप वह कभी-कभी मलमूत्र को अधिक देरी तक धारण करने की क्रिया की शुरू आत करता है। सुलीवान के अनुसार इस अवस्था में बच्चा शक्ति और सुरक्षा का साधन खोज लेने के कारण वह अपनी शक्ति प्रदर्शन का मार्ग बना कर बार-बार पिता को तंग करने लगता है। इस अवस्था के भी दो स्तर होते है एक तो गुदा अतिक्रमण (anal aggresive) और दूसरा गुदा धारण शील (anal retentive)

गुदा अतिक्रमण के समय व्यक्ति अगर स्थिर हो जाता है तो व्यक्ति जबर्दस्ती अति क्रमणकारी होता है और क्रूर स्वभाव बदमाश नाशकारी और बहुत गुस्से वाला होता है। अगर गुदा धारणशील के स्तर में स्थिर होने पर व्यक्ति बहुत हठी और कंजुस होता है।

शैशनावस्था

शैशनावस्था का प्रारम्भ प्राय: तीन से चार वर्ष की अवस्था से प्रारम्भ होता है तथा यह सात वर्ष तक चलती है । इस अवस्था मे बच्चे की रूचि का केन्द्र उसकी जननीन्द्रियाँ होती है । इस अवस्था में उसे सुख-प्राप्ति गुदा से न होकर जननेन्द्रिय से होती है । इस अवस्था में बच्चा स्पर्श और प्रदर्शन प्रवृत्ति से आनन्द की प्राप्ति करता है ।

इस अवस्था में लड़का माता से और लड़की पिता से अधिक आकर्षित होते हैं जिसके कारण उनमें मातृ-मनोग्रन्थि (oedipus complex) और पितृ-मनोग्रन्थि (electra complex) का विकास हो जाता है ।

अव्यक्त अवस्था

मौखिक, गुदा और शैशनावस्था के स्थर में कुछ स्थिति और संघर्ष जो मनोलैंगिक विकास में आते है जो बचपन में होने पर भी आगे के जीवन में व्यक्तित्व पर अपना गहरा प्रभाव होता है । व्यक्ति की संरचना मे इद, अहम और पराहम पूर्ण रूप से विकासमान होता है । इस अवस्था में जिज्ञासा अधिक रहती है । साथ ही बहिर्मुखी रुचि पायी जाती है और काम-वासना का उदात्तीकरण हो जाता है । क्योंकि शैशवकालीन दमित लैंगिकता शिक्षा के रूप में प्रकट होती है । यह समय बिलकुल उचित होता है जब बच्चे में कुछ अच्छी-से-अच्छी आदतें और रूचियों को विकसित किया जा सकता है । जैसे शिल्पकला और संगीत कला आदि ।

जनन अवस्था

यह मनोलैंगिक विकास का चौथा और अन्तिम स्तर है । इस अवस्था में शारीरिक परिपक्वता को देखा जा सकता है । अगर व्यक्ति किसी भी मनो - लैंगिक विकास के स्तर में स्थिर नहीं हुआ तो वह आगे के जीवन में विकृतिहीन होगा ।

फ्रायड ने बचपन में बीते हुए दिनों को बहुत महत्वपूर्ण माना । उनका कहना था कि आगे का जीवन पूर्ण रूप से बचपन में बीते हुए दिनों पर ही निर्भर होता है । इस अवस्था में पहुँचे हुए व्यक्ति का व्यवहार आदि से, उसके बचपन के बारे में बताया जा सकता है ।

स्वप्न सिद्धान्त :

फ्रायड ने स्वप्न सम्बन्ध के सिद्धान्तों को भी निरूपित किया है जो आगे एडलर और युंग के सिद्धान्तों के साथ इनका भी विस्तार रूप से दिया गया है ।

1·6·2· एडलर का वैयक्तिक मनोविज्ञान

व्यक्ति समाज का एकमात्र अंश है । अगर व्यक्ति न हो तो समाज का निर्माण ही नहीं हो सकता है । समाज का उत्तम रूप और पूर्णता का कारक व्यक्ति है । कुछ आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति के महत्व को दृष्टि में रखकर

उसकी मानसिक रचना तथा विभिन्न प्रवृत्तियों का विशद विश्लेषण किया है। एडलर का इन मनोवैज्ञानिकों में महत्वपूर्ण स्थान है।

फ्रायड ने व्यक्ति की मानसिक रचना तथा अचेतन पर विशेष बल दिया परन्तु एडलर ने व्यक्ति को प्रमुख माना है। एडलर ने इसी भावना से प्रेरित होकर अपने द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त का नाम " व्यक्ति-मनोविज्ञान (individual psychology) रखा है।

वे व्यक्ति की वंश-परम्परा तथा वातावरण को मुख्य मानते हैं परन्तु प्रमुखता व्यक्ति को ही दी है। उनके अनुसार व्यक्ति में एक प्रकार की रचना-शक्ति विद्यमान रहती है। जिसके द्वारा वह अपना मनोविकास करता है। एडलर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति रचना शक्ति की दृष्टि से अनुपम है। वंश परम्परा तथा वातावरण के साथ-साथ वह रचना-शक्ति को भी व्यक्ति के विकास में समान रूप से सहायक मानता है। रचना-शक्ति निरन्तर गतिशील रहती है। अपनी समस्याओं का समाधान व्यक्ति रचना-शक्ति की गतिशीलता के कारण ही करता है।

एडलर के अनुसार वातावरण बालक को बहुत हद तक प्रभावित करता है। इस आधार पर ही बालक अपनी जीवन-शैली की स्थापना करता है। व्यक्ति के विकास की नींव जीवन-शैली पर ही आधारित है। जीवन में प्राप्त अनुभवों के कारण ही व्यक्तित्व मुखरित होता है।

एडलर के प्रमुख सिद्धान्त

रचनात्मक शक्ति (Creative Powers)

एडलर ने रचनात्मक शक्ति को व्यक्तियों में अन्तर का मूल कारण माना है। यह रचनात्मक शक्ति गतिशील(dynamic) होती है तथा व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती है। एडलर ने रचनात्मक शक्ति की गति के सम्बन्ध में कुछ नियम भी बताए है जैसे किसी समस्या के उत्पन्न होने पर व्यक्ति गति के नियम की सहायता से दूर करने का प्रयास करता है। सामान्य तौर से देखा जाये तो बच्चा यह महसूस करता है कि उसकी चारों ओर के वातावरण जिसमें वह पल रहा है वहाँ के लोग उससे बहुत शक्तिशाली है। इसलिए वह अपनी जरूरतों की पूर्ति करने के लिए बड़ों पर आश्रित रहता है और वह हमेशा कोशिश करता है कि उसकी कमियों को वह दूर कर सके ताकि वह भी औरों की तरह अपना काम कर सकें। वह सर्वप्रथम अपने माँ-बाप को खुश करने के लिए उन्हीं कार्यों को करेगा जिनसे उनको खुशी होती हो। इस तरह कर वह अपनी निर्बलता को दूर कर एक प्रकार की शक्ति को प्राप्त करता है जिससे वह समस्याओं का हल ढूँढ निकलता हैं।

हीन-भावना ग्रन्थि (Inferiority Complex)

फ्रायड ने शैशवकालीन कैनिकता पर अधिक बल दिया जिसे एडलर ने विरोध किया। क्योंकि उनका मानना था कि हीन-भावना, जो व्यक्ति में कई कारणों से उपजती है वही महत्वपूर्ण है। यह देखा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी प्रकार से हीन भावना का शिकार होता है जो आगे

चलकर ग्रन्थि के रूप में परिवर्तित हो जाता है । व्यक्ति इस भावना को हटाने के लिए कोई ऐसा तरीका अपनाता है जिससे वह ग्रन्थि हीन हो । इस ग्रन्थि का उद्‌भव कई कारणों से होता है । जिसमें आंगिक-हीनता भी एक है । इसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों से शारीरिक दृष्टि से हीन होता है । उदाहरण के लिए सुकरात जो एक महान, बुद्धिमान व्यक्ति थे, वे बड़े ही कुरूप थे तथा उनकी पत्नी से सदैव लड़ाई होती थी । इस के बवजूद भी वे एक महान दर्शनिक बने ।

एडलर के अनुसार बच्चा बचपन से ही अपनी दुर्बलताओं और कमियों की ज्ञान प्राप्त कर लेता है और इनकी क्षतिपूर्ति के लिए प्रयास करता है । बहुधा व्यक्ति कम-से-कम प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसकी क्षतिपूर्ति के लिए प्रयास करता है । एक बालक जिसमें किसी तरह की कमी होने के कारण उसने बचपन में बहुत अत्याचार को सहन किया हो तो वह अपनी दुर्बलता और असहा - यता की रक्षा के लिए वह आगे के जीवन में कुछ ऐसे पद को प्राप्त करेगा जिससे उसकी कमियों का फायदा कोई उठा न पाये । एडलर के अनुसार व्यक्तित्व विकास में सामाजिक वातावरण का सबसे अधिक महत्त्व होता है । व्यक्ति में अगर कोई समस्या आती है तो वह केवल हीनता ग्रन्थि के कारण ही । अगर व्यक्ति हीन भावना को क्षतिपूर्ति करने में सफल हो गया तो वह बेहतर व्यक्ति बन जाता है किन्तु इस प्रकार न हो तो व्यक्ति में हीनता भाव और अधिक बढ़ जाती है । एडलर का मानना था कि व्यक्ति उच्चता प्राप्ति के प्रयास में अक्सर बीच का रास्ता निकालता है और ऐसी दिशा को अपनाता है जो अपने लिए उचित हो ।

हीनता-ग्रन्थि और श्रेष्ठता-ग्रन्थि एक-दूसरे के पूरक हैं। शाब्दिक अर्थानुसार दोनों शब्द का अलग अर्थ है किन्तु मनोवैज्ञानिक की दृष्टि से ये दोनों एक दूसरे में अन्तर्निहित हैं। एक ही व्यक्ति में इन दोनों ग्रन्थियों को पाया भी जाता है। जैसे कि अगर किसी व्यक्ति में हीन-भावना हो तो वह ऐसे काम करेगा जिससे इस ग्रन्थि से वह बच पाये और लोग उसे पहचाने। इन दोनों ग्रन्थियों के अत्यधिक विकास से व्यक्ति मानसिक रोगी भी बन सकता है।

एडलर के अनुसार हीनता ग्रन्थि के उत्पन्न होने के तीन कारण है जो बचपन से ही चली आती हैं - 1. विकलांग हीन भाव 2. बिगड़ा हुआ (अधिक लाड़-प्यार से) और 3. उपेक्षित किया गया।

हीन भाव को लगातार सहन न कर पाने पर वह दूसरी ग्रन्थि का विकास करता है जो महद्भाव है।

महद्भाव (Superiority Complex)

जिस व्यक्ति में हीन भावना होती है वह हमेशा ऐसी क्षमता हासील करने की कोशिश करता है जिसके कारण वह शारीरिक बल के द्वारा या बुद्धिमानी से या कोई विशिष्ट कुशलता आदि की आड़ में अपनी कमियों को छिपाने की कोशिश करता है।

यह निश्चित है कि जो व्यक्ति में महदभाव का होगा वह बढ़ा-चढ़ा कर बोलने वालों में होगा, स्वभाव से घमंडी, अहंवादी और तीखी बातों को करने वाला व्यक्ति होगा। जिससे सामने वाला व्यक्ति यह सोचने में मजबूर हो जाता है कि इस व्यक्ति को अपने बारे में कितनी नीच भावना है तभी दूसरों को नीचा कर अपने को महत्त्वपूर्ण-मानने में संतुष्टि प्राप्त कर रहा है।

महदभाव की परिभाषा - " आत्मप्रदर्शन (self-display) पर अत्यधिक बल, अपने वास्तविक या कल्पित गुणों का विशेष बखान। इसके मूल में प्राय: हीनता ग्रन्थि होती है। यह अपनी कमजोरियों को छिपाने तथा उन्हें अपनी और दूसरों की दृष्टि से बचने का एक अचेतन प्रयास है। " 1

उच्चता या महत्ता प्राप्ति प्रयास (Sriving for Superiority)

एडलर ने यह माना और दिखलाया भी कि अगर व्यक्ति में महदभाव पाया जाता है तो वह केवल उसमें छिपे हुए हीन भाव के कारण ही व्यक्ति अपने-आप को आगे बढ़ने और क्षमता को सुधारने में सफल होता है। परन्तु यह प्रश्न उठता है कि व्यक्ति आखिर अपने-आप को कहाँ ले जाना चाहता है, वह किस पद को या चीज को हासिल करना चाहता है जो कि वह लगा-तार बढ़ता ही जा रहा है। यहाँ यह एक मौलिक प्रश्न उठता है कि वह

---

1. मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्दकोश - निर्मला शेरजंग - पृ. 194

कौन-सा अन्तिम लक्ष्य है जिसे व्यक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करता रहता है । एडलर का यह प्रयास रहा कि वे इस प्रश्न का उत्तर खोज सके । सर्व प्रथम उनका मानना था कि आक्रमकता के कारण व्यक्ति इस तरह का व्यवहार करता है किन्तु बाद में उन्होंने शक्ति-प्राप्ति की इच्छा (will to power) से लक्ष्य को हासिल करने के लिए व्यक्ति उच्चता प्राप्ति का प्रयास करता है । गहन अध्ययन के पश्चात एडलर ने यह मान लिया कि प्रत्येक व्यक्ति मे उच्चता की प्राप्ति का प्रयास जारी रहता है वह केवल आक्रामकता, शक्तिशाली और सबसे महान बनने के लिए मात्र होता है । आगे उनका मानना है कि यह प्रयास जन्म से ही व्यक्ति में पाया जा सकता है ।

जीवन शैली Style of Life

एडलर के अनुसार बच्चा जब करीब पाँच साल का हो जाता है तो उसमें जो हीनता भाव रहते है उन पर वह विजय प्राप्त कर लेता है । इसे करने के लिए वह ऐसी जीवन-शैली का निर्माण करता है जिससे उसका जीवन कमियों से रहित हो जायें । एडलर का यह मानना था कि इसी स्तर पर बच्चा अपने जीवन के लक्ष्य को भी निर्धारित कर लेता है और आगे के जीवन में उसका व्यवहार इसी पर आधारित रहता है । उनका मत था कि जीवन शैली का निर्धारण बच्चे की शुरुआत के वातावरण, पारिवारिक रूपरेखा, हीनता की भावना का स्वरुप आदि पर निर्भर करता है क्योंकि ये सदा

निर्धारिक प्रत्येक परिवार में एक समान नहीं होते हैं। इसी कारण हर एक बच्चा दूसरे बच्चे से अलग महसूस करता है। इसलिए जीवनशैलियाँ भी अलग होती है।

साधारण तौर पर व्यक्ति केवल ऐसे कार्य करने का लक्ष्य निर्धारित करते हैं जिससे खतरा और असफलता का सामना न करना पड़े। इस तरह के व्यक्ति सामाजिक नियमों का पालन करने के कारण उनके जीवन में सुख अधिक होता है। ऐसे व्यक्ति में अगर हीनता की भावना है तो वे अधिक परिश्रमी होते हैं। इस तरह व्यक्ति कमजोरी के फलस्वरुप श्रेष्ठता की ओर बढ़ता है।

एडलर के अनुसार प्रत्येक बच्चे पर माँ का असर ही अधिक पड़ता है क्योंकि बच्चे के जन्म से माँ ही उसकी जरूरतों की पूर्ति करती है। अगर माँ अपने बच्चे की हर एक बात को मानती है, और अच्छी तरह से देखभाल करती है, तो आगे चलकर बच्चा दूसरों को आदेश देता है और शोषण करने की जीवन पद्धति को अपनाता है।

<u>व्यक्तित्व संरचना</u> Structure of Personality

एडलर ने अपने सिद्धान्त में व्यक्तित्व पर अधिक बल दिया है जहाँ कि फ्रायड ने व्यक्ति में काम शक्ति को महत्वपूर्ण माना है। एडलर ने शक्ति-प्राप्ति को समाज के साथ जोड़ा है। व्यक्ति समाज का अंग होने के कारण वह चाहता है कि हर एक सामाजिक पक्ष में वह उन्नति पायें।

व्यक्ति के भौतिक जीवन, आर्थिक स्थिरता आदि इसी स्तर पर निर्भर करती है । व्यक्ति के विकास के लिए मुख्य रूप से शक्ति की प्राप्ति और सामाजिक सच्चाई के बीच संघर्ष मात्र है ।

1·6·3· युंग का सिद्धान्त : Jung's Theory

युंग ने अपने-आप को विश्लेषणात्मक मनोवैज्ञानिक घोषित करके एक नयी शाखा की स्थापना की । उन्होंने अचेतन मन के संबन्ध में कहा है कि अचेतन मन दो प्रकार के होते है । पहले प्रकार का अचेतन मन फ्रायड के द्वारा वर्णित अचेतन मस्तिष्क से मिलता-जुलता है । इस प्रकार के अचेतन मन में वे स्मृतियाँ, अनुभव और इच्छाएँ होती है जो दमित हो गयी है और जिन्हें वैयक्तिक अचेतन(personal unconscious) से सम्बन्धित होने के कारण इसी नाम से पहचाना जाता है । युंग के द्वारा दूसरे प्रकार के अचेतन मन को सामूहिक अचेतन (collective unconscious) के नाम से जाना जाता है । इस अचेतन मस्तिष्क में व्यक्तित्व से सम्बन्धित वे तत्व होते है जो पूर्वजों से वंशानुक्रम द्वारा ग्रहण किये जाते है । इसको युग ने आर्चिटाइप या प्रथम भाव प्रतिमा के नाम से जाना जाता है । उनका मानना था कि एक संस्कृति के लोगों के सामूहिक अचेतन मस्तिष्क में एक ही प्रकार का होता है । इस बात को साबित करने के लिए उन्होंने कई संस्कृतियों का अध्ययन भी किया । प्रमुख रूप से फ्रायड और युंग में अन्तर यह है कि फ्रायड ने व्यक्तित्व के विकास में तथा व्यक्तित्व के निर्धारकों के रूप में बाल्यावस्था के अनुभवों आदि को अधिक महत्व दिया है । इसके साथ यौन प्रेरणाओं को भी समान महत्व दिया है । किन्तु युंग ने इन दोनों को

व्यक्तित्व के लिए महत्वपूर्ण नहीं समझा और इसके स्थान पर जीने की इच्छा (will to live) को महत्व दिया है ।

लिबिडो या काम-शक्ति सिद्धान्त Libido Theory

फ्रायड के अनुसार मनुष्य का व्यवहार लैंगिक काम-शक्ति पर आधारित रहता है तो एडलर ने श्रेष्ठता प्राप्ति करने की प्रवृत्ति पर बल दिया है । इन दोनों बातों को युंग ने माना नहीं । उनका मत है कि काम या लिबिडो शक्ति समस्त जीवन शक्ति का केन्द्र है । इससे मनुष्य किसी विशेष प्रकार का व्यवहार या सामाजिक सम्पर्क की ओर बढ़ता है । असल में युंग ने लिबिडो को दो अलग ढंगों से प्रयोग किया है । पहला तो विस्तृत जीवन की शक्ति के रूप में और दूसरा " साइको-शक्ति " के रूप में जो दैनिक कार्य करने में सहायता करती है । " साइको-शक्ति " के द्वारा ही मनोवैज्ञानिक कार्य जारी रहता है । जैसे-देखना सोचना, महसूस करना और इच्छा को प्रकट करना आदि । जब कोई निश्चित दिशा को लेकर साइको-शक्ति काम करती है तो व्यक्ति का व्यवहार भी कुछ उसी से सम्बंधित रहता है । उदाहरण के लिए अगर व्यक्ति के मन में किसी ऊँचे पद को हासिल करना हो तो उसका सारा साइकी-शक्ति इसी दिशा में काम करती पायी जा सकती है । युंग का मानना है कि शरीर मन को प्रभावित करता है तो मन शरीर को । उनका मानना था कि अगर व्यक्ति एक काम से जब ऊब जाता है तो दूसरे में दिल लगाना है जो अपने-आप चलती क्रिया है ।

व्यक्तित्व की पद्धति या प्रणाली (युंग के अनुसार)

युंग ने पूर्ण व्यक्तित्व या साइकी को कई तरह की संरचनाओं या पद्धतियों से बना माना है। यह एक दूसरे मे अलग होते हुए भी अपना प्रभाव छोड़ सकती है। प्रमुख रूप से युंग ने तीन व्यक्तित्व की पद्धतियों का संकेत किया है वे - अहम, वैयक्तिक अचेतन और सामूहिक अचेतन।

अहम

अहम चेतन का वह पक्ष है जो देखने, सोचने और चीजों को याद रखने में मदद करता है। और दैनिक कार्य को बिना किसी बाधा से जारी रखने में सहायता करती है। अहम अपने कार्य क्षेत्र को चुनता है तभी यह देखा जा सकता है कि हम कई चीजों को देखते रहने पर भी हमारा ध्यान केवल किसी गिने-चुने पर ही टिकता है। इसके अलावा अहम में निरंतरता (continuity) संलग्नता (coherence) और पहचान (identity) होती है। इससे एक स्थिरता देखी जा सकती है जिससे व्यक्ति निश्चित दिशा से दुनियाँ को देखता है। ये सब महत्वपूर्ण होते हुए भी व्यक्तित्व का ढाँचा बनाने में चेतन ऊपरी स्तर में मदद करता है तो अचेतन नीचले स्तर पर जिसके सहारे ऊपरी स्तर स्थिर रहता है।

वैयक्तिक अचेतन Personal Unconsciousness

युंग के अनुसार अचेतन मन के दो स्तर होते है एक तो बाहरी और दूसरी आन्तरिक। आन्तरिक भाग को ही वैयक्तिक अचेतन के नाम से जाना जाता है। यह फ्रायड के द्वारा प्रतिपादित अवचेतन से बिल्कुल अलग है। व्यक्तिगत इच्छाओं, स्मृतियों और प्रेरणाओं का महत्व होता है। मन का यह एक ऐसा स्थान है जो सभी दृश्यों को ग्रहण कर सकता है जो कभी चेतनावस्था में आई थी और समयानुसार दमित हो गयी है।

फ्रायड के अवचेतन में अहम और व्यक्तिगत अचेतन का गहन सम्बन्ध है। युंग का कहना है कि व्यक्ति जब चाहें तब अपनी यादों को ताजा कर सकता है। जैसे काम में व्यस्त व्यक्ति अचानक बीते हुए कल की बात को याद कर सकता है और यह देखा जाता है कि वह जिस सन्दर्भ को चाहता है वह तुरन्त उसके मन के सामने प्रस्तुत होता हैं। मन के इस स्तर में सभी बीती हुई अनुभव, दृश्य आदि नियमित रूप से सुरक्षित रहते हैं।

जैसे-जैसे व्यक्ति एक के बाद एक घटनाओं को संग्रह करता जायेगा उसे वह अपने मस्तिष्क में दृश्यों के आधार पर वर्गीकृत करके प्रत्येक को विशेष वर्ग में रखता है ताकि पहचानने में आसानी हो सके। जिसे युंग ने ग्रन्थि की संज्ञा दी है प्रत्येक ग्रन्थि एक, विशेष रूप से संवेगों, यादों, दृश्यों और इच्छाओं का समूह होती है जो सामान्य तौर से एक ही विषय से जुड़ी हुई होती है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति शक्ति या पद की लालसा रखता है तो उसके व्यक्तिगत अचेतन में कई ऐसे प्रयत्न मिल जाते है

जो इस इच्छा की पूर्ति का प्रयास है या तो इच्छा की पूर्ति करती है। इस सन्दर्भ में युंग का कहना है कि - " व्यक्ति में ग्रन्थि न होकर, ग्रन्थि में व्यक्ति होती है। " [1]

व्यक्ति में किसी भी तरह की ग्रन्थि के आ जाने से वह चेतनावस्था के काबू से बाहर हो जाता है। इसलिए व्यक्ति जिस में विशेष ग्रन्थि होती है वह अनजाने ही गलती करता है।

युंग के इस सिद्धान्त का तात्पर्य है कि ग्रन्थियो के उद्भव होने से व्यक्ति को नुकसान भी हैं और फायदा भी। नुकसान यह है कि व्यक्ति में ग्रन्थि के बढ़ जाने से मनोविकृतियाँ उत्पन्न हो जाती है। और इसका दूसरा रूप यह है कि व्यक्ति अपने में जो ग्रन्थि है उसको दूर करने के चक्कर में एक बेहतरीन मानव बन सकता है। युंग के अनुसार बचपन से ही व्यक्तिगत अचेतन का विकास शुरू हो जाता है और व्यक्ति अपने में छिपी हुई ग्रन्थियाँ को ही उसके आगे आने वाली पीढ़ी को प्रदान करता है। और जो इसे परम्परा से मिलती है वह सामूहिक अचेतन से व्यक्ति को बचपन से ही मिलता है।

<u>सामूहिक अचेतन</u> Collective Unconsciousness

युंग के अनुसार प्रतिपादित अचेतन का दूसरा भाग सामूहिक अचेतन के नाम से जाना जाता है। व्यक्तिगत और सामुहिक अचेतन में अन्तर यह है कि व्यक्तिगत अचेतन से केवल व्यक्तिगत इच्छाओं, स्मृतियों आदि का महत्व है,

---

'A person does not have a complex, the complex has him'
Theory of Personality by Duance Schultz. p.124

तो सामूहिक अचेतन में परम्परा या आनुवंशिक इच्छाओं, प्रेरणाओं आदि का मेल होता है । दूसरे शब्दों में कहा जायें तो मानव जाति के एकत्रित अनुभव इसमें मूलरूप से रहते हैं जिसे युंग ने अर्चिटाइप की संज्ञा दी है । इसकी परिभाषा - " प्रत्न भाव प्रतिभाएँ सामूहिक अज्ञात मन की निधि हैं और व्यक्ति इन्हें अपने पूर्वजों से ग्रहण करता है । इसका स्थानान्तरण होता रहता है । इरेक " प्रत्न भाव-प्रतिभा " सामान्य मानव-स्वभाव को द्योतक होती है । इसके द्वारा स्वतन्त्र रूप से सामान्य मानसिक तथ्यों का दिग्दर्शन होता है । प्रत्न भाव-प्रतिभाएँ स्थिर है तथा सामान्य प्रकार के प्रतीक के रूप में है और हरेक व्यक्ति में विद्यमान है । " 1

युंग के अचेतन की पद्धति को समझाने के लिए मन के सबसे निछले स्तर को जानना पडता हैं जो बहुत कठिन कार्य है और साथ ही विवादा - स्पद विषय रहा है ।

युंग का यह विश्वास था कि जिस पर व्यक्ति को अपने निजी अनुभवों को एकत्रित कर उन्हें वर्गों के रूप में व्यक्तिगत अचेतन में हमेशा के लिए सुरक्षित रखना है । ठीक उसी प्रकार मानव जाति भी अपने साथ जातिमूल के अनुभवों, विशेषताओं आदि को साथ बहाती हुई आगे आनेवाले वंश को विरासत के रूप में दे जाती है । सामूहिक अचेतन एक ऐसा खजाना है जो अनुभवों से भरा हुआ है जिसमें आदिमानव सभ्य मानव के बहुमूल्य अनुभवों से पूर्ण है जो हर व्यक्ति अपने बाद आगे आनेवाली पीढ़ी को देता है । जो कुछ अनुभव विश्व में एक समान हो वह हमेशा बिना किसी बदलाव को

---

1. मानविकी पारिभाषिक कोश - पृ. 35.

एक वंश से दूसरा वंश अपना लेता है। जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक अंश बन जाता है। किन्तु यह मान लेना बिल्कुल ठीक नहीं होगा कि व्यक्ति प्रत्येक व्यवहार की प्रवृति सामूहिक अचेतन के रूप में जन्म से ही उसे प्राप्त होती है।

युंग के अनुसार कुछ विशेष चीज होती हैं जिन्हे संसार के किसी भी कोने में देखा जायें तो उसे एक ही प्रकार से पाया जाता है। इसके कई उदाहरण मिल जाते है जैसे - सभी जीव का जन्म माँ से ही हो रहा था, हो रहा है और होता रहेगा भी। प्रत्येक जीव का जन्म होता है तो मृत्यु भी जो हमेशा से चली आ रही है, शक्ति और प्रतिष्ठा की दौड़-भाग तो मानव-जाति की शुरुवात से चली आ रही है जो अब भी उसी तरह पाया जाता है। इस तरह की अनगिनत चीजे पायी जाती है जो बदलाव के बहाव में बही नही है। युंगने पुरातत्व संस्कृति, मिथक आदि का गहन अध्ययन करने के बाद यह देखा कि संसार में सभी संस्कृति, मिथक आदि में लगभग मिलते जुलते चिन्ह मिलते है जो अर्थ में भी समान है।

युंग के अनुसार " आरकेटाइप पूर्ण-रूप से विकसित स्मारण- शक्ति नहीं है क्योंकि व्यक्ति के सही में अनुभव करने से पहले ही उसके स्मारण शक्ति में अनुभवों का भंडार रहता है। युंग के अनुसार कुछ आरकेटाइप की सूची दी गयी है वे इस प्रकार है - जादू, हीरो, बच्चा, भगवान, मृत्यु, शक्ति, बुढा, बुद्धिमान व्यक्ति। कुछ साइकी की ऐसी शक्ति है जो मानव को हद से अधिक प्रभावित करती है।

युंग का सबसे महत्वपूर्ण-आरकेटाइप आत्म या स्वयं self को माना है जो पूरे व्यक्तित्व का नियंत्रण करता है। यह तभी उद्भव होता है जब शरीर के सभी अंग कार्य करना प्रारम्भ कर देते है और समयानुसार व्यक्ति वातावरण और स्थिति के अनुसार निर्णय तथा लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढ़ता है।

व्यक्तित्व प्रकार :

व्यक्तित्व के प्रकार की व्याख्या करते हुए युंग ने मूल रूप को आधार बनाया। उनके अनुसार व्यक्तित्व को दो भागों में बाँटा जा सकता है 1. बाहिर्मुखी extrovert 2. अन्तर्मुखी introvert युंग का मानना है कि जब लिबिडो की इच्छा अपने-आप पूरी नहीं होती है तो कोई बाहरी मार्ग या दिशा निकलता है जिसके द्वारा उसकी इच्छा की पूर्ति हो सके और कुछ लोगों में यह बाहर न आने के कारण भीतरी-ही भीतर खत्म हो जाती है।

बाहिर्मुखी

बाहिर्मुखी व्यक्ति हँसमुख, संसार के सभी कार्यों में रुचि लेते है। सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में विशेष भाग लेते है। युंग का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति में नर और नारी दोनो के गुण होते है। जिस व्यक्ति में इन दोनों का मेल ठीक मात्रा में नही होता है उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का सन्तुलन बिगड जाता है और मानसिक रोगी बन जाता है।

ऐसे व्यक्ति में परिस्थिति के अनुसार कार्य करने कि क्षमता अधिक होती है। उसमें बाहरी जीवन में रुचि रखने के साथ परम्परा के पालक, सामाजिक तथा अन्यों में रुचि रखनेवाला होता है। ये लोग केवल सोचने में विश्वास नहीं रखते है काम करके दिखाते है। यथार्थ कोअधिक मानते है।

अन्तर्मुखी

इस कोटि के लोगों में व्यक्तिनिष्ठ विचारों की प्रमुखता होती है। विचारशील होते हैं। अपने विचारों के आधार पर ही स्थिति का समाधान खोजते है। ऐसे व्यक्ति समाज में हमेशा सफलता प्राप्त कर लेते है। ऐसा व्यक्ति अधिक बुद्धिमान माना जाता है। यह गुण लड़कियों में अधिक पाया जाता है। इस स्वभाव के व्यक्ति एकान्त प्रेमी होते है। संगीतकार, कवि, कलाकार तथा मुर्तिकार आदि होते हैं। धार्मिक और रहस्यवादी होने के साथ ही कल्पना शक्ति भी तीव्र होती है।

1.6.4. करेन हॉर्नी Karen Horney

सुरक्षा और सन्तोष

करेन हॉर्नी फ्रायड के कई सिद्धान्तों से सहमत थी। उनका भी मानना था कि बचपन के दिन व्यक्ति के व्यक्तित्व को हमेशा प्रभावित करते रहते है। इनके अनुसार सामाजिक परिस्थितियाँ बच्चे पर अधिक असर डालती है न कि जैविक शक्ति। इसके साथ ही बच्चा किस वातावरण में पलता है और उसे अपने माता-पिता से कितना प्यार मिलता है या उनसे क्या सम्बंध

है आदि का भी व्यक्ति पर गहरा प्रभाव पड़ता है । बचपन में केवल दो ही चीजों की आवश्यकता होती है एक सुरक्षा की और दूसरी संतुष्टि की । इन दोनों को प्रकृति के रूप में पाया जा सकता है । किन्तु हॉर्नी के अनुसार सुरक्षा को सन्तुष्टि से कम महत्व दिया जाता है । मानव को केवल खाना, पानी और आराम आदि की तो आवश्यकता होती ही है । व्यक्तित्व के ठीक विकास के लिए सुरक्षा की अधिक आवश्यकता होती है न कि सन्तुष्टि की ।

व्यक्ति जीवन में सुरक्षा सर्वप्रथम पूर्णरूप से माता-पिता के द्वारा दिये गये प्यार और देखभाल से प्राप्त करता है । इनके अभाव में वह आवश्यकता बहुत दुखी होता है और उस पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है । दिखावटी और झूठी प्यार से बच्चे के मन को जीता नहीं जा सकता है । अगर इस तरह से बच्चे से व्यवहार करने से बच्चे में दूसरों की मदद न करने की भावना, माँ- पिता से भय, दूसरों के प्रति प्रेम न दिखाना और अपराध भावना को देखा जा सकता है । इन्हीं कारणों से आगे के जीवन में व्यक्ति में विकृतियाँ देखी जा सकती है । बच्चा विरोधात्मक तभी होता है जब उसकी इच्छा की पूर्ति नहीं होती है तभी वह असहाय भी महसूस करने लगता है । इसके विपरीत भी हो सकता है जैसे बच्चा जब अधिक असहाय भावना को जबरदस्ती से दमित करता है ताकि वह अपने माता-पिता के प्यार को कहीं खो न दें ।

माँ-बाप बच्चे को अपने नियंत्रण में आसानी से रख सकते हैं । इसके सरल आकर्षक मार्ग हैं । इनके अतिरिक्त मारना डाँटना, इच्छा को पूरा न करना, तंग करना आदि के द्वारा भी बच्चे को बड़े हमेशा दूर रख सकते है । किन्तु बच्चे को उसके दिल की बात को व्यक्त करने का मौका न

मिलने पर वह हमेशा अपनी विरोधात्मक भावना को दबा कर रखता है जिसके कारण उसमें एक प्रकार से हीन भावना का उदय होता है । जैसे ही यह भावना बढ़ती जाएगी वैसे ही वह अपनी इच्छा को विरोधात्मक रूप में न दिखा पाने के कारण दमित करता जाता है । यही आगे चलकर हॉर्नी के अनुसार मूल-चिन्ता का कारण बन जाता है ।

मूल चिन्ता Basic Anxiety

करेन के अनुसार चिन्ता का कारण उसके अकेलेपन की है और इस संसार के प्रति विरोधात्मक भाव का होना है क्योंकि वह चीजें बच्चे से भी अत्यधिक बलवान होती है । इस तरह की भावनाओं का उदय कई विपरीतात्मक कारणों से होता है जहाँ बच्चा अपने को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से असुरक्षित महसूस करता है । यह भावना बड़ों को प्यार और अच्छे सुझाव की कमी के कारण हो सकती है । अगर बच्चे को माँ-बाप से अत्यधिक प्यार मिले तो उसके व्यवहार में परिवर्तन को देखा जा सकता है ।

Karen's primary concept is that of basic anxiety, which is defined as - the feeling a child has of being isolated and helpless in a potentially hostile world. A wide range of adverse factors in the environment can produce this insecurity in a child, direct or indirect domination, indifference, erratic behaviour, lack of respect for the child's individual needs, lack of real guidance.
(Theories of Personality - Calvin S. Hall, III Edn. p.176-177.Willy Estern Limited)

सामान्य तौर पर देखा जाता है कि बच्चे में अगर किसी प्रकार की सुरक्षा की कमी हो तो मूल चिन्ता का उदभव होता है। अकेलेपन और असहाय की भावना से छुटकारा पाने के लिए असुरक्षित चिन्ताजनक बच्चा कई तरीको को अपनाता है जिससे उसको छुटकारा प्राप्त हो। बच्चा अक्सर उन लोगों के प्रति नफरत या विरोध की भावना व्यक्त करता है जो उससे ठीक ढंग से व्यवहार नहीं करते है। बच्चा कभी-कभी अपने-आप को पूर्ण रूप से दूसरों को समर्पित कर उसके खोये हुए प्यार को वापस हासिल करने की कोशिश करता है और अपनी हीन भावना को दूर करने के लिए झूठी और आदर्शात्मक चित्र को बनाये रखता है। वह बड़ों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कई तरीकों को अपनाता है जैसे लालच दिखा कर, डरा धमका कर और पूर्ण रूप से असहाय बताकर दूसरो की दया प्राप्त करता है। अगर उसे सफलता नहीं मिलती है तो वह दूसरों पर अपनी शक्ति दिखाने की कोशिश करता है। लोगों को सता कर अपने विनोधात्मक भाव को बाहर निकालता है। नहीं तो कभी-कभी बच्चा अत्यधिक स्पर्धात्मक भाव वाला भी हो सकता है। उसे सन्तुष्टि केवल उसकी जीत पर होती है न कि किसी चीज को हासिल करने पर। इस प्रकार न होने पर वह विरोध भावना को अपने मे ही दमित कर खुद को तुच्छ समझता है।

हॉर्नी ने व्यक्तित्व के कुछ स्तर दिये है जो उसके विकास को बहुत प्रभावित करते है। उन्होंने कुल तीन समाधान दिये है जिसके द्वारा समस्या से युक्त मानव सम्बन्धों को हल किया जा सकता है। जिन्हें स्नायु रोगात्मक **neurotic** कहा है। ये समस्याये तर्क हीन होती है। ये तीन समाधान कुछ इस प्रकार है --

स्नायु-रोगात्मकता की विशेष दिशा Neurotic trends

1· लोगों की ओर बढ़ने वाला व्यक्ति - नम्र स्वभावी

2· लोगों से विरोध करने वाला व्यक्ति - विरोधी स्वभावी

3· लोगों से पलायन करने वाला व्यक्ति - अलगाव स्वभावी

1· लोगों की ओर बढ़ने वाला व्यक्ति - नम्र स्वामी
Moving towards people - complaint type

इस प्रकार के व्यक्ति चाहते हैं कि सभी लोग उनको चाहें, सभी को उनकी जरूरत हो और साथ ही वे सुरक्षित भी रहे। इस तरह के लोग चाहते है कि उनका कोई एक दोस्त या वैवाहिक साथी हो जो प्यार के साथ सुरक्षा भी उसे दें। ये हमेशा चाहते है कि दूसरे लोग उनको कमजोर समझ कर उनकी मदद करें ताकि उनकी जरूरत की पूर्ति होती रहें। इस प्रकार के व्यक्तियों की दृष्टि में दूसरे लोग उनसे बेहतर होते है। इस तरह के लोग दूसरे लोगों की इच्छा के अनुसार जीने के लिए अपने-आप को उसके अनुकूल बनाते है।

लोगों से विरोध करने वाला व्यक्ति - विरोधी स्वभावी
Moving against people - the aggressive

इस तरह के लोग अत्यधिक झगडालू होते है। ये लोग बिल्कुल नम्र स्वभाव के लोगों के विपरीत होते है। उनकी नजरों में दुनिया के सभी व्यक्तियों का स्वभाव उनके स्वभाव से मिलता-जुलता है। इन लोगों का भी

मूल रूप से वही लक्ष्य होता है जो नम्र स्वभाव के लोगों का है । किन्तु ये लोग नम्र भाव से लोगों का मन जीतने के स्थान पर विपरीत मार्ग अपनाते है ।

इस तरह के लोग जीवन में बहुत ही कड़ी मेहनत कर अपने लक्ष्य की पूर्ति करते है किन्तु उनको तृप्ति नहीं होती है ।

3· लोगों से पलायन करने वाला व्यक्ति - अलगाव स्वभावी
Moving away from people - detached type

व्यक्ति जो उदासीन स्वभाव का होगा वह हमेशा दूसरो से अलग रहने की कोशिश करेगा । ऐसे व्यक्ति न तो अपने-आप किसी से मिलते है और अगर दोस्ती करने पर भी नकार देते है ।

हॉर्नी के द्वारा मानव का स्वभाव :-

सामाजिक स्थिति बच्चे को अत्यधिक प्रभावित करती है । अगर इनके बचपन में सुरक्षा या सन्तुष्टि में किसी की भी कमी हो जाये तो वह आगे के जीवन में मनोविकारो को उत्पन्न कर देती है । बच्चे का भविष्य पूर्ण रूप से उसके घर के वातावरण पर ही निर्भर करता है । व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में अपनी इच्छानुसार परिवर्तन ला सकता है ।

1·6·5· एरिक फ्रॉम :-

एरिक फ्रॉम सामाजिक पक्ष को अधिक महत्व देते है जिसके कारण उनका मानना है कि व्यक्ति में अगर अच्छी-बुरी या सुन्दर या असुन्दर प्रवृत्तियों और रुचियों की शुरुआत और उसका विकास जैविक स्वभाव के कारण नहीं होता है। केवल सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव से होता होता है।

उनका कहना है कि समाज मनुष्य के द्वारा और मनुष्य समाज द्वारा बनता है। इसलिए यह जरुरी है कि व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिए उस समाज का अध्ययन आवश्यक है। इसके अलावा मानवीय व्यवहार पर संस्कृतिक, वातावरण और वंशानुगत तत्वों का भी प्रभाव रहता है। फ्रायड की तरह ये काम-शक्ति को अधिक महत्व नहीं देते है।

मूल स्थिति : अकेलापन Basic Condition : Loneliness

फ्रॉम की विचारधारा फ्रायड से बिल्कुल अलग थी। फ्रॉम का कहना था कि जैसे-जैसे व्यक्ति आधुनिकता की ओर बढ़ता जा रहा है वैसे ही वह अधिक स्वतंत्र होते हुए भी अकेला महसूस करता है साथ ही विघटित और निरर्थक भी होता जाता है। फ्रॉम के इस सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य यह था कि व्यक्ति अकेला महसूस किस लिए करता है? उनके अनुसार जब व्यक्ति प्रकृति और लोगों से अलग हो जाता है तब इस तरह की भावना उसमें जागती है। इस तरह के अकेलेपन की भावना जानवरो में नही देखी जाती है।

प्रेरणाएँ Motives

फ्रॉम का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति में पशुता और मानवता का गुण विद्यमान रहता है। इसी कारण व्यक्ति में अच्छे और बुरे व्यवहारों को देखा जा सकता है विशेष रूप से जब उसकी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। इससे उसमें निराशा की भावना उत्पन्न हो जाती है। प्रेरणाओं से सम्बन्धित विषय पर फ्रॉम का यह मानना है कि जब व्यक्ति किसी विशेष प्रकार की प्रेरणा-प्राप्ति की इच्छा करता है तो वह तुरन्त उसी दिशा में कार्य करने लगता है और उसको भी प्राप्त करता है।

इनके अनुसार प्रेरणाएँ पाँच प्रकार की होती है जैसे --

1. सम्बन्ध स्थापना की आवश्यकता

मनुष्य का स्वभाविक गुण होता है कि दूसरे मानवों से नाता जोड़े। इसका कारण यह है कि मनुष्य सामान्य तौर से बहुत बुद्धिमान, तर्कशील, कल्पनाशील आदि गुणों से सम्पन्न होता है जिसके कारण वह हमेशा दूसरों से आगे बढ़ने की कोशिश में लगा रहता है। उत्तम स्थान पर पहुँचने की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति में रहती है जिसके कारण प्रतिस्पर्धा की भावना को मानव मे देखा जा सकता है। किन्तु मात्र इसके कारण स्थिति ऐसी खड़ी नहीं होनी चाहिए कि अपने साथवाले मनुष्य के अस्तित्व की परवाह किये बिना आगे बढ़ जाय। इसलिए व्यक्ति के लिए सम्बन्ध स्थापन की आवश्यकता है।

2. साधारण स्तर से ऊँचा उठना Urge for Transcedence

फ्रॉम का मानना है कि व्यक्ति को हमेशा मानव जाति की भलाई के लिए कार्य करना चाहिए न कि विनाश के लिए। व्यक्ति विनाशकारी कार्य तब करता है जब वह अच्छे कार्य करने में सफल नहीं हो पाता है। व्यक्ति में प्रेम और घृणा करने की शक्ति होती है जो उसे पशुत्व से ऊँचा उठाता है।

3. बद्धमूलता की आवश्यकता Need for Rootedness

मानव ही ऐसा प्राणी है जो बचपन से ही किसी-न-किसी से जुड़ने की कोशिश करता है। उदाहरण के लिए बच्चा बचपन में माँ से नजदीक का सम्बन्ध रखता है और बड़े होने पर अन्य स्त्री-पुरुष से अच्छा सम्बन्ध बनाता है जिससे सुख और संतुष्टि प्राप्त होती है।

4. पहचान की आवश्यकता Need for Identification

पहचान की इच्छा मनुष्य में बचपन से ही पाई जाती है। वह चाहता है कि उसका स्थान अद्वितीय हो इसलिए वह कुछ ऐसा नया काम करने का प्रयास करता है जो पहले किसी ने नहीं किया हो।

5· निश्चित दृष्टिकोण की आवश्यकता Need for Certain Views

व्यक्ति अपनी पहचान की परवाह करता है । ठीक उसी प्रकार वह चाहता है कि उसका जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण हो जो अन्यों से पूर्ण रूप से भिन्न हो ।

व्यक्तित्व के प्रकार :-

फ्रॉम ने व्यक्तित्व के प्रकार पर भी विचार किया है । वे हैं -- प्राप्ति की इच्छा करने वाला (receiving type) शोषक प्रकार (exploiting type) जमाखोर प्रकार (hoarding type) और विक्रेता प्रकार (marketing type).

1· प्राप्ति की इच्छा करने वाला :-

इस वर्ग के लोग अक्सर दूसरे लोगों पर आश्रित होते है । वे आशा करते है कि दूसरे ही उनकी जरूरतो की पूर्ति करें । और ऐसे लोग चाहते है कि दूसरे व्यक्तियों से इन्हें प्रेम प्राप्त होते रहें । वे हमेशा इसी मार्ग की खोज करते रहते है ।

2. शोषक प्रकार

इस प्रकार के लोग अपने बाहु-बल या चतुरता से लक्ष्य की पूर्ति करते है । अपनी जररतों की प्राप्ति के लिए किसी के सुख-दुःख की परवाह नहीं करते है इसलिए इनको शोषक प्रकार से जाना जाता है ।

3. जमाखोर प्रकार

ऐसे व्यक्ति स्व-आश्रित होते है । ये कुछ माँगते नहीं । परन्तु अपनी जरूरतों को पूर्ति खुद मेहनत से प्राप्त करते है ।

4. विक्रेता प्रकार

इस प्रकार के लोगों का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता है । इसलिए अपने व्यक्तित्व को दूसरे के काम आने में लगा देते है ।

1.6.6. हैरी स्टैक सुलीवन का सिद्धान्त (Harry Stack Sullivan Theory)

सुलीवन मनोचिकित्सा के अन्तर वैयक्तिक सिद्धान्त नामक एक नये दृष्टिकोण के प्रवर्तक हैं । इस के अनुसार व्यक्तित्व और अन्तरवैयक्तिक परिस्थितियों का परस्पर सम्बन्ध इस प्रकार है - " अन्तरवैयक्तिक परि -

रिस्थितियों के संस्प से व्यक्ति का जीवन चरितार्थ होता है जिसकी पुनरावृत्ति को सहन करना ही व्यक्तित्व का परमत्त है । " [1] सुलीवन का मत है कि व्यक्ति को ही अध्ययन के लिए मुख्य रूप से लेना चाहिए क्योंकि व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध से रहित नहीं रह सकता है । जीवन के आरंभिक दिनों से ही वह अन्तर्वैयक्तिक परिस्थिति का एक अंग बन जाता है और सम्पूर्ण जीवन सामाजिक क्षेत्र के एक सदस्य के रूप में रह जाता है । सन्यासी भी अपने साथ वैयक्तिक सम्बन्धों को अपनी यादों में रखता है जो उसकी स्मरण शक्ति और कार्य पर प्रभाव डालती रहती है । इस प्रकार अन्तर वैयक्तिक अनुभव व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक व्यापार में बदलाव ला सकता है । जिसके फलस्वरूप व्यक्ति जैविक सत्ता स्तर को खो देता है । सामाजिक प्राणी बनकर सामाजिक जीवन व्यतीत करने लगता है ।

सुलीवन पर मनोविज्ञान, सामाजविज्ञान समाजशास्त्र आदि का बहुत प्रभाव पड़ा । किन्तु वे समाज मनोराग विज्ञान के समर्थक थे । उन्होंने फ्रायड के काम सम्बन्धी विचारों को अस्वीकारा । तो मेयर से प्राणी को खुले वातावरण में रखकर देखना सीखा और ह्वाइट से औषधियों की उपयोगिता के बारे में सीखा ।

सुलीवन ने माना है कि व्यक्ति को केवल दो पक्ष प्रेरित करते हैं 1. जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति 2. सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति । जिस प्रकार हॉर्नी के अनुसार सुरक्षा के तौर पर बच्चे को मिलने वाला माँ -

---

The relatively enduring pattern of recurrent interpersonal situations which characterize a human life (1953, p.111)- Theories of Personality - Calvin S. Hall. p.179

बाप का प्यार होता है तो सुलीवन के अनुसार व्यक्ति को जैविक और संस्कृतिक इच्छा की पूर्ति होती है ।

मानव के व्यवहार का लक्ष्य :-

मानव के व्यवहार की प्रेरणाएँ दो है ।. जैविक आवश्यकताएँ, (भोजन, निद्रा, काम आदि) जिसके लिए व्यक्ति मेहनत करता है । 2. मानव पर सांस्कृतिक दबाव - इस दबाव के कारण व्यक्ति अपनी इच्छाओं को पूर्ति समाज के द्वारा बनाये गये मार्गो पर चल कर करता है । सुलीवन का मानना है कि व्यक्ति में अगर ऐसी प्रेरणाएँ होती है तो वे सुरक्षा की आवश्यकता (need for security) के लिए जिसे व्यक्ति धीरे-धीरे सीख लेता है ।

सुलीवन के अनुसार बचपन से ही बच्चा आत्म-गतिशीलता (self-dynamics) की शुरुआत कर देता है क्योंकि माँ-बाप अच्छे-बुरे का ज्ञान बच्चे को दण्ड या पुरस्कार देकर कराते है । बच्चा अपने-आप सामाजिक नियमों को नहीं समझता है जिसके लिए वह बड़ों की मदद लेता है और उनकी इच्छा के अनुसार ही काम भी करता है क्योंकि वह असुरक्षित परिस्थितियों का सामना करना नहीं चाहता है ।

व्यक्तित्व के प्रकार का स्वरुप

सन्तुष्टि और सुरक्षा

सुलीवन का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति के हर कार्य के पीछे दो ही मुख्य उद्देश्य रहते हैं - सन्तुष्टि और सुरक्षा । इससे सम्बन्धित कुछ

सिद्धान्तों को उन्होंने दिया है। जैसे --

1· तनाव - कमी सिद्धान्त

2· सामाजिक व सांस्कृतिक कारक

तनाव - कमी-सिद्धान्त Tension Reduction Theory

सुलीवन ने सन्तुष्टि की प्राप्ति के लिए तनाव की कमी की जरूरत समझी। उनके अनुसार व्यक्ति में जब मूल प्रवृत्तियों की इच्छा पैदा होती है तो एक प्रकार का तनाव पैदा हो जाता है। पूर्ति के लिए वह बेचैनी हो जाती है और पूर्ति के साथ बेचैनी भी दूर होती है।

सामाजिक व सांस्कृतिक कारक Social and Cultural Factors

सुलीवन, फ्रायड की विचारधाराओं से पूर्ण रूप से सहमत नहीं थे। सुलीवन की मान्यता है कि व्यक्तित्व के विकास के लिए सुरक्षा और सन्तुष्टि के सिद्धान्त और सामाजिक या सांस्कृतिक मूल्यों का सम्बन्ध होता है। सुरक्षा मानव जीवन की संचालन शक्ति है जिसके सम्बन्ध में वे दो बातों को मानते हैं - उल्लासोन्माद (euphoria) और तदनुभूति (empathy)

उल्लासोन्माद

हॉर्नी की तरह ही सुलीवन का मानना है कि बचपन में अगर माँ-बचपन की आवश्यकताओं की पूर्ति पूर्ण रूप से कर देती है तो बच्चे में किसी प्रकार का तनाव रह नहीं जाता है। इसके कारण वंश सुरक्षा की भावना विकसित होती है इसी को उल्लासोन्माद कहते है।

तदनुभूति

बालक जैसे-जैसे बडा होता जाता है वह यह समझने लगता है कि कौन उससे प्यार करता है और कौन नहीं। दूसरो का व्यवहार उसके प्रति किस प्रकार का है। इसी शक्ति को तदनुभूति कहते है।

1.6.7. लैंगिक विपर्यास तथा विकृतियाँ Sexual Perversion

मूल प्रवृत्तियाँ में लैंगिक इच्छा भी एक है। यह हर व्यक्ति में पाई जाती है। फिर भी समाज में कुछ लोग जरूर मिल जाते है जो देखने में तो पूर्ण रूप से समान्य और स्वस्थ लगते है किन्तु उनके व्यवहार पर विकृत होते हैं।

सरल शब्दो मे लैंगिक विपर्यास का अर्थ यह होता है कि इस क्रिया में सामान्य तौर से प्रयोग में लायें जाने वाले विधियों का प्रयोग न करके असमान्य विधियों को प्रयोग में लाया जाता है। जिस व्यक्ति में इसे देखा जाता है उसके व्यक्तित्व के विकास में परिवर्तन देखा जा सकता है,

साथ ही व्यक्तित्व का सन्तुलन भी बिगड़ जाता है । कई प्रकार की विकृतियाँ है जो व्यक्तियों में पाई जाती है । जैसे --

1. समलैंगिकता Homosexuality

काम की इच्छा पूरी न होने पर (समलैंगिकता) से पूरा किया जाता है । सामान्य रूप से लैंगिक क्रिया विरोधी लिंग में होती है । किन्तु जब पुरुष-पुरुष या स्त्री-स्त्री लैंगिक क्रिया में शामिल होते है तो इसे समलैंगिकता कहते है । सामाजिक दृष्टि से यह अपराध है । किन्तु प्राचीन काल से इस विकृति को देखा जा रहा है । फ्रायड के अनुसार कई व्यक्ति पालयनवादी होने के कारण इसे विकृति न मान कर उस पर गर्व करते है । जहाँ कि एडलर इसका कारण हीनता ग्रन्थि मानते है ।

परपीडनरति Sadism

इस विकृति में व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को तरह-तरह की पीड़ा पहुँचाकर लैंगिक आनन्द प्राप्त करता है । एडलर के अनुसार परपीड़नरति व्यक्ति में हीनभाव के कारण उदभव होता है । वही फ्रायड के अनुसार परपीड़नरति मृत्यु-मूलप्रवृत्ति का विस्थापन है ।

स्वपीडनरति Masochism

इस विकृति से ग्रस्त व्यक्तियों की इच्छा होती है कि अपने-आप को कष्ट और पीड़ा देकर लैंगिक आनन्द का अनुभव करें । यह परपीडनरति

से बिलकुल विपरीत है। स्वपीडनरति तीन प्रकार की होती है - कामोत्तेजक स्वपीडनरति,(erotogenic mosochism) इस प्रकार में व्यक्ति अपने-आप को मार लेना आदि कर या करा कर लैंगिक सुख की प्राप्ति करता है।

2. नारी सुलभ-स्वपीडनरति Feminine Mosochism

कुछ औरतें चाहती है कि उन्हें अपने पति से शारीरिक पीड़ा प्राप्त हो जिससे उनको लैंगिक सुख की प्राप्ति हो सके। इस क्रिया में उनका जान भी अगर चला जाता है तो भी उसकी परवाह नहीं करती है।

3. तीसरी तरह की स्वपीडनरति नैतिक स्वपीड़नरति (moral mosochism) है। इसका मुख्य उद्देश्य लैंगिक सुख नहीं होता है। इस प्रकार के व्यक्ति अपनी इच्छाओं से बचने के लिए संसार के बन्धनों से मुक्ति पा लेते है।

स्पर्श आसक्ति Frotteurism

इस विकृति के नाम से ही ज्ञात होता है कि किसी व्यक्ति को जब दूसरे शरीर का स्पर्श मात्र हो जाने पर लैंगिक सुख की प्राप्ति हो जाती है।

---

1. Sexual perversion in which the individual desires sexual pleasure from the inflictism of pain upon himself;
2. The desiring of pleasure from being maltreated or from suffering;
3. Psychoanalysis aggression turned towards the s elf because of the anxiety.

कई ऐसे व्यक्ति पाये जाते है जो जानबूझकर या अनजाने में ही स्पर्श करते है और अपनी इच्छा पूर्ति करते है । मेला, बाजार बसस्टाप, बस मे आदि स्थानां में कई व्यक्तियों में इस तरह की विकृति को देखा जा सकता है ।

प्रदर्शनवृत्ति Exhibitionism

इस तरह की विकृति भी सामान्य तौर से पुरूष और स्त्री में पाई जाती है । इसलिए कई लड़कियाँ तङ्ग कपड़े पहनती है ताकि उनके अंगों का प्रदर्शन हो सके । इससे लैंगिक सुख की प्राप्ति होती है । मन में छिपी दमित लैंगिक इच्छा इस तरह के मार्ग द्वारा बाहर आती है । मजबूरी इसका कारण हो सकती है ।

प्रतिजातिय वस्त्रधारण आसक्ति Transvertism

इस प्रकार की विकृति में पुरुष स्त्री का स्त्री पुरुष का वस्त्र धारण का सन्तोष प्राप्त करते हैं । यह जड़ासक्ति (fetish) है । जिसमें व्यक्ति अपने प्रेमी के किसी वस्तु-विशेष को प्रेम-विषय का प्रतीक बना लेता है । प्रदर्शनवृत्ति को इसका दूसरा रूप माना जाता है ।

शिशु-कामुकता Infento-Sexuality

कई व्यक्ति अपने लैंगिक सुख को प्राप्ति के लिए अपने से काफी छोटे लोगों का साथ चुनते है । इसका कारण यह है कि सामाजिक नियम इतने जटिल होने के कारण व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति आसानी से नहीं कर पाता है । इसलिए नादान बच्चों का सहारा लेता है ।

शवकामुकता Necrophilia

यह एक विचित्र प्रकार की विकृति है जिसमें मरे हुए व्यक्ति को लैंगिक सुख का साधन बनाया जाता है ।

नग्नतादर्शन आसक्ति Scopophilia

इस प्रकार के विपर्यास में व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को नग्न देखना पसंद करता है और स्त्री पुरुष को तथा पुरुष स्त्री को नग्न देखने की इच्छा अति स्वाभाविक है किन्तु इस प्रकार देखकर काम इच्छा की पूर्ति होना असामान्य भाव है ।

1.6.8. स्वप्न सिद्धान्त Dream Theory

स्वप्न के प्रति मानव आरंभ से ही अपनी जिज्ञासा दिखा रहा है । जब तक विज्ञान का विकास नहीं हुआ व्यक्ति स्वप्न को देवताओं, भूत - प्रेत आदि की दया मानता था । प्राचीन काल से स्वप्न को भविष्यवाणी के रूप में भी स्वीकार किया गया है । परन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिक इस बात से सहमत नहीं हैं । किन्तु यह सच है कि कुछ स्वप्न सच्चे होते है । अधिकांश स्वप्नों में व्यक्ति के द्वारा देखी गयी घटनाओं से सम्बन्धित दृश्यों को ही देखने को मिलता है ।

व्यक्ति स्वप्न सुप्तावस्था में देखता है। स्वप्न में प्रतिदिन से सम्बन्धित घटनाओं के साथ विचित्र दृश्य भी व्यक्ति देखता है। ये सुख-दुख दोनो से सम्बन्धित होते है। अरस्तु के अनुसार - "जिस प्रकार पानी में प्रतिबिम्ब परिलक्षित होता है उसी प्रकार मानसिक क्रियाओं का प्रतिरूप, स्वप्न में साकार हो जाता है।" [1]

फ्रायड, युंग और एडलर के स्वप्न सम्बन्धित विचार :-

सर्व प्रथम फ्रायड ही थे जिन्होंने स्वप्न का अध्ययन एक विज्ञान के रूप में किया है उनका मानना था कि स्वप्नों को ठीक ढंग से पहचान कर व्यक्ति को उसकी मानसिक कमजोरियों का ज्ञान प्राप्त कर सकते है और जिससे बचने का उपाय भी ढूंढ निकलता है जिससे व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति अपनी सारी इच्छाओं को सामाजिक बन्धन, धार्मिक भय और नैतिक कारणों से पूरा नहीं कर सकता है। तदर्थ वह कई मार्गों का सहारा लेता है जिनमें स्वप्न भी एक मार्ग है। फ्रायड के अनुसार स्वप्न की परिभाषा है (The dream is the life of mind, during sleep and dreams are reaction to disturbing sleep) जी. मार्फी के अनुसार "फ्रायड का मानना है कि व्यक्ति की कामेच्छा सबसे अधिक प्रबल होती है तथा प्रायः अतृप्त रहती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी कामेच्छाओं

---

1. Historical Introduction of Modern Psychology by B.G. Murphy, p.310 (असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार)

2. असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार

को सन्तुष्ट करना चाहता है परन्तु समाज का भय उसे हमेशा लगा रहता है। मन की विभिन्न भावनाएँ स्वप्न के द्वारा विभिन्न रूपों में व्यक्त होती है। "[1]

फ्रायड

फ्रायड बाहरी अर्थ को अधिक महत्व नहीं होते हैं। अगर किसी का होता है तो केवल अचेतन में छिपे हुए विचारों का होता है। इस सिद्धान्त में प्रतीक का अधिक महत्व है। इसलिए स्वप्न कभी भी अर्थहीण अनुपयोगी नहीं होते है। स्वप्न प्रतिबन्धक के संबन्ध में फ्रायड का मानना है कि दो प्रकार की मानसिक प्रवृत्तियाँ होती है। पहली प्रकार की प्रवृत्ति के अनुसार उन अतृप्त इच्छाओं का बोध होता है दूसरी प्रवृत्ति स्वप्नों में अभिव्यक्त हुयी इच्छाओं के प्रति प्रतिरोध को पैदा करती है। यही कारण है कि स्वप्नों में इच्छा का रंग बदला हुआ देखने को मिलता है।

फ्रायड के अनुसार स्वप्न क्रियायें कुछ इस प्रकार है - संक्षेपण (con-densation) विस्थापन (displacement) प्रतीकीकरण (symbolization) नाटकीकरण (dramatization) उपविस्तार (secondary elaboration)

---

1. असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार

संक्षेपण :-

इसमें अचेतन मन की दमित इच्छाएँ स्वप्न का रूप लेकर पूर्ण रूप से स्वप्न में नहीं आती है बल्कि अधिकांश भाग लुप्त होकर केवल कुछ अंश मात्र स्वप्न में आती है ।

विस्थापन :-

यह ऐसा साधन है जिसमें दमित इच्छाओं से सम्बन्धित व्यक्ति अथवा घटना के प्रति व्यक्त न होकर किसी अन्य व्यक्ति या घटना के साथ विस्थापन हो जाता है ।

प्रतीकीकरण :-

स्वप्न क्रिया में अचेतन मन की कई इच्छाएँ प्रतीक के रूप में आती है क्योंकि स्वप्न प्रतिबन्धक कई इच्छाओं को निजी रूप में आने से रोक देती है ।

नाटकीकरण :-

प्रत्येक व्यक्ति स्वप्न देखता है तो उसे ऐसा महसूस करता है कि वह कोई नाटक या सिनेमा को देख रहा है क्योंकि एक के बाद एक दृश्य उसके सामने आते जाते है ।

युंग का स्वप्नो के सम्बन्ध में मत :-

युंग के स्वप्न सिद्धान्त को स्वतः प्रतीकात्मक सिद्धान्त से जाना जाता है। युंग का कहना है कि स्वप्न से हमें जरूरत से अधिक इच्छाओं की पूर्ति होती है।

युंग स्वप्न का सम्बन्ध सामूहिक अचेतन से जोड़ते है साथ ही फ्रायड की स्वप्नों में अतृप्त काम वासना को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके अनुसार यह मनुष्य की चेतनावस्था में अनुभव के अन्तर्गत आता है। स्वप्न को युंग चेतन मन की स्थिति का चित्र मात्र मानते है। चिंतन और प्रेरणाएँ अपने-आप हमारे स्वप्न में आती है जिसको हम परवाह भी नहीं करते है। पुराने चिंतन और उद्देश्य नियत्रण स्वप्न में अवतरित होते रहते है। उन्होने स्वप्न को नाटक के समान माना है जिसमें अचेतन का सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है।

फ्रायड की तरह युंग का भी मानना है कि यदि स्वप्न का अधिक समय तक परीक्षण किया जाये तो कुछ-न-कुछ वैज्ञानिक लक्ष्य निकल आता है और इससे अचेतन का उद्देश्य का ज्ञात होता है। किन्तु वे व्यक्ति के कई स्वप्नो को एक साथ अध्ययन करते हैं। उन के अनुसार स्वप्न जीने की इच्छा से जुडो है न कि यौन की इच्छा से। किन्तु दोनो ने स्वप्न को इच्छापूर्ति का ही साधन और अचेतन के महत्व को भी माना है।

'It is the way of dreams to give us more than we ask not only allowed us an insight into the causes of the neurosis but afforded aprognosis as well. What is more they showed us at what point the treatment should begin' Modern Man in Search of a Soul - C.G. Jung. p.6

एडलर का स्वप्न सिद्धान्त Adler's Theory of Dream

एडलर की धारणा फ्रायड से भिन्न होती हुई भी कई स्थानों पर विचारों का मेल भी हुआ है। एडलर मुख्य रुप से फ्रायड को दो बातों को मानते है "साइको का नियतिवाद" और "स्वप्न सम्बन्धी विचार।" युंग की तरह फ्रायड का मौन सम्बन्धित विचार पर अधिक बल न देकर शक्ति की इच्छा (will to power) को अधिक महत्त्वपूर्ण समझते है। स्वप्न एक अच्छा मार्ग है जिससे व्यक्ति बड़ी आसानी से इस इच्छा की पूर्ति कर सकता है। इस का कारण है कि यह उन समस्याओं का समाधान ढूँढता है जो शक्ति की इच्छा और हीनता की भावना के संघर्ष से पैदा होती है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति महान बनना तो चाहता है किन्तु अपने हीन भावना के कारण वह इच्छा पूर्ति नहीं कर पाता। तभी वह स्वप्न का माध्यम अपनाता है।

एडलर पूर्व दिनो की बातों या प्रेरणाओं आदि को महत्व नहीं देते है। उनके अनुसार स्वप्न में जो कुछ भी देखने को मिलता है वे वर्तमान से सम्बन्धित होते हे। एडलर स्वप्न का सम्बन्ध व्यक्ति की जीवन शैली से मानते हैं। स्वप्न-विश्लेषण के आधार पर एडलर का कहना है कि व्यक्ति के भविष्य की योजना आसानी से ज्ञात हो जाती है। अतः स्वप्न व्यक्ति के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करता है।

एडलर की मान्यता है कि स्वप्न केवल जीवन की अभिव्यक्ति भाग है और यह व्यक्ति की मानसिक क्रिया को दिखाती है।

'The dream can only be understanding as a expression of the life style and serve as an integral part of mental functioning of individual' : The Individual Psychology of Alfred Adler. Anes Backer. p. 358

सुलीवान भी एडलर के स्वप्न सिद्धान्त को मानते हैं। उनका विचार था कि जो व्यक्ति स्वप्न देखता है उसके चरित्र को जानना जरूरी है जिससे उसके व्यक्तित्व की कमियाँ साफ दिखाई देती है जिनको दूर करना अति आवश्यक है। अर्थात् एडलर के शब्दों में - व्यक्ति का संक्षिप्त स्वरूप उसके स्वप्न में आता है जो वह प्रतिदिन सृजनात्मक कार्य करता है।

1·6·7· कुण्ठा और अन्तर्द्वन्द Frustration and Conflict

प्रत्येक मानवव्यवहार के पीछे कुछ-न-कुछ कारण अवश्य होता है साथ ही आन्तरिक भावना भी लगातार कार्य करती रहती है। इससे यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति हमेशा लक्ष्य प्राप्ति की कोशिश में लगा रहता है। किन्तु चाह कर भी उनको पूरा नहीं कर सकता है जिसके कारण उसके मन में कुण्ठा का उद्भव होता है। तब व्यक्ति का व्यवहार असामान्य लगने लगता है।

कुण्ठा :-

जब व्यक्ति के सामने एक से अधिक विरोधी प्रेरणाएँ स्थित रहती है तो वह यह निश्चय नहीं कर पाता है कि वह किस की पूर्ति करें और किसका नहीं और दोनों का एक साथ होना भी सम्भव नहीं है। इसके कारण वह असहाय-सा महसूस करता है और कभी-कभी कुछ बाधाओं के कारण भी व्यक्ति अपनी इच्छा की पूर्ति नहीं कर पाता है और निराश हो जाता है। कुण्ठा के कई कारण होते है जैसे - प्रतिस्पर्दा, प्रगाढ़ आशाएँ, सामाजिक नियम, संरचनात्मक दोष आदि जिसके कारण अधिकांश

व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं ।

मन में जब कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है तो व्यक्ति अधिकतर हार न मान कर इच्छा पूर्ति के मार्ग में परिवर्तन करता है या नहीं तो लक्ष्य को ही बदल लेता है । जब व्यक्ति के बार-बार प्रयत्न करने पर भी इच्छा की पूर्ति नहीं हो पाती है तो हीनता ग्रन्थि या आक्रामक व्यवहार का उद्भव होता है साथ ही व्यक्ति अपनी कुण्ठा को दबा कर रखने के लिए मनोरचनाओं का प्रयोग करने भी लगता है । इनके अधिक उपयोग से व्यक्ति मानसिक रोगी हो जाता है ।

अन्तर्द्वन्द्व Conflict

फ्रायड के अनुसार व्यक्ति में शक्ति के उद्भव का आधार अन्तर्द्वन्द्व ही होता है । और इसके कारण ही वह विकास के पथ पर आगे बढ़ता है ।

जब दो या दो से अधिक इच्छाएँ या लक्ष्य की पूर्ति का मन हो तो व्यक्ति में अन्तर्द्वन्द्व का उद्भव हो जाता है । क्योंकि व्यक्ति दोनो में से किसी को छोडना नही चाहता । मनोविश्लेषकों के अनुसार " अन्तर्द्वन्द्व वह अवस्था है जब दो इच्छाएँ इतनी विरोधी होती है कि एक दूसरे की तृप्ति में बाधा उत्पन्न करती है ।

अन्तर्द्वन्द्व तीन प्रकार के होते हैं -

1. अभिगम - अभिगम अन्तर्द्वन्द्व Approach-Approach Conflict

इस प्रकार के संघर्ष में व्यक्ति दोनों ही तरफ आकर्षित होता है। किन्तु दोनों कि प्राप्ति असम्भव है तब मन में इस प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व का उदय होता है।

2. अनुनाद - अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व Avoidence-Avoidence Conflict

जब व्यक्ति के सामने दो अनाकर्षक लक्ष्य उत्पन्न हो जाते हैं तो तब वह भरपूर कोशिश करेगा कि वह उन दोनों से बच पायें। वह किसी भी तरफ बढ़ नहीं पायेगा जो इस प्रकार के अन्तर्द्वन्द्व का उदय होता है।

3. अभिगम - अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व Approach-Avoidence Conflict

यह अन्तर्द्वन्द्व की वह स्थिति है जब व्यक्ति के सम्मुख केवल एक ही लक्ष्य है जिसे वह प्राप्त करना और नहीं भी करना चाहता है। यदि स्थिति आ जाती है तो व्यक्ति कोई बीच का मार्ग निकलता जिससे उनकी समस्या हो।

1.6.10. असुरक्षित की भावना Insecurity

मानसिक और संवेगात्मक अशान्ति का कारण असुरक्षित, विरोधात्मक और उदासीनता की भावनायें हैं। मानसिक रोगो का मूल कारण असुरक्षा है। आत्म-विश्वास की कमी व्यक्ति को असुरक्षित बनाती है। जिससे

वह अपने को असमर्थ, जरूरतहीन और अप्रीतिकर समझता है । इससे वह हमेशा संवेगों के अन्तर्द्वन्द्वों से परेशान रहता है । असुरक्षित व्यक्ति में हमेशा चिंता और भय की भावना होती है ।

सन्तुलित व्यक्ति में आत्म-निर्भरता रहती है । जब कभी व्यक्ति में किसी प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व या कुण्ठा उठती है तो वह अपनी रक्षा युक्तियाँ की सहायता से अपने को बचाये रखता है । वही असुरक्षित व्यक्ति इस प्रकार नहीं कर पाता है । सामान्य समस्याओं को सुलझाने के बदले उनमें और उलझ कर परेशान रहने लगता है और अपने आप पर पूर्ण रूप से विश्वास खो बैठता है ।

असन्तुलित व्यक्ति जब बार-बार कुण्ठा और अन्तर्द्वन्द्वों का सामना करता है तो वह संवेगात्मक और मानसिक रोगी का आदी हो जाता है । जिसके कई कारण है जैसे --

1. माँ-बाप के द्वारा अस्वीकृति या उनमें प्यार की कमी
   Parental rejection and lack of love

जब व्यक्ति को बचपन में जरूरत से कम प्यार और ध्यान मिलने के कारण बच्चा बड़ा होने पर भी असुरक्षित महसूस करता है । इस तरह होने का प्रमुख कारण यह है कि माँ-बाप कभी-कभी अनजाने में परिस्थितियों के कारण अपने बच्चों को वही प्यार नही दे पाते है जो उन्हें देना चाहिये ।

2. हुक्म चलाने वाले माँ-बाप Domineering Parents

बच्चे के मन में तनाव भी असुरक्षित भावना जगाती है। उसके माँ-बाप उसे खुद सोचने या कार्य करने के लिए आजादी नही देते है और अपनी इच्छा के अनुसार प्रत्येक कार्य करते है तो इसका असर बच्चे पर पड़ता है। वह दिन-ब-दिन अपने को कमजोर समझने लगता है। वह चाह कर भी कुछ नही कर पाता है। इसी कारण असुरक्षिता की भावना का उदय होता है।

3. पूर्णतावादी और समालोचक माँ-बाप Perfectionistic and Overly Critical Parents

कुछ माँ-बाप ऐसे होते है जो अपने बच्चो को एक लक्ष्य बना कर कार्य करते हैं किन्तु जब बच्चा उस स्तर पर पहुँच जाता है तो उन्हें संतोष नहीं होता है और बच्चे की प्रशंसा करना छोड़ कर उसकी आलोचना करते है। इससे बच्चे के मन में असुर क्षा की भावना का उदय होता है।

4. अस्थिर घर की स्थितियां Unstable Home Situation

माँ - बाप अच्छी नौकरी या जिन्दगी के खोज में एक शहर से दूसरे या एक नौकरी से दूसरी को बदलते रहते है। इसका असर उन से कई गुना अधिक उनके बच्चों पर पड़ता है क्योंकि बच्चे पर घर के वातावरण और आर्थिक स्थिति के बदलाव का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस कारण भी अपने को असुरक्षित महसूस करता है।

5· कठोर और कड़ी अनुशासन Cruel and Harsh Discipline

कुछ माँ-बाप अपने बच्चो को औरों के बच्चो से अच्छा बनाने के लिए उनसे दुष्टता से व्यवहार करते है साथ ही कड़ी अनुशासन का भी पालन करते है जिससे बच्चा अपनी इच्छानुसार कोई भी काम नहीं करता है और अपने माँ-बाप के प्रति उसके मन में डर बैठ जाता है जिसके कारण वह अच्छा बनने की जगह असुरक्षित और डरपोक बन जाता है ।

6· निषेधात्मक सुधार Negative Correction

कुछ माँ-बाप अपने बच्चों को ठीक करने के लिए निषेधात्मक सुधार का तरीका अपनाते हैं । इसमें व्यक्ति अपने बच्चे के गलती करने पर सुधारने के लिए प्यार से न समझा कर नकारात्मक शब्दों का प्रयोग करता है । इससे बच्चे पर गहरा असर होता है और अपने-आप को सुधारने की जगह और बिगड़ लेता है और असुरक्षित भावना का शिकार हो जाता है ।

7· अतिदयालु माँ-बाप Overindulgent Parents

प्रत्येक माँ-बाप अपने बच्चे से अधिक जुड़े होते है । विशेष कर माँ अपने बच्चे से अत्यधिक प्यार और देखभाल करती है जिसके कारण वह बच्चे का हर कार्य अपने-आप करती है । क्योंकि उसे यह डर लगा रहता है कि बच्चे को कुछ हो न जाये । इस से बच्चे की क्षमता पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है और वह अपने-आप को असमर्थ और असुरक्षित महसूस करने लगता है ।

8· सहोदरो से पक्षपात तुलना Unfavourable comparison with sublings

बच्चे में असुरक्षित की भावना तब भी उदय होती है जब उसके माँ-बाप या स्कूल के शिक्षक उसकी तुलना किसी अन्य बच्चों से कर उसे तुच्छ ठहराते है । इस तरह अधिक समय तक करते रहने पर बच्चे का मानसिक रूप कमजोर हो जाता है और उसकी क्षमता पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है ।

9· माता-पिता की अनुपस्थिति Absence of Parents

जब बच्चा माता या पिता के बिना बड़ा होता है तो उसमें असुरक्षित की भावना का उदय हो जाता है और अपने आप को कमजोर तथा न जी पाने योग्य समझने लगता है । किन्तु कई बच्चों के बीच पालने वाला बच्चा इस तरह की भावना का शिकार नहीं होता है । वह माँ-बाप की कमी को आसानी से सहन कर लेता है ।

10· माँ-बाप का असामंजस्यपूर्णता Parental Inconsistency

जब माँ और पिता के विचारों मे समानता नहीं रहती है तो वे खुद ही निश्चय नहीं कर पाते है कि उनके बच्चे को किस राह पर चलाना चाहिये । दोनो अपने-आपने विचारों को ही सही मानते हैं और इसके कारण असर का दबाव बच्चे के सिर पर पड़ता है क्योंकि वह खुद यह निश्चय कर नही पाता है कि उसे किसके बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिये । ऐसे सन्दर्भ में भी बच्चे के मन में असुरक्षित की भावना का उदय होता है ।

11. डरपोक और असुरक्षित माँ-बाप
Fearful and Insecure Parents

जो माँ-बाप खुद डरपोक और असुरक्षित महसूस करते है। वे कभी अपने बच्चों को सुरक्षित या बहादुर नहीं बना सक्ते है। और इस स्वभाव के माँ-बाप के साथ रहने के कारण बच्चो में भी असुरक्षित की भावना का उदय हो जाता है।

ईष्या :- Jealousy

ईष्या वह स्वभाव है जिसमें व्यक्ति अपने से बेहतर व्यक्ति को देख कर सहन नहीं कर पाता है। इसका कारण कुण्ठा की भावना है। यह किसी इच्छा की अपूर्ति पर उत्पन्न होती है। ईष्यालु व्यक्ति के व्यवहार से ही उसके मन के भावों को समझ लिया जा सकता है। इतना ही नहीं इस प्रकार के व्यक्ति शंकायुक्त और दृढ़ स्वभाव के होते है। शारीरिक कष्टो और कड़वी बातों से अपने प्रतिस्पर्धित व्यक्ति को दुख पहुँचते है। ईष्यालु व्यक्ति अतिसंवदनशील और अतिशीघ्र चिढ़ने वाला व्यक्ति होता है। वह अपने-आपको दूसरो के मुकबले में कभी आगे न बढ़ पाने की सोचता है। उससे बेहतर व्यक्ति को नीचा दिखा कर खुश होता है।

बच्चो में भी इस तरह की भावना देखी जा सकती है सहोदर के प्रति होती है। इस तरह की स्थिति में माँ-बाप को बुद्धिमानी से कदम उठाना चाहिये।

निष्कर्ष :-

परिवर्तन सामान्य है किन्तु जरुरी है, जो प्रत्येक दिशा में पायी जाती है । इसी परिवर्तन के कारण मानव जीवन पूर्ण रूप से बदल गया जिसमें विज्ञान का विशेष हाथ है क्योंकि इसमें विकास होने के कारण व्यक्ति की देख-रेख और सोच-विचार में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया । विज्ञान पूर्ण रूप से आवतरित न होकर कई शाखाओं में बंट गया और एक समय में एक ही शाखा का विकास हुआ । जिसमें मनोविज्ञान भी एक है जिसका विकास 20 वी शताब्दी में हुआ ।

साहित्य समाज से जुडा होने के कारण विज्ञान के द्वारा आये गये परिवर्तन ने भी इसे काफी दूर तक प्रभावित किया । इसलिए साहित्य-कार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन सिद्धान्तों को अपने लेखन कार्य में उपयोग करता है । मनोविज्ञान या मनोविश्लेषण भी विज्ञान की शाखा होने के कारण इसका प्रभाव समाज के सभी पहलूओं पर पड़ा जिसमें साहित्य भी एक है । साहित्यकार दो प्रकार के होते है एक तो वे जो सिद्धान्तों पर अधिक बल देकर अपनी रचना उसी के आधार पर रचते है किन्तु दूसरे प्रकार के साहित्यकार बिल्कुल विपरित होते है परन्तु उनकी रचनाओं को भी इस दृष्टि से अध्ययन कर सकते है । जैसे कि मानव की मानसिक चेतना से समाज जुडा है और साहित्यकार समाज से जुडकर अपनी रचना प्रस्तुत करता है इसलिए उसकी रचना का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है क्योंकि मानस की मानसिक चेतना का अध्ययन ही मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों का कार्य है.। मात्र सामान्य जीवन स्थिति या दैनिक प्रक्रिया पर प्रकाश डालकर मनोवैज्ञानिक अध्ययन नहीं हो सकता है । बल्कि यह जानना जरुरी

है कि एक पात्र का दूसरे पात्र के प्रति कैसा व्यवहार करता है, समाज में अपना क्या स्थान बना पाया है, उसमें किस प्रकार की कमियाँ है, क्या वह कुण्ठा या किसी अन्तर्द्वन्द्व आदि से पीडित है। अथार्थ पात्रों के असमान्य व्यवहारों तथा सामान्यता के आड़ में असामान्य व्यवहार के अध्ययन से ही मनोविश्लेषणात्मकता का सही अध्ययन होता है।

मनोविश्लेषण सिद्धान्तों में महत्त्वपूर्ण फ्रायड युंग, एडलर., केरन हार्नी, एरिक फ्रॉम, हैरी स्टैक सुलीवान और आटो रैंक आदि है। इन सिद्धान्तों का प्रभाव साहित्य की सभी विधाओं में देखा जा सकता है। हिन्दी के केवल थोड़ ही लेखकों को मनोवैज्ञानिक लेखक माने जाते है किन्तु बाकी साहित्यकारों की रचनाओं का भी अध्ययन इस दृष्टि से किया जा सकता है। इस अध्याय में जिन सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है उनका अनुप्रयोग आगे के अध्यायों में चुने गये छाठवें दशक के उपन्यासों के आधार पर किया जाएगा और उपयुक्त निष्कर्षों की ओर प्रस्थान होगा।

-=-

द्वितीय अध्याय

आठवें दशक के प्रमुख उपन्यास : मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के सूत्र

-=-

आठवें दशक के प्रमुख उपन्यास : मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के सूत्र

2·0· प्रास्ताविक :-

आठवें दशक के उपन्यासों के सम्यक सर्वेक्षण के पश्चात बीस उपन्यासों को प्रस्तुत अध्ययन के लिए चयन किया गया है। ये उपन्यास 1971 से 1980 (दस वर्ष) तक के बीच हैं और हर वर्ष से कम से कम एक प्रतिनिधि उपन्यास इनमें सम्मिलित हैं। इन उपन्यासों का पूर्ण अध्ययन करने के बाद यह देखा गया है कि हर एक उपन्यास में मनोग्रस्त स्थिति से पीड़ित पात्र मिलते हैं। यह उनके बातचीत, व्यवहार आदि से स्पष्ट विदित होता है।

2·1· चयनित उपन्यास : अनुप्रयुक्त मनोविश्लेषण सिद्धान्त :-

अध्ययन के लिए चुने गये उपन्यासों की तालिका इस प्रकार है —

उपन्यासो के नाम	लेखकों का नाम	प्र•संस्करण वर्ष
1• आपका बंटी	मन्नू भण्डारी	1971
2• परत-दर-परत	अन्नपूर्णा	1971
3• अन्तराल	मोहन राकेश	1972
4• उस पार का अंधेरा	सुदर्शन नारंग	1973
5• काली आंधी	कमलेश्वर	1974
6• रिश्ते	सुदर्शन चोपड़ा	1974
7• नावें	शशिप्रभा शास्त्री	1974
8• रेत की मछली	कान्ता भारती	1975
9• उसके हिस्से की धूप	मृदुला गर्ग	1975
10• तीसरा आदमी	कमलेश्वर	1976
11• अनामदास का पोथा	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	1976
12• अकेली आवाज	राजेन्द्र अवस्थी	1976
13• उखड़े कदम	विपिन चतुर्वेदी	1977
14• टुण्डा लाट	जगदीश चन्द्र	1978
15• प्रतिध्वानियां	दीप्ति खण्डेलवाल	1978
16• दूसरा सूत्र	डा•देवराज	1978
17• किशनुली	शिवानी	1979
18• परछाइयों के पीछे	शशिप्रभा शास्त्री	1979
19• कोई तो	विष्णु प्रभाकर	1980
20• सुबह के इन्तजार तक	सूर्यबाला	1980

उपर्युक्त उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन निम्नलिखित सिद्धान्त सूत्रों के आधार पर किया जा सकता है क्योंकि इनमें सम्बन्धित स्थितियों में पात्रों को पाया जाता है ।

1. फ्रायड के सिद्धान्त – व्यक्तित्व संरचना पराहम, super ego अचेतन unconscious

2. फ्रायड का स्वप्न और दिवास्वप्न से सम्बन्धित सिद्धान्त

3. व्यक्तित्व विकास के स्तर – मातृ मनोग्रंथि oedipus complex और पितृ मनोग्रंथि electra complex

4. मनोरचनाओं के प्रकार

5. अहम या अहंकार

6. एडलर के हीन ग्रंथि, उच्च ग्रंथि और उच्चता की प्राप्ति के सिद्धान्त

7. युंग के व्यक्तित्व प्रकार – अन्तर्मुखी introvert और बहिर्मुखी extrovert सामुहिक अचेतन

8. कैरेन हॉनी – सुरक्षा और तृप्ति के सिद्धान्त, वातावरण और स्थिति का प्रभाव से सम्बन्धित सिद्धान्त

9· एरिक फ्रांम के द्वारा प्रतिपादित – अकेलेपन का सिद्धान्त, पहचान की आवश्यकता का सिद्धान्त

10· अपराध की भावना, अन्तर्द्वन्द्व, कुण्ठा से पीड़ित पात्र

11· मनोविकृति – निर्मूल भ्रम

12 लैंगिक विपर्यास या विकृतियाँ

1· स्वपीड़न रति 2· प्रदर्शनवृत्ति 3· प्रतीकान्ध भक्ति

4· परपीड़न रति 5· रहस्य दर्शन

13· मनः स्नायुविकृति psychoneurosis मनोग्रस्तता बाध्यता मनः स्नायुविकृति

14 परिवार और सम्बन्धों के टूटने के कारण – मूल्यों में परिवर्तन से सम्बन्धित स्थितियाँ । पात्रों के मनो – विश्लेषण के सन्दर्भ में समाज मनोविज्ञान के सूत्रों को भी ध्यान में रखा जायेगा ।

2·2· उपन्यास : अनुप्रयुक्त सिद्धान्त एक विवरण :-

फ्रायड के सिद्धान्त – व्यक्तित्व संरचना

फ्रायड के सिद्धान्तों ने समाज और साहित्य को इतना अधिक प्रभावित किया है कि आठवें दशक के कई उपन्यासों का अध्ययन इनके सिद्धान्तों से कर सकते हैं।

नैतिक विवेक या सुप्रदम SUPER EGO

सुप्राहम या नैतिक विवेक के कारण ही व्यक्ति के आभ्यंतरिक क्षेत्र में अपराध भाव बनता है और व्यक्तित्व ने पूर्ण रूप से विच्छेद हो जाता है ।

नैतिक विवेक को प्रमुख रूप से " अनामदास का पोथा " " दूसरा सूत्र " और " कोई तो " के बड़े पात्रों के द्वारा उपयोग करते देखा जा सकता है । अन्य पात्रों में गौण रूप से इसे देखा जा सकता है ।

अचेतन :-

फ्रायड ने मन को तीन भागों में विभाजित किया है । अचेतन को अधिक महत्व दिया है क्योंकि ऐसा माना है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का अधिकांश रहस्य उसके अचेतन में छिपा रहता है । जो समय के अनुसार चेतन स्तर पर आता है । सभी उपन्यासों पात्रों में अचेतन मन में कई महत्वपूर्ण बातें छिपी मिलती है । अत: " आपका बंटी " से लेकर " सुबह के इन्तजार तक " के उपन्यासों में कई पात्र मिल जाते हैं जिनकी न केवल इच्छा अचेतन मन में छिपी हुई है बल्कि उनके पूरे न होने के कारण व्यवहार में कुण्ठा, संघर्ष के भाव आदि को देखा जा सकता है ।

फ्रायड का स्वप्न सिद्धान्त

स्वप्न साधारण तौर से देखा जायें तो सभी मनुष्य देखते हैं। अचेतन मन में दमित इच्छायें ही स्वप्न के माध्यम से पूर्ण होती इसे न केवल फ्रायड अन्य मनोविश्लेषकों के द्वारा भी माना गया है।

आत्वे दर्शक के कई उपन्यास है जिनके पात्रों के द्वारा स्वप्न देखे जा रहे दृश्य मिलते है जैसे कि - " अनामदास का पोथा " " अकेली आवाज ", " उखडे कदम ", " टुण्डा लाट " और " कोई तो "।

दिवास्वप्न सभी उपन्यासों के पात्रों में न पा कर केवल " अनाम - दास का पोथा ", " टुण्डा लाट " में पाया जाता है।

व्यक्तित्व विकास के स्तर :-

फ्रायड ने व्यक्तित्व संरचना के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित सिद्धान्त भी बनाये है। उनके द्वारा प्रतिपादित पितृ मनो - ग्रंथि electra complex मातृ मनोग्रंथि oedipus complex एक आध उपन्यासों के पात्रों में पाया जाता है। जैसे " आपका बंटी " में मातृ मनोग्रंथि को।

मनोरचनाएँ या रक्षा युक्तियाँ :- DEFENCE MECHANISM

अन्तर्द्वन्द conflict और कुण्ठा से बचने के लिए सभी मनुष्य मनोरचनाओं का प्रयोग करते है ताकि दैनिक जीवन का सन्तुलन बिगाड न पाये । आठवे दशक के उपन्यासों में कई पात्र अलग-अलग मनोरचनाओं का प्रयोग करते है वे कुछ इस प्रकार है' --

1· तार्किकीकारण : Rationalization "आपका बंटी", "उस पार का अंधेरा", "रिश्ते", "नावे", "उखडे कदम", "टुण्डा, लाट "कोई तो" और "सुबह के इंतजार तक"।

2· दमन Repression "आपका बंटी", "अनामदास का पोथा" ।

3· प्रक्षेपण Projection "आपका बंटी", "अन्तराल", "उसके हिस्से की धूप", "तीसरा आदमी", "अकेली आवाज", "टुण्डा लाट" और "सुबह के इंतजार तक" ।

4· अवरूद्धन Suppression "आपका बंटी", "काली आँधी", "रिश्ते", "नावें", "अनामदास का पोथा", "विश्रमुली" ।

5· सहचर्य Association " आपका बंटी " " परत-दर-परत " " अन्तराल ", " काली आँधी ", " नावे ", " रेत की मछली ", " अनामदास का पोथा ", " अकेली आवाज ", " उखडे कदम ", " टुण्डा लाट ", " दूसरा सूत्र ", " सुबह के इंतजार तक " ।

6• पलायनवादी escapism " परत-दर-परत ", " उस पार का अंधेरा ", " नावें ", " अकेली आवाज ", " उखड़े कदम ", " प्रतिध्वनियाँ ", " सुबह के इंतजार तक " ।

7• उदात्तीकरण sublimation " परत-दर-परत ", " रिश्ते ", " नावें ", " उसके हिस्से की धूप ", " अनामदास का पोथा ", " उखड़े कदम ", " प्रतिध्वनियाँ ", " किसमुली ", " कोई तो ", " सुबह के इंतजार तक " ।

8• विस्थापन displacement " अन्तराल ", " नावें ", उसे हिस्से की धूप ", " तीसरा आदमी ", " टुण्डा लाट " ।

9• तादात्मय identification " अनामदास का पोथा " और " तीसरा आदमी " ।

10• वास्तविकता से पलायन reality erosion " तीसरा आदमी ", " अकेली आवाज ", " परछाइयों के पीछे " ।

11• क्षतिपूर्ति compensation " परछाइयों के पीछे " ।

अहम :-

अहम या इगो जिसे " अहंकार " से सभी करण किया गया है और इस प्रकार से यह स्वयंता की आत्मागत अनुभूतियों को ओर भी निर्देश करता है । उसे अध्ययन के लिए चुने गये बीस उपन्यासों मे विभिन्न आयु और वर्ग के पात्रों में देखने को मिलता है । जैसे कि " आपका बंटी " और " अकेली आवाज " में बड़े-छोटे दोनो पात्रों में जहाँ कि " परत-दर-परत " अन्तराल " उस पार का अंधेरा " में इसे केवल बडों में देखने मिलता हैं । " काली आंधी ", " रिश्ते " में अहम के संघर्ष के कारण ही पात्रों को मानसिक तौर से पीडित देखा जा सकता है । " नावे ", " रेत की मछली " में पात्रों में अहम होने के लिए दूसरो की परवाह भी नहीं करता दिखाई देता हैं ।

" तीसरा आदमी ", " उखडे कदम " और " टुण्डा लाट " के पात्रों में अहम का संचार परकष्टा पर दिखाई देने के कारण ही झुठो आन-बान तथा संघर्ष और उससे, मूल्यों में परिवर्तन को देखा जा सकता अत: अंत में सम्बंधों का टुटना नजर आता है " प्रतिध्वनियाँ " और " दूसरा सूत्र " उपन्यास में गौण रुप से इसे देख सकते है " किसनुली " और " परछाइयो के पीछे " में अहम की भावना एक-आध पात्र मे अत्याधिक होने के कारण अन्य मनोविकारों को जन्म देता है " कोई तो " और " सुबह के इंतजार तक " में भी अहम और उससे जुडते हुऐ पात्र मिलते है ।

एलफ्रेड एडलर के वैचत्रिक मनोविज्ञान :-

एडलर पहले फ्रायड के विचारधारा को मानते थे और बाद में असहमत होने के कारण उन्होंने अपने द्वारा कुछ प्रमुख सिद्धान्त बनाये। हीन भावना ग्रान्थ और प्रतिपूर्ति inferiority complex

इसे " आपका बंटी ", " परत-दर-परत ", " अन्तराल ", " उस पार का अंधेरा ", " काली आंधी ", " रिश्ते ", " नावे ", " अनामदास का पोथा ", " तीसरा आदमी ", " अकेली आवाज ", " उखड़े कदम ", " टुण्डा लाट ", " परछाइयों के पीछे ", " कोई तो ", " सुबह के इंतजार तक " इन उपन्यासों के कई पात्रों में पाये जाते हैं।

महदभाव ग्रान्थ Superiority complex

एडलर ने हीन-भावना के साथ-साथ महदभाव को भी प्रतिपादित किया है। ऐसा देखा जाये तो हीन भाव ग्रान्थ और महदभाव ग्रान्थ अन्तर्निहित है। इन उपन्यासों के पात्रों में इस ग्रान्थ को पाया जाता है - " आपका बंटी " " उस पार का अंधेरा ", " अनामदास का पोथा " "अकेली आवाज" और "टुण्डा लाट"।

उच्चता या महत्ता प्राप्ति प्रयास : Striving for superiority

हीन और उच्च ग्रान्थि के आलावा एडलर ने उच्चता या महत्ता प्राप्ति प्रयास के बारे मे भी सिद्धान्त बनाया है जो व्यक्ति की इच्छा से सम्बन्धित है कभी भी मनुष्य अपनी प्राप्ति से सन्तुष्ट न होकर निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करता है कुछ उपन्यासों के पात्रों में ऐसा गुण देखने को मिलता है जैसे " काली आंधी ", " अनामदास का पोथा ", " तीसरा आदमी " और " उखडे कदम "

युंग का विश्लेषणात्मक सिद्धान्त - सामुहिक अचेतन :-

युंग ने भी फ्रायड की तरह ही अचेतन को अधिक महत्त्व दिया यही कारण है कि उनके विचार अचेतन के प्रति कुछ मिलते-झुलते हैं । उपन्यासों में प्राप्त अचेतन से सम्बन्धित स्थितियों को इनके अन्तर्गत रखकर अध्ययन किया जा सकता है । किन्तु सामुहिक अचेतन से सम्बन्धित एक-आध ही उपन्यास ही प्राप्त होते है जैसे " अनामदास का पोथा "

व्यक्तित्त्व प्रकार :-

युंग ने व्यक्तित्व की व्याख्या मूलरूप aarchtype के आधार पर की है । और दो वर्गों में बाँटा है । अन्तर्मुखी introvert जिसे हम " आपका बंटी ", " दूसरा सूत्र ", " अनामदास का पोथा ", " तीसरा आदमी " उपन्यासों के पात्रों में पा सकते हैं ।

बहिर्मुखी extrovert के गुण " काली आंधी ", " उसके हिस्से की धूप ", " अकेली आवाज ", " उखड़े कदम ", " कोई तो " और " सुबह के इंतजार तक " इन उपन्यासों के पात्रों में पाये जाते हैं।

कैरेन हॉनी Karen Horney

कैरेन हॉनी फ्रायड के द्वारा प्रतिपादित कई सिद्धान्तों से सहमत थी । उनका यह मानना था कि बचपन में बच्चा जिस वातावरण में पलता हैं और उसे अपने माता-पिता से कितना प्यार मिलता है और कितनी सुरक्षा मिलती है इसको उन्होने अधिक मूल्य दिया है और जिस व्यक्ति में इसकी कमी होती है उनमें कोई न कोई असमान्यता अवश्य पायी जाती हैं। आठवें दशक के कुछ उपन्यास ऐसे है जिनके पात्रों का बचपन सुखमय नही रहा उनमे प्रमुख है - " आपका बंटी ", " परत दर परत ", " नावें " रेत की मछली ", " अनामदास का पोथा ", " अकेली आवाज " और " दूसरा सूत्र " । इन्हे अध्ययन के लिए स्वीकार किया गया हैं ।

एरिक फ्राम - अकेलेपन का सिद्धान्त या एकाकीभाव :-

वातावरण और स्थिति जिसमें व्यक्ति रहता है अगर वें उसके अनुकुल न हो तो वह अकेलापन महसूस करने लगता हैं वह सब चीजों से कटा-कटा सा रहने लगता है । अध्ययन के लिए चूने गये कई उपन्यासों के पात्रों में इस भावना को देखा जाता है जैसे कि - " आपका बंटी " " परत-दर-परत ", " उस पार का अंधेरा ", " रिश्ते ", " उसके हिस्से की धूप ", " तीसरा आदमी ", " अकेली आवाज ", " प्रति - ध्वनियाँ ", " दूसरा सूत्र " और " कोई तो " ।

पहचान की आवश्यकता Need for Identification

ऐसा कौन सा मनुष्य है जो अपनी पहचान इस दुनिया में नही बनना चाहता हैं सभी अपने तौर तरिके से लगातार इसी कोशिश में लगे रहते है । इन बीस उपन्यासों में वह पात्र मिलते है जो अपनी पहचान बनाने की कोशिश या संघर्ष में लगे हुए हैं । " आपका बंटी " " अन्तराल ", " काली आँधी ", " उसके हिस्से की धूप ", " तीसरा आदमी ", " टुण्डा लाट "," कोई तो " और " सुबह के इंतजार तक " उपन्यास में इससे सम्बन्धित पात्र प्राप्त होते हैं ।

अपराध की भावना, अन्तर्द्वन्द्व और कुण्ठा से पीडित पात्र

अपराध की भावना Guilt Conscious

अपराध की भावना सामान्यता हर स्तर के मानव में पाई जा सकती है क्योंकि जाने या अनजाने में अपराध सभी करते हैं- जिससे छुटकारा पाना उतना आसान नही होता है क्योंकि यह भावना मन के अचेतन स्तर में स्थित हो जाती है और समय-समय पर व्यक्ति को किये अपराध का अहसास दिलाता रहता हैं।

" आपका बंटी ", " परत-दर-परत ", " अन्तराल ", " उस पार का अंधेरा ", " रिश्ते ", " नावें ", " रेत की मछली ", " उसके हिस्से की धूप ", " अनामदास का पोथा ", " तीसरा आदमी ", " अकेली आवाज ", " उखडे कदम ", " प्रतिध्वनियाँ ", " किशनुली ", " परछाइयों के पीछे ", " कोई तो " और " सुबह के इंतजार तक "

इन उपन्यासो में अनेक स्तरों के पात्रो में इस भावना को देखा जा सकता है और उसके कारण को भी समझा जा सकता है ।

अन्तर्द्वन्द्व :-

अन्तर्द्वन्द्व भी ठीक अपराध की भावना जैसी ही मानसिक स्थिति है जो सभी अनुभव करते है । अन्तर्द्वन्द्व इन उपन्यासो के पात्रो में पाया जाता है - " आपका बंटी ", " परत-दर-परत ", " अन्तराल ", " रिश्ते ", " नावे ", " उसके हिस्से की धूप ", " तीसरा आदमी ", " अकेली आवाज ", " उखडे कदम ", " टुण्डा लाट ", " प्रतिध्वनियाँ ", " दूसरा सूत्र ", " परछाइयों के पीछे ", " कोई तो " और " सुबह के इंतजार तक " ।

कुण्ठा :-

मनुष्य में कई प्रकार की इच्छायें होती है जो निरंतर बढ़ती ही जाती है न कि कम । और ये सभी स्तर के आयु और वर्ग के लोगों में पाई जाती है । अनेक प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति होना संभव नही हैं तभी व्यक्ति के मन में कुण्ठा का उद्भव होता हैं जो सभी तरह के मानसिक बीमारियों का जड़ हैं । अध्ययन के लिए चुनें गये कई उपन्यासों में छोटे-बड़े सभी पात्रो के कुण्ठा से पीडित देखा जा सकता हैं । " आपका बंटी ", " परत-दर-पतर ", " अन्तराल ", " उस पार का अंधेरा ", " नावे ", " रेत की मछली ", " उसके हिस्से की धूप ", " तीसरा - आदमी ", " उखडे कदम ", " टुण्डा लाट ", " प्रतिध्वनियाँ "

" किम्नुली ", " परछाइयो के पोछे ", " कोई तो " और " सुबह के इंतजार तक " इन उपन्यासों में उक्त प्रकार के पात्रों का समावेश पाया जाता है ।

मनोविकृति-निर्मूल भ्रम :-

किसी वस्तु या स्थिति के नही रहते हुऐ भी अगर व्यक्ति को किसो की आवाज का सुनायी देना या किसी व्यक्ति का आभास होना यह असामान्य व्यक्तित्व का सूचक होता है जिसे इन उपन्यासों के पात्रों में देखा जा सकता है - " उस पार का अंधेरा " " काली आंधी ", " किम्नुली " और " परछाइयों के पोछे " ।

लैंगिक विपर्यास या विकृतियाँ :-

मनुष्य में अगर लैंगिक इच्छा की पूर्ति सामान्य रुप से न होने पर निश्चित रुप से विकृतियाँ आ जाती है । अध्ययन के लिये चुने गये उपन्यासो में भी कुछ एक पात्र अवश्य मिल जाते है जिनमें लैंगिक विकृतियाँ पाई जाती है । जैसे कि --

परपीडनरति Sadism

" आपका बंटी ", " परत-दर-परत ", " अन्तराल ", " रिश्ते ", " रेत की मछली ", " उसके हिस्से की धूप ", " अकेली आवाज ", " उखडे कदम ", " प्रतिध्वनियाँ ", " दूसरा सूत्र ", " परछाइयों के पीछे " और " कोई तो " इन उपन्यासों के पात्रो में इस विकृति को पाया जा सकता है ।

प्रदर्शनवृत्ति Exhibition

" किसमुलो " उपन्यास के पात्र में इस विकृति को पाया जाता है ।

प्रतीकान्ध भक्ति Fetishism

" अनामदास का पोथा " में इसे पाया जाता है ।

स्वपीडनरति Mosochim

" रेत की मछली " में इसे पाया जा सकता है ।

रहस्य दर्शन

" आपका बंटी " उपन्यास में बंटी इस विकृति से पीडित है ।

मन: स्नायुविकृति - मनोग्रस्तता बाहयता :-

" अनामदास का पोथा " का मुख्य पात्र इस विकृति से पीडित पाया जाता है ।

मूल्यो values में परिवर्तन - टूटते सम्बन्ध :-

मूल्यों के परिवर्तन होने के कारण सम्बन्ध और परिवारों को टूटते देखा जा रहा है जो आधुनिकता का प्रतीक है । जिन उपन्यासों के

पात्रो को इससे पीडित देखा जा सकता है वे कुछ इस प्रकार है -
" आपका बंटी ", " परत-दर-परत ", " उसके हिस्से का धूप "
" उखडे कदम " और " कोई तो । "

2·3· निष्कर्ष :-

मनोविज्ञान जो विज्ञान की ही एक शाखा है उसका समाज और साहित्य में काफी प्रभाव पडा । आठवे दशक के उपन्यासो को जिन्हें मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए चुना गया है वे सब मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के अन्तर्गत न रखे जाने पर भी फ्रायड, युंग, एडलर, कैरेन हार्नी एरोक फ्राँम आदि मनोवैज्ञानिकों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों से इन उपन्यासों का अध्ययन किया जा सकता है ।

:/:

तृतीय अध्याय

आठवें दशक के उपन्यासों की मनोभूमि : कथावस्तु योजना

:/:

" आठवे दशक के उपन्यासों की मनोभूमि - कथावस्तु योजना

3·0· भूमिका :-

सामाजिक बदलाव के साथ उपन्यास के कथावस्तु में भी निरन्तर बदलाव आता रहा । इस बदलाव का प्रमुख कारण था युग यथार्थ का निरन्तर परिवर्तन एवं विकास । चन्द्रकांत बादिबडेकर के शब्दों में - " जीवन के जटिल रूप को समझने-समझाने जीवन के संघर्ष में प्राप्त जीवन सत्य को अभिव्यक्त करने अपने ही जीवन को अधिक स्पष्ट करने एवं सर्व समार्वशी बनाने का उद्देश्य जब साहित्य के सामने प्रस्तुत हुआ तब रंजनवाद के साथ कथावस्तु भी धीरे-धीरे लुप्त होने लगा । " [1]

1· साठोत्तर हिन्दी उपन्यास विविध प्रयोग - कुसुम शर्मा -

उपन्यास के विविध तत्वों में सर्व प्रथम कथानक वह है जो उपन्यास की रचना का मूल आधार होता है । कथानक के अन्तर्गत वे पूरी घटनाये आजाती है जिनमें उपन्यास की रचना होती है कथानक का विवेच्य करते हुए हिन्दी साहित्य कोश में कहा गया है - " काव्य नाटक, उपन्यास कहानी आदि के उस भाग को कथा वस्तु कहते है जिनमें मूल कथा भाग या इतिवृत के साथ सम्बद्ध वे समस्त रचनाये आ जाती है जिनसे मिलकर कथात्मक साहित्य विशेष की विषय वस्तु बनती है । "[1]

उपन्यासकार कई तत्वों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करता है । जैसे कथासूत्र, प्रासंगिकताये उपकथाये आदि । प्रमुख कथानक वही होता है जो नायक या उपन्यास के प्रमुख पात्र के साथ चलता है । और साथ ही उपन्यासकार प्रासंगिक कथाओं और अपनी कल्पना की सहायता से कथावस्तु का निर्माण पात्रों के क्रिया कलापों के द्वारा करता है । ये जितने सजीव होंगे उतना ही प्रभावशाली उन का कथानक भी होगा ।

आधुनिक हिन्दी उपन्यास के विकास का अध्ययन विविध दृष्टियों से किया जाता है । मनोविज्ञानिक उपन्यास की रचना और विवेचना इसी का एक अंश है । हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में मनोविज्ञान प्रधान उपन्यासों की रचना प्राय: प्रथम महायुद्ध के पश्चात आरम्भ हुई । किन्तु हिन्दी उपन्यास की मूल प्रवृत्ति प्रधान रूप से परम्परावादी रहने के कारण समय-समय पर कई परिवर्तन आये । यह देखा जा सकता है कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि का प्रभाव उतना अधिक नहीं दिखाई देता है परन्तु कालान्तर में लेखकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ और वे जन सामान्य की समझ हेतु

1· हिन्दी साहित्य कोश - धीरेन्द्र वर्मा (प्र·स·) पृ· 186·

मनोविज्ञान की दृष्टि उपन्यास को रचना के लिए आवश्यक मानने लगे । चूंकि उपन्यासकार को दृष्टि मनोवैज्ञानिक हो न हो परन्तु उस पर कुछ अंशों में मनोवैज्ञानिक प्रभाव अवश्य दिखाई देता है ।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की कथावस्तु के सम्बन्ध में मनो - वैज्ञानिक उपन्यासकारों का कहना है कि - " कथा का मूल अचेतन अव्यवस्थित हो तो उपन्यास में व्यवस्था कैसे आयेगी ? "[1] इस कथन में उपन्यासकारों का मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के कथानक के प्रति आशंका व्यक्त होती है । तथा वे उपन्यास के अन्त में असंगति को देखते हुए पाठक से कथानक के विकास की बोध गम्यता की अपेक्षा करते है ।

उपन्यासों में साधारण कथानक का विकास बाह्य परिवेश में होता है । परन्तु मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में बाहरी परिवेश से अधिक आन्तरिक परिवेश को महत्व दिया जाता है । और कथा - वस्तु का विस्तार न होकर संकुचित होती जाती है ।

डॉ•प्रेमभटनागर का कहना है कि - " नये उपन्यासकारों ने विस्तार को अपेक्षा गहराई, परिणाम घटनाओं की संख्या की अपेक्षा गुण और स्थूलता की अपेक्षा सूक्ष्मता को प्रश्रय दिया है । समय और स्थान भी अब सीमित होते जाते है । "[2]

1• हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास - डां•धनराज मानधनी -पृ•136•

2• हिन्दी उपन्यास बदलते शिल्प - डां•प्रेम भटनागर - पृ• 16•

आधुनिक उपन्यासकार व्यक्ति को अधिक महत्व देता है। उसके प्रत्येक संवेगों पर ध्यान देता है। कथानक का विश्लेषण करते हुए मानधने ने अपने शोध प्रबन्ध में लिखा है कि - "मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की कथावस्तु बिलकुल अछूते अनचाहे अनदेखे और अनबुझे पक्ष को लेकर चलती है।"[1]

मनोवैज्ञानिक उपन्यास सामान्य रूप से किसी कथा और उससे सम्बद्ध पात्रों का चरित-चित्रण ही नहीं करता बल्कि वह उनके माध्यम से अभिव्यक्त की जानेवाली मूल आत्मानुभूति का विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासो को कथावस्तु इसलिए गौण हो जाती है क्योंकि सामान्य उपन्यास की भांति मनोवैज्ञानिक उपन्यास का उद्देश्य कोई कथा प्रस्तुत करना मात्र नहीं होता है। यही कारण है कि मनोवैज्ञानिक उपन्यास के कथानक विभिन्न घटनाये अपने आप में कोई महत्व नहीं रखती है किन्तु परिस्थिति के अनुसार उनका महत्व भी बढ़ जाता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार किसी विशिष्ट परिस्थिति में कोई पात्र किस प्रकार की प्रतिक्रिया प्रकट करता है और उसके हृदय को मूल अनुभूतियों और घटनाओं से क्या सम्बन्ध है इसकी ओर संकेत करता है। यही कारण है कि मनो - वैज्ञानिक उपन्यास का कथानक उसकी दीर्घता या संक्षिप्ता से प्रभावित नहीं होता क्योंकि उसमें प्रत्येक घटना एक विशिष्ट परिस्थिति का प्रतीक होती है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास की कथा का सम्बन्ध क्यों न भले ही कितनी भी बड़ी या छोटी अवधि से हो वह मूलत: मानव मन का वैज्ञानिक विश्लेषण करती है। इसलिए यह सामान्य रूप से देखा जाता है कि मनोवैज्ञानिक उपन्यास की कथा के छोटे या

---

1. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास - डा॰धनराज मनधाने -पृ॰238

बडे होने से उसके महत्व में कोई अंतर नहीं आता है । पात्र या चरित्र - चित्रण तत्व की दृष्टि से भी मनोवैज्ञानिक उपन्यास का स्वरूप विशिष्ट होता है । मनोवैज्ञानिक उपन्यास में पात्रों की संख्या कम होती है न कि सामान्य उपन्यास की तरह दर्जनों पात्र होते है क्योंकि अधिक पात्र होने पर प्रभाव कम हो जाता है । इसी प्रकार एक सामान्य उपन्यासकार किसी पात्र की आत्महत्या अथवा किसी अन्य कार्य का जो वर्णन करेगा उसी कार्य का वर्णन मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार पूर्णत: अलग करता है क्योंकि वह घटना के साथ निश्चित रूप से मनोवैज्ञानिक कारण को भी देने का प्रयास करता है ।

सभी प्रकार के उपन्यास समाज से जुड़े होते है और मनोविज्ञान मनुष्य की गतिविधियों का वर्णन करता है । इसलिए उपन्यास का कथानक भले ही मनोवैज्ञानिक हो या नही इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से सम्बन्धित पात्रों के व्यवहार या स्थिति हर प्रकार के उपन्यासों में मिलजाते है ।

3·1· आठवें दशक के उपन्यासों की कथावस्तु : एक विवेचन :

साधारणत: आठवे दशक में उपन्यासों की बहुलता रही है । जिसमें कई प्रकार की प्रवृत्तियाँ एवं विभिन्न दृष्टियों का प्रयोग दृष्टिगोचरित होता है जिनमें से मनोवैज्ञानिक दृष्टि भी अपना निजी महत्व रखती है । अत: इसी दृष्टि से आठवें दशक के कुछ महत्वपूर्ण उपन्यासों मे से मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए चुने गये उपन्यासों की कथावस्तु इस प्रकार है -

1. "आपका बंटी" - (मन्नु भंडारी - 1971)

मन्नु भंडारी का " आपका बंटी " एक ऐसा उपन्यास है जो आज की नकली आधुनिकता के बीच एक तीखी वास्तविकता को प्रस्तुत करता है । जो सोलह भागों में विभाजित है । पारिवारिक विसंगति से शिकार होते है पति पत्नी, किन्तु उसका प्रभाव सीधे उनके एक मात्र पुत्र बंटी पर पड़ते देखा जा सकता है । जिसके मानसिक संसार का मनोविज्ञान और यथार्थवादी चित्रण लेखिका ने अति सुन्दर रूप से किया है । जो किसी भी संवेदनशील और विचारवान पाठक के मन में अवश्य ही छाप छोड देता है ।

इस उपन्यास का मुख्य पात्र है बंटी, जो अपनी माँ (शकुन) के साथ रहता है । जो एक कालेज की प्रिंसिपल है । शकुन अपने जीवन के अभावों को पुत्र के द्वारा पूर्ण करना चाहती है । जिसके कारण बंटी अपनी माँ पर अधिक आश्रित होकर एक मनोवैज्ञानिक और काल्पनिक दुनिया में रहने लगता है । बंटी के मन में हमेशा इस बात का दुःख रहता है कि उसके मम्मी-पापा साथ नही रहते है । कुछ दिनों बाद शकुन और बंटी के पिता अजय कानूनी रूप से न केवल तलाक लेते है बल्कि पुनः अलग अलग विवाह भी कर लेते है । बंटी इन सारी स्थितियों के बीच एक गेंद की तरह उछाला जाता है । इस परिस्थिति में बंटी को समस्त मानसिक अवस्था को मन्नु भंडारी ने सफलता पूर्वक चित्रित किया है । जटिल मानसिक स्थिति में जकडे बालक की मनो - भावनाओं को कथावस्तु का मूलाधार बनाया गया है । ऐसा लगता है कि बंटी इस आधुनिक युग के झूठे और दिखावटी विचारों के बीच

अकेला कई मानसिक विकृतियों और प्रश्नों को लेकर खड़ा हुआ है। किन्तु उसे ऐसा कोई नहीं मिल पाता है जो उसके सामने कि समस्याओं का समाधान खोज कर निकाल सके और उसे सामान्य बच्चों की तरह उसके माँ-पिता से प्यार और समाज में सही स्थान दिला सके जिसकी खोज में लगातार बंटी दिखायी देता है।

पति-पत्नी और उनका एक मात्र पुत्र बंटी ही कथानक का केन्द्र बिन्दु है। कथानक की शुरुआत शकुन के कालेज जाने की तैयारी से होती है। और उस समय बंटी के स्कूल की लम्बी छुट्टी होने के कारण हमेशा की तरह हीं " ड्रेसिंग टेबल " के सामने बैठी मम्मी की सुन्दरता को बडे कौतुहल से देख रहा है। सम्पूर्ण कथानक को अवधि लगभग दो साल की है। कथानक का परिवेश आधुनिक परिवार से सम्बन्धित है। जिसमें पति-पत्नी अपने अधिकार भावना और अहंवाद आदि से पीड़ित मध्यवर्गीय बुद्धि जीवी है। जिनके सम्बन्धों के खोखले पन को कथानक में स्पष्ट देखा जा सकता है।

उपन्यास मनोवैज्ञानिक होने के कारण कथानक घटनाओं में नहीं विचारों में चलता है यही कारण है कि सम्पूर्ण कथानक पात्रों को मानसिक स्थितियों का परिचय कराने में सफल हुआ है। उदाहरण के लिए शकुन और अजय का तलाक लेना बंटी को अधिक पीड़ित करता है और उससे ज्यादा दु:ख उसे तब होता है जब शकुन पुन: विवाह कर लेने की सोचती है और कर भी लेती है। इसका विरोध बंटी लगातार अपने व्यवहार से कर दिखाता है उदाहरण के लिए - " बंटी, नमस्ते

करो डाक्टर साहब को । " मम्मी ने उसकी बात को जवाब न देकर अपनी बात कहीं तो बंटी भन्ना गया । दोनों हाथ कुछ इस तरह जोड़े मानो कह रहा हो जान बक्शो । "[1] बंटी का विरोध उस समय व्यक्त होता है जब उसकी माँ डॉ॰जोशी से बाते करती है या उसके खिलौने किसी और को दे देती है । इतना ही नहीं उसका प्रबल विरोध इस कथन में दिखायी देता है - " बंटी ने उठाकर खिलौने फेंकने शुरू किये -- --- मारने वाली मम्मी की बात सुनेगा अब वह ? कभी नहीं सुनेगा । "[2] बंटी के विरोधात्मक व्यवहार के कारण ही उसे मनोग्रंथियों से पूर्ण होकर मम्मी और पापा को त्यागना पड़ता है ।

कथानक के अध्ययन के पश्चात यह दिखाई देता है कि बंटी सामान्य बालक नहीं है क्योंकि वह जिन परिस्थितियों में बड़ा हुआ है वे ही असामान्य होने के कारण उसके अपने परिवार में भी कोई स्थान नही पाता है ।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास की कथा योजना में कम पात्र होते है । और "आपका बंटी" में पात्रों की रचना तीन स्तरों में मिलती है । एक तो बंटी है जिसके आधार पर समुचित उपन्यास का कथानक आधारित है । दूसरे में मम्मी (शकुन) है जिसके कारण बंटी की समस्या विकसित होती है और इसी समूह में अजय और डॉ॰जोशी भी आ जाते है ।

1· आपका बंटी - मन्नु भंडारी - पृ॰स॰ 74·

2· - वही - पृ॰स॰ 107·

तीसरे में अन्य सभी पात्र आ जाते है जो उपन्यास के कथानक में साथ देते है किन्तु उनका महत्व उतना नही है ।

अंत में कहा जा सकता है कि "आपका बंटी" का कथानक मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी धरातल पर नियोजित है ।

2· "परत-दर-परत" ﴾ अन्नपूर्णा 1971 ﴿

यह उपन्यास अन्नपूर्णा का प्रथम उपन्यास है इस उपन्यास का कथानक जोवन के मूल्यों से जूड़ा हुआ है । "आपका बंटी" की तरह ही इस उपन्यास के कथानक में देखा जा सकता है कि माँ-पिता का बिछड़ने का प्रभाव सीधे बच्चो पर पड़ता है । इस उपन्यास की नायिका 'कुमुद' है जो अपने पापा के अतित के पश्चाताप और मम्मी के अहं के कारण ही अपने जीवन-मूल्यों को पहचान नहीं पाती है । यही कारण है कि अपने आपके संघर्ष में पीड़ित दिखायी देती है ।

'कुमुद' के मम्मी-पापा कभी साथ रहना पसन्द नहीं करते किन्तु 'कुमुद' के कारण ही वे दोनों कभी-कभी एक स्थान पर कुछ समय के लिए साथ रह जाते है । इसके अलावा इन दोनो में न तो बच्चो के प्रति और न ही एक दूसरे के प्रति प्यार है । अपने घर की परिस्थित को देखकर ही कुमुद सम्बन्धों का गलत अंदाजा लगाने लगती है । तभी वह लगातार अन्तर्द्वन्द्वों से परेशान रहती है अपने अस्तित्व को खोने के डर के कुमुद स्वयं को राजन से विवाह करने से रोकती है । कथानक

के विकास के साथ-साथ यह ज्ञात होता है कि कुमुद में यह भावना छिपी है कि हर अनुभव सुखद नहीं होता और हर सुख के बाद सुख नहीं होता इसी कारण कुमुद अपने अस्तित्व को बचाते हुई राजन के साथ रहने की कोशिश करती है परन्तु वह अधिक दिनों तक राजन से दूर नहीं रह पाती है और कुमुद एवं राजन विवाह कर लेते है। तथा कुमुद यह अनुभव करती है कि विवाह के पश्चात भी उसमें ऐसा कोई अंश है जो कहीं बंधता नहीं है बल्कि मुक्ति के लिए छटपटाता रहता है।

कथानक में पलायनवाद को भी देखा जा सकता है कुमुद अपनी आंतरिक पीड़ा से बचने के लिए भाई के घर जाती है परन्तु वहाँ पर अपनी भाभी गीता को भी उसी पीड़ा में पीड़ित देखती है। इस प्रकार उपन्यास के कथानक में साधारणत: यह देखा जा सकता है कि पलायनवादी पात्र सदैव भागते रहते है। कथानक में यह भी देखने को मिलता है कि पात्रों के बचपन सुखमय नहीं थे जिसके कारण अपराध की भावना, कुंठा और अन्य प्रकार के विकृतियों से जुड़ते हुए नजर आते है। कथानक की लगभग अवधि दो साल की है और पात्र भी बहुत कम है। कुमुद के माँ-पिता का उल्लेख तो किया गया है किन्तु कथानक में अधिक महत्व कुमुद और राजन का ही है। उपन्यास का कथानक एक-एक परत अतित की विस्मृतियों के माध्यम से कुमुद और राजन के भावात्मक संबंधों को खोलती जाती है। कथानक का अध्ययन करने से यह कहा जा सकता है कि उपन्यास के प्रमुख पात्रों के बीच पनपते प्रेम में गंभीर है लेकिन आधुनिक युगके प्रभाव के कारण उनमें असंतोष और आत्मपीड़ा भी दिखायी देती है।

3• "अन्तराल" (मोहन राकेश - 1972) :-

इसका कथानक गहरे मानवीय संबंधो को लेकर चलता है या दूसरे शब्दो में कहा जा सकता है कि इसका कथानक आधुनिक मानव से जुड़ा हुआ है जो पूर्णरूप से व्यस्त होते हुए भी सम्बन्धों को बनाने के लिए प्रयत्नशील है। अन्तराल का कथानक दो व्यक्तियों की आन्तरिक दूरी और उससे सम्बद्ध समस्याओं एवं आधुनिक जीवन - मूल्यों के बदलाव को प्रस्तुत करता है। साधारणत: मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की ही तरह स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों पर आधारित कथानक अन्तराल में भी दिखायी देता है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र श्यामा और कुमार अपने अभावों को एक-दूसरे के माध्यम से पूरा करते है। एक ओर जहाँ श्यामा अपने पति की कमी को कुमार के द्वारा पूर्ण करती है तो दूसरी ओर कुमार अपनी प्रेमिका लता के अभाव की पूर्ति श्यामा के द्वारा करता है। यहाँ दोनो पात्र अकेले पन की भावना से पीड़ित है। जिसका समाधान वे आपस में सम्बन्ध स्थापित करके पूरा करते है। श्यामा और कुमार की छोटी से भेंट उनकी दृष्टि में साम्यता और आवश्यकताओं की सम्मानता के कारण घनिष्टता में परिवर्तित हो जाती है। श्यामा की दृष्टि में जहाँ एक ओर नैतिकता और अनैतिकता में कोई अन्तर नही है वही दूसरी ओर कुमार की धारणा है कि व्यक्ति जितनी सरलता से किसी बन्धन में बँध जाता है तो उसी सरलता से उसे मुक्त भी होना चाहिए। इसी वैचारिक समानता के कारण श्यामा और कुमार में रोज नये सम्बन्ध बन कर अपनी चरम अवस्था को प्राप्त करते हैं। परन्तु इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों द्वारा आपसी सम्बन्ध स्थापित करने के बाद भी उनके अकेलापन व्याप्त

रहता है । जिसके कारण कई विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती है । इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों का विश्वास है कि " जीना आसान है घर बसाना नहीं । " इस उपन्यास के कथानक से यह बोध होता है कि इसके पात्र मन की इच्छाओं की पूर्ति के लिए जीने के पक्षपाती है । स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों के साथ आधुनिक समाज में उभरी समझौते से पैदा होने वाली या मामूली शर्तों से बनने या बिगड़ने वाली दोस्ती के साथ ऊब जाने के संकेत को भी दर्शाया गया है ।

अंतराल के पात्रों में छटपटाहट की भावना दिखायी देती है । तथा पात्रों में अकेलेपन की भावना के साथ-साथ अपराध की भावना भी पायी जाती है । कथानक में पात्रों की संख्या कम है परन्तु प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त अन्य पात्र भी स्वयं को कथानक से जोड़ते है।इसके कथानक की अवधि लगभग चार वर्ष के अन्तराल है । इस प्रकार इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों में चारित्रिक अभाव, नैतिक-अनैतिकता के अन्तर का अभाव यौन सम्बन्धों की बाहुल्यता आधुनिकता के नामपर स्वतंत्र प्रवृत्ति का उन्मोदन, अकेलेपन की व्याप्ति सामाजिकता का विरोध, अपराध भावना आदि दिखायी देतो है ।

4• "उस पार का अंधेरा" (सुदर्शन नारंग 1973) :-

इसकी कथा एक ऐसे स्थिर जीवन की है । जिसमें मूल्यवान संघर्ष के अभाव को देखा जा सकता है । इस उपन्यास का मुख्य पात्र समाज से कटा हुआ है । किन्तु वह चाहता है कि लोग उसके बारे में चिंतित रहे । " चोपड़ा " उपन्यास का नायक, अपनी पत्नी

सुभद्रा का साथ निभा नहीं पाता । क्योंकि वह पलायनवादी है । यही कारण है कि अपनी बच्ची को भी छोड़कर एक अन्य महिला विभू के साथ पहाड़ी क्षेत्र में रहने लगता है । चोपड़ा की मानसिकता ही अलग है वह हर प्रकार से विलासी जीवन बिताना चाहता है किन्तु किसी प्रकार की जिम्मेदारी को उठाना नही चाहता ।

चोपड़ा अपनी इच्छा की पूर्ति के पश्चात ऊबन महसूस करने लगता है इतना ही नहीं कई प्रकार की मानसिक विकृतियों से पीड़ित हो जाता है क्योंकि वह कायर, पराजित, हीन भावना ग्रस्त, निष्क्रिय और कमजोर मन वाला व्यक्ति है । अपनी अव्यवहारिकता के कारण ही वह असफल व्यक्ति बना है । चोपड़ा आधुनिक युग के बुद्धिजीवी का प्रतिनिधित्व करता है । सुभद्रा से छुटकारा पाने के बाद चोपड़ा की इच्छानुसार रहने वाली विभू से मुलाकात होती है । और दोनों किसी बन्धन में न बंध कर जीवन को घसीटते रहते है । और कई सालो बाद फिर वही ऊबन की भावना से पीड़ित होने लगते है । उन्हें यह लगने लगता है कि वे अपनी पहचान खोने लग गये है ।

चोपड़ा और विभू के जीवन में लक्ष्य के अभाव में शीघ्र ही स्थिरता आ जाती है । चोपड़ा की तरह ही डॉ॰ केंड्रा और डॉ॰ डैनियल भी आत्म केन्द्रीत और आत्म निर्वासित व्यक्ति है जो आपस में एक दूसरे का अकेलापन बाँटने में सफल नहीं होते है । कथानक के विश्लेषण से व्यक्त होता है कि कई घटनायें यथार्थहीन है । चोपड़ा के व्यक्तित्व में पूर्णत: स्वच्छन्दता होने के बावजूद भी सामाजिक

अनुभूति के अभाव में जीवन उपलब्धिहीन बन गया है । लेखक एक अव्यावहारिक बुद्धिजीवी के कायर, निष्क्रिय और द्वैध व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करने में सफल रहा है । इस उपन्यास में कथानक की गति धीमी और शिथिल है । सभी घटनायें विचारों और भावनाओं से पूर्ण है । कथानक का वातावरण रुचिहीन है पात्रों की संख्या कम है । इसमें चोपड़ा और विभू ही प्रमुख पात्र है ।

5· "काली आँधी" - कमलेश्वर - 1974 :-

पश्चिमी देशों का प्रभाव समाज के साथ-साथ साहित्य पर भी पड़ा जिसके कारण उपन्यासों में इसका अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है । काली आँधी पारिवारिकता में राजनैतिक भ्रष्टाचार के प्रभाव को प्रकट करता है । इसके कथानक के माध्यम से कमलेश्वर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी के दृष्टिकोण में आये हुए परिवर्तन को प्रस्तुत करने में सफल हुए है । इस उपन्यास के नारी पात्र की चारित्रिक विशेषतायें प्राचीन नारी के समरुप नहीं है बल्कि पुरुष की बराबरी करने के लिए उसे परिवार और समाज में निरन्तर संघर्ष करते रहना पड़ता है । इस क्रम में उसे अनेक लोगों की सहायता राजनैतिक स्तर पर सफलता हेतु लेने की आवश्यकता होती है । परन्तु नारी के प्रति पुरुष की दृष्टि में कोई परिवर्तन नहीं आया है । वह नारी को सदैव अपनी दासी रुप में ही देखना पसन्द करता है ।

काली आँधी का कथानक भी आधुनिक नारी के संघर्ष को चित्रित करता है । उपन्यास की नायिका मालती अपने पति जग्गी के प्रोत्साहन से ही राजनैतिक क्षेत्र में उतरती है । पति की सहायता से मालती को शीघ्र ही राजनैतिक क्षेत्र में सफलता मिलती है परन्तु इस सफलता के साथ ही उसका परिवार उससे पीछे छुट जाता है । जहाँ पहले मालती का पति उसे सहयोग देता था वही सफलता के बाद उससे ईर्ष्या करने लगता है । स्वयं की मानसिक कुंठाओं तथा ईर्षालु प्रवृत्ति के कारण वह स्वयं को उपेक्षित और अपमानित अनुभव करता है । जिसके कारण जग्गी अपनी पुत्री लोल्ली के साथ परिवार छोड़ कर चला जाता है ।

कथानक मनोवैज्ञानिक क्षणों को पकड़ने में सदा सफल रहा है । कथा मे रोचकता के साथ-साथ असफल दाम्पत्यता दिखाई देता है । इसके साथ ही कथानक देशभर में व्याप्त राजनैतिक भष्टाचार और छल कपट को साथ लेकर चलता है । कथानक की शुरुआत कथाकार के द्वारा जुग्गी बाबू के जीवन परिचय से होती है । पात्रों की संख्या अधिक है किन्तु कथा मालती और जग्गी बाबू के अन्तर्द्वन्द्व हीनभावना पहचान की जरूरत आदि भावना से लड़ते हुए देखा जाता है । कथाकार कथा कहते-कहते एक मोड़ पर मालती और जग्गी बाबू को पुन: मिलाता है । किन्तु दोनो के मूल्यों में परिवर्तन आ जाने के कारण वे साथ चलने में सफल नहीं होते है । जहाँ कि वे दोनो एक दूसरे की पसन्दों आदतों आदि को भूला नही पाये है और वे अलग रहते हुए भी एक-दूसरे की याद को ढोते हुए चले जा रहे है ।

क्योंकि अहम् भावना से वे दोनो शिकार है। कथानक को अवधि कम है बने हुए सम्बन्ध का टूटना और न चाहकर भी जुड़ना देखा जा सकता है।

इस प्रकार 'काली आँधी' उपन्यास में कमलेश्वर ने नारी की वास्तविक स्वतंत्रता, समाज और पुरूष का उसके प्रति व्यवहार और दृष्टिकोण अत्यन्त ही सुन्दर और सरल रूप में प्रस्तुत किया है। परन्तु साथ ही मालती स्वतंत्रता के नाम पर आधुनिकता की आड में राजनैतिक भ्रष्टाचार की पक्षपाती के रूप में भी चित्रित की गई है। और उपन्यास का नायक अपमान तथा उपेक्षा की भावना से ग्रस्त दिखाई देता है। इस प्रकार इस उपन्यास में कमलेश्वर ने पुरूष और नारी के पारिवारिक सम्बन्धों को राजनैतिक क्षेत्र से जोड़कर उससे आनेवाली समस्याओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है।

6. "रिश्ते" - सुदर्शन चोपड़ा - 1974 :-

इस उपन्यास में लेखक ने मध्यम वर्गीय जीवन के अर्थहीन भावुकता का चित्रण किया है। आधुनिक युग में व्यक्ति के मूल्यों में परिवर्तन आ जाने के कारण सम्बन्धों में विकृतियाँ और अवि - स्मृतियाँ जन्म ले लेती है। जिसके कारण घनिष्ट रिश्ते भी धीरे-धीरे समाप्त होते नजर आते है। रिश्ते के सम्बन्ध में सुरेन कहता है कि " रिश्ता खून का नही बल्कि चेतना का होता है। और

यदि चेताया न जाये तो माँ बेटे, भाई-बहन की नसों का खून भी गूंगा बहरा है । "[1] उपन्यास का कथानक मध्य वर्गीय परिवार के जीवन को व्यक्त करता है जो विश्वासहीन अन्तर्मुखी कुण्ठित हीन भावना आदि मनोविकृतियों से संघर्ष कर जी रहा है । इस कथानक में दो समस्यायें है एक अवैध संतान की समस्या और दूसरी नैतिक मार्ग से जीविकोपार्जन न प्राप्त होने के कारण पात्रों का अनैतिक मार्गीय बनने की समस्या ।

सम्पूर्ण कथानक तीन कथा सूत्रों में विकसित दिखाई देती है । जिसमें प्रमुख कथा उमी और पाल के आसपास घूमती है । पाल विवाहित है किन्तु उमी और उसकी मानसिकता एक होने के कारण प्रेम की अंधी भावुकता में वे आत्मलीन हो जाते है । जिसके कारण अपने जीवन के लक्ष्य और व्यक्तित्व को भुला बैठते है । किन्तु दोनों होनहार, परिश्रम ईमानदार और विकासशील पात्र है । कथानक का दूसरा सूत्र केदार और निम्मो का है ये दोनो उमो के भाई बहन है । किन्तु सोच विचार और व्यवहार में उमी के बिल्कुल विपरीत है क्योंकि जीवन के मौज मस्ती को भोग करने के लिए वे नीच कर्म करते है । उमी सब कुछ जानकर भी मुँह खोल कर अपने भाई-बहन को कुछ वह नहीं पाती उमो की तुलना में पाल हमेशा अपराध की भावना से पीडित रहता है क्योंकि वह जानता था कि विवाह के पश्चात किसी अन्य स्त्री से रिश्ता रखना ठीक नहीं है । उमो के भाई को जब इस बात का पता चलता है कि पाल के

---

1. रिश्ते - सुदर्शन चोपड़ा - पृ. 160.

बच्चों की माँ उसकी बहन उमी है तो वह मुफ्त पैसे की लालच में तरह-तरह की धमकियाँ देने लगता है। जिससे उमी और पाल कई वर्ष के लिए बिछुड़ जाते है इस बीच उमी की घनिष्टता सरोज के भाई सूरेन से बढ़ती है। और सूरेन उमी के मुँह से उसकी जीवन-कथा को सुनकर भी शादी कर लेता है। इधर उमी का बेटा और बेटी जो विलायत में पढ़ रहे है वे अपना परिचय भाई बहन के रूप में न जानकर दोनो शादी कर लेते है जिससे पाल और उमी को काफी धक्का लगता है और पाल की मृत्यु हो जाती है। उमी अपने वर्तमान अस्तित्व को भूला कर पाल की मृत्यु को देखकर नियंत्रण खो बैठती है जिससे सूरेन को लगता है कि उमी पाल की विधवा है न कि उसकी पत्नी। कथानक की अवधि काफी लम्बी चौड़ी है। पात्रों की संख्या अवश्य अधिक है किन्तु प्रमुख पात्र के रूप में उमी ही है। पाल का चरित्र-चित्रण भी गौण स्तर पर किया गया है। उमी और पाल के सम्बन्धों की झलक पाल की स्मृतियों से प्राप्त होती है।

इस उपन्यास के कथानक का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि युवा पीढ़ी पर आधुनिकता का प्रभाव पड़ने के कारण अन्धी भावुकता और प्रेम के चक्कर में आकर किस प्रकार लक्षहीन बना देते है।

7. "नावे" (शशि प्रभा शास्त्री 1974) :-

इसका कथानक नारी जीवन के अछूते पहलु को उजागर करती है। विशेष कर उन माता-पिता के कुछ ऐसे विधान जीवन सम्बन्धों की गोपनियता के विरुद्ध प्रश्न उठाता है जिसे वे अक्सर छिपाये रखते है।

उपन्यास के कथानक की प्रमुख पात्र मालती है जो एक अध्यापिका है और वह विवाहिता के रुप में एक लम्पट द्वारा ठगी जाकर एक बच्ची की माँ बन जाती है परन्तु अपनी हितैषी प्राध्यापिका के सहयोग से पुनर्विवाह भी कर लेती है किन्तु वह अपने पूर्व विवाह को अपनी पुत्री नीलिमा से छुपाये रखती है जिससे वह उसका परवर्ती जीवन कुंठित और अपराध बोधित हो जाता है। उसके जीवन की इस विषमता को उसकी युवा पुत्री अत्यन्त ही समझदारी से दूर करती है। इस प्रकार ये उपन्यास पारिवारिक सम्बन्धों को प्रकट करता है। इस उपन्यास के पात्रों में हीन भावना पलायनवादी दृष्टि अंह की भावना कुंठायें, अपराध की भावना एवं विषम पारिवारिक वातावरण से चरित्रों पर बुरा प्रभाव पड़ना आदि विशेषतायें देखी जा सकती है। इस उपन्यास के पात्र अपनी इच्छाओं का शमन भी करते है। इस उपन्यास का कथानक मालती से ही सम्बन्ध है तथा सारी कथा मालती के चारों ओर ही मड़राती है। कथानक का आरम्भ मालती के एक लम्पट व्यक्ति से धोखा खाने के साथ होता है। जिसके कारण मालती के जीवन में बिखराव आ जाता है और वह मानसिक रुप से कुंठित हो जाती है। परन्तु कालान्तर

में मालती को भेंट " रेवा निगम " नामक प्राध्यापिका से होने के पश्चात उसे विश्वजेश से शादी कर लेने का सुझाव मिलता है । परन्तु यहाँ मालती अपनी पुत्री नीलिमा के भविष्य और उसका उचित पालन पोषण तथा संरक्षण हेतु विश्वजेश से ब्याह कर लेती है किन्तु वह कभी भी विश्वजेश की पत्नी के रूप में उसकी जीवन साथी नही बन पाती है । क्योंकि उसके मन में अपने पूर्व विवाह, धोखा और एक पुत्री की माँ बनने की घटनाओं का अत्यधिक प्रभाव होने से वह मानसिक रूप से अपराध भावना की शिकार हो जाती है जिससे वह विश्वजेश से कटी-कटी रहती है जिसके कारण विश्वजेश में भी आक्रोश उत्पन्न होता है । यहाँ विश्वजेश और मालती एक नाव में सवार अपरिचित व्यक्तियों की तरह जीवन रूपी नाव में सवार अपरिचित व्यक्तियों की तरह जीवन रूपी नाव में सफर कर रहे है उन्हें एक दूसरे की उपस्थिति का आभास अवश्य है परन्तु आपसी लगाव तथा प्रेम नही है जिससे मालती के साथ-साथ विजेश भी अनेक मानसिक कुंठाओं का शिकार हो जाता है । इस उपन्यास के कथानक से यह आभास होता है कि मालती विश्वजेश की नाम मात्र की पत्नी है परन्तु वास्तव में वह मानसिक रूप से अपराध की भावना से पीडीत रहती है । परन्तु नावें उपन्यास की लेखिका अपने उपन्यास के कथानक के माध्यम से यह प्रकट करती है कि माँ-पिता के विषम व्यवहार को उसकी बुद्धिमान संतान दूर कर सकती है इसी दृष्टि से शशि प्रभा शास्त्री ने नीलिमा के माध्यम से मालती और विश्वजेश के पारिवारिक विषम सम्बन्धों की समाप्ति की है । यहाँ लेखिका की दृष्टि उपन्यास के कथानक के माध्यम से मात्र आधुनिक जीवन की

समस्या को उभारना मात्र नहीं है बल्कि साथ ही उसने उस समस्या का समाधान भी प्रस्तुत करना है । इसके साथ आधुनिक समाज को यह बताने का प्रयास भी किया है कि ऐसी कोई भी समस्या विषम नहीं है जिसे मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमता तथा हार्दिक सहृद - यता के द्वारा समाधान नहीं कर सकता हो यहाँ लेखिका ने अपने उपन्यास के पात्रों के माध्यम से आधुनिक मनुष्य के मनोभावों और उसकी विकृतियों को उभार कर उन्हें समाप्त करने का मार्ग प्रस्तुत किया है । इस उपन्यास के कथानक की अवधि दीर्घता (लग भग बीस वर्ष का है) और पात्रों की कमी मिलती है । इस उपन्यास के कथानक का आरम्भ मालती के धोखा खाने से होकर अंत मालती और विजेस के मिलन से होता है ।

8• "रेत की मछली" :- कांता भारती - 1975 :-

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कोई न कोई रोचक कथा होती है जिसको आधार बना कर कथा की रचना की जा सकती है । कांता भारती ने भी अपने जीवन के रोचक अंशों को ही कथानक का रूप दिया है । लेखिका का यह पहला उपन्यास है ।

इस उपन्यास के कथानक का विषय है एक लेखक का जीवन । जो एक त्रिकोण के रूप में सामने आता है । त्रिकोण के तीन बिन्दु है " मैं (स्त्री पात्र जो शोभन की पत्नी है) लेखक शोभन तथा 'मीनल । लेखक शोभन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक तथा

विधवा माँ का पुत्र है। उसका मित्र मिस्टर आनन्द और उनकी पत्नी के कहने पर लेखक " मैं " से अन्तर्जातीय प्रेम विवाह कर लेता है। उनके आनन्दमय जीवन में मीनल का आगमन होता है तब तक " मैं " एक पुत्री की माँ बन चुकी थी। मीनल की उपस्थिति मैं को कभी पसन्द नही आई जिसके कारण शोभन और मैं के बीच हमेशा मानसिक तनाव बना रहा। जो जीवन को न केवल दु:खमय बना देता है बल्कि साथ ही संघर्ष आदि मनोविकृति के कारण दोनों का विवाह हो जाता है।

इस उपन्यास के कथानक में दो तथ्य उभरते हैं " मैं " की मानसिक यातना जो पाठक पर करुण प्रभाव छोडती है तो दूसरी ओर शोभन और मीनल के चरित्र पशु प्रवृति को द्योतित करते है। विवाह के कुछ दिनों बाद ही " मैं " की यातनायें शुरू हो जाती है। पहले तो वह केवल मानसिक यातना ही झेलती है परन्तु बाद में शारीरिक यातना भी झेलनी पड़ती है। शोभन जिस मानव मूल्यों की बात करता है वह स्वयं " मैं " को लात घूसों से पीट कर मन चाहे ढंग से व्यवहार कर उसे घर से निकाल देता है। शोभन इतना अधिक नीच है कि वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हर झूठ और बेमानी का सहारा लेता है। इस उपन्यास का कथानक को लेखिका ने अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है जिसके कारण पाठक को संदेह हो जाता है कि कहीं यह उनकी आत्म कथा तो नही है।

उस उपन्यास के कथानक का विश्लेषण करने पर ऐसा लगता है कि पात्रों में अनेक प्रकार की विकृतियाँ है । जैसे " मै " चरित्र में असुरक्षा की भावना, पारिवारिक जीवन से प्रभावित मानसिक पीड़न तथा मीनल के प्रति ईर्ष्या इत्यादि । उक्त मनोविश्लेषणात्मक प्रसंग की पुष्टि इस उपन्यास के इस अंश से होती है । ... " इस जंगली लता को उखाड़ कर फेंक दो शोभन .... । "1 " मै " के द्वारा शोभन को अपने आँगन में फूलों की क्यारियों के मध्य उग आये कैक्टस के पौधों को उखाड़ फेंकने के लिए बार-बार कहना इस बात को प्रकट करता है कि मै अपने पारिवारिक जीवन को मीनल रूपी काँटे से मुक्त करना चाहती है । यहाँ पर लेखिका ने " मै " पात्रके कथन द्वारा प्रकृति के मानवीकरण के माध्यम से मनोभावों को अत्यन्त ही सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है । यहाँ शोभन में उन काँटों के प्रति उदारता को देख कर 'मै' को आशंका होती है कि इन काँटों के विकसित होने का उत्तरदायी शोभन स्वय है । जिससे " मै " मे अपने जीवन के प्रति असुरक्षा की भावना दिखायी देती है । ऐसी परिस्थिति में " मै " का व्यवहार सुरक्षा हेतु आक्रामक बन जाता है जो पारिवारिक असंतोष को बढ़ाने एवं सम्बन्धों में तनाव को उत्पन्न करने का उत्तरदायी है । जिससे " मै " की मानसिक अवस्था द्योतित होती है ।

---

1. रेत की मछली - कांता भारती - पृ. 76.

इस उपन्यास के कथानक का आरम्भ " मै " द्वारा अतीत की विस्मृतियों का आत्मविश्लेषण और परीक्षण से होता है । चुकि कथानक की दीर्घता, पात्रों की कमी, वैचारिक प्रधानता मानसिक द्वन्द्वता एवं घटनाओं का मनोविश्लेषणात्मक रूप अत्यन्त सहज और सुगम रूप में प्रस्तुत होना लेखिका की बौद्धिक क्षमता सामाजिक जीवन के प्रति जागृति तथा मनोवैज्ञानिक बोध गम्यता को प्रस्तुत करता है ।

9• "उसके हिस्से की धूप" - मृदुला गर्ग - 1975 :-

कथा साहित्य में प्रेम का त्रिकोणात्मक संघर्ष रोचक विषय रहा है । इस उपन्यास के कथानक में भी विवाहित नारी के प्रेम के संघर्ष को देखा जा सकता है । इसके कथानक की केन्द्र बिन्दु मनीषा है । उसके माध्यम से समस्त घटनायें विश्लेषित की गई है । मनीषा के मनोभावों द्वन्द्वो, विचार श्रृंखलाओं, क्रियाओ-प्रतिक्रियाओं, प्रसुत कामनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण लेखिका ने प्रस्तुत किया है ।

मनीषा विवाह के पश्चात जितेनकी व्यस्तता और उदासी - नता के कारण अतिशीघ्र उबन महसूस करने लगती है । जिसके कारण मधुकर जो भावुकता से पूर्ण था उसकी ओर आकृर्षित होती है । उसकी सहेली सुधा और जितेन की नजरों में मनीषा का मधुकर के प्रति प्रेम बचकाना आकर्षण मात्र है । जो कुछ समय बाद अपने आप समाप्त हो जायेगा । मनीषा में बाल्यकाल से यह इच्छा रही है कि

वह किसी मनचाहे व्यक्ति से ब्याह करे जिसकी पूर्ति वह मधुकर के साथ ब्याह करके करती है । इस उपन्यास के कथानक से व्यक्त होता है कि इसका पात्र जितने अपनी महत्वाकांक्षी स्वार्थ पूर्ति कारक, यशलोभी के आदि प्रवृत्ति के कारण मनीषा की आवश्यकता को जानते हुए भी उसके प्रति उदासीन बना रहता है जिससे मनीषा में जितेन के प्रति ऊब उत्पन्न होती है ऐसी अवस्था में उसका मधुकर की ओर आकृष्ट होना मनुष्य स्वभाव के अनुकूल है । परन्तु जहाँ जितेन में अनेक कमजोरियाँ दिखाई देती है वही मनीषा का चरित्र तितली के समान चंचला पूर्ण, प्रेम पिपासा, अकेलेपन की भावना कुंठा इच्छाओं की पूर्ति का अभाव इत्यादि विशेषतायें दिखायी देती है । इसी कारण मनीषा मधुकर की ओर आकर्षित होती है परन्तु उसका यह आकर्षण अतिशीघ्र टूट जाता है । जिससे मनीषा और मधुकर के बीच पुन: अकेलापन आ जाता है । जिसके कारण मनीषा पुन: जितेन की ओर आकर्षित होती है । मनीषा वैचारिक द्वन्द्व मानसिक स्तर और व्यावहारिक स्तर पर भी दिखायी देता है । इस उपन्यास के कथानक से यह आभास होता है कि इसके पात्र जितेन और मधुकर के स्वभाव पूर्णत: विपरित है । जहाँ एक ओर जितेन मनीषा की मनोभावनाओं का आदर करते हुए अपने उदार व्यक्तित्व के कारण उसे मन वांछित पुरूष से ब्याह करने की अनुमति देकर अपने विवाह बंधन से सरलता पूर्वक मुक्त करता है वही दूसरी ओर मधुकर मनीषा का पुन: जितेन की ओर आकर्षित होने का आभास होने पर भी मनीषा के मनोभावों को कोई महत्व नही देता है । मनीषा एक लेखिका भी है इसी कारण उसके लेखन में जहाँ एक

और जितेन से सम्बन्धों के समय जीवन का सुनापन और सत्रास व्यक्त होता है वही दूसरी ओर उसके जीवन में मधुकर के आगमन से उसके लेखन के रूप में परिवर्तन आता है और उसकी लेखनी मासलता और रोमानियत आ जाती है । मनीषा के अन्तर्द्वन्द्व, अन्तर्निहित संकल्पो-विकल्पो, विचारधाराओं का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मिलता है । यहाँ जितने का व्यक्तित्व विलक्षण और अविश्वसनीय दिखायी देता है । इस प्रकार इस उपन्यास के कथानक से व्यक्त होता है कि इसमें प्रेम की प्रक्रिया के विभिन्न अनुभवों अर्थात् त्रास, पीडा घृणा, कष्ट, ईर्ष्या, द्वेष हिंसा, प्रतिकार आदि का अत्यन्त ही सफल चित्रण हुआ है । इस प्रकार इस उपन्यास की लेखिका ने प्रेम के त्रिकोण को अत्यन्त ही सहजता से प्रकट किया है । यहाँ जितेन मनीषा और मधुकर इस त्रिकोण के कोण है ।

10• "अनाम दास का पोथा" - हजारी प्रसाद द्विवेदी - 1976 :-

यह पुराणीक भूमिका में प्रस्तुत उपन्यास है । इस उपन्यास का पात्र रैक्व है जिसमें अत्यधिक भोलापन भरा हुआ है । सिद्धांतिक आधार पर वह अत्यन्त ज्ञानी है परन्तु एक ऋषि पुत्र होने के कारण उसका व्यावहारिकता से सामना नहीं हुआ है । इसी कारण वह अनेक मानवीय संबंधों एवं भावनाओं तथा क्रियाओं से अनभिज्ञ है । इस उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक रैक्व और जबाला के चारों ओर घूमता है । रैक्व इतना भोला है कि उसे लिंगों का भी ज्ञान नहीं है उसने जाबाला से पूर्व किसी स्त्री को देखा ही नहीं था इसी कारण वह स्वयं में और जाबाला में अन्तर को समझ पाता । उसके इसे भोलेपन पर जाबाला मोहित हो जाती है परन्तु जाबाला को सामाजिकता का ज्ञान है ।

इस उपन्यास के कथानक से व्यक्त होता है कि रैक्व में पाप-पुण्य का बोध, अपराध भावना, दमित इच्छायें असुरक्षा की भावना महत्त्व भाव की प्राप्ति, स्वप्न दोष, दिवास्वप्न, मनोग्रस्तता, अन्तर्मुखता स्वायंत्त की भावना की अधिकता इत्यादि मनोभाव दिखायी देते है। इस उपन्यास के कथानक के इस अंश द्वारा रैक्व की सामाजिक अबोधता व्यक्त होती है - " आजाओं मेरी पीठ पर, अनुचित क्या है भला। और अपनी पीठ राजकुमारी के सामने कर दी। जिससे उसकी पीठ में अजीब से सनसनाहट होने लगी।"

उक्त प्रसंग से पता चलता है कि आरम्भ में रैक्व पीठ में सनसनाहट का होना साधारण बात थी वही आगे चलकर अपराध की भावना में परिवर्तित हो जाती है जो अंत तक बनी रहती है।जिसका समाधान ऋषि पुत्र आवश्वालायन द्वारा रैक्व को प्रेम के स्पष्टीकरण द्वारा होता है।

रैक्व में मानसिक विकृति के रुप में जड़ सक्ता देखी जा सकती है। क्योंकि रैक्व में जाबाला के प्रति आसक्ति दिखायी देती है जिसकी पुष्टि इस प्रसंग द्वारा होती है - " उसने रथ को खींचकर उसी स्थान पर रखा जहाँ जाबाला बैठी थी और वही पर चिंतन करने लगे। " [2]

1· अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ·323·
2· - वही - पृ· 325·

जाबाला में अहम् भावना अत्यधिक देखी जा सकती है तथा उसे अपने ज्ञान का अत्यधिक अहंकार था परन्तु उसमें रैक्व के प्रति लगाव होने के कारण वह दिवास्वप्न का शिकार होती है । तथा उसमें रैक्व से न मिल पाने का दु:ख है । वह अपनी इस इच्छा को दमित करती है । इसी कारण वह शारीरिक रूप से अतिशीघ्र अस्वस्थ हो जाती है । इस प्रकार इन समस्त प्रसंगों से मनोभावों की अभिव्यक्ति होती है । जाबाला के अचेतन मन में रैक्व की प्रधानता होने के कारण वह जोर देकर रैक्व के परिचय की पुष्टि करती है परन्तु तत्काल ही उसे अपनी गलती का आभास होता है । यहाँ जाबाला की मन:स्थिति का बोध होता है । परन्तु निम्न कथन से जाबाला के प्रति रैक्व के मन में प्यार की पुष्टि होती है --

" सोचूँगा शुभे तुम्हारे इस सुन्दर मुख ने मुझे सोचने को बाध्य कर दिया है । " [1] तो दूसरी ओर जाबाला के इस कथन से रैक्व के प्रति उसके मन में प्रेम को अंकुरित होने का आभास होता है - " वह भागा कहाँ, मैंने ही तो भगा दिया । यही तो उसके हृदय को कुरेद देता है । " [2] यहाँ जाबाला में पश्चाताप की भावना दिखाई देती है । परन्तु इसके साथ ही जाबाला में रैक्व के प्रति घनिष्टता और चाहत भी व्यक्त होती है । जो इस प्रकार है - " अक्सर मिलता तो वह उसे अधिक सोचने को बाध्य करती थी

1· अनाम दास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ· 324·
2· - वही - पृ· 327·

इस सुन्दर मुख की वाणी की वह उपेक्षा नहीं कर सकेगा क्या अवसर मिल सकेगा ? " इस कथन से जाबाला में आत्म विश्वास दिखाई देने के साथ-साथ भविष्य के प्रति आशंका का भाव तथा रैक्व के प्रति गहरा लगाव व्यक्त होता है ।

इस उपन्यास के कथानक के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि इसके प्रमुख पात्र एक दूसरे को महत्त्व देते है । जिसकी पुष्टि इस प्रकार होती है - " मुझे तो कुछ ही दिन पहले एक महान दिव्य गुरू मिल गया । " ..... ऋषि कुमार चकित होकर बोले, आप मुझसे अवश्य ही अधिक जानते है पर इतना अवश्य जान लीजिये कि शुभा जैसी कोई नहीं हो सकती । वह अद्वितीय है, अनुपमीय है ।

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रैक्व जाबाला को गुरू के रूप में महत्त्व देते हुए उसे ज्ञान में अद्वितीय मानता है परन्तु साथ ही रैक्व में स्वयं में ज्ञान की कमी का बोध होने के साथ-साथ ज्ञान प्राप्ति की पिपासा भी मिलती है । यहाँ रैक्व में स्वयं को अल्पज्ञ मानने में उसमें व्याप्त हीन भावना व्यक्त होती है ।

इस उपन्यास के कथानक की अवधि लगभग दो साल तथा पात्रों की संख्या कम है । इसमें प्रमुख पात्र रैक्व व जाबाला ही है । इन दोनों की चिंतन प्रक्रिया द्वारा कथानक का वैचारिक पक्ष द्योतित होता है । इनके आपसी कथन तथा व्यवहार से मनोभावों की अभि - व्यक्ति होती है । जहाँ एक ओर रैक्व में भोले तथा संस्कृत मानव

के लक्षण दिखायी देते है वही दूसरी ओर जाबाला सामाजिक संस्कारों तथा नैतिकता व अनैतिकता का बोध मिलता है । जहाँ रैक्व में भोलापन दिखाई देता है वही जाबाला में बौद्धिक परिपक्वता मिलती है । इस प्रकार इस उपन्यास के कथानक में अनेक मनोभावों का व्यक्त करने वाले प्रसंग अत्यन्त ही सहजता पूर्वक अभिव्यक्त मिलते है ।

11. "तीसरा आदमी" - कमलेश्वर 1976 :-

इसका कथानक आधुनिक मानव को शंकालु प्रवृत्ति पर आधारित है । जिसके कारण पारिवारिक सुख की समाप्ति तथा बिखराव व्यक्त होता है । यह उपन्यास स्त्री पुरुष के पारिवारिक सम्बन्धों में शंका की प्रवृत्ति से उत्पन्न परिणाम को बताता है । कमलेश्वर का तीसरा आदमी आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों की उपज है । इस उपन्यास के प्रमुख पात्र तीन है । मैं (नरेश) चित्रा और सुमंत के बीच घुमती हुई यह कहानी त्रिकोणात्मक कहानियाँ से भिन्न अपना अस्तित्व रखती है । सुमंत नरेश का रिश्ते का भाई है तथा चित्रा के मित्र के रूप में दर्शाया गया है । नरेश में आर्थिक परि - स्थितियों के कारण तंगी में रहने से अहं की असंतुष्टी आरम्भ हुई जो शंका के रूप में परिवर्तित होकर उसके पारिवारिक सुख का नाशकर चरम सीमा पर पहुँचती है । आत्म संतुष्टि के अभाव की स्थिति नरेश में आत्म निर्भरता और आर्थिक तंगी के कारण होती है । महानगर के वातावरण से पोषित होने के कारण उसे एक ही कमरे में पत्नी और सुमंत के साथ जीवन व्यापन करने के लिए बाध्य

होना पड़ता है। इस सीमित वातावरण के कारण नरेश में टूटन आरम्भ होती है। परन्तु दूसरी ओर सुमंत स्वच्छन्द प्रवृत्ति का होने के कारण वह नरेश और चित्रा के मध्य काँटा बन जाता है। परिस्थितिवश नरेश का किसी कार्य हेतु बाहर जाने के बाद इस मध्य चित्रा और सुमंत में घनिष्टता हो जाती है। इस उपन्यास के कथानक द्वारा लेखक ने नरेश सुमन्त और चित्रा की मनोदशा का अत्यन्त सूक्ष्म व मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। इस उपन्यास के कथानक से व्यक्त होता है कि परिस्थितियाँ और घटनायें नरेश के शंकालु स्वभाव को सुदीर्घ बना देती है। संशय का यह बीज ही नरेश चित्रा के दाम्पत्य जीवन को नष्ट कर देता है। नरेश अपने शंकालु स्वभाव के कारण अपनी पत्नी चित्रा और सुमंत के सम्बन्धों को शंका की दृष्टि से अपनाकर घर त्याग कर चला जाता है परन्तु शीघ्र ही अपनी मानसिक अन्तर्द्वन्दता के परिणाम स्वरूप पुन: घर लौट आता है इस बीच सुमंत नरेश की इस शंकालु प्रवृति की चरमावस्था को देखकर अत्यन्त दु:खी होता है। इस प्रकार इस उपन्यास में नरेश की शंकालु प्रवृत्ति के कारण अंत में सुमंत की मृत्यु के साथ होता है।

इस उपन्यास के कथानक के विश्लेषण से व्यक्त होता है कि नरेश में शंका प्रवृत्ति, स्वताय की भावना, ईर्ष्या, असुरक्षा की भावना, कुंठा, हीनभावना, दमित भावनाओं की पूर्ति का न होना, अपराध की भावना उच्चता प्राप्ति की भावना, अन्तर्मुखी प्रवृत्ति आदि चारित्रिक विशेषतायें पाई जाती है। चित्रा आरम्भ में किसी

मनोभावना से पीड़ित या त्रस्त नही है परन्तु कथा के विकास क्रम में वह भी अपराध की भावना से ग्रस्त हो जाती है । यहाँ सुमंत की प्रवृत्ति स्वच्छन्द होने पर भी नरेश की शंकालु दृष्टि से उसमें अपराध की भावना उत्पन्न होती है जिसका परिणाम ही उसका आत्माहत्या करना है । इस प्रकार इस उपन्यास के कथानक के द्वारा पात्रों में व्याप्त मनोभावों की अभिव्यक्ति और स्त्री पुरुष के बदलते सम्बन्धों को व्यक्त करना ही लेखक का परम उद्देश्य रहा है । इस उपन्यास के कथानक की अवधि दीर्घ और पात्रों की संख्या कम है ।

12· "अकेली आवाज" - राजेन्द्र अवस्थी - 1976 :-

इस उपन्यास का नायक बन्टु, असामान्य बालक है जो उच्च परिवार के तथा कथित सभ्य माता-पिता की अकेली संतान है । सुख सुविधा और माता पिता से अत्यधिक लाड़ मिलने के कारण बन्टु में अहंकार की भावना उत्पन्न होती है जो आगे चलकर उसे असुरक्षा की भावना और अकेलेपन से भर देता है । बन्टु अनोखी प्रतिभा रखनेवाले असंख्य किशोरों का प्रतीक है जो प्रतिभा के दुरुपयोग के लिए विवश बना दिया गया । उसमें उच्चता का घमंड अत्यधिक होने के कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है । अपनी अहमन्यता के कारण आवास में अभद्र व्यवहार करता है उसकी शरारत की कोई सीमा नही रहती है । परन्तु जब उसे उसके दुर्व्यवहार के कारण जब खर्च तथा अन्य सुविधाओं से वंचित किया जाता है तब उसे अपनी व्यवहारिक बुराई का बोध होता है जिससे वह एक महान व्यक्ति बनने का संकल्प करता है ।

इस उपन्यास के कथानक द्वारा लेखक ने बालक के मनोभावों को, उसकी इच्छापूर्ति की भावना अहं की भावना, बालहठ, अपराध की भावना, अन्तर्द्वन्द्व, बाह्य मुखी स्वभाव, हीन भावना की प्रवृत्ति, उच्चता प्राप्ति की आकांक्षा, विद्रोहात्मक प्रवृत्ति, कुंठित भावना इत्यादि को अत्यन्त सहजता पूर्वक दर्शाया है । इस उपन्यास के पात्र कम तथा अवधि की अल्पता के साथ साथ कहानी बंटी की बाल्यावस्था के चारो ओर घूमती है ।

13· 'उखड़े कदम' - विपिन चतुर्वेदी - 1977 :-

'उखड़े कदम' भारतीय सेना के एक योद्धा के जीवन से सम्बद्ध प्रेम का त्रिकोणात्मक उपन्यास है । जिसमें सुनीता, अशोक और विश्वा के जीवन में क्रमश: आती है । सुनीता इस उपन्यास की एक ऐसी पात्र है जो एक व्यापारी की पुत्री होकर फौजी अफसर से शादी का स्वप्न देखती है परन्तु सुनीता को अशोक के रुप में एक सादगी और कर्तव्य निष्ठा से परिपूर्ण पति मिलता है जिसके कारण सुनीता शीघ्र ही तनाव ग्रस्त हो जाती है । इस उपन्यास के कथानक से ज्ञात होता है कि सुनीता और अशोक की रुचियों और लगावों में विषमता ही उनके मध्य तनाव का कारण है । सुनीता एक ऐसे पति का स्वप्न देखती है जो उसे अत्यधिक प्यार करे तथा उसकी सभी इच्छाओं की पूर्ति करते हुए उसके चारों ओर मंडराता रहे परन्तु अशोक एक फौजी अफसर होने के कारण अनुशासनात्मक जीवन व्यापन करता है जिससे सुनीता के सभी स्वप्न चूर होकर रह जाते है जिसके फलस्वरुप उसमें निराशा

और इच्छापूर्ति का अभाव देखा जा सकता है । इसी कारण सुनीता अपने स्वप्नों की पूर्ति का रहस्य अशोक के मित्र विश्वा में खोज लेती है । जिसका परिचय अशोक द्वारा ही सुनीता के संग विश्वा को नाचने के लिए बाध्य करने के प्रसंग से होता है । सुनीता का यह नाचने का शौक ही उसे अशोक जैसे पति से विच्छेदित कर देता है जिसके कारण सुनीता में कथानक के विकास के साथ साथ नाच के प्रति घृणा का भाव देखा जा सकता है । क्योंकि सुनीता को यह आभास होता है कि उसके नाच का शौक ही उसे अशोक जैसे होनहार, बुद्धिमानी अनुशासित स्वच्छ मानसिकता वाले पति से बिछड़ने का कारण है ।

सुनीता का विश्वा से क्लब में हुआ परिचय ही कालान्तर में उन्हें एक दूसरे के अत्यधिक समीप लाने का कारण बनता है । इस बीच अशोक का किसी कार्य हेतु बाहर जाना सुनीता और विश्वा को एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने तथा सुनीता का अशोक की दुनिया उजड़ने का अवसर प्रदान करता है । अशोक अपनी यात्रा से लौट कर सुनीता को अपनी पत्नी की जगह विश्वा की हो जाने की स्थिति को देखता है । तथा एक दिन अपने ही घर विश्वा और सुनीता को आपत्ति जनक स्थिति में अशोक द्वारा देख लेने पर विश्वा पर कोर्ट मार्शल लागु होने पर उसे अपने पद से हाथ धोना पड़ता है । और दूसरी ओर अशोक अपनी पत्नी सुनीता को कानूनी तौर तलाक दे देता है । जिसके बाद सुनीता विश्वा से विवाह कर आसम में रहने लगती है परन्तु अशोक के जीवन में इस घटना के कारण बिखराव आ जाता है जिसके कारण अशोक स्वंय को सेना के कार्यों में व्यस्त

कर मानसिक पीड़ा से छुटकारा पाना चाहता है । इसी व्यस्तता के कारण वह युद्ध में घायल होकर अस्पताल में अतीत की विस्मृतियों में खो जाता है । इन्ही स्मृतियों से उपन्यास के कथानक की शुरूआत होती है ।

इस उपन्यास के कथानक से ज्ञात होता है कि एक ओर अशोक अपनी पत्नी की बेवफाई तथा मित्र की धोखेबाजी के कारण मानसिक पीड़ा का शिकार होता है वही दूसरी ओर सुनीता विधवा से ब्याह करके भी अपने पूर्व जीवन की विस्मृतियों से मुक्त नही हो पाती है । इसी कारण वह मानसिक रूप से रोगी हो जाती है । उसे अपराध की भावना सदैव पीड़ित करती रहती है जो उसके तथा विधवा के जीवन के सुख को नष्ट कर देता है । इस उपन्यास की अवधि दीर्घ तथा पात्रों की संख्या अल्प है । इस प्रकार इस उपन्यास के कथानक से अनेक प्रकार के मनोभाव व्यक्त होते है ।

14· "टुंडालाट" - जगदीशचन्द्र - 1978 :-

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र सुनील कपूर एक ऐसा फौजी अफसर है जो कभी अपने जीवन से हारा नहीं । उसे सेना द्वारा अल्पावधि सेवा की दृष्टि से सेवा मुक्त रखा जाता है । वह इस खाली समय में वायलिनिस्ट बनने के शौक के कारण संगीत स्कूल में भर्ती होता है जहाँ उसकी भेंट एक छात्रा रोमिला से होती है यह दोस्ती धीरे-धीरे रागात्मक सम्बन्ध में परिवर्तित हो जाती है ।

इस प्रेम प्रसंग के दोनो पात्र सुशिक्षित और संस्कारी है । समयानुसार अभी उनका प्रेम अनुराग के चरमोत्कर्ष पर पहुँच भी न पाता इसी बीच युद्ध की घोषणा के कारण उसे सीमा पर युद्ध करने के लिए प्रस्तान करना पड़ता है । इस समय रोमिला उसे हार्दिक प्रेम के साथ पुन: मिलन की आशा से विदा करती है । परन्तु ठीक युद्ध के मध्य सुनील घायल हो जाता है जिसके कारण उसका दायाँ हाथ नष्ट हो जाता है साथ ही उसका वायलिनिस्ट बनने का स्वप्न भी । सुनील फौजी अस्पताल से जब स्वस्थ होकर लौटता है तब संगीत स्कूल के सभी लोग उसके प्रति सहानुभूति दर्शाते है परन्तु उसके संगीत शिक्षा प्राप्ति की इच्छा की पूर्ति का कोई मार्ग सुझा नहीं पाते । इस उपन्यास के कथानक से ज्ञात होता है कि सुनील की इस अपंगावस्था को देखकर रोमिला का भी औपचारिकता और शिष्टता से विदाई लेना सुनील को मानसिक आघात पहुँचाता है साथही उसे अपनी असहाय अवस्था पर निराशा और दु:ख होता है । इस प्रकार इस उपन्यास के कथानक द्वारा लेखक ने युद्ध के परिणाम स्वरूप आत्मीय सम्बन्धों के टूटन को तथा नवजवानों के सपने के बिखराव को अत्यन्त सहज मनो-भावों के माध्यम से दर्शाया है । रोमिला के स्वभाव में आधुनिक युवा पीढ़ी की मानसिकता को देखा जा सकता है । उसमें स्वार्थी प्रवृत्ति दिखाई देता है । इस उपन्यास के पात्रों में अन्तर्द्वन्द्व कुंठा, तनाव, निराशा, पहचान का संघर्ष, हीनभावना, कमजोरी का आभास, उच्चता की भावना, आदि को देखा जा सकता है । इसके पात्र स्वप्न और दिवास्वप्न को देखते हुए पाये जा सकते है ।

इस उपन्यास के कथानक का आरम्भ सुनील कपूर द्वारा संगीत स्कूल में प्रवेश के साथ आरम्भ और अंत वहीं पर रोमिला द्वारा उसे असहायावस्था में छोड़ कर जाने के साथ होता है। इस कथानक की अवधि लगभग एक साल की है।

15· "प्रतिध्वनियाँ" - दीप्ति खंडेलवाल - 1978 :-

यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसे अपनी माँ का प्यार पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पाया जिसके कारण उसका सम्पूर्ण जीवन विषाक्त हो जाता है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र नीलकांत मेहता है जिसकी माता की मृत्यु उसके बचपन में ही होने के कारण वह असमय ही माँ के प्यार से वंचित हो जाता है तथा साथ ही पिता की पलायनवादी दृष्टि के कारण संरक्षणहीन भी हो जाता है। ऐसी अवस्था में वह एक सेठ रामबहादुर हरीश चन्द्र मेहता द्वारा दत्तक पुत्र बनाया जाता है। नीलकांत मेहता का वास्तविक पिता अपनी पत्नी को सदैव कष्ट देता रहा था परन्तु उसकी मृत्यु के बाद अपराध भावना के कारण पलायनवादी दृष्टि से साधु बन कर अपना उदात्तीकृत रूप समाज के सम्मुख प्रस्तुत करता है जिसकी पुष्टि नीलकांत के विचारों से होती है --

" माँ की मृत्यु के तेरहवे दिन पर पिता ने घुटे सिर के साथ गेरुआ धारण कर लिया गले में रुद्राक्ष की माला पहन ······· किसी अनाम यात्रा पर निकल जाने के लिए उद्युत हो उठे। " [1]

1· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल - पृ· 32·

इस उपन्यास के कथानक से बोध होता है कि रायबहादुर हरीशचंद्र मेहता नीलकांत से अपनी एक मात्र पुत्री अचला से जबरदस्ती विवाह कर देते है । जबकि वास्तव में नीलकांत मेहता का शुभा से अत्यधिक प्यार था जिसके टूटने के कारण उसमें मनोविकृतियाँ उत्पन्न होती है और यही कारण था कि जब उसकी बेटी रागिनी का एक युवक से प्रेम का सम्बन्ध होने की बात जानकर भी उस सम्बन्ध को बलपूर्वक तोड़ कर अपनी इच्छानुसार किसी धनी व्यक्ति से शादी करा देता है । यहाँ नीलकांत में परपीडन की भावना को देख जा सकता है । वह अपनी पत्नी को भी अत्यधिक तंग किया करता है यहाँ उसमें दूसरों को पीड़ा देने की प्रवृत्ति की पुष्टि उसके द्वारा शुभा जया, मोतीबाई आदि के साथ अन्याय करने की उसके कथन से होती है । साथ ही इस किये गये अन्याय के बोध के कारण उसमें अपराध की भावना भी दिखायी देती है । वह पलायनवादी अहंवादी, कुंठा, स्वेच्छावादी, अकेलेपन की भावना स्वार्थी आदि मनोभाव देखे जा सकते है । उसकी मृत्यु भी अपराध भावना से होती है । इस उपन्यास का कथानक दीर्घकालीन और अल्प पात्रों से परिपूर्ण है । सम्पूर्ण कथा नीलकांत मेहता के जीवन से सम्बद्ध है । कथानक का आरम्भ नीलकांत के भ्रम से होकर अंत तक वह इसी भ्रम से जूझता रहता है ।

16. "दूसरा सूत्र" - डॉ. देवराज - 1978 :-

यह एक मध्य वर्गीय बुद्धि जीवी के व्यक्तिगत और पारिवारिक सम्बन्धों की कहानी है । इस उपन्यास का नायक आनन्द मोहन नामक वकील ही प्रमुख पात्र है । सम्पूर्ण कहानी उसके अत्यन्त्य जीवन से

सम्बन्धित है । आनन्द मोहन की पहली पत्नी शोभा एक साधारण स्त्री है जिसकी मृत्यु एक पुत्र सुनील के जन्म के कुछ काल बाद हो जाती है जिसके कारण आनन्द मोहन अपने पुत्र का पालन पोषण ठीक ढंग से कर नही पाता साथ ही उसके व्यक्तित्व में स्त्री के प्रति झुकाव या लगाव के कारण वह पुन: विवाह अर्चना नामक एक शिक्षित समझदार, विवेक - शील और संवेदनशील युवती से होता है कालान्तर में मध्यमवर्गीय परिवार के अनुरूप उसके पुत्र में पिता के प्रति विद्रोह और सौतेली माँ के साथ दुर्व्यवहार आदि को देखा जा सकता है । साथ ही पुत्र और पुत्र वधू की स्वार्थी प्रवृत्ति और अर्चना के भावात्मक संकट भी दिखायी देता है । दूसरी पत्नी अर्चना की मृत्यु के बाद प्रमुख पात्र को पुन: अकेलापन की भावना पीड़ित करने लगती है साथ ही पुत्र और पुत्रवधू के उपेक्षित व्यवहार के कारण प्रमुखपात्र अकेलेपन से बचने के लिए तथा आर्थिक लाभ की दृष्टि से दूसरे शहर चला जाता है जहाँ तलाकशुदा सहकर्मिणी और संवेदनशील प्रतिभा नामक स्त्री के परिचय होता है । जहाँ दोनो की कमजोरी अकेलेपन की भावना, शारीरिक आवश्यकता आदि की पूर्ति करने के लिए कथानक के अंत में देखा जा सकता है कि दोनो बिना किसी शर्त के एक-दूसरे को अपना लेते है ।

इस प्रकार इस उपन्यास में लेखक ने समाज की पुरानी धारणाओं को तोड़ते हुए प्रत्येक व्यक्ति को अपने पारिवारिक सम्बन्धों का संतुलन बनाये रखते हुए स्वतंत्र जीवन जीने के अधिकार का समर्थन किया ।

इस उपन्यास का कथानक दीर्घ तथा पात्रों की संख्या सीमित है। परन्तु प्रमुख रूप से वकील आनन्द मोहन के चरित्र को दर्शाया गया। जिसके स्वतंत्र जीवन यापन की दृष्टि को समाज के प्रति आधुनिक विशेषता के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस उपन्यास में सुनील असुरक्षित, स्वतार, ईर्ष्या की भावना, अन्तर्मुखी, पिता के प्रति उपेक्षा का व्यवहार पारिवारिक वातावरण का प्रभाव से परिपूर्ण चरित्र है। जबकि आनन्द मोहन में अपनी जरूरतों की प्राथमिकता की दृष्टि, पुत्र की आवश्यकता की उपेक्षा, स्वच्छन्द प्रवृत्ति, सामाजिक मान्यताओं का व्यावहारिक विरोध अकेलेपन की भावना से संघर्ष, नारी के प्रति झुकाव आदि विशेषताये प्रमुख रूप से दिखायी देती है।

इस प्रकार इस उपन्यास के कथानक से मनुष्य के मनोभावों, सामाजिक विरोध, पारिवारिक अन्तर्द्वन्द्व, भावात्मक संघर्ष आदि को अत्यन्त ही सहज रूप से पात्रों के विभिन्न प्रसंगात्मक कथनों के द्वारा तथा घटनाओं के माध्यम से व्यक्त करने का अत्यन्त ही सफल प्रयास किया गया है।

17. "किशनुली" - शिवानी - 1979 :-

इसके कथानक से व्यक्त होता है कि व्यक्ति भले क्यों न अपने आचारण और व्यवहार से अपने आप को पृथक और अलग साबित करने की कोशिश करे किन्तु वह जैविक आवश्यकताओं से बच नहीं सकता। इस कथानक के प्रमुख पात्र काका और किशनुली है। जिनके चारों ओर

सारी कथा घूमती है । काका को एक अच्छे व्यक्ति के रूप में सभी गौरव देते है और उनके पाण्डित्य पर सब को गर्व है । उनकी पत्नी जिसे लोग काकी कहा करते है वे एक साफ मनवाली स्त्री है । किन्तु उसके मन में सदा सन्तान के अभाव का दु:ख था । जिस की पूर्ति पगली (विश्नुली) के पालन-पोषण द्वारा पूरा करती है । काका को पगली का उनके घर में रहना बिल्कुल पसंद नहीं था । जिसके कारण की स्पष्टता कथानक के विकास से होती है । पगली मन मोहित होने पर भी उसके व्यवहार से असंतुलन व्यक्त होता है । काकी को उसके व्यवहार से कोई शिकायत नहीं थी । वह उसे प्यार से देख भाल किया करती थी । कालान्तर में पगली एक पुत्र (कर्ण) की माँ भी बन जाती है जिसकी देख भाल भी काकी करती है । पगली के पुत्र के वास्तविक पिता के विषय में कथानक के अंत में काका को एक शिष्या को जानकारी मिलती है । इस उपन्यास के कथानक में उक्त बात को अंत तक रहस्य में ही रखा गया है । वास्तव में पगली को माँ बनाने के उत्तरदायी काका स्वयं है वे पगली को सुन्दरता को देखकर स्वयं पर काबु नहीं रख पाये थे । पगली जब अपने वास्तविक हक के लिए काका के पीछे पड़ जाती है तो वे उससे पीछा छुड़ाने के लिए वे काशी भाग जाते हैं जहाँ पर वे अपराध बोध की भावना से सदैव पीड़ित रहते है । इसी कारण वे अपनी एक शिष्या को पत्र लिख कर अपने अपराध को स्वीकार करते है और साथ ही काकी से माफी की अर्चना करते है ।

इस उपन्यास के कथानक के पात्रों में कुंठा, अपराध की भावना, प्रदर्शनवृत्ति, उदात्तीकरण, दमित इच्छायें आदि देखा जा सकता है । कथानक की अवधि दीर्घ है और पात्रों की संख्या कम है । इस उपन्यास का प्रमुख पात्र का अंत अपराध की भावना के साथ ही होता है ।

इस प्रकार इस उपन्यास में लेखक ने पात्रों के द्वारा परिस्थिति वश किये गये अपराधों को और उनसे उनमें उत्पन्न अपराध की भावना, कुंठा आदि मनोभावों को अत्यन्त सरलता से अभिव्यक्त किया है ।

18• "परछाईयों के पीछे" - शशिप्रभा शास्त्री - 1979 :-

यह नारी की समस्याओं पर आधारित उपन्यास है । लेखिका ने इस उपन्यास के कथानक द्वारा नारी की समस्याओं को न केवल समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया बल्कि उस विषय में सोचने के लिए पाठकों को बाध्य करती है । प्रस्तुत उपन्यास के कथानक में एक ऐसी नारी है जो जीवन को सुखमय बनाने के लिए समस्त शर्तों को अपना लेती है । किन्तु उसकी इच्छा पूरी नही हो पाती । यह समस्या एक अशिक्षित की नहीं बल्कि एक शिक्षित नारी सुमित्रा की है । महिपाल की मनोस्थिति स्पष्ट न होने के कारण अपनी पत्नी सुमित्रा को हर प्रकार से यातना देता है फिर भी समाज के डर के कारण सुमित्रा उसी के साथ जीवन व्यापन के लिए बाध्य है ।

महिपाल एक शकालू, स्वार्थी, कामुक और बड़ा ही नीच स्वभाव के व्यक्ति है जिसे सुमित्रा स्वयं जानती है परन्तु भारतीय नारी के गुणों के कारण वह चुपचाप पति का दुर्व्यवहार सहती जाती है । वह सदैव अन्तर्द्वन्द और जीने की विवशता से जुड़ती रहती है । उसके जीवन में आशुतोष, ललित मोहन और अमरीश भट्नागर विशेष रुचि दिखाते है किन्तु वह अपने आप को महिपाल के दुर्व्यवहार से मुक्त नहीं

कर पाती । फिर भी आशुतोष से कुछ क्षण के लिए मानसिक स्तर पर जुड़ती है । परन्तु शीघ्र ही उसे अपनी गलती का आभास होने के कारण वह पुन: स्वतंत्र हो जाती है । इस उपन्यास के कथानक से स्पष्ट होता है सुमित्रा की स्थिति निर्दोष सीता की तरह है । जो हमेशा दुखित रहती है । इस बारे में उनका विचार बिलकुल ठीक है कि " राम के समय से यही रीति चली आई है कि पुरुष किसी न किसी और में नारी को त्रास दे, उसे निष्कासित करे और खुद सिंहासन पर सजा धजा न्याय मूर्ति बन कर बैठा रहे - सर्व पूजित, निद्वन्द्व । " [1]

इस उपन्यास को पढ़ने पर पाठकों के मन में शंका अवश्य उठती है कि आखिर क्यों सुमित्रा आर्थिक स्थिति से स्वतंत्र होकर भी अपनी इच्छा से जी नहीं पाती । शायद इस का कारण वही पुरानी भारतीय स्त्री का विश्वास, संस्कार और मूल्य, जिनसे वह मुक्त होना नहीं चाहती है । सुमित्रा के चरित्र को उदार या कमजोर माना जा सकता है क्योंकि हर हालत से वह समझौता कर लेती है उदाहरण के लिए - " भले ही वह कितने नीचे गिर गया हो - तब उसके नीचे गिरने पर उसको उठाने का जिम्मा उसी का है न । " [2] सुमित्रा का चरित्र मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया गया है यही कारण है कि उसका अध्ययन बड़े ही सूक्ष्म ढंग से किया जा सकता है । बार-बार सुमित्रा और महिपाल का जुड़ना और बिछड़ना अजिब लगता है यही कारण है कि उपन्यास का कथानक जिस मनोवैज्ञानिक समस्या को लेकर आरम्भ

1• परछाईयों के पीछे - शशिप्रभा शास्त्री - पृ• 47•

2• - वही - पृ• 137•

होता है वह अधूरा ही रह जाता है । इस उपन्यास के पात्रों में स्वताय की भावना, कुंठा से पीड़ित परपीड़न रति, अपराध की भावना, वास्तविकता से पलायन भ्रम आदि से पीड़ित देखा जा सकता है । इस उपन्यास के कथानक की अवधि दीर्घ और पात्रों की संख्या कम है । कुल मिलाकर उपन्यास का कथानक सामाजिक संदर्भों को सोचने विचारने के लिए मजबूर करता है ।

19· "कोई तो" - विष्णु प्रभाकर 1980 :-

लेखक ने शुरू से ही अपने सभी विधाओं में मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त सामाजिक विसंगतियों, भावना, नैतिक मूल्यों के बीच संघर्ष का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है । " कोई तो " उपन्यास का कथानक मध्य वर्गीय नैतिकता के पर्दो को उठाता है जो सदैव सत्य से सामना करने से घबराता है । जिसके कारण जनित भय और आशंका के द्वारा विभिन्न प्रकार के ग्रंथियों और भ्रष्टाचार का जन्म होता है । लेखक ने " वर्तिका " - तुषार, हरिराम, चन्दा आदि के माध्यम से सामाजिक प्राचीन मूल्यों से सम्बद्ध तथा जड़ संस्कार से उत्पन्न बुराईयों को प्रकट किया है । जिसके कारण मध्यमवर्गीय समाज के लोग पलायनवादी, कुंठित होते जा रहे है । उपन्यास की नायिका वर्तिका का किशोरावस्था में मुसलमान युवक असद के साथ भाग ने के झुठे अफवाह के कारण वह जीवन भर जीवन साथी की खोज में भटकती रहती है । इस घटना की असत्यता और पवित्रता को उसका प्रेमी स्वीकार नहीं करता । समाज के सड़े गले नैतिक मूल्यों के कारण ही हरिराम चन्दा का विवाह जाति

के संरक्षक नहीं होने देते । उन्हे तरह-तरह की नरकिय यातनाये उहं और झुठे जातिवाद की रक्षा का ढोग करते है । सारा उपन्यास युवावर्ग के अभिशप्त जीवन की कहानी है ।

इस उपन्यास के कथानक में लेखक ने मध्य वर्गीय नैतिक मूल्यों के दुष्परिणामों राजनैतिक भ्रष्टाचार नेताओं की स्वार्थपरता, न्याया-लयों की न्यायिक कमजोरियों, जातिवाद, पुलिस की नपुसंकता, कानूनी व्यवस्था आदि को घोषित किया है । इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों का असंतोष, राजनीतिक दलों की स्वार्थ पूर्ति की दृष्टि छात्रों को उटपटांग मार्गो आदि का वर्णन मिलता है ।

इस उपन्यास के कथानक में पात्रों के अन्तर्मन में होने वाले अनेक चित्र देखें जा सकते है । माता-पिता की साहसहीनता, नैतिक नियम या वैधानिक जकड़ता के कारण मानसिक कुंठाओं से ग्रस्त युवा वर्ग को देखा जा सकता है । वर्तिका का स्वभाव द्वन्द्वमय है, कुमार के प्रतिलगाव, स्वप्नदोष आदि दिखायी देते है । पात्रो में असुरक्षा की भावना, अकेलेपन की भावना, अपराध की भावना, हीन भावना स्वप्न दृश्य, पहचान का संघर्ष पलायनवादी, बाह्य मुर्खता आदि से पीड़ित दिखाई देते है । इस उपन्यास में पात्रों की बाहुल्यता तथा कथानक वर्तिका से सम्बद्ध है । तथा कथानक की अवधि दीर्घ है ।

20• "सुबह के इन्तजार तक" – सूर्यबाला – 1930 :-

इस उपन्यास निम्न मध्यवर्ग की विद्रूपभरी नियति की कथा व्यक्त की है। उपन्यास में लेखिका ने वर्तमान जीवन की अस्तव्यस्तता तथा अन्तर्द्वन्द्वता को प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिका मानू अपने परिवार की आर्थिक दृष्टि से दयनीय अवस्था के साथ-साथ बलात्कार की शिकार होने से उत्पन्न पीड़ा से घिरी हुई दिखायी देती है। इस उपन्यास में एक निर्धन नारी को उस स्थिति को दर्शाया गया जो कि अविवाहित अवस्था में बलात्कार का शिकार हो गयी। परन्तु मानू को अपनी असहायावस्था में अपने भाई बुलू के साथ घर त्याग कर पलायनवादी बनना पड़ता है। लेकिन इस मनो - भावों के आघात के साथ ही मानू और बुलु की सहनशक्ति और साहस को देखा जा सकता है जहाँ एक ओर मानू घरेलु नौकरानी से स्कूल की अध्यापिका पद पर अपने स्वभाव और सरलता के कारण आती है। वही बुलू अपने कठोर परिश्रम और साहस के द्वारा " गैरिज " से प्रगति कर एक डॉक्टर बनने में सफल होता है।

इस उपन्यास के कथानक से व्यक्त होता है कि इसके प्रमुख पात्र जन्म से निम्न वर्गीय होकर भी कर्मों के द्वारा उच्च वर्ग में स्वयं को पहुँचाते है। उन्हें अपने जीवन के आरम्भिक दलों में ही आर्थिक निर्धनता के साथ-साथ समाज के अत्याचार का शिकार भी होना पड़ता है।

इस उपन्यास के कथानक से पात्रों में कुंठा, अन्तर्द्वन्द्व, अहं का संघर्ष, अस्तित्व की खोज अकेलेपन की भावना, उदात्तीकरण, पलायनवादी, हीनभावना बाह्य मुखी, स्वयं पहचान की आवश्यकता असहायावस्था के शिकार आदि मनोभावों से परिपूर्ण दिखायी देते है। इस उपन्यास में यह देखा जा सकता है कि माँ-पिता के सही निर्णय न लेने के कारण संतान को उसका परिणाम भोगना पड़ता है। इस उपन्यास का कथानक मानू और बुलु के चारो ओर घूमता है। इसमें कथानक की अवधि दीर्घ और पात्र कम है।

3.2. निष्कर्ष :-

कथानक उपन्यास की रचना का मूल आधार है इसके अन्तर्गत वे पूरी घटनाएँ आ जाती है जिनसे उपन्यास की रचना होती है। उपन्यासकार कई तत्वो और कल्पना को अनावश्यकतानुसार प्रयोग कर अपनी रचना को सम्पूर्ण आकार देता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास अन्य प्रकार के उपन्यासों से भिन्न है। उपन्यास मनोवैज्ञानिक दृष्टि से लिखा गया है कि नही इसका कोई महत्व नही होता है क्योंकि प्रत्येक उपन्यास में कही-न-कही अवश्य ऐसे लक्ष्य मिल जाते है जो मनोविज्ञान से सम्बन्धित होते है।

उपन्यासों में साधारण कथानक का विकास बाहरी परिवेश में होता है किन्तु मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में आन्तरिक परिवेश का महत्व और कथावस्तु का संकुचित रुप होता है। आधुनिक उपन्यासकार व्यक्ति को अधिक महत्व देता है। यही कारण है कि अध्ययन की दृष्टि भी बदल जाती है।

आठवें दशक के उपन्यासों में से मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए चुने गये उपन्यासों की कथावस्तु के अनुशीलन के बाद कई प्रकार की समानता उनमें देखी जा सकती है । वे कुछ इस प्रकार है -- आजकल का मनुष्य इतना स्वार्थी होता जा रहा है कि अपने बच्चों के सुख सुविधा को भी भूल जा रहा है क्योंकि वह नकली आधुनिकता के बीच एक तीखी वास्तविकता को प्रस्तुत करता है जो इन उपन्यासों के कथानक में पाये जाते है - " आपका बंटी ", " परत-दर-परत ", " अकेली आवाज ", " दूसरा सूत्र ", " सुबह के इंतजार तक " आदि । अधिकांश कथानक त्रिकोणात्मक प्रेम संघर्ष से सम्बन्धित है और कुछ विवाहित जीवन को कुछ दिनों तक घसीटने के बाद समाज के नियमों की परवाह न कर जीवनसाथी को आसानी से बदलते दिखाई देते है । इसका प्रमुख कारण लक्ष्य की सही पहचान न होना वही, पुराने समय की तरह, नारी को संघर्ष करते देखा जा सकता है जो नाम मात्र के लिए स्वतंत्र है किन्तु उसका कई क्षेत्रो में आगे बढ़ना पुरूष द्वारा पंसद नही किया जाता है क्योंकि पुरूष प्रधान सामाज है । आधुनिक युग में अतिशीघ्र घनिष्ट रिश्ते भी समाप्त होते देखे जा सकते है क्योंकि मानव के मूल्यों में परिवर्तन आ जाने के कारण विकृतियाँ और अविस्मृतियाँ जन्म ले रही है । एक-आध कथानक में मातृत्पिता के गोपनिय सम्बन्धों को स्पष्ट करने का उपाय दिया गया जिससे बच्चो का व्यक्तित्व विकास सामान्य हो सकती है ।

आधुनिकता के नाम पर व्यक्ति पवित्र बन्धनों को तोड़ कर अपनी इच्छा अनुसार किसी अन्य व्यक्ति से जुडता है किन्तु अति शीघ्र हर रिश्ते से ऊब जाता है क्योंकि वह पूर्ण रूप से किसी को अपना स्वीकार नही पा रहा है। शंका तो मनुष्य के साथ ही जन्म लेती है किन्तु आधुनिक समाज में व्यक्ति के पास समय की कमी और कई अन्य कारणों से विश्वास नाम की अब कोई चीज नहीं रह पाया है जिसमें शंकालु प्रवृति आत्यधिक हो गई है और फलस्वरूप पारिवारिक सुख की समाप्ति तथा बिखराव व्यक्त होने लगा हैं। यह भी देखा जा सकता है बचपन मे सामान्य विकास होने पर भी कालान्तर जिस वातावरण में रहते है उसके प्रभाव के कारण व्यक्ति को असभ्य और अनैतिक कार्य करने की ओर मुड़ते देखा जा सकता हैं। आधुनिक युवा पीढी की स्वार्थी मान - सिकता के कारण बड़ी आसानी से मूल्यो और सम्बन्धो को अपनी इच्छानुसार बदल रहे है। किन्तु जब वही काम उनके बड़े बुढ़े करते है तो सहन नही कर पाते हैं। और तुरन्त अपना व्यवहार उनके प्रति बदल देते है। अधिकांश कथानक मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त सामाजिक विसंगतियों, बदलती भावनाओ, नैतिक मूल्यो के बीच संघर्ष का बड़ा ही सुन्दर चित्रण है।

कुछ उपन्यासों के कथानक में ऐसी स्थिति पाई जाती है कि व्यक्ति अपनी जैविक जरूरतों की पूर्ति करने के लिए किस हद तक उतर कर आ सकता है। और उनकी पूर्ति होते ही फिर वही उबन की भाव में जुझता रहता है। इन कथानकों के अध्ययन से कहा जा सकता हैं कि आधुनिक मानव अपने-आप को जितना स्वतन्त्र मान कर संस्कारो, मूल्यो से पीछा छूड़ाना चाहता है वह उतना ही अपना अस्तित्व को खोता हुआ और मानसिक रूप से पीडित पाया

जा रहा है जिसके कारण न केवल व्यक्ति मात्र की, बल्कि सम्पूर्ण समाज की शान्ति और सन्तुलन बिगड़ता चला जा रहा है। यही कारण है कि आधुनिक समाज में शारीरिक अस्वस्थता से अधिक मनुष्य मानसिक रूप से पीड़ित है जिसके कारण ही कुण्ठा, अन्तर्द्वन्द्व, अहं का संघर्ष, अस्तित्व की खोज, अकेलेपन की भावना, उदात्तीकरण, हीन और उच्च भावना से ग्रस्त अन्तर्मुखी, बहीर्मुखी असहायावस्था के शिकार, अहंकार, अपराध की भावना आदि से मनुष्य घिरा हुआ है। लगभग सभी कथानकों में पात्रों की संख्या कम और अवधि दीर्घ या लघु हैं।

=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x

चतुर्थ अध्याय

आठवें दशक के उपन्यासों के पात्र : मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x

आठवें दशक के उपन्यासों के पात्र-मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

4.0
प्रास्ताविक

कथावस्तु के अध्ययन और विश्लेषण के उपरान्त मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से पात्रों का अनुशीलन एक प्रकार अध्ययन की दिशा में परिपूरक होता है। आठवें दशक उपन्यासों में पात्र परिकल्पना की भूमिका में मनोविज्ञान के सूत्रों का सम्यक अनुपयोग हुआ है। इससे मानव मन कि अन्त गहराईयों का उन्मीलन सम्भव हो सका है।

4.1
फ्रायड के सिद्धान्त - व्यक्तित्व संरचना

पराहम

पराहम से सम्यक पात्रों का समावेश की एक तालिका यहाँ प्रस्तुत की जा रही है जिसके आधार पर पात्रों की आलोचना आगे प्रस्तुत हुई है। तालिका इस प्रकार है :-

परा्हम या नैतिक विवेक		
उपन्यासों के नाम	पात्र	पृष्ठ नं.
अनामदास का पोथा	जाबाला	324, 327
दूसरा सूत्र	आनन्द मोहन	116

"अनामदास का पोथा" :-

" अनामदास का पोथा " में जाबाला की इच्छा नैतिक विवेक या पराहम के कारण पूरी नहीं हो पाती है । जैसे कि " रैक्व ", " शुभा " के साथ बैठकर विचार करना चाहता था परन्तु जाबाला कहती है -- " ऋषि कुमार, मै तुम्हारे साथ बैठकर विचार कर सकती तो कितना अच्छा होता । पर तुम नहीं जानते कि ऐसा सम्भव नहीं है । "[1] शुभा भी चाहती थी कि उसके (रैक्व) साथ बैठकर वह विचार करें परन्तु उसे समाज का डर था । इतना ही नहीं राजकुमारी होते हुए वह चाह कर भी साधारण लोगों से नहीं मिल सकती थी । इसलिए ऐसा लगता है कि कोई शक्ति है जो उसकी इच्छाओं की पूर्ति करने से रोक रही है । दूसरे शब्दों में नैतिक विवेक या पराहम् शुभा को नियम तोड़ने नही दे रहा है ।

" शुभा " जब " रैक्व " को जंगल मे ही छोड़कर वापस अपने राजमहल में आ जाती है, तो भी उसी की याद करती रहती है । रैक्व के भोलेपन को मुख्यत: उसके पीठ को दिखा कर बैठ जाने को कहने की बात को बार-बार याद करती है । वह बीती हुई बातों को लेकर इस प्रकार सोचती

1, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली - भाग - 2, अनामदास का पोथा - पृ० सं० 324

है - "एकाएक जाबाला के जी में आया था कि उनके पीठ पर सवार हो ही जाय ? नहीं, उस समय उसने अपने मन पर काबू पा लिया, यह अच्छा ही हुआ ।"[1] रैक्व बहुत ही भोला था इसलिए उसको समाज के नियमों के बारे में कोई ज्ञान नहीं था । परन्तु जाबाला तो ऐसी नहीं थी । इसलिए उसकी इच्छा के होते हुए भी कि " रैक्व " के पीठ पर सवार हो नही पाती है - क्योंकि उसको नैतिक विवेक या पराहम ने ऐसा करने से तुरन्त रोक दिया जिसके कारण जाबाला को अपनी इच्छा को जबरदस्ती दबाना पड़ा है ।

पराहम का कार्य ही कुछ ऐसा है कि इदम की हर इच्छा को विशेष कर जो समाजके नियमों के विरोध में हो पूरा होने से रोक देता है । जहाँ बिना सोचे-विचारे इदम इच्छा पैदा करता है वहाँ अहम् उसे पूरा करने का मार्ग खोजता है किन्तु पराहम सोच-विचार कर ही इच्छा की पूर्ति करने देता है ।

" दूसरा सूत्र " :-

" दूसरा सूत्र " में " आनन्द मोहन " प्रमुख पात्र है । जिसके ही ईद-गिर्द कथा घूमती है वें दो पत्नीयों की मृत्यु के बाद भी अकेलेपन की भावना से छुटकारा नही पा सका है । यही कारण है कि पुन: दूसरे शहर में नौकरी के चक्कर में जाता है । और वहाँ अपनी ही, नारी के प्रति कमजोरी के कारण "प्रतिमा " नामक सहकारिन के साथ सम्बन्ध जोडते है । किन्तु जब प्रतिभा विवाह के बन्धन में बन्धना चाहती है तो उनका नैतिक विवेक ऐसा

---

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली - भाग-2, आनामदास का पोथा -पृ.327.

करने से रोकता है क्योंकि जैसे कि उनके दोनो बच्चे बडे हो गये थे। इस बात की पुष्टि इस कथन से होती है - " यही बातें कमोवेश पति पर भी लागू होती है विवाह की बात सोचते हुए मेरे सामने बरबस यह यथार्थ आ जाता है कि " मै " सुनील और " अंजू " का पिता हूँ। जिन्हे सम्भवत: मेरा इस तरह का नया सम्बन्ध स्वीकार नही होगा।"[1] आनन्द मोहन को जबरदस्ती अपनी इच्छा को दबाते देखा जा सकता है क्यों कि प्रतिभा के द्वारा किये गये प्रस्ताव को समाजिक व्यवस्था के कारण स्वीकार कर नही सकते थे। साथ ही उनका पराहम भी उन्हें इस दिशा में कदम उठाने को नही दे रहा है।

अचेतन मन

फ्रायड का यह मानना ठीक है कि व्यक्ति के साथ जो कुछ बीतता है उसके अधिकांश हिस्से को अचेतन मन में दमित कर रखता है और जब कभी उनकी जरुरत होती है तो उनको चेतन स्तर पर आता है। व्यक्ति के व्यवहार के द्वारा भी उसके अचेतन में छिपी बातों को जान सकते है।

आठवें दशक के उपन्यासों में कई पात्रों के व्यवहारों से यह स्पष्ट होता है कि उनके अचेतन मन में कुछ छिपा है। निम्नलिखित तालिका में सम्पूर्ण विवरण दिया गया है। जिनका विवेचन आगे किया गया है।

---

1. `दूसरा सूत्र' - डॉ॰देवराज - पृ॰ 116॰

अचेतन मन

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृष्ठ नं.
आपका बंटी	बंटी	90, 95
पत्तर-दर-परत	कुमुद	118
अन्तराल	कुमार, श्यामा	36, 37
नावें	नीलिमा	83
उसके हिस्से की धूप	मनीषा, मधुकर	53, 107
अनामदास का पोथा	रैक्व, जाबाला	323, 336, 327, 331, 332, 389
अकेली आवाज	बन्टु	6
उखड़े कदम	अशोक	10, 258
टुण्डा लाट	रोमिला, सुनीता	122, 128
झिलमिली	काको	17, 21
कोई तो	वर्तिका	35

"आपका बंटी" :-

बंटी अपनी माँ के साथ तो रहता है पर वह निरन्तर यह चाहता रहा है कि उसके पिता भी उनके साथ रहें। जो कभी सम्भव नहीं हुआ। वह मम्मी को अत्यधिक प्यार करता था किन्तु पापा को भूला नहीं पाता है तभी रह-रहकर उसे पापा की याद सताती थी विशेषकर पापा के द्वारा दिये गये उपहारों आदि को देख कर। अतः कहा जा सकता है कि उसके अचेतन मन में पापा ही बसे हुए है जो लगातार उसके अचेतन से चेतन मन में आते है। जब कभी माँ कालेज चली जाती तो वह पापा के बारे में सोचने

लगता था । "तब न चाहते हुए भी मन में वही पापा, पापा का मैकेनो, कलकत्ता के काल्पनिक चित्र उभर ही आए । "[3]

बंटी हमेशा चाहता है कि वह अपने मम्मी के साथ ही रहें । वह कभी अपनी मम्मी को किसी दूसरे के साथ बैठकर बातें करने पर भी उसे अच्छा नही लगता है । डॉ॰जोशी के साथ जब बंटी को मम्मो का घनिष्ठता बढ़ती चली गयो तो वह सहन नही कर पाता है और पुस्तक पर कवर न चढ़ाने के बहाने को लेकर रोने लगता है । वह खुद समझता है कि उसके रोने का कारण और कुछ था जो उसके अचेतन मन में छिपा हुआ था । वह सोचता है कि - " उसे खुद लग रहा है कि यह रोना केवल कवर न चढ़ाने का रोना नहो है। पता नहो क्या है कि उसे फूट-फूटकर रोना आ रहा है बहुत दिनों से जैसे मन में कुछ जमा हुआ था जो एक हल्के से झटके से बाहर आया ।"[4] बन्टी के अचेतन में छिपी बातों के बारे में उसे खुद विचार करते देखा जा सकता है ।

" परत दर परत " :-

कुमुद के घर का वातावरण अच्छा नहो था उसके माता पिता कभी साथ नही रहते थे । उनके व्यवहारो का गहरा प्रभाव कुमुद पर पड़ता है । तभी वह राजन की ओर आकर्षित होकर भी शादी के बन्धन से डरती है । ऐसा उससे निरन्तर व्यवहार करती हैं मानो, उसे पसन्द नहो करती किन्तु एक बार उसके मुँह से अचेतन में छिपी हुयी बाते फिसल जाती है । वह राजन से

3· आपका बंटी - मन्नू भंडारी - पृ॰ 90·
4· - वही - पृ॰ 95·

कहती है कि - " कभी-कभी शाम को मैं तुम्हें बहुत मिस किया करती थी ।[5] इस तरह अचेतन मन से बातों का चेतन स्तर पर आ जाने को 'जीभ से बात फिसल जाना' कहते है । जो अचेतन में छिपी हुयी बातों का बाहर आने का एक तरीका है ।

" अन्तराल " :-

श्यामा चाहती है कि वह कुमार से खुलकर व्यवहार करे किन्तु किसी कारणवश नही कर पाती है । वह, दोनों के बीच चल रहे औपचारिकता को समाप्त करना चाहती है, पर अपनी इच्छाओं को अचेतन मन मे ही दमित करके रखती है । जो अस्पष्ट रूप से व्यक्त होता है । जैसे कि कुमार कहता है कि - " श्यामा के आने पर उस कमरे की हवा मे ही कुछ ऐसा परिवर्तन आ जाता था कि वह हाथ का काम छोड़कर उस तरफ जा पहुँचता था, आ गयी आप ज्यादा देर तो नही हुयी आये पर वह भी जानता था और श्यामा भी कि उसका यह सवाल झूठ मूठ का होता था । "[6] जब धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे की जरूरतो की पहचानने लगे तब एक दिन श्यामा अचेतन मन मे दमित इच्छा को व्यक्त करती है । वह कहती है कि -- " दिन तो सचमुच ऐसा है कि छुट्टी करनी ही चाहिये । मेरा मतलब है कमरे में बैठकर मगचपच्ची से करो छुट्टी।मैं आ रही थी तो बहुत अच्छा लग रहा था मुझे सड़क पर चलते हुये । कैसा रहे अगर एक दिन की क्लास सड़क पर रखी जाये ? "[7]

5• परत-दर-परत - अन्नपूर्णा - पृ• 118•

6• अन्तराल - मोहन राकेश - पृ• 36•

7• - वही - पृ• 37•

" नावे " :-

मालती अपनी बेटी नीलिमा से सोम के बारे में छिपाती है। फिर भी एक स्तर के बाद नीलिमा सब कुछ समझ जाती है। अपनी माँ को दुखित न करने की दृष्टि से वह हमेशा उन बातों को अपने मन में ही छिपाकर रखती है। वह हमेशा यही सोचती रहती है कि आखिर मम्मी ने ऐसा कौन सा अपराध किया है जो मुझसे छिपा रही है। इस बात को लेकर नीलिमा के अचेतन और चेतन स्थर मे द्वन्द होता रहता है। जैसे कि वह सोचती है कि - " ये जानती हूँ उन्होंने गुस्से को छिपाने को कोशिश की थी " छिपा भी लिया था पर फिर उस बात को पन्द्रह दिन बाद ही वहाँ से मकान बदल लिया था।"[8]

" उसके हिस्से की धूप " :-

मनीषा अपनी इच्छानुसार जितेन को छोडकर आ तो जाती है। पर बाद में उसे लगता है कि मधुकर से ज्यादा सुख तो जितेन दे सकता है। उसके अचेतन मन मे यह निरन्तर रह जाता है। तभी वह कभी-कभी जितेन के बारे मे बात भी करती है। उसको मुलाकात जब नेनीताल मे जितेन से होती है तो उसके निजी जीवन के बारे मे जानने के लिये उत्सुक होती है। उसकी ओर पुन: आकर्षित होती है जिसे अस्पष्ट रूप से व्यक्त भी करती है। मधुकर मनीषा के मानसिकता को जानकर उसे स्वतन्त्र करने से साफ इन्कार कर देता है जिसपर मनीषा गुस्से मे आकर कहती है कि -- " उसके मुँह से

---

8. नावे - शशी प्रभाशास्त्री - पृ. 83.

एक दम निकला सबकुछ करे किन्तु विवाह न करे ।"[9] इस वाक्य से मनीषा के अचेतन मन की बात स्पष्ट होती है वह अगल मे अब पश्चाताप कर रही है कि विवाह के बधंन मे अगर वह नही बंधती तो वह हमेशा के लिये मुक्त रह सकती थी और जैसे चाहे जिन्दगी गुजार सकती थी ।

मनीषा अपने आप से स्पष्ट नही है कि उसे आखिर क्या चाहिये । जब वह जितेन के साथ रहती है तो प्रेम विवाह करने की इच्छा जो उसके बचपन से थी उसे पूरा क के लिये मधुकर की ओर आकर्षित होती है । मधुकर जानते हुये भी कि मनीषा शादीशुदा है । उसकी ओर आकर्षित होता है । और उसे स्पष्ट शब्दो में व्यक्त भी करता है जो उसके अचेतन मन मे छिपा हुआ था । " यू मैं तो उम्र भर भी आप का बेसबरी से इन्तजार करने को तैयार हूं ।"[10]

अनामदास का पोथा :-

रैक्व " पाप " पुन्य का अर्थ अच्छी तरह से जानता था । जिसके कारण जब शुभा स्वयं पाप शब्द का प्रयोग करता है तो वह सोचता है कि उसे कोई बहुत बड़ी गलती कर दिया है और उसमे अपराध भावना उदय हो जाती है । जैसे - "ऋषि कुमार सोच मे पड़ गये - मै जानता कैसे नहीं । यह धर्मसंगत प्रस्ताव है । इसमें अनुचित क्या हो सकता है । नही शुभे इसमे कुछ भी अनुचित नही है । आ जाओ मेरी पीठ पर । अनुचित क्या है भला

---

9. उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ. 83.
10. - वही - पृ. 107.

और अपनी पीठ राजकुमारी के सामने कर दी । उन्हे आशा थी कि वह उनकी पीठ पर आ जायेगी । पीठ मे एक अजीब सी सनसनाहाट हो रही थी । वह शान्त नही हुई । राजकुमारी दो पग पीछे खिसक गयी । बोली तुम बहुत भोले हो ऋषिकुमार । उठो मेरी ओर देखो ।"[11] जब से पीठ पर एक विचित्र सनसहाट शुरु हुआ था वह तुरन्त अपराध भावना को भी साथ जोड लेता है । इसलिये जब भी रैक्व को शुभा की याद आती तो तुरन्त उसका हाथ पीठ पर चला जाता । इतना ही नही वह कई बार उसके अपराध को दूसरो के सामने व्यक्त करता था । उदाहरण के लिये आचार्य से कहता कि -- " मै कहा कि वे मेरी पीठ पर बैठ जाये यह तो धर्म ही था लेकिन शुभा ने कहा कि नही यह ठीक नही होगा ऐसा किसी युवक का सोचना भी पाप है । मै नही माना मेरे अपनी पीठ उनके सामने कर दी वे हट गयी ।[12]

वास्तव मे अपराध की भावना तो वह महसूस करता ही है इसके साथ-साथ उसके अचेतन मे शुभा की ओर आकृर्षण भी पैदा होती है । जिसका ज्ञान उसे नही था अचेतन मे छिपी हुयी इच्छाये मुख्य रूप से स्वप्न आदि का मार्ग तो लेती ही है । इसके साथ ही व्यक्ति मे कुछ विशेष तरह की क्रियाये भी देखी जा सकती है । जिसका समबन्ध अचेतन मन से जरूर होता है । जैसे रैक्व के पीठ की खुजली का सम्बन्ध शुभा से है ।

11· आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पदावली - भाग -2 अनामदास का पोता

12· आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वृतावली - भाग-2, अनामदास का पोता पृ· 336·

जटिल मुनि रैक्व से बाते करते-करते उसके अचेतन मे छिपी बातो को अच्छी तरह से समझ लेते है । उसे समझाते है कि वह जिसे पाप समझता है वह पाप नही है । इसके अलावा विभिन्न मानसिक संवेगों के बारे मे भी बताते है ।

रैक्व के अचेतन मे जिस प्रकार शुभा को पाने की आशा है । उसी प्रकार शुभा मे रैक्व की प्राप्ति करने की इच्छा थी । दोनो एक दूसरे की ओर आकर्षित होते है । सामान्य रुप से देखा जाये तो मनुष्य उसी व्यक्ति या चीज के बारे-मे याद करता है जिससे उसका किसी भी तरह का सम्बन्ध हो । जैसे रैक्व की ओर जाबाला का लगाव था जो उसके ज्ञान के बिना ही अचेतन मे प्रस्तुत था । यही कारण है कि वह रैक्व के बारे में हमेशा सोचती रहती है इससे सम्बन्धित कई उदाहरण मिल जाते है । जैसे " दिव्य लोक के प्राणी के बिछुड़ने पर क्या मानसिक अवस्था उसकी हुई होगी । हाय बिचारा बडा ही भोला है । कहता है सबकुछ वायु से ही निकला है । उसी मे ही लीन हो जायेगा हृदय में न जाने कैसे उथल पुथल महसूस करता रहता था ।"[13]

शुभा अपनी अचेतन मे दमित इच्छाओं को पूर्ति के लिये चेतन स्थर पर ला नही पाती है । इसीलिये वह अपने मन मे ही अपनी इच्छाओ को दमित कर उससे मानसिक स्वस्थ को खो देती है उदाहरण के लिये जाबाला वह नही पा रही है । मगर उसके हृदय में भारी उथल पुथल है । उस ऋषि कुमार ने अपना नाम रैक्व ही तो बतलाया था । वह जीवित तो अवश्य है

13· आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वृतावली - भाग - 2, अनाम दास का पोथा - पृ· 327·

पर कहाँ ? क्या बीती होगी उस भोले तपस कुमार !.. वह अपनी व्यथा किसी से कह नही रही थी । भीतर ही भीतर वह अपनी ताप से आप ही जलने लगी ।"[14] उसके अचेतन मे छिपी इच्छा कई रुपो से निकलती हुयी दिखाई देती है । जिनमे जीभ से फिसली बात भी एक है । साधारण रुप से देखा जा सकता है जो कुछ मन मे दबी हुई इच्छा रहती है उसके बारे मे ही व्यक्ति न चाहते हुये भी बोल देता है । जैसे – " राजा ने आचार्य से कहा कि वह स्वयं जाकर पता लगाये कि यही व्यक्ति रैक्व है या नही ! जाबाला को जब यह समाचार मिला तो उसे नही रहा गया । आचार्य को बुलाकर जोर देकर कहा कि " तात " निस्सन्देह: यही व्यक्ति रैक्व है । आचार्य ने जब पूछा कि तू कैसे कह सकती है कि तपस्वी रैक्व है । तो उसने बिना किसी झिझक के कहा मै जानती हूँ । ।[15] जीभ से फिसली हुई बात से ही सम्बन्धित एक और उदाहरण मिलता है । " डाँटना मत माँ उस बेचारे का क्या दोष है । उसने लोक व्यवहार जाना नही था । समझा देना समझदार अवश्य है मैने उसे जो कुछ समझाया था । वह समझ गया था । डाँटना मत भोला है ना ? "[16]

अन्त मे कहा जा सकता है कि आचार्य द्विवेदी ने इतना सुन्दर वर्णन किया है पात्र के सोचने उसके अचेतन मे छिपी हुयी इच्छाये और चेतन स्थिर मे उसके विपरीत व्यवहार का वर्णन करना कोई आसान कार्य नही । पात्र की सब क्रियाएँ नियम के अनुसार रखती है । सिद्धान्त का अनुसरण प्रतिबिम्बित होता है ।

14· आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वृतावली – 2 अनाम दास का पोथा पृ· 332·

15· – वही – पृ· 387·

"अकेली आवाज" :-

बन्टू कभी भी अपने मन मे नीता मिस के प्रति धारणा को छिपाकर रखता है । जो उसके अचेतन मन में सुरक्षित रहता है । जिसे वह व्यक्त करना तो चाहता है पर कर नही पाता है वह चित्र के माध्यम से व्यक्त करता देखा जा सकता है । जैसे - " वह इतिहास की पुस्तक थी उसके ऊपर लाल पैन्सिल से बन्टू ने एक चित्र बनाया था । एक स्त्री का चित्र । ऊँची जूडा और देह से सटी हुई साडी । ऊँची सैंडलें नीचे लिखा था । नीता मिस, हमारा सिर दर्द । "[17] इस चित्र के विवरण के द्वारा कहा जा सकता है कि उसने अचेतन मन मे नीता मिस के विरोध से सम्बन्धित बाते हो भरी हुयी है । बन्टू मे साहस न होने के कारण वह चित्र के माध्यम से अपने गुस्से को प्रदर्शित करता है ।

'उखडे कदम' :-

अशोक पद के प्रति कर्तव्य निष्ठ होने के कारण ही सुनीता उसे छोड़कर चली जाती है और विश्वा से शादी कर लेती है । वह जीवन को व्यस्थता मे लीन हो जाती हैं । किन्तु अशोक सुनीता को भुला नही पाता है । उसे रह रहकर उसी की याद सताती रहती है । अस्पताल मे घायल पडे हुये अशोक सुनीता के बारे मे सोचता है । क्योंकि वह भले सामाजिक तौर से विवाह के बन्धन से मुक्त तो हो गया है किन्तु मानसिकरूप से वह अभी तड़प रहा है । उसके अचेतन मन मे आज भी सुनीता ही बसी हुई है । जो उसके

---

17. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 6.

सोचने की दृष्टि से स्पष्ट होती है । इस समय सुनीता क्या करती होगी ? रेडियो पर मेरा नाम सुनकर और अखबारों में मेरे चित्र देखकर उसे कैसा लगा होगा हो सकता है उसे कुछ मालूम ही न पड़ा हो । उसने खबरें सुनी ही न हों । "[18] व्यक्ति अपने साथ बीते हुए दिनों घटनाओं और सम्बन्धों से छुटकारा नही पा सकता है । क्योंकि ये उसके अचेतन मानसिक स्तर में हमेशा व्याप्त रहते है जो स्थिति के अनुसार बार-बार चेतन स्तर पर आते है । उसे सरकार द्वारा सम्मान प्राप्त होने के बाद निरन्तर सुनीता से बधाई-पत्र की प्रतीक्षा करता है । अशोक खुद यह जान नहीं पा रहा है कि उसे सुनीता की याद करना अच्छा क्यों लगता है । जैसे -- " मै नही जानता था कि सुनीता की याद मुझे अच्छी लगती थी या दुख देती थी कि सुनीता के साथ की पुरानी स्मृतियाँ हमेशा बहुत मीठी लगती थी । "[19]

'टुण्डा लाट' :-

सुनील और रोमिला एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते है । जिसे कुछ हद तक व्यक्त भी करते है । युद्ध की घोषणा होने पर सुनील को पुन: आर्मी मे जाना पड़ता है । उसके जाने से पहले टीचर और सहपाठियों को बहुत दुख होता है और एक सभा का अयोजन कर शुभकामनाये देते है । अध्यापकों की तरफ से डॉ॰ रामगुर्ति सुनील की प्रशंसा करते हुए अति शीघ्र पुन: संगीत स्कूल में आगमन की इच्छा प्रकट करते है । इस पर सभी खुश होते है पर सब से अधिक रोमिला खुश होती है तभी वह सबसे पहले ताली बजाती है ।

18॰ उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ॰ 10॰

19॰ - वही - पृ॰ 258॰

रोमिला चाहती थी कि सुनील युद्ध मे न जाय पर वह संभव नहीं था किन्तु जब स्कूल उसके वापस लौटने पर पुन: उसे भर्ती करने को तैयार थी । इस निर्णय को सुनकर वह बहुत खुश होती है । उसके अचेतन मन में छिपी बाते तालीयों के माध्यम से व्यक्त होती है -- " इस स्कूल के दरवाजे न केवल हमेशा इनके लिए खुले रहेंगे बल्कि हम सब उत्सुकता से इनके लौट आने की राह भी देखेंगे । इस बात पर सबसे पहले रोमिला ने ताली बाजानी शुरू कर दी ।" 20

सुनील युद्ध मे भाग लेने के लिए चला तो जाता है किन्तु वह हमेशा रोमिला के बारे मे सोचता रहता है । जिसे वह व्यक्त नही करता है फिर भी एक बार उसके अफसर उससे पूछ ही लेते है तो वह बात टाल देता है । जहाँ कि मानसिक रुप से उसके आँखों के सामने रोमिला का चित्र घूमता है । अत: बाहरी रुप से क्यों न व्यक्ति लाख सच्चाई को न माने किन्तु अचेतन में छिपी सच्चाई से कोई बच नहीं पाता है । सुनील को अपने अचेतन में छिपी बातों को चेतन स्तर पर आने नहीं दे रहा है । तभी वह कहता है कि - " नही सर, ऐसी कोई बात नही थी कहते-कहते सुनील की आँखों के सामने रोमिला आ खड़ी हुई और वह उदास हो गया और उसकी आवाज गले मे अटकने लगी ।" 21

"विधानुली" :-

काकी और काका का पूरे गाँव में सभी बहुत सम्मान करते थे । किन्तु काकी को हमेशा इस बात का दुख था कि उसका अपना कोई संतान नहीं है । जिसे वह काका के सामने व्यक्त तो नही करती है । विधानुली

20· टुण्डा लाट - जगदीश चन्द्र - पृ· 122·

21· - वही - पृ· 128·

जिसे लोग पागल समझा करते थे उसे काकी अपने साथ रख लेती है और अच्छी तरह देखभाल करती है । किसनुली के दांत साफ करने से लेकर सब कुछ करती है । काकी कहती है कि - "अरी पूरे दो कोयले घिसे है । अंगुली कभी काट खाई कर खन्नी ने देखा सचमुच काकी की अंगुली पर पट्टी बंधी थी ।"[22]

इस तरह काकी किसनुली की सेवा कर अपनी इच्छा की पूर्ति कर ले रही है जो कई वर्षों से उसके अचेतन मन में स्थित था । काकी का किसनुली से इतना अधिक प्यार होता है कि एक क्षण भी उसके बिना नहीं रहती है । एक बार जब किसनुली बिना बताये कहीं चली जाती है तो काकी बहुत परेशान हो जाती है । वह कहने लगती है कि - "दिन भर भूखी-प्यासी छोकरी न जाने किस-किस के द्वार से दुरदुराई जा रही होगी ।"[23]

"कोई तो" :-

वर्तिका के द्वारा अपराध न करने पर भी उसे हमेशा अपराधित की दृष्टि से ही देखा जाता है । जिसका उसे बहुत दुख था । वह इस भावना की डर से विवाह भी नहीं करती है । जब उसे लगता है कि तुषार अच्छा व्यक्ति है और वह उसकी जरूरतों और भावना को अच्छी तरह से समझ सकता है । तब वह अपने बारे मे बता देती है क्योंकि ये

---

22. किसनुली - शिवानी - पृ. 17.

23. - वही - पृ. 21.

बात अचेतन में छिपी होने के कारण निरन्तर बाहर आने की कोशिश में रहती है । इससे छुटकारा पाने के लिए वह कहानी के रूप में सब कुछ बता कर खुश होती है । केवल नायिका के नाम मे परिवर्तन कर देती है और अंत में कहती है कि - " कहानी की सुविधा " वास्तविक जीवन की वर्तिका है ।"[24]

इस प्रकार उपन्यासों के पात्रों का अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता है कि फ्रायड का अचेतन के बारे मे मानना ठीक था । अधिकांश पात्र अपनी इच्छाओं को अचेतन मन मे ही छिपाकर ही रखते देखा जा सकता है । न केवल छोटे उम्र वाले पात्र बल्कि बुजुर्गों को अचेतन मन महत्वपूर्ण विषय को दबा कर रखना पड़ता है । अचेतन मन व्यक्ति अपनी इच्छा को तो दमित कर लेता है किन्तु वे निरन्तर चेतन अवस्था मे आने के लिए तड़पते रहते है ।

4.1.1

फ्रायड का स्वप्न और दिवास्वप्न से सम्बन्धित सिद्धान्त :-

स्वप्न और दिवास्वप्न साधारणतः सभी देखते है । असामान्य मनोविज्ञान मे स्वप्न का एक विशेष महत्व है । दो तरह के स्वप्न माने जाते है - सुखद और दुखद । फ्रायड का स्वप्न सिद्धान्त विशेष रूप से महत्व-पूर्ण और प्रसिद्ध है । फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त को " इच्छापूर्ति का सिद्धान्त" भी कहा जाता है ।

---

24. कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ. 35.

स्वप्न के अलावा दिवास्वप्न भी होते है। इसमें व्यक्ति दिन में ही उन चीजों की कल्पना करता है जो उसके निजी जीवन में पूरे नहीं हो पाये हो। आठवें दशक के उपन्यासो में प्राप्त कुछ स्वप्नों और दिवास्वप्नों की विवरण तालिका इस प्रकार है --

स्वप्न और दिवास्वप्न

उपन्यासों के नाम	पात्रो के नाम	पृष्ठ संख्या
आपका बंटी	बंटी	186, 216
उस पार का अंधेरा	चोपड़ा	37, 92
अनामदास का पोथा	रैक्व, जाबुका	334, 339, 340, 347, 327
अकेली आवाज	बंटू	133
उखड़े कदम	अशोक	259
टुण्डा लाट	सुनील	194, 195
कोई तो	वर्तिका	24, 55, 191

"आपका बंटी" :-

शकुन अपने जीवन को व्यर्थ न करने की इच्छा से पुन: विवाह कर लेती है। इससे बंटी को बहुत दुख होता है क्योंकि मम्मी अब उसके और डॉ॰जोशी के बीच बँट चुकी थी। माँ का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए बंटी लगातार शैतानी करता है। और कभी-कभी दुर्व्यवहार भी

करता है । जिसके कारण शकुन उसे वापस उसके पापा के पास भेजने को निश्चित कर लेती है । इस बात को जान कर बंटी निरंतर मन-ही-मन सोचता है कि मम्मी उसे बहुत प्यार करेगी और उसको जाने नही देंगी तथा बहुत रोयेगी भी पर ऐसा कुछ नहीं होता है । और वह इससे ही सम्बन्धित स्वप्न देखता है क्योंकि उसके अचेतन मन में केवल यहीं है कि मम्मी को आत्याधिक दुख हो रहा है । बंटी के द्वारा देखे गये स्वप्न का अंश कुछ इस प्रकार है - " रात में वह पापा के साथ घूमता रहा अजीब-अजीब जगहों में अचानक कहीं से ममी आ गई और उसे गोद में उठाकर रोने लगी फूटफूटकर और पापा लौट रहे है चले जा रहे है चले जा रहे है और जैसे ही घर के दरवाजे पर पहुँचते .... । " 25 यहाँ बंटी स्वप्न मे वही कुछ देख रहा जिसकी उसे अभिलाषा भी जो चेतन स्तर पर पूर्ण न होने के कारण स्वप्न के माध्यम से पूरा कर रहा है ।

बुंटी को शुकुन उसके पिता के साथ भेज देती है । बंटी यह सोच कर खुश रहता है कि उसके पिताजी हमेशा उसके साथ हो रहेगा किन्तु ऐसा कुछ नही हुआ पापा और छोटी मम्मी को उसको होस्टल मे भर्ती करने की बात को सुन कर वह सोच में पड़ जाता है । और उसके मन में यह शंका उत्पन्न हो जाती है कि उसकी माँ की तरह ही पापा भी है । दोनो उससे छूटकारा पाना चाहते है और अतिशीघ्र उससे छूट जायेंगे । तभी वह हमेशा के लिए अकेला हो जायगा । इस प्रकार का डर जो उसके अचेतन मन मे छिपी हुई थी वह स्वप्न के रूप में प्रकट होती है । नीद मे उसने देखा कि वह पापा की उँगली पकड़े स्कूल से निकल रहा है और पापा डाँट रहे है । और उन्होने उँगली छुड़ाकर उसे अलग कर दिया है । अलग होते ही बंटी जैसे भीड में खो गया हो । बदहवास सा वह चारो ओर

25· आपका बंटी - मन्नू भंडारी - पृ· 186·

देख रहा है दौड़-दौड़कर लोगों को पकड़ रहा है पर जिसे भी पकड़ता है वही धीरे से हाथ छुड़ाकर आगे चला जाता है । नये-नये चेहरे, नये लोग, नई-नई जगह, वह जोर से चीख पड़ा ।"[26]

"उस पार का अन्धेरा" :-

चोपड़ा मे अहम है और वह पलायनवादी है । वह जिम्मेदारियों को ढोने मे विश्वास नहीं करता है । यही कारण है कि पत्नी और बेटी को त्याग कर एक और विभा नामक स्त्री के साथ बिना किसी बन्धन मे बंधे साथ रहता है । कई सालो के बाद विभा से भी ऊब जाता है । साथ मे उसके मन मे अपराध की भावना भी है कि उसने अपने घर - वालों को बेसहारा छोड़ दिया है । इस भाव को वह निरंतर दमित करता रहता है । जो स्वप्न के माध्यम से व्यक्त हो रही है -- " एक बच्चा रोये चला जा रहा है मै चौंककर उठता हूं कोई भी नही रो रहा है । करवट बदल कर सोने की कोशिश करता है फिर कोई रो रहा है । अब कि स्पष्ट दिखाई देता है । दोनो हाथो में बच्ची को दबाये शुभदा चटक रही है । शुभदा का हाथ पकड़ने को आगे बढ़ता हूं । बच्ची हुई वह भागने लगती है, आगे बढ़े तो देखना, अच्छा नहीं होगा ।"[27]

26· आपका बंटी - मन्नू भंडारी - पृ· 216·
27· उस पार का अन्धेरा - सुदर्शन चोपड़ा - पृ· 37·

चोपड़ा के दमित भाव से सम्बन्धित एक और स्वप्न दृश्य मिल जाता है । जिसमें भी चोपड़ा को असाहाय और कमजोर देखा जा सकता है । वह रेल की पटरी पर चल रहे बच्ची की रचना करना चाहता है किन्तु चाहकर भी कुछ नही कर पाता है । यह स्वप्न दृश्य उसके निजी जीवन से जुडा हुआ है । वह अपनी बेटी की मदद करना तो चाहता है किन्तु उसकी अपनी कमजोरियों के कारण ही स्थितियों को सम्भालना छोड़कर भाग जाता है । इसका उसे दुख जरूर है - "
" तीन वर्ष की छोटी सी बच्ची पटरी पर खड़ी है ... गाडी की रोशनी तेज हो जाती है । बच्ची को हटाने के लिए दौड़ने की कोशिश करता हूँ पर भाग नही पाता । पाँव धीरे-धीरे उठते है हवा रास्ता रोक रही है । पाँव बार-बार उठने का उपक्रम करते है तेज भाग पाऊँ तो बच्ची को बचाया जा सकता है किन्तु हर बार देर हो जाती है । "[28]

"अनामदास का पोथा" :-

" अनामदास का पोथा " में स्वप्न और दिवास्वप्न दोनो मिलते है । इस उपन्यास का नायक रैक्व बहुत भोला और संसारिक ज्ञान नहीं रखता था । जिसका परिचय शुभा (राजकुमारी) से होता है । अनजाने में ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता है । परन्तु उससे बिछुड़ने के बाद वह अक्सर उसी के बारे में सोचा करता और स्वप्न में उसका दर्शन करता था । उसे गुरू और अति सुन्दरी के रूप में मानता था । इसी कारण वह सभी से उसकी ही चर्चा करता फिरता और तुलना मे सबको तुच्छ मानता

---

28. उस पार का अन्धेरा - सुदर्शन चोपड़ा - पृ. 92.

था। जैसे आचार्य से कहता है कि - कल मैंने स्वप्न में अपने गुरु को देखा। गुरु महाभागा शुभा वे तो दिव्यलोक निवासिनी है। स्वप्न में आ गयी। आचार्य क्या बताऊँ कि उनका रूप कैसा सुन्दर है। उनके मुख पर हमारे जैसे रूखे बाल नहीं है। एकदम चिकना, फूल के समान खिला हुआ। आँखें एक पल मृग की आँखो जैसे है - बड़ी-बड़ी, काली-काली, अत्यन्त मोहन। केश हमारे तुम्हारे जैसे नहीं हो एकदम मुलायम काले, लहरदार। समझे।"[29]

आचार्य का बौद्धिक स्तर ऊँचा होने पर भी रैक्व शुभा को ही अधिक सम्मान देता है। यही वजह है कि वह बार-बार शुभा से सम्बन्धित देखे गये स्वप्नो के बारे में बतलाता है। इनकी चर्चा कर उसे सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है किन्तु सत्य यह है कि शुभा के प्रति लगाव जो अचेतन मन में छिपा हुआ है वह प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त न होकर स्वप्न के माध्यम से व्यक्त हो रहा है। रैक्व जागृत अवस्था में भी स्वप्न के बारे में सोचता है और अपने आप से तरह-तरह के प्रश्न करता है। उदाहरण के लिए स्वप्न में शुभा कैसे खिंची आयी वह तो जड पदार्थ नहीं है। स्वप्न कौन देखता है? आचार्य कहते है कि मन नामक कोई पदार्थ है। वह वायु से अधिक शक्तिशाली है। यह उनकी सुनी-सुनायी बात है, परीक्षित सत्य नहीं है, पर जिससे सुना होगा वह कदाचित परीक्षा कर चुका हो। स्वप्न में क्या मन कार्यरत करता है? प्राण वायु और मन का क्या सम्बन्ध है? "[30]

---

29. अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ. 334.
30. - वही - पृ. 339.

रैक्व शुभा से मिलने के लिए बेचैन था किन्तु उसके चाहने पर भी वह मिल नहीं पा रहा था जिसके कारण वह सोच में पड़ जाता है कि असल में यह स्वप्न क्या है । स्वप्न में तो शुभा आती है परन्तु जागृत अवस्था में यह क्यों नहीं हो सकता है । इसके बारे में सोचते हुए उसकी व्याकुलता बढ़ गयी और थोड़ी देर में ही सो गया और स्वप्न देखने लगा - " स्वप्न में शुभा दिखायी पड़ी । चिन्ता कायर मुख की शोभा कुछ और हो थी । उन्हें शुभा के अमृत वचन सुनायी दिये ऋषिकुमार तुम्हारी पीठ में बड़ी वेदना है । आओ तुम्हारी पीठ सहला दूँ और सचमुच ही शुभा ने उनकी पीठ पर हाथ फेर दिया । कितना शीतल स्पर्श था । सारी व्यथा जाती रही । ऋषिकुमार को अपूर्व तृप्ति मिल रही थी ।"31

रैक्व के अचेतन स्तर में यह इच्छा थी कि शुभा से उसकी भेंट हो । जिससे वह अब अपने कष्टों को वह सुनाये और उससे परिहार के मार्ग पूछें । किन्तु यह सम्भव न होने के कारण स्वप्न के माध्यम से पूरा कर रहा है । रैक्व इतना अधिक भोला है कि माता ऋतुम्भारा से भी शुभा के बारे में चर्चा करता है । जैसे - देखी है माँ, शुभा को देखा है, बहुत सुन्दर है शुभा । बहुत मीठी बोलती है । बहुत बड़ी तत्वज्ञानी है । पिछली रात ही तो उसे स्वप्न में देखा है । "32

रैक्व के अलावा दीदी ऋतुका भी अपने पति के मरने के बाद स्वप्न देखती है । ऋतुका स्वप्न का वर्णन रैक्व से करती है जैसे - " इस बच्चे का पिता पुकार रहा है । यही फिर आ गयी । स्वप्न में कहा है -

---

31· अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ· 339
32· - वही - पृ· 340·

इस गाडी के पास दीप जलाओ, मै अन्धकार मे भटक रहा हूँ। सो दीप जला के आ रही हूँ। " 33

दीदी ऋतुका का पति तूफान में फँस कर गाडी ले जाते समय मर जाता है। जिसके कारण उसके मन की बात थी कि अगर वह दीप गाडी के पास जलाया जाय तो उसके पति को मनःशान्ति मिलेगी और यही स्वप्न मे देखती है। जैसे कि उसका पति ही दीप जलाने को कह रहा हो। दूसरे शब्दों में ऋतुका के अचेतन की बात स्वप्न का रूप लेकर आयी है।

" अनामदास का पोथा " में जाबाला को दिवा स्वप्न देखते हुए पाया जाता है। जैसे - " भोलेराम कहते है कि उनके बाल रूक्ष है, जटिल है और स्वर्गीय प्राणी के मुलायम है। हाय रे भोला, तू तो जानता ही नही कि केशों को मुलायम बनाने के लिए कितनी दासियाँ लगी रहती है, ... मगर जब वह गुस्सा होगा तो उसका भोला मुँह और भी कमनीय हो जायेगा। जाबाला उसे आँखों से ही डाँट देगी - नही। उधम मत करो चुपचाप जो कहती हूँ करा लो। मान जायेगा या नही ? मान जायेगा। कहेगा, " इस सुन्दर मुख की वाणी के कारण मै बाध्य हो रहा हूँ। मजा आ जायेगा। भोलेराम को पता ही नही कि सुन्दर मुख की वाणी कितनी गहराई मे चोट करती है। " 34

---

33. अनाम दास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ. 347.
34. - वही - पृ. 327.

रैक्व की ओर आकर्षित होने के कारण जाबाला दिवास्वप्न देखती है । वह चाहती थी कि उसकी मुलाकात रैक्व से पुन: हो परन्तु प्रश्न था कि कैसे ? अपनेमनस्तुति के लिए वह बीते दिनों का स्मरण कर रही है । दिवास्वप्न में व्यक्ति आगे की कल्पना करता है । और इससे परिचित रहता है कि वह जो कुछ सोच रहा है वह हो भी सकता है और नही भी किन्तु ऐसा करने से छोडता नहीं और ऐसा कर खुश होता है । जैसे कि यहाँ जाबाला ।

"अकेली आवाज" :-

बंटू बडा ही शरारती लडका था । उसे अपने घरवालों पर बडा गर्व था विशेषकर पिता के पद और प्रतिष्ठा पर । यही कारण है कि वह किसी के सामने झुकना नहीं चाहता था । वह कई बार ऐसी गलतियाँ करता है कि उसे माफी मँगाने पर मजबूर किया जाता हैं किन्तु ऐसा करने से वह साफ इनकार कर देता है । आखिर बंटू एक ऐसे मोड पर पहुँचता है कि जब वह अपनी गलत्तीयों को पहचाने लगता है । जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट न होकर स्वप्न के माध्यम से व्यक्त होता है । बंटू के द्वारा देखे गये स्वप्न का अंश कुछ इस प्रकार है - " विद्यार्थी परिषद " की बैठक हो रही है । उसकी कुछ गलत्तीयों की चर्चा हुई तो उसने उठकर उनके लिए खेद प्रकट किया । सारे विद्यार्थी खुश हुए । बंटू को क्षमा कर दिया गया उसने कहा - प्रिन्सपल कह रहे है - खेद प्रकट करना एक अच्छी बात है। उससे मन का सारा भय एकदम उतर जाता है । पवित्र आत्माएँ कभी अपने भीतर-भार नही ढोया करती ।"[35]

---

35. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 133.

"उखडे कदम' :-

अशोक ने कानूनन सुनीता से तलाक तो ली थी किन्तु मानसिक रूप से अभी भी उसी के बारे में सोचता रहता है । इतना ही नही स्वप्नों मे भी उसी को देखा करता है । वह चाह कर भी उसे पुनः अपना न पाने के कारण स्वप्न के माध्यम से तृप्ति कर रहा है । एक और कारण यह है कि उसने अब अपनी गलती को भी पहचान लिया है जिसके कारण ही सुनीता ने उसको छोड दिया था । अशोक इन वाक्यों से अपने स्वप्न के बारे में वर्णन करता है - " मगर सोने के बाद भी तो सुनीता से मेरा पीछा नहीं छुटा था । सपने मे मुझे श्रीनगर का अपना जीवन फिर से याद आ गया था । जब मेरी आँखे खुली तो मेरा अर्दली मुझे जोर-जोर से हिलाकर जगा रहा था ।"[36]

"टुण्डा लाट" :-

सुनील जब युद्ध में अपना दाया हाथ खो देने के बाद अपने-आपको कमजोर, असाहय समझने लगता है । इसके दो मुख्य कारण थे । एक तो अब भविष्य में वह कभी वायलिन बजा नही पायेगा और दूसरा यह कि रोमिला की भावना उसके प्रति अब बदल सकती है । रोमिला के बारे में सोचते-सोचते वह दिवास्वप्न देखने लगा है और अपने-आप को सन्तुष्ट करता है क्योंकि उसे यह स्पष्ट पता था कि कटे हुए हाथ को देखकर रोमिला कभी उसे स्वीकार नहीं करेगी । उसके द्वारा देखे गये दिवास्वप्न का अंश इस प्रकार है - " वह रोमिला के बारे में सोचने लगा । उसकी नजरें रोमिला के माथे पर दीप शिखा जैसे बिन्दिया की सुखी पर टीक गयी । गार्डन

36· उखडे कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ· 257·

रेस्तरां में उसके साथ आखिरी मुलाकात को लेकर वह बहुत देर तक सोचता रहा । वह रोमिला के चेहरे पर पड़ी बालों की आवारा लटों को देखता रहा और धीरे-धीरे वह उनमें पूरी तरह खो गया । फिर वह चौंक उठा जैसे रोमिला उसके कानों में कह रही हो कि देखो सुनू मेरे बाल कितने लम्बे हो गये है । "37

एक और उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह रोमिला की ओर आकर्षित था किन्तु अब अपनी दयनीय स्थिति को देखकर मात्र पश्चाताप और दिवास्वप्न देखने के सिवाय और कुछ नही रह गया था । उसे उन सब की कल्पना करते देखा जा सकता है जो कुछ भी सम्भव नही है जैसे - " लेटे-लेटे वह मानो स्वप्न देखने लगा कि पूर्णिमा की रात है और नदी का किनारा है । रोमिला अपने लम्बे बाल वक्ष पर फैलाये उसकी गोद में सिर रखे लेटी हुई है । सुनील के आँखो से आँसू गिरकर उसके बालो पर टपकते है तो वह चौंककर उसकी ओर देखती है और कहती है कि स्वप्न साकार हो रहा है । वह रोने लगा । "38

इस तरह सुनील दाये हाथ को खोकर आस्पताल मे बंधे पट्टो की ओर देखते-देखते दिवास्वप्न देख रहा है । और अपने-आप को यथार्थ से कुछ क्षणों के लिए अलग कर रहा है ।

---

37. टुण्डा लाट - जगदीश चन्द्र - पृ. 194.

38. - वही - पृ. 195.

"कोई तो" :-

उपन्यास की शुरुआत में लेखक ने "वार्तिका" की कहानी "सुविधा" नाम से शुरू की है। कम उम्र में ही बदनामी को झेलने के कारण वर्तिका को सपने में अपने आप को इस समाज के बन्धनों से मुक्त होने की कोशिश करते देखा जा सकता है। - "सुविधा ने एक सपना देखा वह गहरे पानी मे तैर रही है। तैरती तैरती दूर निकल जाती है है फिर सहसा आकाश मे उड़ने लगती है। तभी तूफान उठता है। गहन झंझा में सब कुछ शून्य हो रहता है।" 39

वर्तिका की दोस्ती तुषार से होती तो है किन्तु उसे विश्वास नहीं है कि वह उसे अपना लेगा। इसी के बारे में सोचती सोचती उसे नीद आ जाती है। और सपने में वह देखती है कि तुषार उसे बुला रहा है किन्तु वह उस तक पहुँच नही पा रही है। वह सहारा देने और उसके लिए रुकने से साफ इनकार कर रहा है। सत्य तो यह है कि उसके मन मे सन्देह है वह स्वप्न के माध्यम से व्यक्त हो रहा है - "वर्तिका-वर्तिका आ, आ• आ ••• । वह दृष्टि उठाती है उसी दिशा में एक मूर्ति उभरती है - तुषार की माया मूर्ति मुसकुराती पुकारती - "यहाँ आओ, वर्तिका।"

वर्तिका कहती है, "मै नही आ सकती वहाँ । तुम आ जाओ ? नही, तुम्हें आना होगा।

क्यो ?

39• कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ• 24•

क्योंकि मुझे तुम तक आने के लिए नीचे उतरना होगा । खिलखिला उठा तुषार और उस खिलखिलाहट की अनुगूंज से भर उठा वह सारा आकाश । " 40

तुषार मतलबी था कनाडा जाने के बाद वर्तिका को छोड कर किसी और स्त्री से ब्याह कर लेता है । और पत्र के माध्यम से वर्तिका को सूचित करता है । जिसे जानकर वर्तिका को बहुत दुख होता है । और निरन्तर इसके बारे में सोचती रहती है । सोने के पश्चात इसके सम्बन्ध मे ही स्वप्न देखती है कि वह बेसहारा हो गयी है और पानी में डूबती चली जा रही है । यह उसकी मनोभावना थी जो स्वप्न के रूप मे व्यक्त हो रही है - "सोती है, बार-बार चौंक पड़ती है नाना रूप सपने उसे व्याकुल कर देते है । वह हवा मे तैरती हुई लन्दन पहुँच जाती है । न जाने अचानक वहा, से एक नदी आ जाती हैं मार्ग में । वह उसमे कूद पड़ती है । डूब जाती है, नाक मूहँ में पानी भर जाता है । दम घुट-घुट जाता है । वह चीखती है और पाती है कि वह अपने कमरे में सोयी है । "41

इस तरह वर्तिका कई स्वप्नों को देखती है । जिसके द्वारा यह स्पष्ट होता है कि वह अपने आप से हार गयी है । असहाय की भावना उसमे उत्पन्न हो गयी हैं । और यह भी देखा गया है कि उसके मन मे तुषार से रिश्ता टूट जाने का भी दुख भी है किन्तु व्यक्त नहीं कर रही है ।

40· कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ· 55·

41· - वही - पृ· 191·

अत: इन उपन्यासो के पात्रों के द्वारा देखे गये स्वप्न और दिवास्वप्न के दृश्यो का अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता है ये पात्र अपनी इच्छा जो चेतन अवस्था में पूरा नही हो पा रहा है उनको सुप्त अवस्था मे स्वप्न के माध्यम से पूरा कर रहे हैं। मनुष्य की इच्छा का कोई अंत तो नहीं है और सभी का पूर्ति होना सम्भव भी नहीं है। तभी स्वप्न और दिवास्वप्न बहुत महत्त्वपूर्ण है।

4.1.2
मातृ और पितृ मनोग्रन्थि :-

फ्रायड ने व्यक्तित्व संरचना के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित सिद्धान्तो को भी प्रतिपादित किया। आठवें दशक के उपन्यासों में फ्रायड के द्वारा प्रतिपादित मातृ और पितृ मनोग्रन्थि से सम्बन्धित सन्दर्भ मिल जाते है। मातृ मनोग्रन्थि में लड़का अपने माँ की सौन्दर्यता की ओर आकर्षित होता है। इसका विकास शैशवावस्था से होता है। लड़का माँ से प्रेम करने के साथ ही साथ यह भी कल्पना करता है कि वह पिता के समान बनेगा तथा उसके भी पुरुष जननेन्द्रिय होगी।

जिस प्रकार लड़के की काम-शक्ति माँ की ओर उन्मुख हो जाती है। उसी प्रकार लड़की की काम शक्ति पिता को ओर उन्मुख हो जाती है। यहाँ लडकी अपनी माँ को प्रतिद्वन्द्वी समझती है। इस प्रकार पितृ मनोग्रन्थि का विकास होता है।

नीचे दिये गये तालिका मे इन मनोग्रन्थि से जूझ रहे पात्रों का पूरा विवरण दिया गया है।

मातृ और पितृ मनोग्रन्थि

उपन्यास के नाम	पात्र के नाम	मनोग्रन्थि	पृष्ठ संख्या
आपका बंटी	बंटी	मातृ मनोग्रन्थि	21, 128, 148
कोई तो	पल्लवी	पितृ मनोग्रन्थि	65

"आपका बंटी" :-

बंटी को अपने मम्मी-पापा से प्यार था किन्तु उसके पापा का इस तरह उन के साथ न रह कर कभी-कभी केवल उससे मिलने आना उसे अच्छा नहीं लगता था। विशेषकर उसे दुख तब ज्यादा होता जब उसके दोस्त उसके पिता के बारे में बार-बार पूछते थे। उसे अपनी मम्मी के पद, प्रतिष्ठा और सौन्दर्यता के प्रति गर्व था। और अपनी मम्मी के पास बैठकर उनकी सौन्दर्यता को निखारना अच्छा लगता है। उसके कल्पना करने के तरीकों से कहा जा सकता है कि बंटी अपनी माँ की ओर आकर्षित है अतः उसमें मातृग्रन्थि का उदय और विकास हो रहा है। उदाहरण के लिए चेतन अवस्था में ही नहीं बल्कि सुप्त अवस्था में भी अपनी माँ की सौन्दर्यता को ही देख रहा है। जो उसके ही विचार से स्पष्ट होते हैं - "तभी ख्याल आया, सोती हुई ममी कितनी अच्छी लगती है। अच्छा मम्मी तरह-तरह की कैसे हो जाया करती है? टीटू की अम्मा को तो कभी भी जाकर देख लो हमेशा एक सी रहती है, घूमते भी।"[42]

---

42. आपका बंटी - मन्नू भंडारी - पृ. 21.

बंटी अपनी माँ से एक पल के लिए भी अलग रहना पसंद नही करता था । वह इतना छोटा बच्चा नहीं था जो इस तरह माँ से लिपट कर सोये । उसे माँ का स्पर्श मात्र से आनन्द की प्राप्ति होती थी इतना ही नहीं उसे भी हमेशा माँ को स्पर्श करना अच्छा लगता था । उसकी इच्छा होती थी कि हमेशा माँ से वह लिपटा रहे । वह माँ के साथ रहने पर अधिक सुरक्षित महसूस करता था । बंटी का माँ के प्रति लगाव की पुष्टि इन दो सन्दर्भों से किया जा सकता है - " मम्मी के इस स्पर्श से ही बंटी के मन में भीतर ही भीतर तेजी से कुछ पिघलने लगा । एक बार मन हुआ रजाई उतारकर फेंक दे और मम्मी से लिपट जाए । पता नही मम्मी को आश्वस्त करने के लिए या खुद आश्वस्त होने के लिए ।"[43]

एक बार मन हुआ मम्मी के गले में बाहें डालकर लिपट जाए पर हाथ जहाँ के वहाँ जमें हुए है । हाथ ही नही, जैसे सारा शरीर जहाँ का वहाँ जम गया है, केवल आँखें खुली है और वह टुकुर टुकुर देख रहा मम्मी को ।"[44]

इस प्रकार बंटी मे मातृ मनोग्रन्थि के उदय और विकास को देखा जा सकता है । इसका मुख्य कारण यह है कि घर की परिस्थिति और उसकी माँ का व्यवहार उसके प्रति सामान्य नही था जिसके कारण बंटी अनेके मानसिक कष्टों को झेलता है ।

---

43. आपका बंटी - मन्नू भंडारी - पृ. 128.

44. - वही - पृ. 146.

"कोई तो" :-

वर्तिका की सहेली, पल्लवी के घर की स्थिति सामान्य न होने के कारण बच्चों को सही मार्ग दर्शन देने वाला कोई नही था । पिताजी अपने आप में व्यस्त रहते थे, पद और प्रतिष्ठा के लिए गलत मार्गों को भी अपनाते थे । जिसके बारे में पल्लवी पूर्ण रूप से जानती थी और अपने पिता के बारे में अन्य लोगों से कहने में हिचकिचाती नहीं थी । वर्तिका के द्वारा उसके पिता की खूबसूरती की ओर इशारा करते ही पल्लवी पुलकित होकर कहती है कि " तुम्हारा इशारा समझती हूँ । पल्लवी खिलखिला पडी, " मेरे पिता बहुत सुन्दर थे । सच कहती हूँ वे मेरे पिता न होते तो मैं उनसे शादी कर लेती । "45

पल्लवी के कथन से यह स्पष्ट होता है कि वह अपने पिता की खूबसूरती की ओर आकर्षित थी । जो समाज के नियम के विरोध होने के कारण वह कभी व्यक्त नहीं करती है किन्तु जब मौका मिलता है तो वह अपने मन की बात को बता देती है । इस तरह बेटी का अपने पिता की ओर आकर्षित होने को पितृ मनोग्रन्थि कहते है ।

4.1.3
आठवें दशक के उपन्यासों में पात्रो द्वारा प्रयुक्त विभिन्न रक्षायुक्तियाँ :-

अन्तर्द्वन्द्व और कुण्ठा से बचने के प्रयास में व्यक्ति मनोरचनाओं का उपयोग प्रतिदिन अपने दैनिक जीवन के व्यवहार में करता है । आठवें दशक के उपन्यासों में कई पात्र मिल जाते है जो अपनी मानसिक

---

45. कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ. 65.

सन्तुलन बनाये रखने के लिए मनोरचनाओं को पयोग करते दिखाई देते है ।

नीचे पूर्ण विवरण के साथ तालिका दिया जा रहा है जो पात्रों के द्वारा प्रयोग किये गये रक्षायुक्तियों का संकेत करता है ।

रक्षा युक्तियाँ

उपन्यासों के नाम	पात्र	रक्षायुक्तियाँ	पृष्ठ संख्या
आपका बंटी	बंटी	औचित्य स्थापन	15,137
	शकुन	दमन	38 44
	बंटी	प्रक्षेपण	67,95
	बंटी	सहचर्य	164
परत दर परत	कुमुद, राजन	पलायनवादी	24,47,85
	कुमुद	सहचर्य	37
	कुमुद, राजन	दमन	80,107
अन्तराल	श्यामा, राजन	प्रक्षेपण	35
	श्यामा	सहचर्य	139
	श्यामा	विस्थापन	106
उस पार का अन्धेरा	चोपडा	पलायनवाद	16,48,58,75
	चोपडा	तार्किकरण	57

उपन्यासों के नाम	पात्र	रक्षा युक्तियाँ	पृ•सं•
1	2	3	4
काली आँधी	जग्गी बाबू, मालती	साहचर्य	48,60,13
	जग्गीबाबू,मालती	अवरुद्दीत	13,85
रिश्ते	उर्मी	उदात्तीकरण	10,41-42
	पाल	तार्किकरण	13
नावे	सोम	पलायनवाद	25
	रेवा निगम	विस्थापन	39
	मालती	तार्किकरण	71
	विजयेशा	उदात्तीकरण	86
	रेवा निगम	साहचर्य	५२
रेत की मछली	"मैं" - कुन्तल (शोमन की पत्नी)	साहचर्य	87,96
उसके हिस्से का धूप	मनीषा	विस्थापन	85
	मनीषा	प्रक्षेपित	101
अनामदास का पोथा	जाबाला	शमन	331
	रैक्व	उदात्तीकरण	371,414
	जाबाला	साहचर्य	408
तीसरा आदमी	नरेश	पलायनवाद	5
	नरेश	प्रेक्षपण	6,69

1	2	3	4
अकेली आवाज	बन्टू	प्रेक्षपण	8
	नीता मिस	सहचर्य	9,13
	बन्टू	पलायनवाद	30,105
उखडे कदम	अशोक	तार्कीकरण	10
	अशोक	साहचर्य	14,57
	अशोक	पलायनवाद	28,74,122
टुण्डा लाट	सुनील	सहचर्य	63,219
	रोमिला	विस्थापन	186
	सुनील	तार्किकरण	208
	माता-पिता (सुनील के)	प्रेक्षपण	213
प्रतिध्वानियाँ	नीलकान्त	पलायनवाद	20
		उदात्तीकरण	32
दूसरा सूत्र	अर्चना	साहचर्य	49,82
	आनन्द मोहन	उदात्तीकरण	118
किमुली	काका	उदात्तीकरण	12
	काका	शमन	32
	काका	पलायनवाद	36

1	2	3	4
परछाइयां के पीछे	महिपाल	वास्तविकता से पलायन	148
कोई तो	तुषार	तार्किकीकरण	77
	तुषार	पलायनवाद	146
सुबह के इंतजार तक	मामी (मानू की)	तार्कीकी करण	146
	माँ "	प्रेक्षपण	28
	बूलू	पलायनवाद	29
	मानू	उदात्तीकरण	89
	बूलू	साहचर्य	93

"आपका बंटी" :-

बंटी को हमेशा इस बात का दुख था कि उसके माता-पिता साथ नही रहते है । माँ से सम्पूर्ण स्नेह मिलने के कारण उसे उतनी पापा की कमी महसूस नही होती थी फिर भी वह अपने पापा को भूला नही पाता है । तब उसके मन में तरह-तरह की भावनाये उत्पन्न होती है जिनको वह तार्किकरण या औचित्य-स्थापन (rationalization) से मानसिक सन्तुलन बनाता है । जैसे की इस उदाहरण मे देखा जा सकता है कि वह अपने मन को समझा रहा है कि - " और पापा पास नही रहते तो क्या हुआ ?

उसे प्यार तो खूब करते है। टीटू के पापा तो जब देखो तब डांटते ही रहते है। उस दिन, उसके सामने ही कैसा कान उमेठा था कि पे बोल गई। सारा चेहरा सुर्ख हो आया। अच्छा है पापा के साथ रहो, डांट खाओ पिटो और कान खिचवाओं।"[46] उपर्युक्त उदाहरण के द्वारा कहा जा सकता है कि बंटी अपने दुख को दबाने कोशिश कर रहा हैं। यह सोच रहा है कि उसके पापा मारते तो नही है। इतना अधिक प्यार करते है इसलिए कोई फर्क नही पडता है अगर वे पास नही रहते तो भी। इस तरह तर्क देकर आत्म तृप्ति कर रहा है।

बंटी को बहुत दुख होता है,जब उसकी मम्मी पुन: शादी कर लेती है तो। दुख और अधिक होता है जब उसे भी अपनी मम्मी के साथ डॉ.जोशी के यहाँ रहने जाना पड़ता है। उसके मन मे डर था कहीं लोगों की दृष्टि मे उसकी मम्मी की बदनामी न हो जाये। डॉ.जोशी का घर बहुत बडा और सुन्दर रूप से सजा हुआ था जिसे देखकर बंटी को खुशी तो होती है और तुरन्त उसके मन में यह भावना उठती है कि अगर वह अब अपने दोस्तो को बुला कर कमरों को दिखायेगा तो वे सिरफ देखते ही रह जायेंगे। उदाहरण के लिए " कभी अपने दोस्तों को लाकर दिखलाएगा। टीटू की अम्मा आकर देखें कैसे हँसती थी अब हँसे आकर। कभी देखा भी नही होगा ऐसा कमरा।"[47]

इन वाक्यों से कहा जा सकता है कि बंटी अपने दुख को तार्किकरण के माध्यम से व्यक्त होने नही दे रहा है।

---

46. आपका बंटी - मन्नू भंडारी - पृ. - 15.

47. - वही - पृ. 137.

शकुन के मन मे कई बार यह विचार आता है कि उसे अपने जीवन को अजय की तरह ही पुन: नई शुरूआत करनी चाहिये। परन्तु लाज के कारण व्यक्त नही कर पाती है और अपनी इच्छा को दमित कर देती है। चाचा की सलाह और उसके मन की बात एक ही होने के कारण वह बाद मे मान लेती है जो इन वाक्यों से स्पष्ट होता है -- " उसके अपने ही मन मे जाने कितने-कितने प्रश्न तैर रहे है। क्या खुद उसे अजय का सम्बन्ध भारी नही पडने लगा था ? क्या वह खुद भी उससे मुक्त होना नही चाहती थी, तो फिर ? "[48] " आखिर प्रिंसिपल होने के नाते यहाँ के भद्र समाज में तुम्हारा उठना-बैठना होगा ही इस बार शकुन एकाएक जैसे चौंकी। क्या चाचा डॉक्टर जोशी की ओर संकेत कर रहे है ? पर नही, जिस बात को पूरी तरह उभरने के पहले खुद उसने मन ही मन में दबा दिया, उसे चाचा जान ही कैसे सकते है ? फिर भी वह हल्के से सावधान हो आई।"[49]

दूसरे सन्दर्भ से यह स्पष्ट होता है कि शकुन के अचेतन मन में वही बात छिपी हुई है जिसे चाचा जो कह रहे है किन्तु अपनी भावनाओं को जबरदस्ती दमित कर रही है।

बन्टी को कई बार " प्रक्षेपण " - मनोरचना को प्रयोग करते देखा जा सकता है। उसका विद्रोहात्मक व्यवहार भी प्रक्षेपण का ही फलस्वरूप है क्योंकि वह जानता नहीं है कि किस पर वह अपना गुस्सा दिखाये इसलिए वह अपनी मम्मी, फूफी और पेड़ पौधो पर अपनी भावनाओं को दिखाता है। उदाहरण के लिए - " बंटी ने अपनी बन्दूक उठाई

---

48. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ. 38.

49. - वही - पृ. 44.

और पूफी को यो ही बकता छोडकर बगीचे में आकर दनादन दागने लगा - ठांय्य-ठांय्य ।"[50] प्रक्षेपण से सम्बन्धित कई उदाहरण मिल जाते है जैसे कि शकुन डॉ॰जोशी के साथ काफी समय तक बाते करती बैठ जाती है और जिससे बंटी का काम कर नही पाती है इस पर बंटी क्रोधित होता है । एक तो इसलिए कि बंटी में स्वयंत की भावना बहुत अधिक है । उसे अच्छा नही लगता है कि उसकी मम्मी इस तरह किसी के साथ बैठ कर बाते करती रहे । इस भावना को व्यवहार के द्वारा व्यक्त करता है । बाद में वह अपने आप को अपराधित समझता है जिसे वह प्रक्षेपित कर व्यक्त करता है । "जैसे - जैसे ही मम्मी लौटकर आई बंटी ने रोना शुरू कर दिया । जोर-जोर से इतनी देर तो हो गई अब कब चलेंगे क्वर ? "[51]

बंटी के दिमाग मे जो कुछ बैठ जाता है वह निकलता ही नही था । वह अपनी मम्मी को डा॰जोशी के साथ देखता है तब से जब कभी भी पलंग को देखता है तुरन्त उगलियों को क्रास कर लेता है । इस प्रकार के मनोविकार को सहचर्य (association) कहते है । अर्थात् व्यक्ति किसी घटना या स्थिति से सम्बन्धित वस्तु या व्यक्ति को देख कर उसी घटना या स्थिति को याद करता है । यहाँ उदाहरण के लिए उसके विचार के अंश को दिया जा सकता है - " पलग को देखते ही फिर गन्दी-गन्दी बातें दिमाग मे आने लगी । उंगलियों का क्रास कितना बेकार हो जाता है ऐसे मौको पर ।" [52]

50· आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ· 67·

51· - वही - पृ· 95·

52· - वही - पृ· 164·

"परत दर परत" :-

कुमुद के घर का वातावरण अच्छा न होने के कारण उसकी हमेशा यह कोशिश रहती है कि वह घर पर न रहें । यह पलायनवादी मानसिकता है क्योंकि वह उस वातावरण को परिवर्तित नही कर सकती है इसलिए अधिकांश समय घर से बाहर रहती है । जिसे वह स्वयं व्यक्त करती है - " राजन का घर पास ही है । एक बार बाहर निकली ही है तो उसे ही देखतीचले थोडी देर हो भी जायेगी तो वापसी .... । ऐसा मनहूस सा मुँह बनाकर इतनी जल्दी घर लौटते हुए अच्छा नही लगता अभी से घर में घूस जाएगी तो यह डिपरेशन रात होते होते बढ़ता जायेगा कुछ देर बाहर रहेगी पुरानी गजलों के रिकार्ड सुनने यहाँ वहाँ की बातें करने और पुराने साथियों, अनुभवों को रिकाल करने से मन बहला रहेगा ।"53

राजन मे भी पलायनवादी गुण पाये जाते है । इसका कारण यह था कि घर की स्थिति अच्छी नही थी कुमुद और राजन की मानसिकता इसलिए ही मिलती जुलती थी । वह भी कुमुद की तरह हमेशा बाहर ही रहना पंसद करता था । जैसे - " फैक्टरी से मिली जुली गंध थी उतनी दमघोट नही होती जितनी घर की चौहरी के अन्दर की हवा होती है । घर मे जितनी देर भी वह रहता है उसे सदा किसी सनसनाती बात की प्रतिक्षा रहती है जो माँ या पिताजी किसी की ओर से भी आ सकती है उसके लिए न कही जाकर भी उसे दिल हुई निकल जाती है या फिर घर मे होती है ।" 54

---

53. परत दर परत - अन्नापूर्णा - पृ. 24.

54. - वही - पृ. 47.

एक और उदाहरण इस सन्दर्भ मे दिया जा सकता है व्यक्ति को जब जिन्दगी से उबन, नफरत अपने जीवन के बर्बाद हो जाने का दुख होने लगता है तब वह इस जीवन से छुटकारा पाने के लिए मृत्यु के बारे मे सोचता है यह पलायनवाद के लक्षण होते है । जैसे की वह कहता है कि - " जीना या मरना दोनो आसान होते है लेकिन इन दोनो के बीच की स्थिति मौत की प्रतीक्षा बहुत कठिन है यह बीच की स्थिति जिस तरह भी जल्दी खतम हो सके हो जानी चाहिए ।"55

कुमुद अपने जीवन को फ्यूज से सहचर्य कर रही है वह उलटे अपने जीवन की ओर इशारा कर रही है । वह कहना चाहती है कि उसके जीवन मे जो दुख ही दुख है उससे समझौता करना आ गया है और वह उसी तरह के जीवन को जीने के लिए तैयार है । अक्सर व्यक्ति न चाहकर भी अपने मन मे दबी हुई बातों को चेतन स्तर पर ला देता है और अनजाने ही वह अपने दुखों या कमजोरियो को व्यक्त करता है - " बदल दिया था और वह भी फ्यूज हो गया इसे दोबारा लगाया है होलडर को शायद इसी की आदत हो गयी है दूसरा उसे सुझाया ही नही और सब तो यह मुझे भी ज्यादा पूरा नही लगता थोडी देर के लिए कभी-कभी तो जरूरत पड़ती है, सोचा अगला भी फ्यूज हो गया तो क्या कर लूँगी । बिजली की तारों की फिटिंग पुरानी तो पड़ गयी है और फिर यही क्या बुरा है । रोशनी तो यह भी देता ही है । " 56

---

55. परत दर परत - अन्नपूर्णा - पृ. 85.

56. - वही - पृ. 37.

कुमुद और राजन एक दूसरे की ओर आकर्षित तो होते है किन्तु इस भाव को व्यक्त करने से डरते है । क्योंकि उनके अचेतन मन में अपने-अपने घर के बुरे वातावरण का प्रभाव छिपा हुआ है । वे लगातार इस भावना को पुष्टि करने के लिए कई उदाहरण मिल जाते है - " तुम उन्हें किसी फैसले पर पहुँचाने का समय देने के लिए ही यहाँ आए हो ? इस दौरान वहाँ रहना मुश्किल लगा था पर मैं किसी भी दूसरी जगह जा सकता था । " नही जा सकते थे ... मै भी नही जा पाती हर किसी के सामने तमाशा बनकर पेश नही हुआ जा सकता । अपने स्वर मे अधिकतर भाव से वह स्वयं सकता रह गई । "[57]

एक और उदाहरण के द्वारा कुमुद के प्रति राजन की दमित भावनाएँ स्पष्ट हो जाती है - " वही, जिसे पत्र लिखा था बहुत याद आ रही है और दोनो को सम्मिलित हँसी की आवाज से चौंकते लोगों को देखते हुए राजन को लग रहा था जैसे उसकी अन्दर का बँधा हुआ कुछ धीरे-धीरे खुलता जा रहा है । "[58]

"अन्तराल" :-

सामान्यत: अधिकांश लोग अपनी भावनाओं को व्यक्त करने से बचते है। और जब व्यक्त करना ही पड़ता है तब दूसरो पर प्रक्षेपित कर देते है । उदाहरण के लिए श्यामा और कुमार पढ़ने और पढ़ाने के चक्कर में एक-दूसरे की ओर इशारा करते है । इस भाव को पुष्टि किया जा

---

57. परत दर परत - अन्नापूर्णा - पृ. 80.
58. - वही - पृ. 107.

सकता है - "श्यामा जब से आने लगी थी एक दिन को भी छुट्टी या नागा उसने नहीं किया था । जैसे कोई बंदिश थी जिसके अन्तर्गत श्यामा को हर रोज शाम को आना ही होता था और उसी घर पर रहकर उसके आगे की प्रतीक्षा करनी ही होती थी ।"59

"श्यामा" को अपने पति की मृत्यु की याद सताती है । ऐसा लगता है देव अभी भी वही है । तभी वहाँ जाना "श्यामा" को अच्छा नही लगता है । अपनी बेटी को भी उस घर से छुटकारा दिलाने की सोचती है । अतः कहा जा सकता है कि श्यामा उस घर को देव से सहचर्य (association) करती है । जो इन वाक्यों से स्पष्ट पता चलता है - "उस घर में देव की मृत्यु का दिन उसके लिए उसी तरह ठहरा हुआ लगातार मृत्यु की साथी होकर नहीं रह सकती थी । उसके साथ रहकर बेबी को जो अकेलापन ढोना पड़ रहा था उससे वह उसे बचाना चाहती थी ।"60

श्यामा अपने इच्छानुसार कुछ भी कर नहीं पाती है । ऐसा लगता है कि वह अपने साथ बेकार मे देव की याद बीजी, सीमा और बेबी के बोझ ढोये जा रही है । उसे कई बार इस बात का अहसास होता है किन्तु कुछ कर नही पाती है और अपने दुख और गुस्से को हमेशा किसी और पर दिखते देखा जा सकता है । इस तरह व्यक्ति का अपनी भावनाओं को किसी अन्य व्यक्ति पर दिखाने को विस्थापन कहते है । जैसे कि यहाँ

---

59. अन्तराल - मोहन राकेश - पृ. 35.

60. - वही - पृ. 139.

श्यामा अपना गुस्सा जेनी पर दिखाती है - "बेबी चाय ? जेनी के पूछने पर उसने सिर्फ सिर हिला दिया । चाय की जरूरत बहुत महसूस हो रही थी और खुद बना लेने की हिम्मत भी नहीं थी । पर जेनी को मना करके उसे सन्तोष ही मिला जैसे कि इतने से उसने जेनी को अपनी नाराजगी का पता दे दिया हो । "61

"उस पार का अन्धेरा" :-

चोपडा स्वभाव से पलायनवादी है वह जिम्मेदारी और कायदे की जीवन बिताने का विरोधी है । उसके अनुसार जीवन मात्र मौज मस्ती करने के लिए होता है न कि किसी रिश्ते का बोझ उठाने के लिए । यही कारण है कि वह अपनी पत्नी और बच्चो को छोड कर विभू नामक अन्य स्त्री के साथ किसी शर्त में न बन्धे जीने लगता है । चोपड़ा अपने कमजोरियों और पलायनवादी मानसिकता को अच्छी तरह से समझता है । "यह जीवन चुनने के पीछे संभवत: ऐसी प्रेरणा का भी हाथ था जो जीवन मूल्यों, संघर्ष और साहसिकता के नये आयाम का अन्वेषण करना चाहती है । "62

चोपडा अपनी पत्नी को छोड़कर आ तो जाता है किन्तु कुछ समय पश्चात विभू से भी उब जाता है और सुभद्रा और बेटी के बारे में सोचने लगता है । किन्तु जब वह विभु और सुभद्रा के सभी गुणों की तुलना करता है तब इस निर्णय पर पहुँचता है कि विभु की मानसिकता भी उससे बहुत मिलती जुलती है विशेषकर पलायनवाद का गुण ।

61· अन्तराल - मोहन राकेश - पृ· 106·

62· उस पार का अन्धेरा - सुदर्शन नारंग - पृ· 16·

चोपड़ा विभू के साथ कई वर्ष पहाड़ में बीतता है पर फिर वहीं उबन के शिकार जब दोनो होने लगते हैं तब पुन: स्थान् के परिवर्तन के बारे में सोचता है – "परिस्थितियों की अटट जकड़न में फंसने के सिवाय रह ही क्या गया था ? सीमित आकाश सीमायें की ··· ऊँची-ऊँची चोटियाँ और उनसे पिघलने वाली बर्फ कहीं दूर मैदानों में चले जाने की इच्छा का एक बार फिर जोर मारना ।" 63

चोपडा की पलायनता को विभू अच्छी तरह से समझ कर उसे खुद स्पष्ट रूप से कहती है कि – "असल में तुम किसी भी तरह की जिम्मेदारी से बचना चाहते हो । बचाव की तुम्हारी आदत कभी-कभी तो मुझे सख्त विरोध होता है ।"64 और आगे यह भी कह देती है कि – "हम लोगों के इकट्टे चलने के लिए आवश्यक है तुम सच्चाई से भागना छोड़ दो ।"68

चोपडा अपनी कमजोरियों और अपराध को भावी रूप से समझता है किन्तु तार्किकरण से उसे दबा देता है और कभी व्यक्त होने नहीं देता । मुख्यत: तब, जब विभा उसके अपराध की ओर इशारा करती है । "क्या कहती हो ? भला पश्चाताप किस बात का बात केवल कुछ बिगड़ी हुई आदतों का जिनमें तुम्हारा उत्तरदायित्व कहीं भी नहीं है ।"66

63· उस पार का अन्धेरा – सुदर्शन नारंग – पृ· 48·

64· – वही – पृ· 58·

65· – वही – पृ· 75·

66· – वही – पृ· 57·

"काली आँधी" :-

जग्गी बाबू अपनी पत्नी मालती को प्रोत्साहित कर राजनीति में भेज तो देते हैं किन्तु कई कारण वश दोनो का साथ टूट जाता है। एक बार जब चुनाव के दौर में जग्गी बाबू के होटल में ही मालती खाना खाने आती है। मौका देख कर जग्गी बाबू खाने के मेज पर उन चीजों को स्वयं रख देते है जो उसे अपने घर और पति की याद दिला दे। इस तरह किसी वस्तु या व्यक्ति को देख किसी और की याद करने को सहचर्य कहते जो एक प्रकार का मनोविकार है। यहाँ पर भी जग्गी उन वस्तुओं को मेज पर इसलिए रखें ताकि मालती उनको देखकर सहचर्य कर सकें - "जग्गी बाबू ने सब की आँख बचाकर पीले गुलाब की एक कली फूल प्लेट और क्वार्टर प्लेट के बीच में रख दी थी, उस सीट पर जहाँ मालती जी बैठनेवाली थी।"67

जग्गी बाबू ने जो सोंचकर पीले गुलाब की कली को रखा था वैसा ही हुआ जैसे उन्होंने सोंचा था/मालती जब गुलाब को देखी तो उनका हाथ पीछे खीच गया और उनकी आखों में एकाएक शून्यता में कुछ देखा था।

मालती अपने प्रगति के लिए घर और पति को निश्चित रूप से त्यागती तो है किन्तु वह भी जग्गी बाबू की तरह प्रत्येक पंसद और नपसंद पर ध्यान देती है और वह जब कभी ऐसा काम करने को सोचती है जो जग्गी बाबू को पसंद नहीं है वह कर नही पाती है। उदाहरण के लिए जग्गी बाबू को जर्दे की महक अच्छी नही लगती थी और आज वे दोनो साथ न रह कर भी जर्दे को हाथ मे लेते ही गिरा देती है क्योंकि वह तुरन्त जग्गी बाबू से

---

67. काली आँधी - कमलेश्वर - पृ. 48.

सहचर्य करती है - "मेरा ध्यान उनकी चुटकी की ओर ही बना रहा था और मैंने देखा था, जब वे कार में बैठी थी तो उन्होंने चुटकी खोलकर जर्दे को गिरा दिया था ।"[68]

मालती कुछ पाने की चक्कर में कुछ खो जरूर दी थी किन्तु अपने पति और बच्ची को भूलाना उतना आसान नहीं था । चुनाव के दौरान जब कभी कही जाती और अगर बच्चों को देखने का मौका मिलता तो वे अपनी बच्ची की याद में उन बच्चों के माध्यम से अपनी बच्ची को देखती है । अर्थात् सहचर्य के माध्यम से अपनी बच्ची को देख रही है । जो उसके इस व्यवहार से स्पष्ट होता है - "मालती जी की आँखों में रह-रहकर आँसू आ रहे थे और वे छोटे-छोटे बच्चों को प्यार से रह रहकर चिपका लेती थी ।"[69]

मालती को अपनी बेटी और पति से बिछुडने का दुख है किन्तु उनको चेतन स्तर पर आने से लगातार रोकती है क्योंकि इस बात को व्यक्त करने से उसके पद और प्रतिष्ठा का नुकसान था । इसलिए वह हमेशा अवस्द्धीत (Suppresion) करती है । जैसे - "महिलाओं की मीटिंग मे वे बोल रही थी अगर मैं अपना उदाहरण पेश करू तो आप क्या कहिएगा कौन कह सकता है कि मेरा परिवार और पति सुखी नही है ।"[70]

---

68. काली आँधी - कमलेश्वर - पृ. 60.
69. - वही - पृ. 13.
70. - वही -

जग्गी बाबू के मन में इस बात का दुख है कि उनके पास सब कुछ रह कर भी कुछ भी नहीं के बराबर है किन्तु इसे व्यक्त नहीं करते है । फिर भी उनके बातचीत करने के तरीखें से स्पष्ट हो जाता है -- "जल्दीबाज ! जल्दीबाज क्यों ? मुझे क्या जीतना है या हासिल करना है, जिसको जल्दी-बाजी होगी ! और वे व्यंग्य से हंस दिए थे।"71

"रिश्ते" :-

पाल विवाहित होते हुए भी अनजाने ही उमी से सम्बन्ध जोड लेता है किन्तु उसे बनाये रखने में समाज से डरते है । उमी, पाल की भावनाओं को समझ कर उसको एक शर्त पर मुक्त करने के लिए तैयार हो जाती है । परन्तु उनकी बातों को सुनकर पाल को दुख होता है क्योंकि पाल स्वार्थी और पलायनवादी था । जहाँ कि उमी के भाव में उदातीकरण देखा जा सकता है । "आपको इस तरह बाँधकर मैं आपके आस्तित्व की नाव के बँधे पाल की तरह अनुपयोगी नहीं बनाऊँगी । आपको अनुपयोगी बना रख लूं ऐसा बोझ ढोने की क्षमता मुझमें नही । मेरा स्वार्थ तो इसी में है कि मैं आपसे सदा कुछ-न-कुछ पाती ही रहूँ । और पाउँगी तभी जब आप देते रहने को उन्मुक्त रहेंगे । "72

उमी की उदात्तता की पुष्टि उसके द्वारा ही लिखे गये पत्र के द्वारा किया जा सकता है । " अपनी आराधना के फलस्वरूप प्राप्त वरदान को अपने ही आरादय की बदनामी का हेतु बनाना कौन आराधक चाहेगा ?

---

71. काली आँधी - कमलेश्वर - पृ. 85.

72. रिश्ते - सुदर्शन चोपड़ा - पृ. 10.

अकेला व्यक्ति अपूर्ण है, मानती हूँ मगर यह पूर्णता क्या बिना एक-दूसरे से बंधे प्राप्त नहीं की जा सकती ? जिन्दगी की इत्रवाली शीशी को मुँह पर कार्क कस रखने में मेरा विश्वास कभी नहीं हटा । अत: खुशबू सड़ाँध न बन जाय मैं कार्क खोल रही हूँ । किसी अनिष्ट की आशंका कभी न करें इतना आश्वासन छोड़े जाती हूँ । "73

उमी को जब यह पता चलता है कि पाल अपराध भावना से पीड़ित है तब वह अपने मन को बहलाने के लिए झूठी खबर भेजती है कि उसने शादी कर लिया है । इसे जानकर पाल को अत्यधिक दुख तो होता है किन्तु तर्क पेश कर अपने आप को समझाने की कोशिश करता है । अत: वह तार्किकरण को प्रयोग कर अपने-आप को समझाने की कोशिश में है ।

" ठीक ही हुआ उसकी अभी उम्र ही क्या थी । बेकार की भावुकता में पड़कर अपना जीवन नष्ट किये दे रही थी और उभर न सकती । अगर मैं उसे प्यार करता हूँ तो अपने सुख के लिए उसका भविष्य बिगाड़ना मुझे नहीं ही चाहिए था । मैं शादी शुदा हूँ तीन बच्चों का बाप हूँ । उमी से विवाह कर नहीं सकता था । तो फिर वह मेरे साथ आखिर किस नाते और किस उम्मीद से बंधी रहती ? उसकी अभी सारी उम्र पड़ी थी अच्छा ही किया उसने जो शादी कर ली । " 74

73· रिश्ते - सुदर्शन चोपड़ा - पृ· 41 - 42·

74· - वही - पृ· 13·

"नावें" :-

मालती एक गरीब घर की लडकी थी जब उसकी दोस्ती "सोम" से होती है वह खुशी से झूम उठती है यह सोच कर कि उससे वह शादी करेगी। किन्तु बिल्कुल विपरीत होता है क्योंकि सोम पलायनवादी था। वह अपने घर और पत्नी के बारे में सोचकर अपना इरादा बदल देता है। इतना ही नही मूल्यहीन बहानों को बना कर उससे छुटकारा पाना चाहता है। जैसे कि वह कहता है -- "चाहती हो, रहो चलो तुम्हारे कहने मे मैं तुमसे शादी कर भी लूं मै सरकारी नौकरी में नही हूं बिना किसी की परवाह किये मै ऐसा कर भी सकता हूँ पर तुम्हारा रहना मुश्किल हो जाएगा यह जिन्दगी उसमे कहो बेहतर है। पढ़ो लिखो उन्नाती करो मुझे अब भी तुम्हारी जरूरत है।"[75]

अकेले बसर करनेवाली रेखा निगम मालती को साहरा देती है। दूसरी ओर से अपनी इच्छा की भी पूर्ति करती है। इस प्रकार के व्यवहार को विस्थापन कहते है जिसमें व्यक्ति अपनी दमित इच्छाओं की पूर्ति किसी-न-किसी माध्यम से करता है जैसे यहाँ रेखा निगम ने मालती की देखभाल से ज्यादा उनकी बेटो के लिए खु ही कपड़े सिलाती है और आनन्दानुभुति करती है। "मालती से ज्यादा अब उन्हें बच्ची से मोह हो चला था बच्ची के झाबले, फ्राके उन्होंने खुद सिली। कभी-कभी वे सोच, मालती ने उन्हें ऐसा क्या दे दिया है कि वे उससे इतनी संलग्न हो उठती है।"[76]

---

75. नावें - शशी प्रभा शास्त्री - पृ. 25.

76. - वही - पृ. 39.

रेवा निगम, मालती के जीवन को अपनी बहन की जिन्दगी से तुलना करती है। उन्हें लगता है कि मालती को उनकी जरूरत है तभी वे लगातार सोम से उसकी रक्षा करती है क्योंकि वह मालती में अपनी बहन को देखती है ऐसे करने को सहचर्य कहते है। रेवा निगम, मालती की सुरक्षा को ध्यान में रखकर सोम से इस प्रकार कहती है -- "दिक्कत को आप जाने पर शादी करने के बाद भी आप इन्हें अपने साथ नही रख सकते तो मैं शादी करने और इन्हें ले जाने दोनों की इजाजत नही दूंगी।"[77]

मालती मन ही मन अपराध की भावना से पीडित है क्योंकि वह सोचती है कि उसके साथ धोखा किया गया है। उदाहरण के लिए वह अपने विचारों को दबा कर तर्क देती है। संसार से वह नहीं डरी थी इसलिए सीधे माँ की दहलीज पर जाकर खड़ी हो गई थी, माँ के झल करने लताड़ने पर भी उसने चिंता नहीं कि वहाँ से हटकर वह सीना तानकर सारे जगत का सामना करने के लिए खुले आसमान के नीचे फिर अपनी डोंगी लेकर चल पड़ी थी।"[78]

रेवा निगम के कहने पर मालती अपनी बेटी के भविष्य की सोच पुन: नाम मात्र के लिए शादी कर लेती है। विनयेश को निरन्तर लगता है कि वह बेकार में ही फँस गया है। जिससे हमेशा कुण्ठित और निराश रहता है। इस भाव को व्यक्त न कर पाने के कारण उसके विचारों

---

77. नावें - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 42.

78. - वही - पृ. 71.

में उदात्त भाव को देखा जा सकता है - "अपनी निजी कमजोरी क्यों दिखाए ? क्यों किसी से भीख मांगे ? अपने दाम को न पाने पर भी वह सिर उठाकर रहेगा जब झेलना ही है तो हंसकर झेलेगा या अपने स्वाभिमान को सहते हुए वह इस घर से अपने को मुक्त ही कर लेगा सोचने के लिए न जाने कितना कुछ है काश मालती भी कुछ सोच पाती ।"[79]

"रेत की मछली" :-

"मैं" एक साधारण विवाहित स्त्री है । उसका पति शोभन का मीनल की ओर आकर्षित होना "मैं" के मन में शंका को उद्भव करता है कि मीनल ही उसके घर की शान्ति को भंग कर दी है । इस उपन्यास में कई उदाहरण मिल जाती है । जिसके द्वारा "मैं" अपने घर की स्थिति को फूलों के बगीचे के बीच उग आये कैक्टस के पौधों से सहचर्य करती है । अर्थात् कैक्टस के समान मीनल फूल के पौधों के मध्य शोभन और कुसुम के बीच उग आने के कारण उनके जीवन में स्थिरता आ गई है ।

सहचर्य से सम्बन्धित उदाहरण इस प्रकार है - "बेले और गुलाब की उलझी हुई शाखाओं के बीच यह गलत पौधा बार-बार उग आता था कितनी बार मैंने उसे उखाड़कर फेंका था । मुझे ऐसा लगता जैसे वह पौधा धूर्त और जिद्दी हो गया था । शोभन से शिकायत करती तो वो मुस्करा उठते थे और मन में कभी-कभी आशंका उठती है कि ये पौधे के उगाने का जिम्मेदार शोभन है ।"[80]

---

79. नावें - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 86.
80. रेत की मछली - कान्ता भारती - पृ. 87.

मीनल का "मै" के हाथों से अंगूठी खीच लेना ऐसा लगता है मानों उसको अपने ही घर से निकाल दिया हो । अपने इस स्थिति को फूलों के बगीचे से सहचर्य करती है और उसे ऐसा लगता है कि अब फूल के पौधे नही रहे चारों ओर केवल कांटों के पौधे ही उग आये है । जो इन वाक्यों से स्पष्ट व्यक्त होता है -- "मैने देखा मेरी अंगुलियों में वह कुछ टटोल रही है । मेरी अंगुली में पडी हुई वही मीने वाली अंगूठी उसने उतारी और खीचकर अपनी हथेली में दबा ली मुझे लगा जैसे नीले कमरे के छज्जे से मुझे किसी ने अपनी फूल बगीचा से धकेल दिया है और फूल बागीचा में मेरे चारो ओर फूलों की बजाय जंगली काटेंदार झाडियां है और उन झाडियों से न जाने कितने अमानवीय चेहरे लगातार मुझ पर हंस रहें है ।"[81]

"उसके हिस्से की धूप" :-

जितेन इतना अधिक व्यस्त रहता है कि वह कभी भी मनीषा के साथ चैन से समय बिता नही पाता था । जिस के कारण मनीषा मानसिक रूप से निरन्तर पीडित रहती है । सौभाग्य वश उसके ही कालेज मे काम कर रहें मधुकर से उसका परिचय होता है । मधुकर में उन गुणों को पाती है जिसकी उसे खोज थी । मौके का फायदा उठाकर मधुकर को फोन कर बुलाने के बारे में सोचती है । किन्तु इस पर उसके मन में द्वन्द्व उत्पन्न होता है जिसे वह विस्थापित करती पायी जाती है । अर्थात् अपनी इच्छा को दमित कर बड़ी सरलता से यह सोच लेती है कि मैने तो फोन नं. मांगा नही था उसने खुद लिख कर दे दिया है । इस तरह यह जानते हुए कि वह जो कुछ कर रही है वह ठीक नहीं है।

---

81. रेत की मछली - कान्ता भारती - पृ. 96.

इसलिए पूरा दोष मधुकर पर आरोपित कर रही है । उदाहरण के लिए यहाँ पर मनीषा का विचार प्रस्तुत किया जा सकता है - " मधुकर के फोन नम्बर पर निगाह पड गई क्यों न उसे फोन मिला डाले उससे कहे आज गाडी नही आ रही स्कूटर पर चल सकोगे । उसने तो पूछा नही था मधुकर ने ही जबरदस्ती अपना नम्बर लिखवा दिया था ।"[82]

मनीषा को अपने मन में दमित बातों को प्रक्षेपित करते देखा जा सकता है । सत्य यह था कि वह जितेन से ऊब कर मधुकर की ओर आकर्षित हो गयी थी । इसे वह स्पष्ट रूप से कह न पाने के कारण अपने अविवाहित सर्कमीण के सामने मधुकर की प्रशंसा कर उससे विवाह करने को कहती है । " कुछ नही मै सोच रही थी तुम दोनो एक-दूसरे के इतने अनुरूप हो विवाह क्यों नही कर लेती उससे ?"[83]

"अनामदास का पोथा" :-

जाबाला (शुभा) रैक्व की ओर आकर्षित हो चुकी थी तभी वह निरन्तर उसके बारे में विचार करती रहती है । फलस्वरूप उदास रहा करती थी कारण किसी को मालूम नहीं होता है । क्योंकि वह अपने मन की बात व्यक्त करने से डरती थी । मानसिक पीडा को सहन न कर पाने के कारण वह आचार्य से सभी बातें कह देने को सोचती है किन्तु वह

---

82. उसके हिस्से का धूप - मृदुला गर्ग - पृ. 85.
83. - वही - पृ. 101.

नही पाती है । शुभा के विपरीत स्वभाव वाला रैक्व वह सभी से शुभा की सुन्दरता और विद्वता के बारे में कहता फिरता है ।

जाबाला अपनी इच्छा को समाज के डर से शमित कर रही है । रैक्व की प्राप्ति आसानी से कर सकती थी । किन्तु कर नही पाती क्योंकि अपने मन की इच्छा को किसी से व्यक्त नही करती थी बल्कि व्यथा को बढ़ने देती है । "उसके मन में कई बार आया कि तात पाद से बात बता दे कि उसका भेंट उससे ‡ रैक्व ‡ हो चुकी है पर हर बार कोई लज्जा उसकी वाणी रुद्ध कर गयी ।"[84] ऐसे कई उदाहरण मिल जाते है जिससे जाबाला के मन में दबी हुई बातों का स्पष्टीकरण होता है जो उसकी परेशानीयों का मूल जड़ था ।

रैक्व हद से अधिक भोला था शुभा की ओर आकर्षित होकर भी उसको पता नही था । परन्तु वह अनजाने में ही शुभा और उसकी सुन्दरता के बारे में, सभी से चर्चा करता रहता है । वह भी जाबाला की तरह ही उससे मिलने के लिए जागृत और सुप्त आवस्था में व्याकुल रहता था ।

रैक्व की दृष्टि में शुभा गुरु के समान है क्योंकि वह बहुत ज्ञानी है तभी वह सम्मान भी करता है । रैक्व के प्रेम का उदात्तोभाव को इस उदाहरण के माध्यम से देखा जा सकता है - " देखिए मेरे गुरु का नाम " शुभा " है । यह पद मात्र है । शुभा पदार्थ बिल्कुल भिन्न है । इस

84· अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ· 331·

पदार्थ जैसी सुन्दर चीज मैंने आज तक नही देखी । इस समय वह पदार्थ अनायास मेरे मन में आ जाता है । आपके मन में नहीं आयेगा । क्योंकि आप उसे नही जानते । "85

शुभा की प्राप्ति न होने पर रैक्व में उदात्त भावना को देखा जा सकता है । वह समाज के दलित जनों की सेवा करने लगता है । ऋतुका के द्वारा भी रैक्व में उदात्तीकरण का पता चलता है - " ठीक कहती हो दीदी रानी, वह देवता से भी बढ़कर है । कौन दीन-दुखियों के बारे में सोचता है ? जब गांववालों के दुख की बात सुनी तो माताजी के साथ गाँव गाँव घूमे । "86

जाबाला रैक्व की ओर पूर्ण रूप से आकर्षित थी किन्तु उससे बिछुड़ने के कारण शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर हो चुकी थी । उसके मन को बहलाने के लिए नाटक का आयोजन किया जाता है । उस नाटक के नायक और कथा शुभा के रैक्व तथा उन दोनों के साथ बीते दिनों से मिलता-जुलता था । अत: ऐसे दृश्य को देखकर शुभा अपने निजी जीवन से सहचर्य कर रो पडती है - " ऋषिकुमार की बड़ी-बड़ी निर्मल आँखों में आपार विस्मय और श्रद्धा का भाव था । अरून्धती उसके भोले पन पर हंसने का उपयुक्त अवसर मान रही थी । इसी बीच उसने जाबाला को देखा आँखों से अविरल अश्रुधार बह रही थी, वह दबाने का प्रयत्न करके भी अपना आर्त क्रन्दन दबा नही पा रही थी । अरून्धती ने चिन्तित स्वर में पूछा --

---

85. अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ. 371.
86. - वही - पृ. 414.

"दीदी क्या हो गया तुम्हें । दीदी दीदी ! जाबाला और भी फुट पड़ी । अरून्धती हैरान । यह क्या हुआ जहाँ ऋषिकुमार की मुर्खता पर हँसना चाहिए वहाँ दीदी रोने लगी । वह कुछ नही समझ पायी ।"[87]

इस दृश्य के आधार पर दो तरह की मनोरचनाओं को पहचाना जा सकता है । एक तो साहचर्य (Association) और दूसरा तादात्मय (Identification) परन्तु दोनों में से सहचर्य ही मुख्य है क्योंकि यहाँ शुभा नाटक के नायक को देखकर रैक्व को याद करती हैं । और नाटक की कथा उनके साथ बीते दिनों से मिलती-जुलती थी इसलिए नाटक को देखकर सहचर्य करती है । अर्थात् बीते दिनों को याद कर रही है । जहाँ की तादात्म्य में व्यक्ति किसी व्यक्ति से अपने व्यक्तित्व को मिलाकर देखता है । दूसरे शब्दों में नायक के दुख-सुख उस समय के लिए दर्शक के हो जाते है ।

आचार्य द्विवेदी के उपन्यासों में पात्रों द्वारा उपयोग में लायी गयी रक्षा युक्तियों को देखकर कोई आश्चर्य नही होता है । क्योंकि प्रतिदिन हर एक व्यक्ति कोई-न-कोई रक्षायुक्ति का सहारा लेता ही है । यहाँ एक जरूरी बात कहनी है - द्विवेदी जी ने अपने उपन्यासों में पात्रों का वर्णन सुन्दर ढंग से किया है जिससे कहा जा सकता है कि उन्होंने समाज के साथ व्यक्ति के व्यवहार को भी बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से देखा है । यह उनकी लेखन क्रिया की महानता है ।

87· अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ· 408·

"तीसरा आदमी" :-

नरेश हीन ग्रान्थि से पीड़ित था क्योंकि उसकी आमदनी बहुत ही कम थी जिसके कारण वह अपने भाई सुमन्त के साथ छोटे घर में रहता है। सुमन्त और चित्रा लगभग एक ही उम्र के होने के कारण दोनो एक-दूसरे को अच्छी तरह से समझते है। इसका गलत अर्थ नरेश लेता है। और सुमन्त को हमेशा उसके और चित्रा के बीच तीसरे आदमी या तीसरी छाया के रूप में देखता है। इसी के डर से वह घर को भी त्याग देता है क्योंकि वह उन्हें सत्य का ज्ञान करना चाहता था और पलायनवादी भी था। इसमें व्यक्ति अपनी वास्तविक स्थिति से परिचित हो कर भी उससे मुक्त होने की न सोच कर भागने मे लगा हुआ है - "शायद इसलिए अब मै कुछ नही कर पाऊँगा। चाहते हुए भी नही कर पाऊँगा। क्योंकि उस छाया से मुक्ति नही है उससे कोई बचाव नही है।"[88]

नरेश अपनी कमजोरी को छिपाकर उस तीसरी छाया पर पूरा दोष दे रहा है या अपनी भावना को प्रेक्षेपित कर रहा है -- "अब मै चित्रा के साथ उस तरह रह भी नही सकता। यह मेरी मजबूरी है। मुझे उस छाया ने ही मजबूर कर रखा है। अब मेरी दुनिया में मै हूँ और वह एक छाया है जो मुझे चैन से नहीं बैठने देती।"[89]

88· तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ· 5·

89· - वही - पृ· 6·

नरेश अंत तक अपनी गलती को स्वीकार न कर सुमन्त को ही उसके घर की शान्ति को भंग करने का कारण समझता है । इस भाव को व्यक्त करने वाले कई उदाहरण मिल जाते है -- " यह वह बेहतर जानती होगी । या फिर तुम जानते होंगे .... मुझे तो अब कुछ मालूम नही और मै मालूम भी नही करना चाहता जैसा तुम लोग ठीक समझा करो मुझे अब क्या लेना देना हैं । "[90]

"अकेली आवाज"[1] :-

श्रीमती और श्री आशुतोष मुकर्जी का एक मात्र बेटा था बंटू जो अधिक लाड-प्यार से पूर्ण रुप से बिगड़ चुका था । उसे पढ़ने-लिखने में तनिक भी मन नही लगता था । घर पर ही पढ़ाने के लिए नीता मिस को रखा गया । जब कभी वे उसे पढ़ाने बैठती तो विद्रोह करता और अपना क्रोध वस्तुओं पर दिखाता । इस तरह के व्यवहार को प्रेक्षपण कहते है । इसमें व्यक्ति अपने अपराध,हीन भावना या द्वन्द्व को स्वीकार न कर दूसरों में देखता है । उदाहरण के लिए - " बंटू उठने को हुआ, तो उसका हाथ पकड़ लिया । बंटू तीन-चार बार यही किया । उसे सफलता नही मिली पाँचवी बार उसने नीता मिस की आँखों का चश्मा ही खीच लिया । उसे खीचकर उसने दूर फेंक दिया और स्वयं रोने लगा । "[91]

---

90. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ. 69.

91. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 8.

नीता एक ऐसी टीचर थी जो किसी भी तरह बंटू के व्यवहार में परिवर्तन लाना चाहती थी किन्तु बंटू को लाड प्यार ने इतना अधिक बिगाड रखा था कि उसका सुधार पाना मुश्किल था । नीता जब कभी कुछ पढ़ती विशेष रूप से बच्चों की किताबों को और वहीं बंटू के समान वाला पात्र आता था तो मन-ही-मन सहचर्य करती थी अर्थात् तुलना करती थी । उदाहरण के लिए इन वाक्यों को दिया जा सकता है -- "रात के अन्धेरे में नीता मिस .... उस पुस्तक में एक शैतान लडके की कहानी थी । उसने सारे मोहल्ले को परेशान कर रखा था । उसकी टीचर ने धीरे-धीरे उसे कैसे सुधारा । फिर उसे एक स्कूल में जबरन दाखिल करा दिया । थोडे दिनों में ही वह लड़का एकदम सुधर गया । आगे चलकर वह बड़ा आदमी बना ।" 92

उस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात् ही नीता को यह सूझा कि बंटू को स्कूल में दाखिल करना बहुत जरूरी है तभी वह भी दाखिला करने के बारे में सोचती है और वह भी उस कहानी के पात्र के समान शरारती होकर भी प्रगति कर सकेगा । आगे इस विषय पर बंटू के मम्मी पापा से बात करती है ।

बंटू नटखट तो जरूर है किन्तु बुद्धिमान भी वह अपनी हर हरकत को अच्छी तरह से समझता है पर सुधारना नहीं चाहता है । एक बार जब नीता मिस गांधीजी के बारे में कहानी पढ़कर सुनाती है । उसे सुनते समय बंटू को लगता है कि वह भी वैसे ही गलतीयाँ करता है जैसे कि गांधी जी, परन्तु वह गांधी के समान अपनी गलती को स्वीकार करना नहीं चाहता है

---

92. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 9.

और विद्रोह करता है क्योंकि वह अपने व्यवहार को गांधी जी के व्यवहार से सहचर्य करता है - "गांधी को अपनी गलती महसूस हो गयी । उन्होंने अपने कान पकड़े । अपने शिक्षक से माफी मांगी और कहा - "मै अब कभी झूठ नही बोलूगा । झुठ बोलना पाप है । इसके साथ ही बंटू चिल्ला उठा इस किताब मे यह गलत लिखा है । एक दम गलत उसने गुस्से में आकर वह पूरी किताब फाड़ डाली फिर वह उठकर भागने लगा ।"[93]

बंटू को नीता मिस के सुझाव के अनुसार स्कूल में भर्ती कर दिया जाता है । इस पर बंटू अत्यधिक क्रोधित किन्तु असहाय होता है । तब वह यह सोचता है कि अगर मै बहुत शैतानी करू और लोगों को तंग करू तब ये लोग ही निश्चित रूप से मुझे घर भेज देगे । बंटू स्थिति से समझौता कर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना नही चाहता है बल्कि स्थिति से भागने को सोच रहा है । अत: पलायनवादी है । उसके सोचने का तरीका इस प्रकार था -- "उसने सोचा वह यहाँ के नियमों का हमेशा उल्लंघन करेगा आखिर परेशान होकर ये पिताजी को पत्र लिख देगे । वे मुझे आकर वापस ले जायेंगे ।"[94]

स्कूल के नियम के अनुसार विद्यार्थी परिषद से विद्यार्थियों की शिकायतों को सुना जाता था । हर बार बंटू के बारे में कोई-न-कोई शिकायत जरूर करता था । और अपनी शिकायत को सुनकर सुधरने के अलावा अपने घर वापस भागने को सोचता था क्योंकि वह पलायनवादी था । तभी

---

93. अकेली आवाज - राजेन्द्र आवस्थी - पृ. 13.
94. - वही - पृ. 30.

वह तुरन्त अपने पिताजी को पत्र मे लिखता है -- " पिता जी, मै इस विद्यालय में हरगिज नही पढ़ सकता । आप, जबरन पढ़वाएंगे तो मै वही भाग जाउँगा ।" 95

"उखड़े कदम" :-

अशोक के मन-ही-मन में इस बात का दुख है कि उसकी पत्नी ने उसे छोड़ कर विधवा से पुन: विवाह कर लिया है । वही दूसरी तरफ से अपने मन को बहलाने के लिए युक्ति देते है कि अच्छा ही हुआ । अगर अपनी पत्नी के सहारे चलते तो कभी सम्मान को प्राप्ति नही हो पाती । इस प्रकार अपने-आप को बहलाने को तार्किकरण कहते है । " अगर आज वह मेरी पत्नी होती तो क्या इस राष्ट्रीय सम्मान पर उसे गर्व न होता ? लेकिन वह मेरी पत्नी रह पाती तब न ? ऐसा तो तभी सम्भव होता यदि मै उसकी तबीयत के अनुसार चलता । क्लब, नाच, पार्टियां, पिकनिक के लिए काम कैसे होता ? मिलिटरी की ड्यूटी ? तब क्या यह सम्मान मिलता ? नही । दोनो साथ कैसे चल सकते थे ? अशोक के मन का दुख कई बार व्यक्त होता है।96 किन्तु उसे हमेशा कोई-न-कोई तर्क से दबा देता है ।

अशोक जब कभी सुन्दर दृश्य देखता या किसी की पत्नी को पति की सेवा करते देखता तो तुरन्त सुनीता से सहचर्य करता । और अपनी दशा को देखकर बहुत दुखित होता । ये पंक्तियां इसके उदाहरण के रूप में उभरती है-- " पास में ही एक और अफसर का पलंग है । उसकी भी सारी देह पर पट्टियां

---

95. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 105.

96. उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ. 10.

बांधी है । उसकी पत्नी आज सुबह ही आयी है । दोनों के मुँह पर तृप्ति की मुस्कान है । मै बेचैन हो उठता हूँ । सुनीता की याद सताने लगती है । मै बेचैन हो उठता हूँ ।"[97]

सुनीता का इच्छाओं की पूर्ति करनी थी । विश्वा से विवाह कर लेती है किन्तु वह अपराध की भावना से पीडित रहती है । वह जानती थी कि उसके नाचने और क्लब जाने की इच्छा के कारण ही अशोक से रिश्ते को छोड़कर विश्वा से जुडना पड़ा । तभी वह विश्वा से विवाह पश्चात डान्स फ्लोर पर जाने से डरने लगती है । इसका मुख्य कारण यह था कि वह नाचना भूलना चाहती थी क्योंकि डान्स फ्लोट को देखते ही उस दिन की याद आती है । जब वह अपने जिद्द के कारण अशोक ने विश्वा के साथ नाचने की इजाजत दिया था । दूसरे शब्दों मे कहा जा सकता है कि सुनीता डान्स-फ्लोट से सहचर्य करती है जिससे उसके जीवन में परिवर्तन आया । विश्वा के विचार से उपर्युक्त भाव स्पष्ट होता है - "तब से आज तक मै और सुनीता साथ-साथ रहे है । सुनीता श्रीमती विश्वा कहलाने मे गर्व अनुभव करती है । हम दोनो के बीच मे अशोक का जिक्र कभी भी नहीं आया । सिर्फ एक बड़ा अन्तर मैने सुनीता में पाया कि अब वह डान्स फ्लोट पर आने से कतराती है । किसी बड़े उत्सव में भी डान्स करने से इन्कार कर देती है ।" [98]

97· उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ· 14·
98· - वही - पृ· 57·

अशोक अपनी कमजोरी और लक्ष्य से पूर्ण परिचित था । तभी वह अपनी पत्नी का विधवा की ओर झुकने को जान कर अपने बन्धन से मुक्त करता हैं । अतः कहा जा सकता है कि अशोक के पलायनवादी होने के साथ उदात्तीकरण के भाव भी हैं । यह उसके महानता ही है कि अपनी पत्नी को जो खुशी वह दे नहीं सकता तो उसे तंग या असन्तुष्ट रखने में भी विश्वास नहीं रखता हैं । "मै तुम्हारे भविष्य में बाधक नहीं बनना चाहता । साथ ही, मै नहीं चाहता कि तुम मेरा नाम ग्रहण करों ... । मगर मै तुम्हें बदनाम नहीं करना चाहता हूँ कि तुम स्वाधीन होकर सम्मान पूर्वक अपनी मर्जी का जीवन बिताओं । "[99]

अशोक, सुनीता को अपने-आप से मुक्त तो कर देता है किन्तु वह मानसिक रूप से उसे त्याग नहीं पाता है । तभी वह स्थान परिवर्तन करने को सोचता है क्योंकि उसी घर और शहर में रहने से सुनीता को याद अधिक आती हैं । अशोक के पलायनवादी गुण इन वाक्यों से स्पष्ट होते है - "मै दफ्तरी काम को तंग आ चुका था और कुछ हाथ-पाँव फैलाने का अवसर चाहता था ।"[100] एक और सन्दर्भ मिल जाता है जो अशोक के पलायनवाद को स्पष्ट करता है और इस सन्दर्भ से यह भी पता चलता है कि अशोक अपनी कमजोरी से परिचत है - "मैने क्या कहा ? जल्दी । और मै कमरे के बाहर निकल आया मैने अचानक रुककर आफिस को जोर से आवाज लगाया, "सूबेदार साहब को फौरन बुलाओ । अगर टेलीफोन हो तो फोन करूँ । कहकर मै कमरे में आया और जल्दी-जल्दी मैने अपना सामान

---

99. उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ. 28.

100. - वही - पृ. 74.

सूटकेस और होल्डाल में भर दिया । मेरा केवल एक विचार था कि कहीं कोई ऐसी चीज पीछे न छूट जाये जिससे विभवा या सुनीता पहचान ले कि मै आया था । "101

"टुण्डा लाट" :-

सुनील बीते हुए दिनों को याद करता है । विशेषकर सुनील का संगीत सीखने की इच्छा एक फिल्म को देखने पर हुई जिसमें नायक को नायिका से अलग कर दिया जाता है और नायक अपने संगीत कला के माध्यम से उससे सम्पर्क करना चाहता है । और जब सुनील की संगीत सीखने की इच्छा कुछ हद तक पूर्ण होती है और नायिका के तरह ही जब उसकी सहपाठी रोमिला से समीपता बढ़ती जाती है । तो वह हमेशा अपने-आप को उस फिल्म के नायक से तुलना करता अर्थात् सहचर्य करता है । इसका कारण यह हो सकता है कि नायक और सुनील के जीवन घटनाओं में बहुत समानता थी । जिसे वह खुद व्यक्त करता है - " सुनील रोमिला की आँखों में झाँकने लगा । फिर दूर देखता हुआ बोला वह सीन ऐसा था । बाकी फिल्मों की तरह इस फिल्म मे भी एक हीरो था, एक नायिका थी । नायिका घर में बंद है ... । लेकिन हीरो बाग से बाहर जा चुका है कहकर सुनील खामोश हो गया । "102

101· उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ· 122·

102· टुण्डा लाट - जगदीश चन्द्र - पृ· 63·

सुनील जब युद्ध में अपना दाँयना हाथ खोकर संगीत स्कूल लौटता है तो रोमिला के व्यवहार में परिवर्तन को देखकर दुख होता है । वह रोमिला के साथ बिताये दिनों को भूला नहीं पाता है । तभी वह जब एक होटल में नौजवान जोडे को देखता है तो तुरन्त बीते दिनों से सहचर्य करता है । जो यह स्पष्ट करता है कि मानसिक रूप से सुनील अभी भी रोमिला से जुडा हुआ है । " नौजवान जोडे " को ध्यान से देखता एक बार फिर से यह सब उसे अच्छा लग रहा था । यह सोचकर उसका मन प्रफुल्लित हो उठा कि वह और रोमिला भी कभी इस तरह बैठा करते थे ।" 103

रोमिला को दुख था कि सुनील को युद्ध में जाना पड़ा था । जब ब्लैक आउट का सायरन बजा तो यह निश्चित हो गया कि युद्ध शुरू हो गया था । और वह अपना दुख दरवाजे पर दिखती है जिसे विस्थापन कहते है । उदाहरण के लिए - " मै इस बातको लेकर क्रोध में उबल उठने की भी कोशिश कर रही थी कि मेरे कानों में एक ऊँची ... । मै अभी इस ज्यादती के बारें में सोच ही रही थी कि मेरे कमरे की लाइट आफ कर दी गयी । मै बिस्तर से उठी । दरवाजे को धक्का मारकर खोला और बरामदे में आ गयी ।" 104

सुनील को इस बात का दुख था कि उसका हाथ युद्ध में नष्ट हो गया । वह अपने कटे हुए हाथ को छिपा कर घूमता रहता है । किन्तु कुछ समय बाद उसके मन में यह बात आती है कि उसने कोई अपराध तो

---

103. टुण्डा लाट - जगदीश चन्द्र - पृ. 219.

104. - वही - पृ. 186.

किया नहीं है फिर क्यों शरमायें। सुनील अपने मन की हीन भावना और दुख को तार्किकरण के माध्यम से प्रस्तुत करता है। "वह सोचने लगा कि कब तक वह अपने कटे हाथ को लोगों से छिपाता रहेगा ? फिर छिपाने की जरूरत भी क्या है उसका हाथ चोरी डकैती या कोई अपराध करते वक्त तो कटा नही है। बल्कि सीमा पर दुश्मन से लड़ते हुए देश की रक्षा में ही अर्पित हुआ है।" 105

सुनील का युद्ध में हाथ का कट जाना और नौकरी से निकाला जाना आदि का गहरा प्रभाव सुनील से ज्यादा उसके माता-पिता पर पड़ा। वें कुछ हद तक उसकी कमाई पर निर्भर थे। वे इतना अधिक बेसहारा महसूस करते है कि आपना दुख और क्रोध को बैठे पर निकाल न पाने के कारण सरकार पर निकालते दिखाई देते हैं। इस प्रकार के व्यवहार को प्रेक्षपण कहते हैं। "मै रोती तो उसे वह डाँट भी देते लेकिन वक्त गुजरने के साथ-साथ उनका इनका रवैया भी बदलने लगा। वह आंगन में खड़े ऊंची आवाज में कभी सरकार को गालियाँ देते थे कि अपने झूठे गौरव के प्रदर्शन के लिए वह लड़ाईयाँ लड़ती है और लोगों के घर उजाड़ती है कभी युद्ध की निन्दा करते और कभी अपनी किस्मत को कोसते।" 106

"प्रतिध्वनियाँ" :-

नीलकान्त मेहता अहम से पूर्ण और अपनी मर्जी के अनुसार निर्णय लाने वालों में था। शादी के विषय में अपनी इच्छा की पूर्ति न होने के कारण ही वह नहीं चाहता कि उसकी बेटी अपनी मर्जी से शादी करें।

---

105. टुण्डा लाट - जगदीश चन्द्र - पृ. 208.

106. - वही - पृ. 213.

इस बात का गहरा दुख बेटी को होता है और अपने पिता को कोसती है। अपने अपराध को समझकर अपनी बेटी की नजरों से बचने के लिए ही वह न तो बेटी से मिलने जाता है और न ही उसे घर को बुलाने में हिम्मत रखता है। नीलकान्त में पलायनवादी प्रवृत्ति है। अपने अपराध से बचने के लिए दूसरे शहर जाता है। " मैं नैनीताल भाग रहा हूँ इस मौसम में। इस भवन में तो ` रागिनी की आँखें चप्पे-चप्पे पर जडी लगती है।"107

नीलकान्त मेहता के पिता हमेशा उसकी माँ से बूरा व्यवहार करते थे माँ का पिता के व्यवहार के कारण अकस्मात मृत्यु हो जाने पर गहरा प्रभाव पड़ता है और वे अपने कम उम्र वाले बेटे की भी चिन्ता करना छोड़कर काशी जाने की तैयारी करते है। अपराध की भावना से बचने के लिए समाज के आँखों में धूल झोकने के लिए सन्यासी का रूप धारण कर उदात्तीकृत भाव को व्यक्त कर लोगों के मन में अपने प्रति अच्छे भावना को जागना चाहते है। इस भाव को पुष्टि के लिए इन वाक्यों को दिया जा सकता है - " माँ कि तेरहवी पर पिता ने घुटे सिर के साथ गेरुआ धारण कर लिया। गले में रुद्राक्ष की माला पहने वे मेरे सम्मुख बैठ मुझे भविष्य के सम्बन्ध में समझाते किसी अनाम यात्रा पर निकल जाने के लिए उद्यत हो उठे।"108

---

107. प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खंडेलवाल - पृ. 20.
108. - वही - पृ. 32.

"दूसरा सूत्र" :-

वकील पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात अर्चना से शादी कर लेते है । किसी कारण वश उसके बच्चे जन्म के बाद मर जाते है । इससे दोनों दुखित होते है । अपने दुख को छिपाने के लिए सुनील के बच्चों से स्नेह करती है । जब कभी उनसे मिलती तो अपने बच्चों से सहचर्य करती है - और अपने दुख के बोझ को हलका करती है - " शिशु की मृत्यु के बाद अर्चना उदास और गुमसुम रहने लगती थी उन दिनों जब कृष्णा अपनी बच्चियों को लेकर आती तो अर्चना कुछ देर को प्रसन्न हो उठती वह कमला और कपिल से, जो क्रमश चार और ढाई वर्ष की हो रही थी निकटता स्थापित करना चाहती है ।"107

वकील के बेटे का व्यवहार अच्छा नहीं था । जिसके कारण वे उस शहर को ही छोड़कर दूसरी जगह जाते है । और वहाँ नौकरी भी करने लगते है । उनकी ही कमजोरी के वजह से सहकर्मिणि प्रतिभा से दोस्ती हो जाती है । उसके साथ जब वे एक बार फिल्म देखने जाते है तो उन्हें हमेशा की तरह उनकी मृतक पत्नी की याद आती है । वे वर्तमान स्थिति से सहचर्य करते देखे जा सकते है । जो उनके ही कथन से व्यक्त होता है - " नही ऐसी कोई बात नहीं है । दर असल बात यह थी कि मुझे मृत पत्नी की याद हो आई थी मै अक्सर फिल्म उसी के साथ देखता था ।"110

---

107. दूसरा सूत्र - दीप्ति खंडेलवाल - पृ. 47

110. - वही - पृ. 82.

वकील मे उदात्त-भाव को देखा जा सकता है । तभी वे प्रतिभा से मात्र अच्छे दोस्त के रूप में अपनी सभी तरह की इच्छाओं की पूर्ति करना चाहते है क्योंकि वे चाहकर भी विवाह कर नही सकते थे । जैसे कि वे कहते है कि – " मै उसी एक नितान्त निकट और प्रिय मित्र के रूप में पाना चाहता था ऐसे मित्र के जिसके सामने अपनी गुह्यतम मांगों और जरूरतों और दुर्बलताओं को बेखटक प्रकट किया जा सकें ।"111

"किशनुली" :-

इस उपन्यास के प्रमुख पात्र कक्का और उनकी पत्नी काकी के अपना सन्तान न होना दुख है किन्तु उसे उदात भाव से व्यक्त करते है । काकी तो अपने उदार स्नेही स्वभाव के लिए पूरे गाँव में प्रसिद्ध थी तो, कक्का धर्मवृत्ति और विद्वता के लिए। इसका ज्ञात शास्त्री के एक शिष्या के द्वारा ज्ञात होता है -- " पूरे शहर में काकी अपने उदार स्नेही स्वभाव के लिए प्रख्यात थी और शास्त्री कक्का को अपनी धर्मवृत्ति और विद्वता के लिए वैसी ही धाव थी ।"112

काका निरन्तर अपराध की भावना से पीडित रहते है । विशेषकर उनको यह जानकर और भी दुख होता है कि किशनुली ने बेटे को जन्म दिया है । उनका मन करता है कि वे चिल्ला कर सब से कह दे कि वह उनका बेटा और किसी का नहीं बल्कि उसी का है किन्तु समाज के डर से ऐसा नहीं कर

---

111. दूसरा सूत्र – दीप्ति खंडेलवाल – पृ. 118.
112. किशनुली – शिवानी – पृ. 12.

पाता और अपनी इच्छा को शमित कर देता है । जो उनके ही कथन से स्पष्ट होता है - "मेरे जी में आता मैं उन भोले बच्चे को छाती से लगाकर चीख-चीखकर कहूँ हाँ-हाँ बेटा मैं ही तेरा बाप हूँ पर ऐसा अभागा बाप जो कभी बेटे को बेटा नही कह सकता ।"113

काका अपने किये अपराध और किसनुली से बचने के लिए तीर्थ यात्रा पर निकल जाते है । उनका इस तरह धर्मपत्नी और घर को त्याग कर चले जाने से उन्हें पलायवादी कहा जा सकता है । वे स्थिति को स्वीकार न कर भागने में लगे हुए है जिसे वे खुद स्वीकार करते है - "उधर किसनुली ने एक दिन बड़े अधिकार से तेरी काखी के सामने ही मुझे जकड़कर कहा, "आज से मैं अलग कमरे में नही सोउँगी मुझे डर लगता है सुल ओगे ना अपने पास ? उसी भयावह प्रस्ताव से सहमकर मैंने उसी दिन गृह त्याग दिया है ।" 114

"परछाइयों के पीछे" :-

सुमित्रा मेहनती और साधारण स्त्री थी किन्तु उसका पति महिपाल आजीब था । वह अपनी पत्नी को सुख-शान्ति देने के बजाय मात्र तंग करने पर तुला रहता था । एक बार जब सुमित्रा अपने पति के मुँह पर कह देती है कि बच्चे उसके हर बुरे व्यवहार से परिचित है । जिसे सुन कर वह बर्दाश नहीं कर पाता और वास्तविकता से पलायन होने के लिए पत्नी को घर से निकाल जाने को आदेश देता है । इसकी पुष्टि उन दोनों के वार्तालाप से

113. किसनुली - शिवानी - पृ. 32.
114. - वही - पृ. 36.

किया जा सकता है - " सबेरे उठी तो छूटते ही महीपाल से कहा जानते हो तुम मुझसे भले ही सब कुछ छिपा लो लेकिन बच्चों से नही छिपा सकते वे तुम्हारी एक-एक हरकत पर निगाह रखते है शायद तुम इसको नही जानते। " उनकी जिन्दगी को भी नरक बनाने पर तुली है। मैंने कह दिया तुझे कल सुबह तक जाना होगा।"[115]

"कोई तो" :-

तुषार जब वर्तिका के बारे मे पूर्ण रूप से जानने के बाद शादी के प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए तरह-तरह के बहाने बनाने लगता है और पूरा दोष अपनी माँ पर थोप देता है। सत्य तो यह था कि वह खुद वर्तिका से रिश्ता तोड़ना चाहता था किन्तु अपने-आप वह न पाने के कारण अपनी माँ का सहारा लेता है। इस तरह की मनोरचना को तार्किकरण कहते है। तुषार के कथन के एक वाक्य को दिया जा सकता है - " मै उस बारे में अपनी माँ से बाते कर सकता हूँ।"[116]

तुषार पलायनवादी है। वह वर्तिका से छुटकारा पाने के लिए कई बहानों को बनाता है। जहाँ तक कि वह देश के बारे में भी बुरा भला कहता है। वह अगर चाहता तो वर्तिका से शादी कर सकता था किन्तु समाज की डर से वह भी अपने माँ के साथ देश को छोड़ने का निर्णय लेता है। वह कहता है कि - " दकियानुसी देश में ? पुराने मूल्यों से चिपटा हुआ जर्जर। लोग कभी जीना नही जान सकते।"[117]

---

115. परछाईयों के पीछे - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 148.
116. कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ. 77.
117. - वही - पृ. 146.

"सुबह के इंतजार तक" :-

मानू के माता-पिता गरीब होने के कारण उसकी शादी करना एक बड़ी समस्या बन चुकी थी । यह सोच कर कि उसके मामा-मामी लड़का ढूंढने में मदद करेंगे उसे शहर भेज देते है । किन्तु दुर्भाग्य वश मानू को अपनी इज्जत खोनी पड़ती है । इसके लिए बहुत हद तक उसकी मामी जिम्मेदार थी । वह अपनी गलती स्वीकार न कर तरह-तरह के इस प्रकार तर्क देती है - "मैंने तो सोचा था सत्तह अठाहर साल की है इतनी ना समझ नही होगी । आने जाने वालों से ठीक बर्ताव रखने को इसलिए कहा था कि रूपये-पैसे का जोर नही .... इसी तरह बात बन जाए ..... किसी का मन आ जाए ..... क्या जानती थी ऐसा कर बैठेगी ।" 118

मानू का मान लुट जाने के बाद उसकी मामी वापस घर भेज देती हैं । उसकी दशा को देखकर घर के सभी सदस्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है । बुलु देर से घर को लौटता था मां अपना गुस्सा और दुख अपने छोटे बेटे को पीट कर पूरा करती है तो पिता हमेशा खामोश कुछ न कुछ पढ़ने में व्यस्त रहते हैं ।"119 इस तरह मां का बेमतलब दोषहीन को मारने को प्रेक्षपण कहते है ।

---

118. - सुबह के इंतजार तक - सूर्यबाला - पृ. 146.

119. - वही - पृ. 28.

मानू का भाई बूलू स्वभाव से पलायनवादी है । वह घर की बिगडती स्थिति को देखकर घर आना ही बन्द कर देता है । इसे देखकर घर का प्रत्येक सदस्य चिन्तित होता है - "लगातार हफ्तों बुलु आया ही नही । उसके न आने से सन्नाटा और भी बढ़ गया था । मैं; माँ, पिताजी अपने-आप में और भी अकेले हो गए थे । पिताजी और ज्यादा किताबें-पत्रिकाएँ पढ़ने लगे थे । माँ कोनेवाली खाट पर और ज्यादा देर तक गुमसुम मुँह ढाँके पडी रहती विट्टु निहीद अबोध आखों से हमें देखा करता ।"[120]

मानू अपना सब कुछ खो देने के बाद अपने भाई के साथ घर छोड़कर भाग जाती है और दिन-रात मेहनत कर समाज में अपना पहचान बनाती है । वह अपने बारे में न सोचकर अपने भाई को डॉक्टर बनाने का लक्ष्य पूरा करती है । अपनी सुख सुविधा के बारे में थोडा भी नहीं सोचती । इसके कारण वह तरह-तरह की बीमारियों का शिकार होती है । उसके इस तरह अपनी चिन्ता न करना और अपने दुख को भूला कर अपने भाई की मदद करने को उदात्तीकरण कहते हैं - "तू तो जरा-जरा सी बात में घबरा जाता है । कैसा डॉक्टर है रे ... बेकार भावुकता में मत आ बुलु । थीरे अब रह ही कितने दिन-गए हैं । बिमारियाँ आती जाती रहती हैं । जॉन्च, टेस्ट एक्सरे यह सब बडे-बडे साधन-सम्मान लोगों की बाते हैं ।"[121]

बूलू घर की प्रत्येक वस्तु को देखकर अपनी दीदी को याद करता अर्थात वस्तुओं को देखकर दीदी से सहचर्य करता है । विशेष कर उनको जिन्हें

---

120. सुबह के इंतजार तक - सूर्यबाला - पृ. 27.
121. - वही - पृ. 87.

वह उपयोग करती । वह मन-ही-मन दुखी है कि उसकी दीदी की मृत्यु ठीक देखभाल न होने के कारण हुई है - " अपने उसी कोठरी में जगह-जगह रखी हर चीज को देखता, भटकता रहा । कोने में रखी पतली बास की चारपाई को जिस पर दीदी सोती थी । दीवार में बनी तीन खानों की अलमारी को उस पार कोने मे लगी छठी, सातवी, आठवी की इतिहास भूगोल की किताबों को दूसरे कोने में रखी अंगीठी चाय की प्यालियों और दो-तीन तश्तारियों को ।"[122]

जीवन को शान्ति से बिताने के लिए व्यक्ति को मुख्य रूप से अर्न्तद्वन्द्व और कुण्ठा से बचना चाहिये । इनसे बचने के लिए ही वह कई प्रकार की रक्षा युक्तियों का प्रयोग करता है ।

आठवें दशक के उपन्यासों के पात्रो द्वारा भी कई प्रकार की मनोरचनाओं को प्रयोग करते पाया जा सकता है । उदाहरण के लिए तार्किककरण दमन, प्रक्षेपन, सहचर्य, पलायनवाद, विस्थापन, उदात्तीकरण, शमन, वास्तविकता से पलायन, स्थानान्तर आदि मिलते है ।

122· सुबह के इंतजार तक - सूर्यबाला - पृ· 93·

5.2

अहंकार या अहंभाव :

मनुष्य जब समाज में कोई पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति कर लेता है तो उसे अपने व्यक्तित्व को महत्व की जानकारी हो जाती है। जिसके कारण यह स्वभाविक है की उसे अपने-आप से गर्व करने लगता है।

आठवें दशक के उपन्यासों में कई उपन्यासों के पात्र मिल जाते है जिनमें अहंकार की भावना देखी जाती है। जो उनके व्यवहार आदि से स्पष्ट होती है। नीचे दिये गये तालिका में सम्पूर्ण विवरण दिया गया है।

अहंकार या अहंभाव

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृ.सं.
आपका बंटी	शकुन, अजय	122,124,199
परत दर परत	कुमुद	13, 151
काली आंधी	जग्गीबाबू, मालती	33, 131
नावें	सोम, मालती	27,90
तीसरा आदमी	नरेश	36,88
अकेली आवाज	बंटू	34,65
प्रति ध्वनियाँ	नीलकान्त	7,75
किशमुली	काका	14,18
परछाइयों के पीछे	सुमित्रा	48

" आपका बंटी " :-

शकुन में गर्व या अहंकार था क्योंकि वह सोचती थी कि वह अपने पति अजय से ऊँचे पद मे थी । वह निरन्तर प्रगति करने मे लगी रहती है क्योंकि मन-ही-मन वह यह सोचती है कि किसी भी तरह वह अजय से आगे बढ़े और उसे छोटा दिखाये । पहले शकुन केवल विभागाध्यक्ष थी और बाद में प्रिंसिपल के पद तक पहुँच गयी ।

अजय मे भी कम अहंकार नही था । वह भी किसी के सामने झुकने में विश्वास नहीं करता था । तभी उसके और शकुन के बीच संघर्ष होता है अजय के इस स्वभाव से शकुन भी परिचित थी फिर भी वकील चाचा कहते है कि - " तुम जानती हो अजय बहुत इगोइस्ट भी है । और बहुत पसेसिव भी अपने-आपको पूरी तरह समाप्त करके ही तुम उसे पा सको तो पा सको । अपने को बचाये रखकर तो उसे खोना ही पड़ेगा। "[123]

शकुन को भी अपने अंह के बारे में ज्ञान था और कारण से भी वह अच्छी तरह परिचित थी । जैसे कि वह सोचती है कि - " अपने अहं या स्वाभिमान की या अपने अकेलेपन आपमान को इसके पास वह किसी को नही आने देना चाहती । "[124]

123· आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ· 122·

124· - वही - 124·

बंटी के व्यवहार को देखकर डाक्टर जोशी को लगता है बंटी के बिगडने का कारण शकुन और अजय है । वे इस बात को शकुन के सामने स्पष्ट भी करते है --" तुम लोग अपने को अपने इगों को ऊपर न रखकर बंटी को ऊपर रखो । "125

अत: कहा जा सकता है शकुन और अजय अपने-अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए एक-दूसरे को समझने की जगह अपने अहम या अहंकार को आगे रखते है । फलस्वरूप दोनो को अपने सम्बन्ध तोड़ना पड़ता है ।

" परत-दर-परत " :-

कुमुद और राजन के घर का वातावरण अच्छा नही होने के कारण स्वतन्त्र रूप से दोनो पर गहरा प्रभाव पड़ता है ।

कुमुद के माता-पिता तो साथ में रहना भी पसंद नही करते थे । जब कभी साथ मे रहने का मौका आता तो हमेशा लड़ते रहते थे । इसका मुख्य कारण यह था कि दोनो अपने आप को महान समझते थे तभी दोनो किसी के सुनने में विश्वास नही करते थे । कुमुद के विचार को यहाँ दिया जा सकता है - " इन दिनों उसे लगता रहा है कि पापा के पास पछताने के लिए उनका अतीत है । और मम्मी के पास गर्व करने के लिए उनका वर्तमान । पर उसके पास कहीं कुछ नहीं है । पछताने या गर्व करने के लिए स्वतंन्त्रता की आवश्यकता होती है ।" 126

125• आपका का बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ• 199•

126• परत-दर-परत - अन्नपूर्णा - पृ• 13•

कुमुद यह देखती है कि उसके माता-पिता कई बार अपने कर्तव्यों की पूर्ति करना चाहते है किन्तु कर नहीं पाते है, हमेशा उनका अहंम बीच में आ जाता है । जिससे उनके सम्बन्ध पर तो अधिक प्रभाव पड़ा ही है साथ ही कुमुद और उसके भाई का भी जीवन को सही ढंग से जीने के लिए दिशा नही मिलता है ।

राजन कभी नही चाहता है कि उसके अहम को चोट पहुँचे । जब उसके पिताजी कुछ कहते है तो वह मानता नही और झगड़ पड़ता है । कुमुद जब कुछ समझाने जाती है तो गुस्से में आ कर कहता है कि -- " लगातार उपदेश देती जा रही हो कहा तो है मैंने बहुत दिनों से सोया हुआ था मै नही रहना चाहता उस घर में इस तरह पूरे घर की जिम्मेदारी नही सम्भेलगी तो नौकरी छोड़ देना अब इसको कोई जरूरत नहीं है ।"127

घर के वातावरण का इतना अधिक प्रभाव राजन और कुमुद पर था कि दोनो विवाह के पश्चात मिल जुलकर रहना छोड़कर छोटी-मोटी बातों को लेकर लड़ते है । वे दोनो एक-दूसरे को पसंद करने के बाद ही शादी करते है किन्तु वही अहम इनमें भी है जो उनके माँ-बाप मे फलस्वरूप दोनो साथ रहते हुए भी किसी-न-किसी बिन्दु पर जुडे नही है ।

127· परत-दर-परत - अन्नापूर्णा - पृ· 151·

" काली आँधी " :-

जग्गी बाबू अपनी पत्नी मालती को प्रोत्साहित कर राजनीति में भाग लेने के लिए मजबूर करते है। जब वह दिन-प्रतिदिन प्रगति करने लगती है तो वह अपने-आप को दीन समझने लगते है। उनको हमेशा लगता है कि लगातार उनके अहम को चोट लग रहा है। विशेषकर एक बार जब उनको मंच पर बैठने को जगह नहीं मिलता है तब वें बहुत दुखित होते है। मालती, जग्गी बाबू की पत्नी होते हुए भी हर काम किसी और के सहारे करना पड़ता था। जिसके बारे में सोच कर भी जग्गी बाबू को बहुत दुख होता है। जैसे - " उसे दीजिए ! जग्गी बाबू ने जलती हुई आँखों से उन्हें देखते हुए कहा था और जो जरूरत हो, मुझे फोन कर दीजिएगा कहते हुए वे कमरे से चले गए थे।" [128]

मालती नही चाहती है कि उसका पति जग्गीबाबू किसी प्रकार का तमाशा करे जिससे उसके प्रगति मे बाधा पहुँचे तभी वह समझौता करना चाहती है। उसे अपने प्रगति पर गर्व है तभी वह अपने घर को त्यागने में भी बुरा नही मानती है। जहाँ कि मालती अपने पति जग्गी बाबू को झूठा आश्वासन दिलाने के लिए की वह भी अपने बंटो को परवाह करती है। तभी वह उपहार भी दूसरों के हाथों जग्गी बाबू तक पहुँचा देने के लिए करती है। जिसको खोलकर देखते ही जग्गी बाबू के अहम को काफी धक्का लगता है और क्रोधित हो जाते है और उसके पीछे चले चाल को समझ जाते है तथा कहते है कि -- " तुम मुझे पूरी तरह इस्तेमाल कर

128· काली आँधी " कमलेश्वर - पृ· 33·

लेना चाहती हो देखो मालती अब मेरी पूर्ति मेरे जीवन की मंजिल लिली के सफर में ही पूरी होगी मुझे अपनी पूर्णता लिली के जरिये ही मिलेगी और तुम्हारी मंजिल की यात्रा में न लिली को कोई जगह है न मेरी ।"[129]

इस तरह दोनों के अहम या अहंकार के कारण ही नाम मात्र के लिए पति-पत्नी है । पर जीवन के किसी भी मोड़ में दोनों एक साथ मिल कर रहना नहीं चाहते है । इसका मुख्य कारण यह है कि दोनों अपने-अपने अस्तित्व को अधिक महत्व देते है । इन दोनों के अहंकार के टकराव के बीच उनकी बेटी लिली पिसती है तभी उसे साथ मे न रखकर दूर हास्टल मे रखते है । इस तरह मूल्यों में परिवर्तन आ जाने के कारण और पति-पत्नी मे अहंकार होने ही सम्बन्ध अपना अर्थ खो देता है ।

" नावें " :-

मालती के घर की आर्थिक स्थितिअच्छी नहीं थी तभी वह " सोम " के बहकावे में आ जाती है और घर को त्याग देती है । उसे बाद में जान कर दुख होता है कि वह शादी शुदा आदमी है और उससे विवाह नहीं करना चाहता है बल्कि अपने पास रखैल के समान रखना चाहता है । इस बात को जानकर मालती बहुत दुखित होती है और स्वतन्त्रता के लिए छटपटाती है । इतना ही नही उसे लगता है अपना अस्तित्व को खो दे रही है । तब उसके अहम या अहंकार को बीच में

---

129. काली आँधी - कमलेश्वर - पृ. 181.

आते देखा जा सकता है और वह कहती है - "मै स्वतन्त्र जीवन बिताना चाहता हूँ इस तरह बाँधकर आपकी कृपा पर अवलाबित रहने की चाह अब मेरे मन में नही रही है। "130

रेखा निगम के कहने पर मालती विजयेश से शादी कर लेती है किन्तु उसे पति का सम्मान नही देती है। हमेशा उससे कटी-कटी रहती है। इसका कारण यह था कि वह अपने बेटी के सामने आदर्शवादी के रूप में रहना चाहती थी साथ ही उसमे अहंकार भी है क्योकि वह स्वतन्त्र होकर भी रह सकती है। तभी वह इस प्रकार सोचती है कि कैसे कहे कि वे दूसरी बातें भी वह बेटी को आँख से बचाकर करना चाहती है। अपने को एकदम पवित्र आदर्श स्वच्छन्द दिखाना चाहती है शायद इसी तरह वह उसकी जिन्दगी को एक राह दे सके। "131

इस तरह मालती शुरू से अंत तक अपने-आप से संघर्ष करती रहती है। जब कभी वह विजयेश के बारे में सोचती है तो उसका अहंकार बीच में आ जाता है।

"<u>तीसरा आदमी</u>" :-

नरेश की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी फिर भी उसकी शादी एक सुन्दर स्त्री से हो जाती है। उसकी कमाई कम होने के कारण वह अपने भाई सुमन्त के साथ ही रहता है। नरेश कई कारणों से अपनी इच्छा को पूर्ति नही कर पाता है। जिसके कारण ही उसमें कई प्रकार की

---

130. नावें - शशि प्रभा शास्त्री - पृ. 27.
131. - वही - पृ. 90.

मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न होती है। फलस्वरूप अपनी पत्नी चित्रा से हमेशा कटा-कटा रहता है और हर बात पर शंका करता है। नरेश में अहंकार था जो उसे कभी भी अपनी पत्नी से समझौता करने से रोकता है। वह छोटी-सी-छोटी विषय को भी महत्व देता था और सोचता की चित्रा उसे अपमानित कर रही है। जैसे - "चित्रा ने फिर चाय तैयार की थी और बेखबर सी सुमन्त का और अपना प्याला भरकर फिर पूछताछ में उलझ गई थी। उस दिन शायद पहली बार मैंने अपमानित महसूस किया था।"132

नरेश जब कभी सुमन्त और चित्रा को साथ देखता तो गुस्से मे आ जाता था पर वही एक बार सुमन्त को अकेले कमरे में बैठे देखा तो उसे अच्छा लगता है। नरेश में स्वयत की भावना और अहंकार ज्यादा था। वह कभी भी अपनी पत्नी की भावनाओं को समझने की कोशिश नहीं करता है।

नरेश मे कभी-कभी पशु प्रवृत्ति इतनी अधिक हो जाती है कि वह व्यवहार बिल्कुल अच्छा नही करता है। नरेश कई दिनों के बाद फिर से चित्रा से मिलता है तो उसके मन में ये भावनायें उठती है -- " मेरे भीतर का हिंस्त्र पशु जागा था प्रतिशोध की भावना उफनने लगी थी और मैंने चित्रा को पकड़ लिया था। मन में मात्र इतना ही था कि अब सिर्फ एक बार उसे अपनी पत्नी बनाकर ठुकराऊँ और हमेशा के लिए चला जाऊँ। शायद इससे मेरा आहत अहं तृप्त होता है।"133

---

132. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ. 36.

133. - वही - पृ. 88.

उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि नरेश अपनी पत्नी से दूर रहते हुए भी अहंकार कम नहीं हुआ और अपने अंह को तृप्ति के लिए पुन: आता भी है । अत: कहा जा सकता है कि नरेश इतने नोच ढंग से सोच सकता है ।

"अकेली आवाज" :-

बंटू इकलौता बेटा होने के कारण उसके माता-पिता उसे इतना अधिक प्यार करते है कि वह जिद्दी और बहुत नटकट बन जाता है । उसके अनुसार केवल जो भी चीज उसके पास है । वही उत्तम है और उसके माता-पितासेकोई अच्छा नहीं है । उसके घर में कोई उसको रोकने या टोकने वाला नही था जिसकी वजाय से उसमे अहम या अहंकार का उदय होता है । तभी जब उसे स्कूल मे भर्ती किया जाता है तो नये वातावरण में रहने के लिए उसे बहुत कष्ट होता है, रह-रहकर उसे अपने घर की याद आती है । स्कूल के अनुशासन को देखकर उससे बचने के लिए वह एक अच्छा उपाय ढूंढ निकालता है यह कि अगर वह शैतानी अधिक करेगा तो स्कूल के सभी लोग परेशान हो जायेंगे और उसे घर भेज देंगे ।

बंटू स्कूल के प्रत्येक चीज को अपने घर के चीजों से तुलना करता है और उसे लगता है कि उसका घर ही अच्छा है । उदाहरण के लिए यहाँ बंटू के डाक्टर के प्रति विचार को दिया जा सकता है - "बंटू ने तिरछी नजरों से डाक्टर को देखा। उसे लगा वह डाक्टर भी बेकार है । उसे अपने यहाँ आने वाले डाक्टरों की याद आ गई । वे कितनी तरह से, कितने मीठे ढंग से बंटू से बाते किया करते थे ।" 134

---

134. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 34.

बंटू मे अहंकार इतना अधिक था कि वह किसी को बात को मानने को तैयार ही नहीं था । जहाँ को उसे पता है कि उसका व्यवहार उसके स्कूल के साथियों के प्रति अच्छा नहीं है फिर भी वह अपने-आप मे परिवर्तन लाना नहीं चाहता है और जब प्रिन्सिपल के डाँटने पर दुख तो होता है पर माफी नही माँगता है क्योंकि उसके अनुसार माफी का अर्थ था किसी के सामने झुकाना या अपने-आप को छोटा कर देना । उसके लाख कोशिश करने पर भी अपने आँसू को रोक नहीं पाता है - बंटू झुक खड़ा रहा .... । प्रिन्सिपल ने उसको पीठ पर हाथ रखा । बोले ये आँसू व्यर्थ है, बंटू इसमे कहीं पश्चाताप को गंध नहीं है ये आँसू तुम्हारी कमजोरी के प्रतीक हैं । तुम्हारे मन मे एक अहम भरा हुआ है ।"135

बंटू मे अहंकार उसके उम्र की तुलना में बहुत था इसका दो कारण था एक तो घर मे सब तरह की सुविधाएँ दूसरा माता-पिता से बहुत लाड़-प्यार की प्राप्ति ।

"प्रतिध्वनियाँ" :-

नीलकान्त मेहता को अपनी प्रशंसा सुनने की आदत पड़ गयी थी । और कई बार अपनी प्रशंसा खुद भी किया करते थे । नीलकान्त मे अहंकार अधिक था क्योंकि उन्होंने सफलता मात्र देखा था । तभी अक्सर लोगों के द्वारा किये गये प्रशंसा के बारे में सोचते हुए भी पायें जाते है — बहुत

135· अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ· 65·

बड़ी आदमी हूँ न मैं । नीलकान्त मेहता शहर का तीसरा बार निर्वाचित, सम्मानित मेयर । मेरी षष्टि पूर्व समारोह के अवसर पर मुझे चांदी से तोलते अनेक कंठो ने कहा था धन और यश का ऐसा मणि-कंचन संयोग कहाँ मिलता है । जैसे श्री मेहता वरद पुत्र भी । सरस्वती पुत्र भी तो संयोग भी दुर्लभ है ।"[136]

नीलकान्त धनी होने के कारण औरतों के साथ अपनी इच्छानुसार व्यवहार करता था । उसे अपने दौलत और नाम पर अहंकार था तभी वह किसी को महत्व नही देता है जो उसके विचार से ही स्पष्ट होते है - " यदि मोती बाई, मोतीबाई से मुक्ता नही बन सकी तो नीलकान्त क्यों मिटे ? मेरा पौरूष अजेय रहा था मैंने नारी को अपने आलिंगन की दासता में बंधा नहीं था । न शुभा को, न अचला की, न जया की न मोतीबाई की हैं ।" [137]

नीलकान्त इस तरह अपने अहंकार के कारण ही कई गलत कदम उठता था जिनमें से एक तो अपनी बेटी के इच्छा के विरूद्ध विवाह कर दना था । जिसके लिए वह बाद मे मृत्यु तक पश्छाताप करते पाया जाता है ।

---

136. प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खंडेलवाल - पृ. 7.

137. - वही - पृ. 75.

"किसनुली" :-

काकी समाज सेवा के लिए प्रसिद्ध थी तो काका अपने पांडित्य के लिए।काका अपने ज्ञानी होने का गर्व था जो उनके शिष्या के द्वारा पता चलता है - " काकी है लोमडी और कक्का है शेर । काकी है कि अपने सुनती जाती पर उनका कोई नहीं सुनता था ।"138

कक्का अपने जात-पांत का बड़ा गर्व था, तभी किसनुली को अपने घर में देख कर बर्दाश्त नही कर पाते है और अपनी पत्नी पर चिल्लाती है कि -- " पगला गई है क्या ? एक तो उन्मादिनी उस पर न जात का पता न कुल गोत्र का ठिकाना ।"139

"परछाइयाँ के पीछे" :-

सुमित्रा मे भारतीय नारी के सभी गुण देखे जा सकते है । तभी वह महीपाल जैसे दुष्ट व्यक्ति के साथ निभाये चली जाती है । फिर भी कभी-कभी उसमें भी आक्रोश को देखा जा सकता है और अपने में छिपे अहंकार को दिखाने की कोशिश करती है । जिसके बारे में मात्र सोचती है - " क्यों लिखु मै और क्यों लिखती मै तो उसे हरगिज नहीं लिखूंगी न कुछ पूछूंगी चाहे कुछ भी हो जाए माँ के वह महीपाल के लिए गुर्राती तेज होती ।"140

---

138. किसनुली - शिवानी - पृ. 14.

139. - वही - पृ. 18.

140. परछाइयाँ के पीछे - शशि प्रभा शास्त्री - पृ. 48.

सुमित्रा में किसी प्रकार कोश्महो है वह भी सरकारी नौकरी मे है तभी अहम है। और अपने अस्तित्व को बचाये रखना चाहती है किन्तु कर नही पाती । और वैसे ही टडपती रहती है।

इस तरह आठवें दशक के उपन्यास में कई पात्रों मेअहंकार की भावना को देखा जा सकता है। पात्रों में अहंकार के होने के पीछे कोई-न-कोई कारण को देखा जा सकता है जैसे माता-पिता का अच्छे पद मे होना, घर में समृद्धि होना, खुद पात्र ही अच्छे पद में होना पांडित्य पर घमंड होना आदि। इन पात्रों के अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है अहंकार के कारण अन्य प्रकार की मानसिक कष्टों से व्यक्ति को झेलना पड़ता है न कि वह सन्तुष्ट रहता है। इस तरह कई पात्रों को अहंकार के कारण संघर्ष करते देखा गया है।

4.3
हीनता, उच्चता ग्रन्थि और उच्चता के प्रयास :-

हीनता और उच्चता ग्रन्थि एक दूसरे के प्रतिपूरक है। व्यक्ति अगर इन समस्याओं से जूझता हो और कारण को भी जानता हो तो आसानी से इन ग्रन्थियों से छुटकारा पा सकता है। अन्यथा यह ग्रन्थि व्यक्ति को अत्यन्त कमजोर बना देता है। आठवें दशक के उपन्यासों में इस मनोवैज्ञानिक तत्त्व का ग्रहण परिचय मात्र में किया गया है। अध्ययन के लिए चयन किये गये उपन्यासों में इन ग्रन्थियों से पीड़ित पात्रों का परिचय निम्न तालिका के आधार पर किया जा सकता है --

हीनता, उच्चता ग्रन्थि और उच्चता के प्रयास

उपन्यास	पात्र	हीनता, उच्चता और उच्चता की प्राप्ति का प्रयास	पृ.सं.
1	2	3	4
आपका बंटी	शकुन	उच्च ग्रन्थि	37
		हीन ग्रन्थि	137, 157
परत दर परत	राजन	हीन ग्रन्थि	43
अन्तराल	जीजा (शकुन का)	हीन ग्रन्थि	22
उस पार का	चोपडा, विभु	हीन ग्रन्थि	7, 41
अन्धेरा	चोपडा	उच्च ग्रन्थि	
काली आंधी	जगदीश वर्मा (जग्गी बाबू)	हीन ग्रन्थि	6,7,110
	मालती	उच्चता प्राप्ति के प्रयास	100
रिश्ते	डा.पाल	हीन ग्रन्थि	6
नावें	मालती केपिता	हीन ग्रन्थि	11
अनामदास का पोथा	जाबाला	हीन ग्रन्थि	323
	रैक्व	हीन ग्रन्थि	374
	रैक्व	उच्च या महत्ता की प्राप्ति का प्रयास	414

1	2	3	4
तीसरा आदमी	नरेश	हीन ग्रन्थि	23, 31
	नरेश	उच्चता प्राप्ति का प्रयास	40
अकेली आवाज	बंटू	हीन ग्रन्थि	38
	बंटू	उच्च ग्रन्थि	53, 105
उखड़े कदम	अशोक	हीन ग्रन्थि	111
	विश्वा	उच्चता प्राप्ति का प्रयास	172
टुण्डा लाट	सुनील	उच्च ग्रन्थि	47
	सुनील	हीन ग्रन्थि	207
सुबह के इंतजार तक	मानू के माता-पिता	हीन ग्रन्थि	15
	मानू	हीन ग्रन्थि	69

आपका बंटी :-

शकुन पढ़ी-लिखी, आर्थिक रूप से स्वतंत्र और समाज में एक प्रतिष्ठित पद पर भी है। जिसके कारण वह किसी के सामने झुकाने में विश्वास नहीं करती । इस मामले में वह अपने पति को भी नीचा देखती है जिससे उसके अहम को चोट पहुँचता और दोनों का सम्बन्ध टूट जाता है। शकुन उच्च भावना से ग्रस्त थी तभी वह साधारण जीवन

बोता नही पाती है जिसकी पुष्टि करने के लिए इन वाक्यों को दिया जा सकता है -- "सामनेवाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसे खुद ही पराजित कर दिया। सात वर्षों में विभागाध्यक्ष से प्रिन्सिपल हो जाने के पीछे भी कहीं अपने को बढ़ाने से ज्यादा अजय को गिराने की आकांक्षा ही थी।" [141]

बंटी मे हीन भावना आरंभ मे देखी नही जाती है। वह सिर्फ अहम से पूर्ण है क्योंकि उसको मम्मी का समाज में विशिष्ट स्थान है इसके अलावा उसके बहुत खिलौने है। जब से डॉ.जोशी के यहाँ अपनी मम्मी के साथ रहने लगता है तब से उसके मन में हीन भावना का उद्भव होता है। अपने वस्तुओं से वह तुलना करने लगता है। और उसे पाता है कि उसके पास कई चीजें नहीं है जो डाक्टर के बच्चों के पास है। बंटी का विचार करने का ढंग इस प्रकार था - "एकाएक जोत और अमि के नये-नये कपड़ों के मुकाबले में उसे अपनी हल्की सी मैली हो आई स्कूल की यूनीफार्म बड़ी फीकी-फीकी और बेतुकी सी लगी। लगा जैसे वह इन सबके बीच का नही इस सबसे अलग है।"

नही चाहिए हमें ऐसी अलमारी। घर का सारा आलतू-फालतू सामान मेरे लिए। अपने लिए वैसा बढ़िया लगता वैसी बढ़िया अलमारी"।[142]

बंटी न केवल कपडे या अलमारी से तुलना करता है बल्कि उसका दुख और भी बढ़ जाता है। तथा हीन भाव से पीड़ित होता है जब उसकी मम्मी और घर के अन्य सदस्य गाड़ी को अपनी इच्छानुसार इस्तेमाल

---

141. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ. 37.
142. - वही - पृ. 137.

करते है । किन्तु उसे होगा अपने स्कूल तक के लिए इंतजार करना पड़ता है -- " अपना-अपना बस्ता लिए कार मे बैठे हुए अमि और जोत सर्र से निकल जाते है । सर्र से घूम जाते है । ड्राइवर, जाओ डॉक्टर साहब को ले आओ ड्राइवर, जाओ कालेज से मेम साहब को ले आओ । बस फालतू बंटो बस के लिए खड़ा है ।"[143]

उपर्युक्त उदाहरणों से कहा जा सकता है कि बंटो छोटी-सी-छोटी चीजों पर ध्यान देता है और निरन्तर हीन भाव से पीड़ित रहता है ।

"परत-दर-परत" :-

राजन न केवल उपेक्षित बल्कि अपराध और हीन ग्रन्थि से पीड़ित व्यक्ति है इसका प्रमुख कारण यह है कि वह अपने माता- पिता के बीच बिल्कुल बाटाँ हुआ है । राजन मे किसी प्रकार की कमी नहीं है। उसके माता-पिता मे एक दूसरे के लिए प्यार नहोने से । इसका गहरा असर राजन पर पड़ता है । फलस्वरूप वह अपने-आप को कमजोर बेकार और हीन भाव से पीड़ित पाता है । जो इन शब्दों से स्पष्ट होता है -"उसे बहुत गुस्सा आया करता है इस घोषणा का सीधा साफ अर्थ होता है उसे अपने से अलग कर देना विरोधी बता दिया जाना एकदम अलग कर देना, विरोधी बता दिया जाना तुम माँ-बेटा, तुम बाप बेटा उसे दो ऐसी गालियाँ लगा करती है जो सिर्फ उसी के लिए गढ़ी गई है ।"[144]

143· आपका बंटो - मन्नू भण्डारी - पृ· 157·

144· परत-दर-परत - अन्नपूर्णा - पृ· 43·

"अन्तराल" : : -

श्यामा के जीजा जी हीन ग्रन्थि से पीड़ित रहते थे। जिसका स्पष्ट ज्ञान उनके बातचीत करने के तरीके मे होता है विशेष रूप से जब कभी वे अपने से कम उम्र वाले व्यक्ति को आगे बढ़ते देखते है तो सहन नहीं कर पाते है। उदाहरण के लिए मि० कुमार जो प्रोफेसर और अध्यक्ष के पद में उनके बारे में कुछ इस प्रकार बोलते है - "प्रोफेसर कुमार, अध्यक्ष, दर्शन विभाग, नित्यानंद कालेज सुनने में लगता है। कोई अच्छा-खासा बुजुर्ग आदमी होगा। लेकिन सिफारिश का जमाना है। देखलो कैसे-कैसे लोग हैड आँफ द डिपार्टमेंट लगा दिये जाते हैं। तुम्हारी बदकिस्मत हैं कि तुम्हें किसी तजुरबेकार आदमी से पढ़ने का मौका नहीं मिलेगा। इस देहाती विद्वान से ही काम चलाना होगा।"145

"उस पार का अंधेरा" :-

चोपड़ा पूरी तरह से आधुनिकता से प्रभावित होने के कारण उसके जीने का ढंग बड़ा आजिब है वह किसी से बंधने में विश्वास नही करता एक कायर और पलायनवादी व्यक्ति है किन्तु एक ऐसा समय आता है जब वह अपने अपराध को पहचान कर हीन ग्रन्थि से पीड़ित होता है। फिर भी अपने आदतों से छुटकारा पा नहीं सकता। चोपड़ा के विचार की पुष्टि इन वाक्यों में मिल जाती है - "शुरू मे तो सारा दोष मैं अपनी गलत शुरूआत और साधनहीनता को ही

145· अन्तराल - मोहन राकेश - पृ· 22·

देता रहा। दरिद्रता का उतना दोष नहीं होता जितना हीन भावना से ग्रस्त होने का। "146

मात्र चोपड़ा न होकर विभु भी एक ऐसी नारी पात्र है जो हीन ग्रन्थि से पीड़ित है। इसका प्रमुख कारण यह है कि लगातार एक ही तरह के जीवन से ऊब चुकी थी। वह चाहती थी कि अन्य विवाहित नारियों की तरह ही जीयें किन्तु चोपड़ा निरन्तर विरोध किया करता था। फलस्वरूप विभु को लगने लगा था कि उसमें ही किसी प्रकार की कमी है और हीन भावना से पीड़ित रहने लगी जिसका ज्ञात उसके ही विचारों से होता है - " विभू के आयु एकदम कई वर्ष अधिक जान पड़ने लगी थी। तभी तो लगता इतनी भद्दी औरत को कोई बर्दाश्त कैसे कर सकता है। उतरा हुआ उसका चेहरा पीला-पीला जान पड़ने लगा था। "147

विभु मे उबन इतनी अधिक बढ़ जाती है कि वह घर छोड़कर चली जाती है। इसका कारण चोपड़ा की मनमानी मे जीने की आदत और अपने-आप को अन्य लोगों से उच्च मानना। इस बात को चोपड़ा का दोस्त इन वाक्यों मे स्पष्ट करता है - " इतने वर्ष उसने धैर्य से सहन किया। तुम हमेशा अवहेलना करते रहे और वह सहती रही शराब पीकर तुम बकते रहे और वह सुनती रही। मिल-मिलेवार जीवन का अभाव और सुझाया। "148

---

146. उस पार का अंधेरा - सुदर्शन नारंग - पृ. 7.

147. - वही - पृ. 41.

148. - वही - पृ. 82.

" काली आँधी " :-

इस उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र "जग्गी बाबू " हीन ग्रन्थि का शिकार दिखाई देता है। वह स्वयं इच्छानुसार अपने पत्नी को प्रोत्साहित कर राजनीति में आगे बढ़ने में मदद करता है। जैसे ही वह दिन-प्रतिदिन प्रगति करने लगती है तो अपने-आप को हीन भाव से पीड़ित हो उठता है। इसकी पुष्टि उनके ही कथन से किया जा सकता है -- "यार तुम्हारी यह राजनीति बड़ी घटिया चीज है तुम लोगों ने इसे निहायत बेहूदा बना दिया है।" 149 एक और उदाहरण इस सन्दर्भ में दिया जा सकता है - "जग्गी बाबू कारों की कतार में सबसे पीछे वाली कार में थे और जब मंच पर चढ़ने लगे थे तो एक वालिंटियर ने उन्हें रोक लिया था। वे अचकचाकर बोले अरे भाई मैं मालती जी का ....। वालिंटियर को डांटकर मैं उन्हें मंच पर ले आया था। कुर्सियाँ नहीं थी तो एक मोढ़े का इंतजाम करके उन्हें बैठा दिया था पर बेहद बुझे हुए थे।" 150

जग्गी बाबू अत्याधिक स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व को तनिक भी चोट लगती तो सहन नहीं कर पाते थे और हीन भाव से तड़प उठते थे। विशेषकर तब जब उनकी पत्नी मालती बेटी लिली के लिए खिलौने खाने का समान भेजी है। यह दिखाने के लिए कि उसको भी अपनी बेटी के प्रति प्यार है और दूसरी ओर अपने पति से यह कहना चाहती है कि शान्त रहो निर्वाचन के समय कोई आवाज न

---

149. काली आंधी - कमलेश्वर - पृ. 6.

150. - वही - पृ. 7.

उठाओं । जिससे जनता को सच्चाई का पता चल जायेगा । तब वे क्रोधित होकर अपने हीन भाव को छिपाने की कोशिश में इस प्रकार चिल्ला उठते हैं - " क्यों ! हर बात उनकी सुविधा, उनकी जरूरत और उनके वक्त का इंतजार क्यों करती रहे ? किसलिए ? अब हर बात मालती की जरूरत और वक्त के मुताबिक होगी ? जग्गी बाबू ने ओंठ चबाते हुए कहा था ।"[151]

मालती अपने पति के द्वारा दिये गये प्रोत्साहन से ही राज - नीति में कदम रखती है किन्तु प्रगति के साथ अपने घर को पूर्ण रूप से भूला देती है और अब उसके सामने केवल एक मात्र लक्ष्य रह जाता है वह यह कि उसे निरन्तर आगे बढ़ना है । वह जो कुछ भी थी या है उससे वह सन्तुष्ट न होकर मात्र और उच्चतम प्राप्ति के प्रयास में लगी रहती है । जिसके लिए वह झूठ भी बोलती है । सामान्य तौर पर इस तरह की मानसिकता अधिकांश व्यक्तियों में पायी जाती है उदाहरण के लिए - " मालती जी ने बहुत स्निग्धता से जग्गी बाबू को दुल्हे की तरह उठाकर खड़ा कर दिया था और मालती जी ने कहा था - जी यही है मेरे पति, पति परमेश्वर, मेरे दोस्त, मेरे प्रेमी और मेरे यार । जो कुछ भी है यही है और ये मेरे साथ आपकी अदालत में मौजूद है । तालियों की गड़गड़ाहट से सारा मैदान और मंच बड़ी देर तक गूंजता रहा था । जनता ने मालती जी की साफ बयान और साहस के सामने अपना माथा झुका दिया था और वह अनथके तालियाँ बजती जा रही थी ।"[152]

151· काली आंधी - कमलेश्वर - पृ· 110·

152· - वही - पृ· 100·

"रिश्ते" :-

डा॰पाल हमेशा अपने किये अपराध से पीडित रहते है साथ ही हीन भाव से ग्रस्त थी । उदाहरण के लिए जब उनके मित्र उमी की महानता के बारे में बताते है तो उनको भावनाओं में परिवर्तन को देखा जा सकता है वे अपने को अपमानित और हीन मानने लगते है । जो इन वाक्यों से स्पष्ट होता है - "उसकी बात और है भीष्म उसने तो सारे पैमाने औंधे कर दिये । उसकी महानता की याद इस तरह मत दिलाओं नही तो मै इतना बौना हो जाऊँगा कि ... ।"153

"नावें" :-

मालती के पिता मे हीन भावना को देखा जा सकता है जो सामान्यत: साधारण है । रिटायर होने के पश्चात व्यक्ति को लगने लगता है कि वह अब किसी काम का नहीं रह गया है और वे अपने आप से कटे रहने लगते है । मालती के ही शब्दों से इसका पता चलता और उसके घर की परिस्थिति का भी साफ अन्दाजा लगता है - "वह और क्या करें उसके घरवालों में बड़ो तो बड़ी थी न और पिता बड़े होते हुए भी सबसे छोटे रिटायर हो जाने के बाद वे खुद को सबसे छोटा महसूस करने लगे थे । " 154

---

153. रिश्ते - सुदर्शन चोपड़ा - पृ॰ 6.

154. नावें - शशिप्रभा शास्त्री - पृ॰ 11.

" अनामदास का पोथा " :-

रैक्व और जाबाला दोनों में हीन भावना देखी जा सकती है। जाबाला जब देखती है कि रैक्व इतना भोला है कि उसको किसी प्रकार का सांसारिक ज्ञान नहीं है। तब वह रैक्व की बातों पर हँसने लगती है इस पर रैक्व बुरा मान जाता है तो वह कहती है - " नहीं ऋषि कुमार तुम स्वर्गीय ज्योति है। मेरी हँसी तो अधम जन की कलुषित चित्त का विनोद है। हाय, तुम्हारे जैसा पवित्र मन कहाँ मिलता है।"155

उक्त वाक्यों के द्वारा कहा जा सकता है कि शुभा रैक्व की प्रशंसा करती हुई कह रही है कि वह तो उससे हीन है और रैक्व जैसा महान कोई नहीं है। ऐसा कह कर शुभा अपने आप को छोटा अर्थात् हीन भावना से ग्रस्त हो रही है। दूसरों की तुलना में अपने-आप को छोटा मानना यह एक ढंग जिससे यह पता चलता है कि व्यक्ति हीन ग्रन्थि से पीड़ित है। जैसे कि यहाँ पर जाबाला ।

रैक्व बुद्धिमान तो जरूर था परन्तु सांसारिक ज्ञान कम था। तभी शुभा को उससे बुद्धिमान और अपना गुरू मानता है। वह कोशिश करता है कि ज्ञान में वह भी शुभा से बराबरी करें। माँ गुरू तुम हो, शुभा के सामने मै अपने को अल्पज्ञ और हीन समझने लगा था। वह मेरी गुरू नहीं हो सकती। मगर ज्ञानी वह अवश्य है माँ। उसकी सब बातें ठीक थी।"156

---

155. अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ. 323.
156. - वही - पृ. 379.

रैक्व अपनी दीदी ऋतुका से शुभा के बारे में कहता है तो ऋतुका, शुभा से उन सभी बातों को बता देती है, वह कहती है कि -- " बड़े उत्साह से गये । जाते समय मुझसे कह गये कि " दीदी, पढ़ लिखकर समझदार बनकर लौटूंगा शुभा के समान समझदार बनकर लौटूंगा । वह बहुत जानती है । उसे धर्म और अधर्म का पूरा ज्ञान है । मुझे तो अल्पज्ञ समझती है । पढ़कर लौटूंगा तो वह देखेगी कि मै भी उसी के समान समझदार हो गया हूँ । हो जाऊँगा न दीदी ? " [157] एडलर की भाषा में इसको उच्चता या महत्ता की प्राप्ति का प्रयास कहते है । रैक्व ज्ञानी होते हुए भी शुभा से तुलना कर और ज्ञान की प्राप्ति करना चाहता है । ताकि वह शुभा के बराबर हो जाये । दूसरे शब्दों में अपने बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठने की कोशिश कर रहा है ।

" तीसरा आदमी " :-

नरेश की कमाई बहुत कम थी जिससे उसकी सुन्दर पत्नी चित्रा को वह सब दे नहीं पाता है जो असल में देना चाहता था । जिससे उसके मन में हमेशा अपनी कमियों को महसूस करता रहता है । जिसको व्यक्त नहीं कर पाता । इसका परिणाम था कि वह निरन्तर अपनी पत्नी पर शंक करता था । जो उसके मन में डर का रूप ले चुका कि कहीं चित्रा उसे छोड़कर चली जायेगी । जब कभी नरेश चित्रा की भावनाओं को देखता है तो उसको हीन भावना बढ़ जाती थी । उदाहरण के लिए यहाँ दो सन्दर्भ दिये जा सकते है -- " पहले दिन जब मै चित्रा को लाया

---

157. अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ. 414.

तो कमरा और जगह देखकर वह बहुत उदास हो गई थी । उसका मुँह ही उतर आया था ।"[158] तभी मुझे लगता कि सचमुच मैंने चित्रा को यहाँ लाकर एक पिंजड़े में बन्द कर दिया है ।"[159] दूसरे सन्दर्भ से तो यह स्पष्ट हो जाता है कि नरेश की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण ही उसमें हीन भावना का उत्पन्न होता है ।

नरेश में हीन भावना तो थी ही किन्तु उसने निरन्तर उच्चता के प्राप्ति की कोशिश नही छोडी थी । वह हमेशा चाहता था कि लोग उसे पहचाने वह भी कुछ बने । शादी के पूर्व जब भी ऐसा कोई क्षण आता तो परिवार बड़ा होने के कारण उसकी परवाह कोई नहीं करता था । विवाह उपरान्त अपनी पत्नी से कई चीजों की उपेक्षा करने लगा उसका निरन्तर प्रयास रहा कि किसी भी तरह आर्थिक स्थिति को वह सुधार ले । अर्थात् नरेश लगातार आगे बढ़ने या एडलर की भाषा में उच्चतम प्राप्ति के प्रयास में लगा रहा किन्तु उसे वह सब प्राप्त नहीं हो सका जो वह चाहता था । जैसे की वह सोचता है कि - " जिन्दगी में बहुत सारे ऐसे क्षण आये जब मैंने गर्व से भरकर चिंता की आंखों से अपनी सार्थकता खोजनी चाही पर ऐसे क्षणों में मैंने उसे बहुत संयत पाया । परिवार इतने छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गए है कि आदमी की खुशियों का विस्तार सिमट आया है .... । और इसलिए अब सुखों और दुखों की सह-अनुभूति के बीच दस या बीस गुण गहराई चाहिए ।"[160]

---

158. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ. 23.
159. - वही - पृ. 31.
160. - वही - पृ. 40.

" अकेली आवाज " :-

बंटू एक ऐसा बालक है जिसको कोई कायदा नही सिखाया गया है । वह हमेशा से अपनी ही मनमानी से रहता चला आ रहा है । जिससे वह कभी यह नही चाहता है कि उसको कोई अनुशासन से रहना सीखाये । जब बंटू को शैतानी बढ़ती गयी तब उसे स्कूल मे भर्ती कर दिया गया । स्कूल और हास्टल के अनुशासन को वह सह नही पाया क्योंकि उसमें बहुत सारी कमियाँ थी किन्तु जब उसके ही बराबर उम्र वाले अनुशासित थे तो उन्हें देखकर बंटू के मन में ईर्ष्या और हीन भाव से ग्रस्त हो गया । इस भावना को छिपाने के लिए ही वह विद्रो - हात्मक व्यवहार करता है -- " बंटू को लगा ये सब उसके दुश्मन है । जान बूझकर उन्होंने उसे यहाँ भेजा है ताकि वह और परेशान हो । मै ऐसे स्कूल में नही रहूँगा और अनुशासन तोड़ता रहूँगा । एक दिन ऐसा अवश्य आएगा कि विद्यालय के सारे लोग मुझसे तंग आ जाऐंगे ।"।6।

बंटू मे हीन भावना होने के कारण ही उसे छिपाने के लिए ही अपने-आप को अन्य विद्यार्थी से अलग रखता है । वह अपने -आप को दूसरों से महान और अच्छा मानता है इसका प्रमुख कारण यह है कि उसके घर में अत्यधिक प्यार मिलता । यही कारण है कि मनोज से दोस्ती करना चाहकर भी नही कर पाता क्योंकि उसके अनुसार किसी से दोस्ती करना भी अपने-आप को झुकाना है । इस भावना को एडलर के अनुसार उच्च ग्रन्थि कहते है । यहाँ दो उदाहरण दिया जा सकता है - " नही मेरा कोई दोस्त नहीं है ... । केवल छोटे

।6।: अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ० 38.

लोग माफी माँगते है । उसने अपने-आपको बहलाया मनोज से मै वैसे ही बड़ा हो गया ।"[162]

" उसने कहा - " मै एक भी लड़की से क्षमा नहीं माँग सकता मैंने आज तक किसी से क्षमा नहीं माँगी । फिर लड़कियों से मै क्षमा मांगू ... हुन्ह । " बंटू अपनी जगह पर बैठ गया ।"[163]

"उखड़े कदम " :-

अशोक एक बहादुर अफसर था किन्तु घर और पत्नी के प्रति उदासीनता और पद के प्रति कर्तव्य निष्ठ होने के कारण ही उसकी पत्नी सुनीता किसी और व्यक्ति को अपना देती है । जिससे अशोक मानसिक सन्तुलन खो बैठता है और उस स्थान से बदली करा लेता है । कुछ समय पश्चात् जब युद्ध छिड़ जाती है और वह उसमे भाग ले नही पाता है तब अपने आप को बहुत कमजोर और हीन भाव से पीड़ित होता है -- " मै एक तोपखाने का अफसर जिसे लड़ाई के मैदान में दुश्मन पर गोलाबारी करते हुए इस समय अपनी अग्रिम आब्जर्वेशन पोस्ट पर होना चाहिए था, आज देश के भीतरी भाग में यह देखने के लिए जाने की तैयारी कर रहा था कि कोई फैक्टरियों में सेंध तो नहीं लगा रहा । पहली विडम्बना विवाहित होते हुए भी मै पत्नी विहीन था । दूसरी ग र होते हुए आसाम राइफल जैसी अर्ध सैनिक कोर्स में काम कर रहा हूं ।"[164]

162· अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ· 53·

163· - वही - पृ· 105·

164· उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ· 111·

विश्वा पहले तो सुनीता की ओर बहुत ध्यान देता है किन्तु बाद में वह अपने पद नाम आदि के पीछे घूमने लगता है। जहाँ तक की इस मामले में वह सुनीता और मजदूरों को भी इस्तेमाल करता है। उसका अब एक ही लक्ष्य रह जाता है कि किसी भी तरह अंग्रेजों को चाय के बगानों से निकल कर उच्च पद वह हासिल कर ले। इस प्रकार की भावना को एडलर के अनुसार उच्चतम प्राप्ति का प्रयास कहते है। विश्वा के विचारों के अंश - "मै कम्पनी का जनरल मैनेजर और भारत में उसका एक मात्र प्रतिनिधि हो जाऊँगा यह विचार मात्र ही पुलक भरा था। साथ मुझे कम्पनी और मजदूर दोनो का विश्वास प्राप्त है यह भी कम गौरव की बात नहीं थी।" 165

अशोक भी विश्वा को तरह ही निरन्तर पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति करने में लगा हुआ था। तभी राष्ट्रीय सम्मान की प्राप्ति कर अपने लक्ष्य तक पहुँचता है किन्तु वह सन्तुष्ट नहीं है। क्योंकि वह जीवन में और प्रगति करते करना चाहता है। इस तरह इन दोनो के जीवन में एक लक्ष्य की पूर्ति और तुरन्त दूसरे लक्ष्य को पूर्ति के लिए संघर्ष करते देखा जा सकता है।

"टुण्डा लाट" :-

सुनील आर्मी मे शॉर्ट टर्म सर्विस के पश्चात अपनी इच्छा की पूर्ति करने के लिए संगीत के स्कूल में भर्ती होता है। वहाँ वह अन्य लोगों से अपना अस्तित्व अलग बनाये रखता है। उसका व्यवहार और

---

165. उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ. 172.

पहनावें से यह स्पष्ट होता है कि अन्य लोगों से अपने आप को उच्च मानता है । रोमिला इस बात पर अधिक गौर देती है और सुनील से इस प्रकार कहती भी है -- "केयर तो कोई भी नहीं करता । लेकिन तुम स्कूल को अपने मेस या यूनिट की तरह क्यों ट्रीट करते हो ? अगर तुम सूट से छुटकारा पा सको तो जिन्दगी आसान हो जायेगी । लॉन मे तुम बैठ नही सकते क्योंकि सूट की क्रीस खराब हो जाती है अगर तुमने लॉन में बैठना सीखा होता तो आज इस दिक्कत से बच जाते । "166

युद्ध में सुनील का हाथ कट जाता है । उसके साथ ही सारी आशाएँ भी बिखर जाती है । वह एक स्वाभिमानी व्यक्ति था किन्तु वह अपने आप को कमजोर और हीन भाव से पीड़ित होता है । जिसे वह व्यक्त करने से बचाता है । उदाहरण के लिए - सुनील ने बाये हाथ से अपनी अटैची उठायी और सीढ़ियों की ओर बढ़ गया । यह देखकर उँची आवाज में मना करते हुए पिता बोले ... । नही बाबूजी, मै खुद ले जाउँगा । कहकर सुनील ने अटैची संभाला और सीढ़ियाँ चढ़ने लगा ।" 167

"सुबह के इंतजार तक" :-

मानू के माता-पिता झूठी शान में जीना पंसद करते है । वे छोटी नौकरी करना छोड़कर अपने बेटे को नौकरी करने भेजते । घर की स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जाती है जिसे छिपाने के लिए ही

---

166. ठण्डा लाट - जगदीश चन्द्र - पृ. 47.
167. - वही - पृ. 207.

अपने नाते-रिश्तों से वे मिलने से डरते है । इसका मुख्य कारण हीन भावना का होना था । जो मानू के विचारों से ही व्यक्त होता है -- "मां शायद जान बूझकर इधर अपने नाते-रिश्तों से कटती जा रही थी क्योंकि जीवन में जो कुछ शेष रह गया था उसे अकेले चुपचाप ही झेलते चले जाने का रास्ता बचा रहा था ।"[168]

बचपन से ही हर प्रकार की कमी होने के कारण मानू का व्यक्तित्व पूर्ण रूप से विकास नहीं हुआ था यही कारण है कि वह हमेशा हीन भावना से पीडित रहती है । कड़ी परिश्रम के पश्चात् जब उसे स्कूल में टिचर की नौकरी मिलती है तो वह अन्य टिचरों के साथ खुलकर व्यवहार कर नहीं पाती है क्योंकि उसे हमेशा लगता है कि उसमें कहीं-न-कहीं कमी है । जो उसके व्यवहार से स्पष्ट होता है - "कुछ देर यों ही खड़े-खड़े हाथ में थामी किताब के पन्ने उलटती रही पर ऐसे कब तक खड़ी रह सकती थी । चुपचाप अंदर घुसी और बीचोंबीच पड़ी लंबी सी मेज के पास कोने की पड़ी चेयर पर बैठ गई थी सबसे अलग-अलग अस्पृश्य-सी दीवार से पीठ टिका हाजिरी का चौकुा रजिस्टर आँखों पर कर दिया ।"[169]

हीनता और उच्चता ग्रन्थि सभी प्रकार के व्यक्तियों में पायी जाती है । आठवें दशक के उपन्यासों में भी कई पात्र मिल जाते है । जो इन ग्रन्थियों से पीडित है । ये ग्रन्थियाँ किसी कारण वश ही व्यक्ति में उपज होती है । निम्नलिखित कारण अध्ययन के पश्चात

---

168. सुबह के इंतजार तक - सूर्यबाला - पृ. 15,
169. - वही - पृ. 69.

प्राप्त हुआ है। पद और प्रतिष्ठा होने से व्यक्ति दूसरों को नीचा दिखा कर अपने-आप को उच्चा मानता है। अपने पास दूसरों के समान सुविधायें न होने और अन्य व्यक्ति के समान ऊँच पद में न पहुँचने के कारण हीन भावना से पीडित पात्र घर के सदस्यों से प्यार और आदार न मिलने से और अपराध को समझकर हीन भाव से पीडित पात्र मिलते है। इस तरह कई कारणों की वजह से व्यक्ति को इन ग्रन्थियों से पीडित पाया जाता है।

4.4

युंग के व्यक्तित्व प्रकार-अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी :-

आठवें दशक के कुछ उपन्यासों के पात्रों का अध्ययन युंग द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व प्रकार अर्थात् अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी के द्वारा किया जा सकता है। निम्न लिखित तालिका में सन्दर्भों के विवरण दिया जा रहा है।

अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी

उपन्यासों के नाम	पात्र	अर्न्तमुखी/बहिर्मुखी	पृ.सं.
1	2	3	4
आपका बंटी	बंटी	अर्न्तमुखी	202
काली आंधी	मालती	बहिर्मुखी	7
उसके हिस्से की धूप	मनीषा	बहिर्मुखी	148

1	2	3	4
तीसरा आदमी	नरेश	अन्तर्मुखी	5
अकेली आवाज	बंटू	बहिर्मुखी	-
उखड़े कदम	विश्वा	बहिर्मुखी	-
दूसरा सूत्र	आनन्द मोहन	अन्तर्मुखी	-
कोई तो	वर्तिका	बहिर्मुखी	-
सुबह के इंतजार तक	बलबीर	बहिर्मुखी	-

"आपका बंटी" :-

युंग के व्यक्तित्व प्रकार सिद्धान्त के अनुसार बंटी का व्यक्तित्व अन्तर्मुखी के अन्तर्गत रखा जा सकता है। वह किसी से खुल कर दोस्ती नहीं कर सकता है। वह केवल गिने चुने लोगों के साथ रह पाता है। जैसे फूफी, चाचा, टीटू जोत और ममी। इन सब में उसे सबसे अधिक समय उसकी ममी के साथ बीताना अच्छा लगता है। वही दूसरों के साथ वह बात भी नहीं करता और मिलने से भी दूर भागता है।

बंटी मे इस गुण का विकास उसकी मम्मी का डॉ॰जोशी से विवाह होना और इन दोनों का डॉ॰जोशी के घर में रहने लग जाने से होता है। इस बात को शकुन खुद महसूस करती भी है - "नए लोगों के बीच यह

बहुत सहम जाता है । यों भी इस उम्र में ही बहुत इन्ट्रोवर्ट होता जा रहा है ।" 170

"काली आँधी" :-

मालती स्वभाव में बहिर्मुखी थी । उसके पति जग्गी बाबू ने अपनी पत्नी के बारे में जान कर उसे प्रोत्साहन दिया और राजनीति में कदम रखवाया सही मार्गदर्शन मिलने और मालती में साहस होने के कारण निरन्तर प्रगति करती चली गई । कालान्तर में अपने पति की सहायता के बिना ही बढ़ती चली गयी जिसके कारण मालती को घर भी त्यागना पड़ता है । मालती के बारे में दूसरों का विचार यहाँ उदाहरण के रूप में दिया जा सकता है -- "मालती जी एक धमाके के साथ राजनीति मे आई । सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती हुई । जहाँ से उन्होंने शुरू किया, वहाँ से पीछे मुडकर देखने की जरूरत उन्हें नहीं पडी । "171

" उसके हिस्से की धूप ' :-

मनीषा जितेन से विवाह कर तभी किसी प्रकार की कमी को महसूस नहीं करती है । बचपन से पाल रखी इच्छा की पूर्ति के लिए मधुकर की ओर आकर्षित होती है । मनीषा स्वभाव की बहिर्मुखी है अत: साहसी भी है तभी अपनी इच्छा पूर्ति करने के लिए वो जितेन और समाज

170· आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ· 202·

171· काली आंधी - कमलेश्वर - पृ· 7·

से डरे बिना मधुकर को अपनी इच्छा प्रकट करती है । मनीषा अपनी इच्छा की पूर्ति के मार्ग की खोज तो निकालती है किन्तु उसके लक्ष्य उसे ही स्पष्ट नहीं है । इसलिए अतिशीघ्र मधुकर से भी ऊब जाती है और फिर जितेन की ओर आकर्षित होती है । किन्तु मधुकर, मनीषा को स्वभाव परिचित होने के कारण मुक्त करने से इनकार कर देता है । मनीषा अगर साधारण नारी होती तो इस तरह बिना किसी कारण आसानी से अपने पति को त्याग नहीं पाती थी । इस तरह करने से उसका बहिर्मुखी स्वभाव का होना कुछ हद तक मदद किया । उसके एक कथन को यहाँ दिया जा सकता है जो वह जितेन से बिना किसी डर के कहती है - "मुझे लगता है वह मुझे चाहने लगा है बहुत प्रभावित है मनीषा ने कहा और रोककर प्रतीक्षा करने लगी ।" 172

"तीसरा आदमी" :-

नरेश की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी । आमदनी कम और जरूरतें अधिक थे । पत्नी के सुन्दर होने पर उसके मन में कई प्रकार की खुशियाँ देने का मन करता है । वह स्वभाव से अधिक भावुक और कम बात करने वाला व्यक्ति था जिसके कारण अनजाने में ही चित्रा और नरेश में शुरू से ही दूरी बनती चली गयी । अतः कहा जा सकता है कि नरेश अन्तर्मुखी स्वभाव का व्यक्ति था पर किसी के सामने अपने विचारों को स्पष्ट करना या खुलकर बात नही कर पाता था । जिसके कारण ही होन

172· उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ· 148·

ग्रन्थि आदि समस्या उत्पन्न होती है । उदाहरण के लिए नरेश चित्रा से बातचीत कर अपनी शंका को दूर करना चाहता है किन्तु कर नहीं पाता है । यह उसके अन्तर्मुखी स्वभाव के कारण है पर वह सुमन्त को मन-ही-मन दोषी ठहराता है जो भाई के रूप में चित्रा के साथ घुल-मिल जाता है क्योंकि वह स्वभाव से बहिर्मुखी था । नरेश के विचार कुछ इस प्रकार है - "शायद इसलिए अब मैं कुछ नही कर पाऊँगा । चाहते हुए भी नहीं कर पाऊँगा । क्योंकि इस छाया से मुक्ति नही है, उससे कोई बचाव नहीं है ।"[173]

"अकेली आवाज" :-

बंटू इकलौता बेटा होने के कारण उसके माता-पिता ने उसे अधिक प्यार और मुँह माँगी चीजों को खरीद कर देकर बिगाड दिये थे । इन सब के कारण ही वह जिंदी और शरारती था । किसी से भी डरता नही सबको मुँह-तोड़ जवाब दिया करता था । बंटू स्वभाव से बहिर्मुख था । वह गलती करने पर समझता किन्तु उसे स्वीकार करने से पीछे हटता था । स्कूल के अन्य बच्चो की तरह चुप नहीं रहता प्रिन्सिपल से लेकर सहपाठियों तक सभी के नाक में दम किया करता था । अपने अपराध को समझता भी है और पश्चाताप के भाव भी प्रकट करता है । प्रिंसिपल से बंटू इस प्रकार कहता है कि - " कल से उसे तेज बुखार है .... । मैं अपने को अपराध पाता हूँ यह सब मेरे कारण हुआ है । न उस दिन हम घूमने बाहर जाते न पानी में हम

---

173. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ. 5

भोगते और न मनोज बीमार पड़ता । मेरा मन कुरेद-कुरेदकर मुझे कोस रहा है । आप मुझे क्षमा कर दे ।" 174

"उखड़े कदम" :-

अशोक को तुलना मे विश्वा अधिक स्वभाव का बहिर्मुखी है । वह अपने नौकरी मे दिलचस्पी लेने की वजह अन्य चीजों में अधिक ध्यान देता है । यही कारण है कि कई लोग उसे पसन्द करते है । इनमें सुनीता भी एक थी । अशोक अनुशासित अफसर है और नियमों को अधिक महत्व देता है । अपनी पत्नी की इच्छा पूर्ति के बारे में भी सोचता नहीं है । फलस्वरूप विश्वा के स्वभाव से प्रभावित सुनीता होती है । इतना ही नही आर्मी की नौकरी से निकाले जाने पर भी उसके बहिर्मुखी स्वभाव के कारण ही बड़े आसानी से चाय बाग मे नौकरी ढूढ लेता है । अगर वह साहसी और स्वार्थि नही होता तो बदनामी को सहते हुए इतनी प्रगति नही कर पाता था ।

"दूसरा सूत्र" :-

आनन्द मोहन मे नारी के प्रति कमजोरी थी । वह वकील होकर भी अन्तर्मुखी स्वभाव के व्यक्ति थे । उनका कहीं आना-जाना नही था । वे अधिकांश समय अपनी पत्नी के साथ बीताया करते थे । तभी जब पहली पत्नी मरी तो तड़प उठे और पुन: शादी कर लिया और जब दूसरी पत्नी की मृत्यु हो जाने पर वही तड़पन उनमें देखा जा सकता है ।

---

174. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 118.

पर वें अपने बेटे से जुडने में असमर्थ थे और नौकरी के चक्कर मे दूसरे शहर जाते है और प्रतिभा नामक स्त्री से दोस्ती करते है । वे चाहते तो स्वतन्त्र रह सकते है पर उनके अन्तर्मुखी स्वभाव और कमजोरी के कारण स्त्री की ओर आकर्षित अधिक होते है । उनका ही कथन यहाँ दिया जा सकता है - "मै स्वभाव से ज्यादा सामाजिक नही रहा हूँ शायद इसलिए भी मुझे पत्नी के अधिक सहचर्य की जरूरत रहती थी ।"[175]

"कोई तो" :-

वर्तिका को कम उम्र में ही अपराध न करने पर भी बदनामी के रूप में सजा भोगनी पड़ती है । पहले तो वह समाज से डरी-डरी रहती है किन्तु बाद में अपने स्वभाव में ही परिवर्तन लाती है । वह पढ़ लिखकर आर्थिक रूप से भी स्वतन्त्र हो जाती है । दिल्ली जैसे शहर में अकेले रहने से घबराती नहीं है और सबका सामना निडर हो कर करती है । समाज सेवा छात्रों के समस्याओं का समाधान खोजना आदि करती है जिससे वह कई लोगों से परिचित थी । यह सब तभी सम्भव हो सका क्योंकि वह स्वभाव से बहिर्मुखी थी ।

"सुबह के इंतजार तक" :-

भानू के माता-पिता झूठी शान के कारण छोटी नौकरी करना नही चाहते थे । जिसके कारण घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती ही चली गयी । बलबीर की पढ़ाई बीच मे छुडवाकर नौकरी करने भेज देते है जिससे

---

175. दूसरा सूत्र - देवराज - पृ. 22.

वह बहुत दुखी होता है। भानू को शादी के लालच में आकर मामा के घर भेज दिया जाता है किन्तु भाग्यहीन के कारण उसका बलत्कार हो जाता है। इन सब स्थितियों को देखकर बलबीर जो उम्र में छोटा था और स्वभाव से अन्तर्मुखी था पूर्ण रूप से बदल जाता है। तभी घर में किसी से कहे बिना अपनी दीदी भानू को लेकर बीच रात को घर से निकल दूसरे शहर को भाग जाता है। नये शहर में पहुंच कर उसके निडरता बुद्धिमानी और बहिर्मुखी स्वभाव के कारण ही नौकरी और मकान का तलाश कर पाता है। दीदी के प्रोत्साहन और कड़ी मेहनत के कारण ही अंत में अपने लक्ष्य की पूर्ति करते देखा जा सकता है।

4.5

कैरेन हॉर्नी - सुरक्षा और तृप्ति के सिद्धान्त :-

फ्रायड की तरह ही नव्य फ्रायडवादी सिद्धान्तों का भी मनो - विश्लेषण के क्षेत्र में बहुत महत्व मिला। विशेष कर कैरेन हॉर्नी के द्वारा प्रतिपादित सुरक्षा और सन्तुष्टि के सिद्धान्त। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को पूर्ण रूप से जानने के लिए उसके बचपन को जाने बिना अधूरा रह जाता है।

आठवें दशक के उपन्यासों का अध्ययन करते समय ऐसे कई पात्र मिल जाते है जिनका बचपन मे कई प्रकार की विकृतियों से पीडित है। नीचे तालिका मे सम्पूर्ण विवरण दिया गया है :-

सुरक्षा और तृप्ति का सिद्धान्त

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृ॰सं॰
आपका बंटी	बंटी	58, 226
परत-दर-परत	कुमुद	9, 16
नावें	मालती	11
अकेली आवाज	बंटू	5
दूसरा सूत्र	प्रतिभा	29

"आपका बंटी" :-

बंटी केवल अपने माँ के साथ रहता है। उसे हमेशा पिता का साथ न होने का दुख है। उसकी कोशिश करने पर भी माता-पिता साथ रहना नहीं चाहते थे। जबकि दोनों अपने-अपने तरीकों से बंटी से प्यार करते थे। बंटी, माँ के साथ हमेशा रहने के कारण अपने-आप को अधिक सुरक्षित पाता था। तभी वह किसी भी हालात में अपनी माँ के साथ ही रक्षा चाहता था। अपनी माँ को थोडे भी क्षण के लिए भी छोड कर अलग नहीं रहता था अगर कभी ऐसा क्षण आता तो तड़प उठता था। एक बार जब वह अपने पिता के पास गया था तो माली उसे वापस लेने नहीं आता है। इस बात पर वह बहुत परेशान होता है और वह कुछ इस प्रकार करता है -- "माली चला गया अब मै घर कैसे जाऊँगा, ममी के पास जाऊँगा।"[176]

---

176. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ॰ 58.

कैरेन हाॅर्नी के अनुसार माता और पिता से मिलने वाला सुरक्षा और सन्तुष्टि बच्चे के व्यक्तित्व को अच्छा बनाता है। बंटी को शुरू-शुरू में माँ-बाप का प्यार तो मिला किन्तु बाँटा हुआ। उसकी इच्छा कभी पूरी नही हुई। फलांतर देखा जा सकता है कि बंटी के न ही उसकी मम्मी और पापा रखना चाहते है। वह उन दोनो के बीच गेंद की तरह उछाला जाता है। तभी वह निरन्तर असुरक्षित और असन्तुष्ट रहता है। उसकी माँ डॉ.जोशी से शादी करने से पहले बंटी को बहुत प्यार करती थी और उसे अपने साथ ही सुलाती भी थी। परन्तु शादी के पश्चात माँ का डॉ.जोशी के साथ अधिक उठना-बैठना और उसके लिए अलग कमरा दे देना आदि से वह अत्यधिक पीड़ित हो उठता है। बंटी को जब पता चलता है कि अब उसका अपना कोई नही है। माता-पिता तो अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहते है। तभी उसे होस्टल में भर्ती कराते पर विरोध न कर वह कुछ इस प्रकार व्यवहार करता है। "पता नही बंटी को क्या हुआ कि पापा जाए उसके पहले वही पापा को छोड़कर दौड पड़ा है। वह दौड़ता जा रहा है बिना पीछे मुडे बस आगे ही आगे। नदी-नाले, पहाड-मैदान सब पार करता जा रहा है और फिर पता नहीं कहाँ गिर जाता है।" 177

अत: कहा जा सकता है कि बंटी को बचपन से ही प्यार और सही ढंग से देखभाल न होने के कारण बंटी के व्यक्तित्व को असमान्य रूप से विकसित होते देखा जा सकता है। इसका कारण केवल उसके माता-पिता थे और कोई नहीं।

---

177. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ. 226.

"परत-दर-परत" :-

राजन और कुमुद के घर का वातावरण एक समान था। दोनो के घर में न तो माँ बाप को एक दूसरे के प्रति प्यार था और न ही वे दोनो कभी अपने बच्चों की तरफ ध्यान देते थे। जिसके कारण ही राजन अधिकांश समय काम के बहाने बाहर रहता है कुमुद भी ऐसा ही करती है। वे दोनो एक-दूसरे से परिचित है और आकर्षित भी है किन्तु शादी के बन्धन मे बंधने से डरते हैं। उनको यह डर है कि कहीं उनका जीवन भी उनके माता-पिता को तरह नीरस न बन जाए।

जब कभी कुमुद अपनी मम्मी और पापा के साथ रहती भी है तो वह अपने-आप को खुश नहीं पाती है। घर की स्थिति को देखकर ही उसका भाई भी घर से संबंध को तोड़ता जा रहा है। कुमुद सोचती है कि "मम्मी-पापा के साथ इकट्ठें एक घर में रहना उसके लिए भी एक नवीन अनुभव था और उसने कुछ ही दिनों में जान लिया था कि अनुभव सुखद ही नही हुआ करता।"178

कुमुद घर की स्थिति को देख निरन्तर दुखी रहती है। वह हमेशा अपने आप को असुरक्षित पाती है। वह अपने मम्मी-पापा के बारे में इस प्रकार सोचती है - "भैया जैसे मम्मी पापा की विवशता को सनक या वहम कह दिया करता है। वह भी उन्ही शब्दों का प्रयोग शुरू कर दे अगर फीस, कपड़ा और रोटी दे थे अपने को दायित्व

---

178. परत-दर-परत - अन्नपूर्णा - पृ. 9.

से मुक्त अनुभव करते है तो वह भी उनसे अपनी खुशियों का मूल्य का तकाजा करें ।" 179

कुमुद के माता-पिता का उसके प्रति व्यवहार में प्यार न होने के कारण वह अपने-आप को अन्य लोगों की तरह नही पाती है । राजन से उसे प्यार था तभी शादी भी कर लेती है किन्तु कोई रिश्ता दोनो में जो जुड नही पाता है । दोनो को लगातार छटपटाते ही रहते है । जो अंत तक देखा जा सकता है । इन सब उदाहरण से कहा जा सकता है कि कुमुद और राजन का बचपन सुखमय नहीं था जिसके कारण ही वे दोनों मानसिक रूप से सन्तुष्ट नहीं है ।

"नावें" :-

मालती के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं था । उसके माता-पिता बच्चों की ओर पूरी तरह से ध्यान नही देते है । साथ ही अपने सभी बच्चों को पूरा प्यार भी नही दे पाते है जिसके कारण न केवल मालती मे बल्कि सभी बच्चों में असन्तुष्टि थी ।

मालती हमेशा चाहती है कि उसे कोई प्यार करें । तभी वह सोम के विवाहित होने पर भी अपने-आप को उसके हवाले कर देती है । और आगे का सोचती नही । बाद में विजयेश से तो शादी कर लेती है किन्तु उसे अपना नही पाती है । हमेशा उससे कटी-कटी

---

179. परत-दर-परत - अन्नापूर्णा - पृ. 16.

रहती है । वह नहीं चाहती है कि उसकी बेटी को किसी प्रकार की कमी हो इसका बहुत ख्याल रखती है । पर बेटी को इस तरह माँ का अपने पिता से कटे रहना अच्छा नही लगता है । और वह निरन्तर कोशिश करने के बाद माँ को उनकी गलती समझा पाती है ।

मालती को बचपन की कमियों के कारण अंत तक वह अपने जीवन से संघर्ष करती रहती है । सुख की प्राप्ति होने पर भी असन्तुष्ट और मानसिक रूप से पीड़ित रहती है । अपने-आप से इन सब कष्टों से झेलते हुए भी अपनी बेटी के सामने पति से ठीक ढंग से व्यवहार नही करती है ।

अत: कहा जा सकता है कि मालती में मात्र कुण्ठा और मानसिक द के अलावा और कुछ भी नही था । एक बार वह खुद यह स्पष्ट करती भी है कि उसके घर को सहारा वही मात्र है — " वह और क्या करे उसके घरवाले नही तो बडी थी न और पिता बड़े होते हुए भी सबसे छोटे रिटायर हो जाने के बाद वे खुद को सबसे छोटा महसूस करने लगे थे । "180

"अकेली आवाज" :-

बंटू बडा ही नटखट लड़का था । घर में किसी की बात नही मानता था । उसके इच्छा विरोध किसी को कोई कदम लेने नही देता था । माता-पिता के पास इतना समय नही था कि वें हर समय

---

180. नावें - शशी प्रभा शास्त्री - पृ. 11.

बंटू के हर चाल-चलन पर ध्यान दें । जिसके कारण बंटू दिन-प्रतिदिन बिगड़ता ही चला गया । इसका प्रमुख कारण यह था कि बंटू को जरूरत से ज्यादा प्यार और सुरक्षा उसके माँ-बाप दिये थे ।

नीता मिस के बहुत कहने पर उसे स्कूल में भर्ती तो कर दिया जाता है । पर वह निरन्तर अपने साथियों से बुरा व्यवहार करता है । यह सोच कर कि उसके इस तरह के व्यवहार करने से सभी तंग आ कर वापस भेज देंगे । स्कूल में सभी लोग बंटू के बारे में जानते थे इसलिए उसे सजा दे कर चुप हो जाते थे पर स्कूल से निकालते नहीं थे । वे लोग चाहते थे कि किसी भी तरह वह सुधर जाय ।

बंटू को डर था कि कहीं उसके मम्मी-पापा स्कूल पढ़ने को भेज देंगे । तभी वह स्कूल भेजने की बात को सुनते ही रोने लगता था जैसे - " बंटू ने अपने बाल अपनी ही मुट्ठियों से भींचकर खींचने शुरू कर दिया वह जमीन पर लेट-लेटकर रोने लगा । रोते-रोते बोला— मैं स्कूल नहीं जाऊँगा । कभी नहीं जाऊँगा ।"[8] इसका मुख्य कारण यह था कि वह बंटू बाहर जाने से डरता था । वह यह सोचता था कि इतनी सारी सुविधायें और प्यार कौन दे सकेगा ।

बंटू अच्छे वातावरण वाले स्कूल में पढ़ने पर भी उसकी आदतों में बदलाव नहीं आया । वह स्कूल में सभी को तंग किया करता था । बंटू में कुछ हद तक सुधार तो हुई थी । वह मालती को मारने के पश्चात बहुत पश्चाताप करता था । अपने जिद्द करने के स्वभाव को वह छोड़ता नहीं है । उसे हमेशा असन्तुष्ट और असुरक्षित महसूस करते देखा जा सकता है ।

---

[8]• अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ• 5•

बंटू अच्छे स्कूल में पढ़ने के कारण ही उसे अंत में सुधरते देखा जा सकता है । जो बंटू हमेशा घर जाने की बात सोचता है वही अपनी धारणा बदल लेता है और नियमित जीवन बीताना अच्छा लगने लगता है ।

" दूसरा सूत्र " :-

प्रतिभा की मम्मी ने उसकी देखभाल बचपन में इतनी अच्छी तरह से किया कि उसको कभी कोई कमी महसूस होने नही दिया था । उसकी हर इच्छा की पूर्ति किया । जिसके कारण उसने जीवन के केवल सुखमय पहलू को देखा था । पर जब उसकी शादी होती है तो उसे हर इच्छा की पूर्ति अपने-आप जब नहीं कर पाती तो वह निराश हो जाती है । जहाँ तक कि सम्बन्ध को त्यागने में भी उसे हिचकिचाहट नहीं होती है । इसका कारण यह था कि उस पर उसके बचपन मे बीते जीवन का बहुत प्रभाव था जिसे वह भूला नहीं पा रही थी । इन सब के बारे में वह खुद कहती है कि -- " मै काफी स्वतन्त्र वातावरण में पली थी, मेरी माँ मुझे बहुत ज्यादा मानती थी और प्राय: मेरी हर तरह की माँग और जिद्द को पूरा करती थी । इसलिए जब मै ससुराल पहुँची तो मुझे वहाँ का वातावरण बडा ही विचित्र लगा । वहाँ पहली बार मैंने सुना कि खानदानी इज्जत नाम की एक ऐसी चीज होती हैं जो जीने से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है । क्या यह अन्याय नहीं है । [182]

182· दूसरा सूत्र - देवराज - पृ· 29·

उपर्युक्त उपन्यासों के पात्रों का अध्ययन करने के पश्चात कहा जा सकता है कि बचपन मे बच्चा किस वातावरण में पलता है। और उसे अपने माता-पिता से कितना प्यार मिलता है यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसका अधिक हो जाना और कम हो जाने पर भी समस्या का सामना व्यक्ति को करना पड़ता है। जैसे कि हमें वैसे पात्र भी देखने को मिल गये। अत: माता-पिता को जितना प्यार बच्चे को देना चाहिए उतना ही देना चाहिए न की ज्यादा।

4.6 एरिक फ्रांम के द्वारा प्रतिपादित - अकेलेपन का सिद्धान्त

जब व्यक्ति के अनुकूल परिस्थिति नहीं होती है तो वह उस वातावरण मे रहना पसंद नही करता है किन्तु मजबूरी के कारण रह लेता है। परन्तु उसे कभी खुश रहते देखा सकता हैं। वह आसानी से तो परिस्थिति के बीच रहते हुए भी कटा-कटा रहता है। जिसके कारण अकेलेपन की भावना उत्पन्न होती है।

आठवें दशक के कई उपन्यासों में भी ऐसे पात्र मिल जाते है जो अकेलेपन की भावना से पीड़ित रहते है। निम्नलिखित तालिका मे पूर्ण रूप से विवरण दिया गया है जिसकी सहायता से अध्ययन किया गया है।

अकेलेपन का सिद्धान्त

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृ॰सं॰
आपका बंटी	बंटी	9
परत दर परत	राजन, कुमुद	84,132
उस पार का अंधेरा	चोपड़ा	15,91
उसके हिस्से की धूप	मनीषा	54
अकेली आवाज	बंटू	11
प्रतिध्वनियाँ	नीलकान्त	17
दूसरा सूत्र	आनन्द मोहन	71
सुबह को इंतजार तक	मानू के घरवाले	29

"आपका बंटी" :-

बंटी के पिता तो उसके साथ नहीं रहते थे । तभी वह मम्मी को अधिक पसंद करता है, ममी भी उसे अत्यधिक स्नेह करती थी । उसे लगता है कि वह अपनी मम्मी के बिना अब से एक पल भी नही रह सकता है । माँ जब कभी काम से बाहर जाती तो वह फूफी के साथ रहता, नहीं तो पेड़-पौधों के साथ रहता था पर कभी अपने से बराबर वाले लड़कों के साथ समय बिताने की कोशिश नहीं करता था । इन सबसे स्पष्ट होता है कि बंटी अकेलेपन की भावना से पीड़ित है । मम्मी के पीछे ही रहता है अगर नहीं तो बंटी अपने-आप में खोया सा महसूस करने लगता है।

बंटी अपनी माँ को इतना अधिक चाहता है कि उसे विशेष रूप से रात अच्छी नही लगती है। इस का कारण यह है कि वह अपनी माँ को अंधेरे में नही देख सकता। इस तरह कई कारण मिल जाते हैं जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि बंटी अकेलेपन की भावना से पीड़ित है। उदाहरण के लिए इस सन्दर्भ को दिया जा सकता है -- " अब छुट्टी के दिन समझ ही नही आता वह क्या करें। फिर गिनकर देखा कितनी नई कलियाँ खिली हैं हर एक पौधे की फूल पत्तियों का हिसाब-किताब उसके पास है। एक दो पौधे की पत्तियाँ गन्दी लगी तो जल्दी से पाइप लेकर उनको धोया। कुछ इस ढंग से जैसे ममी सवेरे सवेरे उसका मुँह धुलाती है।"[183]

बंटी मे अकेलेपन की भावना पहले से ही थी किन्तु वह और अधिक विशेषकर तब होता है जब उसकी मम्मी, डॉ॰जोशी से शादी कर लेती है। क्योंकि अपना अधिकांश समय अब वह बंटी के साथ बिता नहीं पाती थी। एक और कारण यह था कि डॉ॰जोशी का घर बहुत बड़ा होने के कारण उसके लिए अलग कमरा था वह अब अपनी मम्मी के साथ सो नही पाता था। जिससे उसमें अकेलेपन की भावना और अधिक हो गई। इस तरह बंटी असमान्य बालक होने के कारण शुरू से अंत तक अकेलेपन की भावना से पीड़ित रहता है। कभी स्थिति से समझौता करना चाहता ही नही था जिसकी वजह से ही न ही उसकी माँ (शकुन) और बाप (अजय) अपने साथ में रखते है क्योंकि वे नही चाहते है कि बंटी किसी भी तरह उनकी मौज-मस्ती में बाधक बनें।

183· आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ॰ 9·

"परत दर परत" :-

कुमुद और राजन दोनो के घर की स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण दोनो मानसिक रूप से खुश नहीं है । वे दोनो अक्सर अपने मे स्थित अकेलेपन की भावना से छुटकारा पाने के लिए एक दूसरे से मिलते है । यह सत्य है कि कुछ हद तक वे मानसिक सन्तुष्टि तो प्राप्त करते है किन्तु अति शीघ्र अपने को फिर उसी स्थिति में पाते है जिसमें पहले थे । राजन अपनी मन: स्थिति से परिचित है तभी वह कुछ इस प्रकार सोचता है कि - " कभी-कभी कुमुद भी जब मन कुछ दूसरी ही बात सुनने को तैयार होता है । इस तरह कोईऐसी ही बात बिना दूसरे के मन का लिहाज किये यह से कह दिया करती है और बात का कोरापन उसकी भावना के हर अंकुर को रौंद डालता है । हर सुराख पर लीप पोती कर उसका मुंह बन्द कर लेता है ।"[184]

कुमुद में अकेलेपन की भावना इतना अधिक है कि वह किसी एक स्थान पर नहीं रह सकती है वह निरन्तर स्थान बदलती है यह सोच कर की वह इस भावना में छुटकारा पा सकेगी । किन्तु ऐसा कुछ नहीं होता हैं । जैसे कि एक बार अपने भाई के यहाँ रहने जाती है । पर वहाँ भी मन:शान्ति और अकेलेपन से पीछा छुड़ानपाने के कारण कुछ दिन पश्चात ही अपने भाई से इस प्रकार कहती है कि - " आफिस जाते-जाते शाम के लिए मेरी सीट रिजर्व करवा देना, मैं आज ही वापस जाऊँगी उसने निर्णय सुना दिया था ।" [185]

184· परत दर परत - अन्नपूर्णा - पृ· 84·

185· - वही - पृ· 132·

"उस पार का अंधेरा" :-

चौपड़ा अपने-आप को कर्तव्यों से मुक्त बनाये रखने के लिए अपनी पहली पत्नी और बच्चों को त्याग देता है। उसको मानसिकता से मिलती-जुलती स्त्री मिलने पर बिना किसी शर्त के दोनों साथ रहने लगते है। इस तरह कई वर्ष अपनी इच्छानुसार जी लेने के बाद दोनों में पुन: वही ऊबन और अकेलेपन की भावना से पीड़ित होते है। इस भावना को एक दूसरे से छिपाये रखने के लिए एक दूसरे से इस प्रकार कहते है -- "सीमाये हमने स्वीकार ही कब की थी ? "मुझे कोई मतभेद नही है। जो भी मुक समझौता हम लोगों में था या बाद के आश्वसनों की जो लम्बी सूची है। उसका लाभ मुझे भी उतना ही पहुँचता है जितना तुम्हें। मेरी ओर से तुम स्वयं को किसी भी उत्तर - दायित्व से मुक्त समझ सकते हो यह मेरा सोचा-विचार मंतव्य है।"[186]

विभा कई साल तो चौपड़ा के साथ बिता तो लेती है किन्तु दिन-प्रतिदिन ऊबन और अकेलेपन की भावना के बढ़ जाने के कारण और विचार धारा के बदलने पर विभा, चौपड़ा को छोड़कर चली जाती है। जिसका पता चौपड़ा से चलता है। और विभा के शर्तों के अनुसार चलने के लिए अपने आप को तैयार कर लेता है क्योंकि विभा के बिना उसमें भी अकेलेपन की भावना उत्पन्न हो चुकी थी। वह इस प्रकार सोचता है कि -- "उसके बाद एक वर्ष तक हम लोगों की मुलाकात नहीं

---

186. उस पार का अंधेरा - सुदर्शन नारंग - पृ. 15.

हुई थी विभू की शर्तों पर चलने के लिए स्वयं को तैयार करने के अलावा कोई रास्ता नहीं था ।" 187

इस तरह चौपडा और विभू अपनी इच्छा के अनुसार जीते हुए भी मानसिक पीड़ा से छुटकारा पा नही सके है । अत: कहा जा सकता है । मनुष्य अगर समाज के नियमों के विरूद्ध चलने की कोशिश करता है तो निश्चत थोडे समय के पश्चात किसी-न-किसी ग्रन्थि से पीडित पाया जा सकता है ।

"उसके हिस्से की धूप" :--

मनीषा अपने मर्जी से मधुकर से शादी तो कर लेती है किन्तु कुछ वर्षो के बाद पुन: ऊबन और अकेलेपन की भावना से पीडित होती है । यह सोच कर वह जितेन को त्यागती है कि मधुकर के पास उसे मन:शान्ति प्राप्त होगी पर बाद मे वह खुद इस निष्कर्ष में पहुँचती है । कि जितेन और मधुकर में कोई अंतर नही है । दोनो की सोच-विचार के ढंग एक समान है । इतना ही नही वह जब मधुकर के पास है तो जितेन के बारे में सोचती है और मधुकर से जितेन के बारे में चर्चा भी करती है । इससे मधुकर उसकी मानसिक स्थिति को जानकर इस प्रकार कहता है - "बार-बार जितेन को बीच में घसीटने की क्या जरूरत है ।" 188

---

187. उस पार का अंधेरा - सुदर्शन नारंग - पृ. 91.
188. उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ. 54.

"अकेली आवाज" :-

बंटू बहुत ही नटखट और बड़ो की बात को कभी नहीं मानता था। माता-पिता का इकलौता बेटा होने के कारण कुछ अधिक उसकी मानमानी चलती थी। स्कूल तो भी उसके घरवाले भेजना नही चाहते है यह सोच कर कि वह अन्य बच्चों के बीच रह कर बिगड़ जायेगा और उसे पूरी सुख सुविधायें नही मिल पायेगी जो घर में प्राप्त होती है। इसलिए नीता मिस को पढ़ाने के लिए रखा जाता है। जो कुछ ही दिनों में बंटू की मानसिकता का पूर्ण परिचय प्राप्त कर लेती है। और इस निष्कर्ष में पहुँचती है कि बंटू में अकेलेपन की भावना है। तभी वह इस तरह व्यवहार कर रहा है। नीता मिस बंटू के माता-पिता से इस विषय मे बात करती है। उनका कहना था कि - "बंटू के साथ एक और परेशानी है। वह घर में अकेला है। अकेला होने से जिद्दी हो गया है। उसका यह अकेलापन आगे जाकर नुकसान पहुँचा सकता है।"[189]

बंटू अकेलेपन की भावना घर पर कभी महसूस नहीं करता था किन्तु जब उसे नीता मिस के कहने पर स्कूल भेज दिया जाता है, तो घर से बहुत दूर रहकर अक्सर अकेलापन की भावना से पीड़ित होता है। प्रमुख रूप से इसलिए कि उसने कभी किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं किया था। बंटू के अकेलेपन की भावना इन वाक्यों में स्पष्ट होती है - "अकेले भोजन करना कितना भारी होता है। उसने अनुभव किया, अकेले रहने मे कितना दर्द है।"[190]

---

189. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 11.
190. - वही - पृ. 108.

"प्रतिध्वनियाँ" :-

नीलकान्त अपनी इच्छानुसार बेटी रागिनी को जबरदस्ती श्री मनमोहन राव की पुत्रवधु बना देता है । इस विवाह के रचाने के पीछे यह रहस्य था कि किसी भी तरह व्यापार में उनकी प्रगति को रोक दे । वे ही नीलकान्त के निकट प्रतिद्वन्द्वी थे । नीलकान्त पूर्ण रूप से समृद्ध होने पर भी और धन की प्राप्ति के पीछे लगे रहते है । जिससे उनके द्वारा किये गये गलती का पता पहले तो नहीं चलता है किन्तु बाद में अपनी बेटी के द्वारा कहे गये वचन को याद कर बहुत पश्चाताप की भावना से जलते है । आगे चलकर यही भावना अकेलेपन की भावना में परिवर्तित हो जाती है । वे किसी भी तरह इस भावना से छुटकारा पाना चाहते है कभी कभी यहाँ तो कभी वहाँ रहते है पर कहीं भी सुख की प्राप्ति नहीं होती है । उनके पास सब कुछ रहने पर भी कुछ नहीं के बराबर है । वे स्वयं इस प्रकार सोचते है कि - " रागिनी के विवाह और उसकी विदा के पश्चात श्री मन - मोहन राव को शतरंज की एक चाल से जीतने के बाद अर्थात् रागिनी को उनकी पुत्रवधु बना देने के पश्चात् और तीसरी बार भी मेयरशीप जीतने के पश्चात् जब मै अपने भव्य अट्टालिका के भव्य एकान्त कक्ष में अपने शयन गृह में होता । जिनमें तीन ओर आदमकद विशाल दर्पण लगे थे, तो जैसे अपनी तीन-तीन विशाल प्रतिध्वनियाँ के बीच भी एक दम बौना हो उठता ।" 19।

19। प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खंडेलवाल - पृ. 17.

"दूसरा सूत्र" :-

आनन्द मोहन की दो पत्नीयों के मृत्यु के पश्चात उनमें अकेलेपन की भावना जागृत हो गई क्योंकि उनका पुत्र और बहु इनसे अलग रहने लगते हैं। जिससे आनन्द मोहन को मानसिक पीड़ा अधिक हो जाती है और नौकरी के चक्कर में किसी और शहर जाते है। वहाँ प्रतिभा नामक सहकर्मिणी के साथ दोस्ती करते है क्योंकि दोनो की मानसिकता एक ही समान थी और दोनो अकेलेपन की भावना से पीड़ित थे। तभी शीघ्र ही इनका परिचय घनिष्ठ में परिवर्तित हो गया। इस बात को आनन्द मोहन ही स्पष्ट करते है -- "जैसे कि मैंने कहा मैं कभी-कभी ही कोर्ट जाता था प्रतिभा से परिचय होने के बाद मेरी वहाँ पहुँचने की फ्रीक्वेन्सी बढ़ गई।" 192

एक और सबसे बडी कमजोरी आनन्द मोहन मे यह थी की नारी की और आकर्षण था जो अकेलेपन की भावना का समाधान था। जिसे वे खुद मानते है - "अर्चना की मृत्यु के बाद क्रमश: मैंने एक और चीज महसूस की हैं। यह कि मुझे नारी के साहचर्य की विशेष अपेक्षा रहती है। यह अपेक्षा शारीरिक से अधिक मानसिक है।" 193

प्रतिभा से दोस्ती होने और घनिष्टता में बदलने पर तर्क देते हुए कहते है कि - "प्रतिभा से जो निकटता शुरू हुई वह क्रमश: घनिष्टता में बदल गई। इसका एक कारण मेरी वह मनोवृत्ति थी जो

---

192. दूसरा सूत्र - देवराज - पृ. 71.

193. - वही - पृ. 77.

अकेलेपन के उपचार के रूप में, नारी का सम्पर्क खोजती थी। दूसरा कारण स्वंय प्रतिभा के स्थिति और स्वभाव थी कि वह गैरो तरह अकेलेपन का अनुभव करती थी।"[194]

" सुबह के इंतजार तक " :-

भानू के साथ अन्याय होने के बाद घर का बिगडा परिस्थिति और बिगड गया। बुलू जो भानू का छोटा भाई था उसे सत्य का पता चलने पर घर को लौटना ही छोड़ दिया। जिससे घर के सदस्यों में चिन्ता बढ़ गयी और घरवालें एक-दूसरे से अलग रहने लगे। सभी साथ रहकर भी अकेलेपन की भावना से पीडित दिखाई दे रहे थे। किसी को किसी से मतलब नही था। दुख और चिन्ता से पूर्ण अपने-आप सभी तरह के कष्टो को झेलते जा रहे थे। इसको पुष्टि भानू के विचार द्वारा होता है -- " फिर लगातार हफ्तों बुलू आया ही नही। उसके न आने से सन्नाटा और भी बढ़ गया था। मै, माँ, पिताजी अपने-आप मे और भी अकेले हो गये थे। पिताजी और ज्यादा किताबों-पत्रिकाएँ पढ़ने लगे थे। माँ कोनेवाली खाट पर और ज्यादा देर तक गुमसुम मुँह ढाके पडी रहती पर और विट्टू निरीह अबोध आँखो से हमें देखा करता।"[195]

इस तरह आठवें दशक के पात्र सब कुछ होते हुए भी अकेलेपन की भावना से तड़प रहे है। जिसके पीछे कई कारण लगे हुए है जो स्पष्ट दिखाई देता है।

---

194. दूसरा सूत्र - देवराज - पृ. 78.
195. सुबह के इंतजार तक - सूर्यबाला - पृ. 29.

4.6.1

परिचय या पहचान की आवश्यकता :-

प्रत्येक मनुष्य की यह चाह रहती है कि वह किसी-न-किसी क्षेत्र में अपनी पहचान बनाये। यह सम्भव तो नहीं कि सभी इसमें सफल हो जाते है।

आठवें दशक के उपन्यासों के अध्ययन करने के पश्चात ऐसे कुछ पात्र मिलते है जो अपनी पहचान बनाने की कोशिश करते है और कुछ सफल भी है। इसमें सम्बन्धित पूर्ण विवरण के साथ नीचे तालिका दिया जा रहा है।

पहचान की आवश्यकता

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृ.सं.
आपका बंटी	बंटी	14
अन्तराल	श्यामा	-
काली आंधी	मालती	9, 100
उसके हिस्से की धूप	मनीषा	43, 175
तीसरा आदमी	नरेश	28
कोई तो	वर्तिका	122
सुबह के इंतजार तक	मानू, बुलु	--

"आपका बंटी" :-

बंटी दुखित रहता है क्योंकि उसके मम्मी-पापा साथ नही रहते है। इस बात को उसके दोस्त जान कर अक्सर चिढ़ाया करते थे। और कई प्रश्न पूछा करते थे। इससे उसे बहुत दुख होता था। वह हमेशा यही कोशिश में रहने लगा कि वह भी अपनी पहचान बनायें।

एक बार उसके पापा जब खिलौना लाकर देते है तो उसे देखकर वह अत्यधिक प्रसन्न होता है और अपने दोस्तों को भी बड़े गर्व के साथ दिखाता है। उस खिलौने के बारे में पता न होने के कारण वे लोग जब शान्त खडे रहते है तो वह बडे शान से कहता है कि -- "खाली देखने से काम नही चलेगा समझना पड़ता है। यह कोई आठ आने वाला तमचा नही है। जो हर कोई चला ले।" 196

बंटी के कथन से कहा जा सकता है कि वह अपने-आप को महत्वपूर्ण उस खिलौने के माध्यम से साबित करना चाहता है। एक और विशेषता यह है कि उसके दोस्तों को विशेष रूप से टीटू को दिखा देना चाहता है कि उसके पापा उसके साथ नही रह कर भी कितने मूल्यवान उपहार उसके लिए ला देते है। इस तरह बंटू अपने दोस्तो के सामने अपनी पहचान बना रहा था।

---

196. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ. 14.

"अन्तराल" :-

श्यामा शादी के पश्चात मात्र दुख के और कुछ नही पाती है । उसके पति देव की मृत्यु कम उम्र में ही हो जाती है । सास, ननद और बेटो से नाम मात्र के लिए भी प्यार नही मिलता था । जिसके कारण उसे जीवन, मात्र निराशा से पूर्ण के अलावा और कुछ नही लगता था । पढ़ी-लिखी होने के कारण वह स्कूल मे प्रिन्सिपल के रूप में काम तो करती है किन्तु सन्तुष्ट नहीं है । वह अपनी पहचान बनाने के लिए आगे पढ़ना चाहती है और अपने जीजा जी के यहाँ जाकर रहती है । इस बीच उसका परिचय प्रोफेसर कुमार से कराया जाता है जो दर्शन विभाग के अध्यक्ष थे । उनसे पढ़ने के बहाने उनकी ओर आकर्षित होती है पर अपने-आप से स्पष्ट नहीं है । इस प्रकार वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी पहचान बनाना चाहती थी ।

"काली आँधी" :-

जग्गी बाबू अपनी पत्नी मालती को प्रोत्साहित कर राजनीति में सक्रिय भाग लेने में मदद तो करते है । किन्तु पत्नी का दिन-प्रति-दिन आगे बढ़ना उनसे सहन नहीं होता है । जिसके कारण वे तरह-तरह की ग्रन्थियों से पीड़ित होते है ।

मालती को पहले कोई विशेष रुचि राजनीति में नही रहती है पर एक बार जब प्रगति करने लगी तो अच्छा लगने लगा । राजनीति के कारण ही वह अपने घर को भी त्याग देती है । इसका प्रमुख कारण यह है कि वह अपनी पहचान समाज में बना चुकी है और इसे त्यागना

नहीं चाहती है । यह स्वभाव साधारण रूप से सभी में पाया जाता है । प्रत्येक मनुष्य किसी-न-किसी क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने की कोशिश करता है । मालती और जग्गी बाबू के बीच हुए संवाद का अंश यहां दिया जा सकता है -- "आप यह होटल बंद कर दीजिए लेकिन क्यों ? जग्गी बाबू चीखे थे । इसलिए कि मैं पब्लिक में यह नहीं सुनना चाहती कि हम लोगों ने होटल को बहाना बना रखा है ... । इससे मेरी पब्लिक इमेज पर धब्बा लगता है ।"[197]

लोग मालती और जग्गी बाबू के बारे में बातचीत करते थे । जिससे मालती के द्वारा बनायी गई पहचान को धक्का लग सकता था । इसलिए वह पब्लिक मिटिंग मे अपने पति के बारे में इस प्रकार कहती है कि -- "गोल्डन सन के मैनेजर मेरे पति है या प्रेमी या यार ... जग्गी बाबू को दूल्हे की तरह उठाकर खड़ा कर दिया था और मालती जी ने आगे कहा था ... जी यही है मेरे पति, पति परमेश्वर, मेरे दोस्त, मेरे प्रेमी और मेरे यार जो कुछ भी है यही है और ये मेरे साथ आपकी अदालत में मौजूद है ।"[198]

"उसके हिस्से की धूप" :-

मनीषा को हर तरह की सुख सुविधायें जितेन देता है पर प्रेम विवाह पर विश्वास करने वाली हमेशा तड़पती है और अंत में जितेन को त्याग कर मधुकर की ओर आकर्षित होती है । विशेष रूप से यह सोच कर कि उसकी सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति होगी ।

---

197. काली आँधी - कमलेश्वर - पृ. 9.
198. - वही - पृ. 100.

मनीषा हमेशा अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करती है । यही कारण है कि वह हमेशा लिखने में व्यस्त रहती है । एक बार जब उसकी पुन: मुलाकात जितेन से होती है तो वह अपने प्रतिभा की प्रगति का परिचय देती है । और अपने द्वारा लिखे गये पुस्तकों को दिखाती है ।

जिससे कहा जा सकता है कि वह निरन्तर अपने अस्तित्व को बनाये रखने की कोशिश करती है । वह चाहती है कि किसी भी तरह वह किसी भी क्षेत्र में अपनी पहचान बनाये । जो इन वाक्यों से स्पष्ट होता है ... " मनीषा ने उसके हाथ से दोनो चीजे थाम ली और अकम्पित लिखाई में अपना नाम मुखपृष्ठ पर लिख दिया - मनीषा । यह इसका अपना नाम है इसका ताल्लुक न जितेन राय से है न मधुकर नाम से ।" 199

मनीषा को निरन्तर अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते देखा जाता है । वह किसी की भी परवाह नही करती है । जहाँ कि उसका पति मधुकर उसकी प्रशंसा करना छोड़ निन्दा करता है । वह दुखित तो होती है किन्तु उसे दिखाती नही है । जैसे कि वह कहती है कि - " तुम मुझे लेखिका मानो-या न मानो मधुकर कुछ फर्क नही पड़ता उसने मन-ही-मन कहा कि लिखूँगी अवश्य लिखूँगी और वह जो मुझे परितोष दे सकें । उससे और कोई नतीजा न भी निकले कम से कम मुझे तसल्ली होगी कि जो कुछ मै कर सकती थी मैने किया ।"200

---

199. उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ. 43.

200. - वही - पृ. 175.

"तीसरा आदमी" :-

नरेश शुरू-शुरू मे अपने-आपको बहुत सौभाग्य समझता है क्योंकि उसे सुन्दर पत्नी मिली थी किन्तु बाद में नरेश मे ही कई प्रकार की ग्रन्थियों के होने के कारण अपनी पत्नी से कटी रहने लगता है और निरन्तर सन्देह करता है। इसका प्रमुख कारण यह था कि वह अपनी आर्थिक कमियों से अति असन्तुष्ट था। किसी भी क्षेत्र में उसकी पहचान न होने पर भी दुखित था जिससे हीन भावना से ग्रस्त होता है।

पहचान बनाने के कोशिश पर सफल न होने के कारण सोचता है कि - "जिन्दगी की यह गाड़ी इतने अनमनेपन से कैसे चलेगी ? इतनी अलगाव और अजनबी पन से जिन्दगी का यह सारा वक्त कैसे कटेगा ?" 201

इस तरह नरेश तो शुरू से अंत तक केवल संघर्ष और पहचान बनाने के पीछे भागते हुए ही पाया जाता है।

"कोई तो" :-

चंद्रिका अपने अस्तित्व को खोकर किसी की ओर झुकने में विश्वास नही करती है। तुषार उसमे विवाह तो करना चाहता है किन्तु उसके मम्मी के मना करने पर तरह-तरह के बहाने बनाता है। और कहता है कि अगर तुम मेरे साथ रहना ही चाहती हो तो तुम्हें मेरे साथ

---

201. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ. 28.

अमेरिका चलना होगा । इस पर चरित्रा तैयार नहीं होती है क्योंकि वह जो इतनी बदनामी को सहकर भी पहचान बनानी थी उसको किसी भी हाल मे छोड़ना नही चाहती थी । इसलिए वह इस प्रकार कहती है कि -- "कुमार ! तुम्हें क्या हो गया है ? मै तुम्हारे साथ जीना चाहती हूँ, बंधना नही चाहती ।"[202]

"सुबह के इंतजार तक" :-

बुलु और मानू मे आत्म सम्मान अधिक था । यही कारण है कि वह छोटी नौकरी करने में पीछे नही हटते है । उनको बहुत दुख होता है कि उनके माता-पिता अपनी पहचान बनाने की जगह उसे खोना चाहते है । तभी वे आगे रिश्तेदारों से दिन-प्रतिदिन कटते जाते है ।

बुलु और मानू में लक्ष्य और पहचान बनाने की इच्छा होने के कारण ही घर को त्यागने में भी दुख नहीं होता है । मानू हर तरह के कष्ट को सहते हुए भी बुलु को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है । फलस्वरूप एक साधारण बालक डाक्टर बन जाता है । अत: कहा जा सकता है कि वे दोनो एक दूसरे पर निर्भर रहकर समाज में अपनी पहचान छोड़ते है ।

साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपनी पहचान बनाने की कोशिश करता है । एरिक फ्रांम के द्वारा प्रतिपादित पहचान की आवश्यकता सिद्धान्त ठीक है । आठवें दशक के कई पात्रों को इस दिशा में प्रयत्न करते देखा जा सकता है ।

---

202. कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ. 122.

4.7

अपराध की भावना :-

साधारणतः गलती और अपराध में बहुत अंतर होता है । मनुष्य गलती कर भूल जाता है पर अपराध करने पर हमेशा छटपटाहट की स्थिति में ही रहता है । अपराध समान्य तौर से सभी करते है किन्तु उसे कोई स्वीकार नही करता है । फिर भी मनुष्य के अचेतन मन में हमेशा स्थित रहता है और उनको चेतन स्तर में आने से रोकता है । अगर आ भी जाता है तो उनको प्रत्यक्षता से बचने के लिए बहाने ढूढता है ।

आठवें दशक के उपन्यास लेखन में इस दृष्टि से अध्ययन किया जा सकता है । नीचे पूर्ण विवरण के साथ तालिका दिया गया है ।

अपराध की भावना

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृ॰सं॰
1	2	3
आपका बंटी	बंटो, शकुन	85,151,152 177,191
परत-दर-परत	राजन	43
अन्तराल	श्यामा	60,164,215
उस पार का अंधेरा	चोपड़ा	92,93
रिश्ते	पाल	23
नावें	सोम, मालती, विजयेश	25,88
रेत की मछली	कुन्तल	70

1	2	3
उसके हिस्से की धूप	मनीषा	32
अनामदास का पोथा	रैक्व	342
तीसरा आदमी	चित्रा, नरेश	36,66,89
अकेली आवाज	बंटू	52,109,118
उखड़े कदम	विश्वा	44,46
प्रतिध्वनियाँ	मेहता	94,101
किसमुली	काका	28
परछाइयों के पीछे	सुमित्रा	64
कोई तो	वर्तिका	70,208
सुबह के इंतजार तक	भानू	46

"आपका बंटी" :-

बंटी नाममात्र के लिए बालक है वह सब कुछ समझता है । वह अपनी उम्र से अधिक समझदार होने के कारण अच्छे-बुरे के बीच अन्तर कर सकता है । तभी वह अपराध करते ही पहचान लेता है । उदाहरण के लिए -- " ऐसे फटकारते है कि बस ... उसके पापा भी फाइलें लेकर आते होंगें ? खट से उगलियों का क्रास बन गया । फिर भी कहीं एक धुंधली सी तस्वीर उभर ही आई फाइलों मे डूबे हुए पापा नही-नही उसने अपने मन को समझाया ।"[203] इन वाक्यों से पता चलता है कि

203. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ. 85.

बंटी के अनुसार उसके पापा से मिलना या उनके बारे में सोचना भी पाप या अपराध है क्योंकि वह अपनी ममी मे अत्यधिक प्यार करता था। और ममी थी कि उसके पापा की बातों से ही चिढ़ जाती थी इसलिए जब कभी पापा के बारे में सोचता है तो वह तुरन्त उगलियों का क्रास बना लेता है जो अपराध से छूटकारा पाने का सूचक होता है।

डॉ॰जोशी के घर मे आने के बाद बंटी के सोच और व्यवहार में परिवर्तन होने के कारण बंटी कुछ इस प्रकार सोचता है -- "सांझ घिरने के साथ-साथ और सारी भावनाएँ तो गायब हो गई रह गई। सिर्फ एक अपराध-भावना। कुछ बहुत ही गन्दा काम करने की अपराध भावना, क्यों आयी। ममी यहाँ क्यों लायी उसे? आज एक मिनट भी पढ़ने में मन लगा है उसका स्कूल में। नही सोचना इन बातों को कितना पाप चढ़ा होगा आज उस पर।" 204 उपर्युक्त उदाहरण से यह पता चलता है कि बंटी जानता है कि वह जो लुके छुपें डॉ॰जोशी और ममी के बीच के रहस्य को उसने देखा है इसका प्रभाव निरन्तर उसके अचेतन मन पर पड़ता है। जो अपराध की भावना मे परिवर्तित हो गई जिससे बंटी अत्यंत पीड़ित होता है। आगे चलकर जब कभी वह अँधेरे में होता तो उसके मन में भय उत्पन्न होता था। बंटी अपने अपराध को पहचान कर ही पुन: यहाँ भी कसकर उगलियों का क्रॉस बनाता दिखाई देता है, क्योंकि उसके अनुसार ऐसा करने पर वह अपराध से छूटकारा पा सकता है।

204• आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ• 151•

बंटो का विकास सामान्य बालक की तरह न होने के कारण ही हद से अधिक भावुक है । जब अपराध की भावना भय में परिवर्तित हो गई तो वह उस रात विस्तर को गीला कर देता है । जिसके कारण अपराध की भावना और अधिक हो जाती है क्योंकि उसे लोगों की चिंता थी, कि वें क्या कहेंगे । जो इस प्रसंग से पता चलता है -- "सबेरे होते ही सबको मालूम हो जाएगा । जोत अभि डाक्टर साहब, बंसीलाल क्या कहेंगे सब लोग ? क्या सोचेंगे । शर्म, दुख गुस्सा और फिर आँसू ढेर-ढेर आँसू ।" 205

अपराध की भावना से मुक्त होने के लिए उपाय की खोज मे लगा रहता है । वह किसी तरह यह पता लगता है कि संगम में नहाने से मोक्ष की प्राप्ति होती है पर प्रश्न यह था कि वहाँ वह पहुँचे कैसे । इस भाव का पता इन वाक्यों से होता है -- "लोगों का ऐसा विश्वास है कि संगम में नहाकर सारे पाप धुल जाते है । संगम कैसे जाया जाता होगा वह भी एक बार जरुर जायेगा । बंटो का पाप भी जरूर धुल जायेगा ।" 206

बंटो जो कुछ गलती करता है उन सबको वह तुरन्त अपराध की भावना के रुप में देखता है । जैसे कि बंटो अपनी ममी की आँखों के भाव से समझ जाता है कि पापा के लिए उसके द्वारा लिखे गये सभी पत्रों के बारे में उन्हें पता चल गया था । विशेष रुप से तब जब ममी पत्रों को छिपाये गये स्थान से बाहर निकालती है । बंटो अपराधित

---

205. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ. 152.

206. - वही - पृ. 177.

तो महसूस करता ही है साथ ही दुखित भी होता है क्योंकि उसने अपनी मम्मी के इच्छाओं के विपरीत में काम किया है ।

" आपका बंटी " में न केवल बंटी बल्कि उसकी माँ (शकुन) भी अपराध की भावना से पीडित होती है । जैसे कि - " इतनी कोशिश करने पर भी वह बंटी को इस घर में रचा-पचा नहीं सकी । वह इसे अपना घर समझ नही सका । पता नही क्या चाहता था वह इस घर से नही शायद शकुन से । 207

इन वाक्यों से कहा जा सकता है कि शकुन अपनी जिन्दगी में रंग भरने की दृष्टि से डॉ॰जोशी से विवाह कर लेती है उसे कभी यह महसूस नहीं हुआ था कि बंटी से उसका इतना अधिक प्यार करना उसके व्यक्तित्व को कमजोर बना सकता है । इसका ज्ञान शकुन को तब होता है जब बंटी नाराज और कटा-कटा रहने लगता है यही कारण है कि वह अपराधित महसूस करने लगती है । यह सोचकर कि वह चाह कर भी बच्चे के लिए कुछ अच्छा नही कर पायी ।

परत-दर-परत :-

इस उपन्यास के दो प्रमुख पात्र है जिनके बीच संपूर्ण कथा घूमती है वे कुसुम और राजन है । कुसुम की तरह ही राजन को भी अपने घर में कोई महत्व नहीं दिया जाता है । वह हमेशा अपने माँ-पिता के बीच बाँटा रह जाता है । जिससे उसका मन अपराध की भावना और अपमानित

207• आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ• 191•

की भावना आदि से पीडित है । वह सोचता है कि आखिर उसने ऐसी कौन सी कमी है या गलती की है जिसके कारण वह अपने घर का होकर भी नहीं । जो इन वाक्यों से स्पष्ट पता चलता है – "वह हैरान था कि उसने बात आगे चलाए रखी थी अपनी माँ से सलाह कर देना पिता जी द्वारा जब भी "वह और माँ और माँ द्वारा वह और पिताजी एक गुट घोषित कर दिए जाते है । उसे बहुत गुस्सा आया करता है इस घोषणा का सीधा-साफ अर्थ होता है उसे अपने से अलग अपमानित कर दिया जाना तुम माँ-बेटा या तुम बाप-बेटा उसे दो ऐसी गलियाँ लगा करती है जो सिर्फ उसी के लिए गडी गई है ।" 208

"अन्तराल" :-

श्यामा और कुमार का परिचय जब हो जाता है तो कुमार के कहने पर श्यामा घुमाने के लिए बडी दूर निकल जाती है किन्तु मन-ही-मन हमेशा अपराध की भावना से पीडित थी कि अगर कोई जान पहचान का दिख लिया तो क्या कहेगा ? यहीं कारण है कि कुत्ते का भौंकना अति सामान्य है वह भी उसे ऐसा सोचने मे बाध्य करता है कि वह कह रहा हो आखिर यहाँ क्यों आये हो चले जाओं जो इस प्रसंग से पता चलता है – "एक कुत्ता दौड़ता हुआ बाईं तरफ से आया-और ठीक चारपाई के सामने रुककर जोर जोर से भौंकने लगा । उसका अन्दाज ऐसा था जैसी कह रहा हो "तुम लोग यहाँ क्यों हो ? क्यो हो ? क्यों हो ? जाओ ! जाओ !" 209 जब उसके मन मे बार-बार वह अपराध की भावना से वह पीडित थी कि वह जो इतने आसानी से गैर आदमी के

---

208. परत-दर-परत – अन्नपूर्णा – पृ. 43.
209. अन्तराल – मोहन राकेश – पृ. 60.

साथ समय बीता रही है तो वह कारण की खोज में रहती है और अपनी बेटी के बहाने अति शीघ्र वापस लौटना चाहती थी क्योंकि पुराने अचारण-विचारों को मानने वालों के अनुसार को मानने वालों के अनुसार विधवा स्त्री इस तरह किसी पुरूष के साथ घुमना अच्छा नहीं माना जाता है । जो इस कथन से पता चलता है - नहीं ! मुझे बिटिया की चिंता है । ज्यादा देर हो जाने से वह रोने लगती है । श्यामा भले ही अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए इस तरह जाने या अनजाने ही कम समय में कुमार से सम्बन्ध जोड़ लेती है और बाद में उसे ऐसा लगने लगता है कि उसने अपराध किया है । जिसे वह जाने के समय कुमार से व्यक्त करती है - इसका अर्थ यह नही कि उसकी सहज वृत्ति समाप्त हो गई । किन्तु वह ऊपरी तौर से ऐसे व्यक्त करती है - " अगर यह उस दिन की वजह से है तो नहीं, उस दिन की वजह नहीं है तो मुझे लगता है मै क्हीं तुम्हें चोट पहुँचाकर जा रही हूँ ।" 2

श्यामा, कुमार से विदा लेने के बाद चली तो जाती है किन्तु कई बार कुमार से मुलाकात होती है और अपनी आन्तरिक इच्छा को बिन चाहें ही दोनों पूरा कर लेते है । अपनी बेटी में बदलती हुई अदातों को देखकर वह स्वयं को दोषी ठहराती है और अपनी कमजोरियों को भी अच्छी तरह जानने के कारण उसमें पुन: अपराध की भावना से पीड़ित देखा जा सकता है जो इन वाक्यों में साफ व्यक्त है - " उसे अपराध का अनुभव हो रहा था कि वह ऐसा हर रोज क्यों नही करती नही । उस बच्ची की कुछ जरूरते थी जिन्हें वह और अकेली वही पूरी कर सकती थी यह

210• अन्तराल - मोहन राकेश - पृ• 164•

उसके दिलचस्पी न लेने के कारण ही था जो बेबी उसे छोड़कर दूसरों की तरफ इतना उमड़ती थी । उसे लड़की के साथ नए रिश्ते से अपना एक सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए । इससे वह लड़की के ही नही अपने अन्दर के अभाव को भी कुछ हद तक मार सकती थी ।" 211

उपर्युक्त उदाहरणों से यह कहा जा सकता है कि श्यामा कभी अपनी बच्ची की डर से तो कभी अपनी बच्ची की अच्छी तरह देखभाल न करने के डर से अपराध की भावना से पीडित है । श्यामा का पति मर जाने पर भी अभी तक उसके लिए जीवित है । वह हमेशा कुमार में देव का रुप देखकर मात्र जैविक इच्छा की पूर्ति करती है । इच्छा की पूर्ति हो जाने पर उसे हमेशा लगता है कि उसने देव के साथ धोखा किया है । इस कारण से भी श्यामा के मन में अपराध की भावना उत्पन्न होती है ।

"उस पार का अंधेरा" :-

चोपड़ा अपनी कमजोरी और परिवार के उत्तरदायित्व को पूरा न कर पाने के कारण ही अपनी पत्नी और बेटी को छोड़ कर भागजाता है । जो उसके अचेतन मन मे हमेशा रहता है और किसी बन्धन के विभु के साथ रहने लगता है । जो कभी-कभी विभु को ऐसा सोचने के लिए मजबूर करता है कि चोपड़ा उससे पूर्ण रुप से जुडा नहीं है । वह विभु के ऐसे विचारों से परिचित होकर चोपड़ा के मन अपने व्यवहारों के कारण अपराध की भावना उत्पन्न होती है किन्तु उसे पश्चाताप या

---

211. अन्तराल - मोहन राकेश - पृ. 215.

कमजोरी का शब्द देकर व्यक्त करता है जो इस प्रकार है -- " क्या कहती हो ? भला पश्चाताप किस बात का बात केवल कुछ बिगड़ी हुई आदतों का जिनमें तुम्हारा उत्तरदायित्व कहीं भी नहीं है ।"[212]

चोपड़ा की आदतों और जीवन के प्रति उदासहीनता को देखकर विभु भी उससे चिढ़ जाती है । और एक स्तर पर उसे छोड़कर चली जाती है जिससे चोपड़ा को शुरू मे तो उतना अधिक उसकी कमी महसूस नहीं होती है किन्तु बाद में उसके ही उक्त विचार से कहा जा सकता है कि वह पश्चाताप और अपराध की भावना से पीड़ित है क्योंकि उसे यह समझ आ गया है कि उसका व्यवहार और आचरण अन्य लोगों के प्रति ठीक नहीं था । उसके विचार कुछ इस प्रकार है -- " मुझे पता है मैंने विभु के साथ और शायद अन्य लोगों के साथ भी अभद्र व्यवहार किया है शायद इतना बुरा मैंने किसी के साथ भी नहीं किया है । मेरी लड़ाई अपने आप से है ।"[213] चोपड़ा के इसी भाव से मिलते-जुलते कई उदाहरण मिलते है । जैसे कि वह अपने-आप को अपराधित समझता है क्योंकि उसने विभु को स्वतंत्रता नहीं दिया था ।

"रिश्ते" :-

इस उपन्यास मे मुख्य रूप से उमी और पाल के बीच कथा घूमती है । इसमें पाल जो विवाहित है उसका उमी के साथ सम्बन्ध को, अपराध के रूप में देखता है । जो हमेशा उसे पीड़ित करता रहता है ।

---

212. उस पार का अँधेरा - सुदर्शन नारंग - पृ. 93.
213. - वही - पृ. 92.

क्योंकि वह चाह कर उसे अपना बना नही पाया था जैसे कि यह रिश्ता विवाह पश्चात विकसित हुआ था । उदाहरण के लिए यहाँ पाल के विचारों के व्यक्त किया जा सकता है - "और फिर अचानक पॉल की निगाह मेन्टलपीस पर सभी अपनी पेण्टिंग पर जा पड़ी .... नीचे के ओर दाहिने कोने मे सफेद रंग से लगाया हुआ "पेच" उसे शायद दीख गया था । उसने झट से अपना टूटा हुआ वाक्य जोड़ दिया, मुझे इस बात का मलाल हमेशा सालता रहेगा यही कि मै तुम्हें भेंट की गयी पेण्टिंग पर आटोग्राफ नही कर सका ।"[214] पाल असल में पेण्टिंग में अपना आटो-ग्राफ तो करता है किन्तु समाज को भय से उसे सफेद रंग से मिटा देता है । जिसे देखकर उसके मन मे अपराध की भावना जाग उठती है।

पॉल अपने घर वालों को उमी से उसके रिश्ते के बारे में कभी कह नही पाता है किन्तु उसकी पत्नी को शंका होती ह और जब उसके द्वारा उमी के बारे में पूछते ही पॉल को गुस्सा आ जाता है और बना रहे पेण्टिंग को फाड़ कर फेंक देता है क्योंकि उसके मन में अपराध की भावना छिपी हुई है किन्तु उसे वह व्यक्त भी नहीं कर सकता है । जिसके कारण उसे अपने आप में ही निगल लेता है ।

"नावें" :-

मालती गरीब घर की लड़की है । वह "सोम" नामक विवाहित व्यक्ति के साथ रहने लगती है पहले तो सोम समाज और अपने घर के लोगों के बारे में सोचता नहीं है । किन्तु बाद में उसे यह सोच कर

---

214. रिश्ते - सुदर्शन चोपड़ा - पृ. 23.

डर लगने लगता है कि उसकी पत्नी सरला क्या कहेगी किन्तु मालती अपना हक की प्राप्ति करने के लिए पीछे पड़ जाती है । तब सोम में अपराध की भावना और पश्चाताप को छिपाने के लिए तरह-तरह के बहाने खोजता है । जो इन वाक्यों से स्पष्ट होते है - पहले किसी दिन पर से आज सोमजी अपने कृत्य पर सचमुच पछता रहे थे । वह परिणाम सामने आने पर उन्होंने यहीं सोचा था कि वे अपने कर्तव्य से मुँह नहीं मोड़ेंगे ।" 215

रेखा निगम के कहने पर और " सोम " से पीछा छुड़ाने के लिए मालती विजयेश से शादी तो कर लेती है । पर बाहर घूमने जाती है तो उसके मन में अपराध की भावना उत्पन्न होती है यह, सोच कर कि उसकी बेटी नीलू क्या सोचेगी । विजयेश से वह जुड़ने की कोशिश करने पर भी जुड नहीं पाती है क्योंकि हमेशा अपराध की भावना उसे सताती है जिसके कारण वह सामान्य जीवन नही बीता पाती है । मालती को इस बात का भी दुख है कि वह चाह कर भी सत्य को प्रकट कर अपनी इच्छा से नहीं जी पा रही है । जब भी वह कुछ ऐसा-वैसा करना चाहती है तो तुरन्त उसमें अपराध की भावना का उद्भव और नीलू के भविष्य के बारे में सोच कर बिल्कुल शान्त हो जाती है । इसका कारण यह है कि वह अपराध की दृष्टि से देख रही है । जिससे वह नये जीवन को भी दुखमयी बना रही है ।

अपराध की भावना इतना अधिक है कि हमेशा डरी-डरी रहती है यह सोच कर कि कहीं कोई उसके जान-पहचान वाला मिल न जायें और उसका सोम के साथ का रिश्ते के बारे में किसी को मालूम न हो जाए । जिससे उसके बेटी के सुखमय जीवन को दुख पहुँच सकता है ।

---

215. नावें - शशि प्रभा शास्त्री - पृ. 88.

ऐसे भी सन्दर्भ मिल जाते है जो यह स्पष्ट करते है कि मालती नाम मात्र के लिए शादी-शुदा थी किन्तु विजयेश को केवल एक सहारा के रूप में देखती है। उसके विचारों और व्यवहारों से यह पता चलता है कि उसकी बेटी ही सबसे महत्त्वपूर्ण है। और अपराध की भावना से मुक्त होना चाहती भी नहीं है। इन सबको पुष्ट करने के लिए इस उदाहरण को दिया जा सकता है -- " तुम जानते हो लड़की मेरे पास सोती है और अब समझदार भी हो गई है। कुछ ऐसा वैसा देखेगी तो क्या सोचेगी।"216

उपन्यास के अंत में देखा जा सकता है कि मालती को अपने पति के साथ दुर्व्यवहार का पता चलता है जिससे वह पुन: अपराधित की भावना महसूस करती है। जो आगे दुख और पश्चाताप में परि-वर्तित हो जाता है जिससे वह रोने लगती है। उसके मन मे जो भय था कि उसकी बेटी क्या सोचेगी अगर उसे सोम के बारे में पता चल जाये तो ? इस समस्या को उसकी ही बेटी पत्र के माध्यम से सुलझा देती है। तब उसे लगने लगता है कि आखिर उसकी बेटी इतनी बड़ी और समझदार कब बन गई।

इस उपन्यास में मालती के अलावा विजयेश को भी अपराध की भावना से पीड़ित पाया जा सकता है। इस भाव को छिपाने के लिए अपनी पत्नी पर चिल्लाते हुए देखा जा सकता है। मालती नही पसंद करती थी कि विजयेश किसी भी बहाने को लेकर उसके कमरे में आयें। एक दिन रात ऐसे ही मालती के कमरे मे घुस जाता है जिसके लिए अगले

---

216. नावें - शशि प्रभा शास्त्री - पृ. 88.

दिन काफी बिगड़ती है। जो विजयेता में अपराध की भावना और अपमान से भर देता है जो उसके ही इस कथन से पता चलता है --
" निकाल देना अब उन सबको, खबरदार जो अब वहाँ मेरी एक चीज भी रखी स्वर मे हल्की विश्तता थी था । "217

" रेत की मछली ' :-

कुन्तल एक ऐसी पात्र है जो किसी प्रकार का अपराध न कर भी अपराध की भावना से पीड़ित है उसे लगने लगा था कि अगर वह आनन्द से परिचित होकर उनके पास बार-बार ऐसा नहीं जाना चाहिए था । जिसके कारण ही दूसरे लोगों की नजर मे अपराधी ठहर गयी । ये भाव उसके मन मे हमेशा के लिए रह जाता है । जो इन वाक्यों में स्पष्ट होता है - " आनन्द साहब की गलती उसे हमेशा कटक रही थी उसे ऐसा लग रहा कि उसने बहुत .... ।" 218

" उसके हिस्से की धूप ' :-

मनीषा एक ऐसी स्त्री है जो अपनी इच्छा की पूर्ति करने के लिए अपने पति (जितेन) को छोड मधुकर से विवाह कर लेती है ।

मनीषा के जीवन में सही लक्ष्य न होने के कारण मधुकर के साथ रहना अब उसे उबन महसूस होने लगता है और वह जितेन के बारे में सोचने लगती है । कई वर्षों के बाद जब उसकी मुलाकात पुन: जितेन से

---

217. नावें - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 89.
218. रेत की मछली - कान्ता भारती - पृ. 70.

होती है । उससे मिलने के लिए जब जाती है तो निश्चित स्थान पर सही समय पर न पहुँचने के कारण उसमें अपराध की भावना उत्पन्न होता है क्योंकि समाज के डर से उसे इस तरह किसी का इंतजार करना अच्छा नहीं लगता है । अपने-आप को कोसने लगती है । जो इन वाक्यों से पता चलता है -- " पन्द्रह मिनट ... जितेन फिर भी नही दिखा । क्या जरूरत थी इस तरह भरी दुपहर में पसीना-पसीना होते भागते आने की ।"[219]

"अनामदास का पोथा" :-

इस उपन्यास में रैक्व के मन में अपराध की भावना इतनी गहराई में पहुँच गई कि इसका ज्ञान उसे खुद नहीं था । रैक्व को कई सन्दर्भो में अपराध भावना से पीड़ित पाया जाता है । रैक्व को आध्यात्मिक ज्ञान था पाप और पुण्य से पूर्ण रूप से परिचित था । तभी जब शुभा पाप शब्द का प्रयोग करती है तो इस शब्द की तुलना अपराध से करता है ।

पाप शब्द ने रैक्व को इतना अधिक प्रभावित किया था कि वह उससे छुटकारा पाने के लिए बार-बार अपना पीठ खुजलाता रहता है । माता ऋतुम्भरा के पूछने पर कहता है -- " नही माँ, वह तो पाप का फल है । मैंने पाप किया था, उसी का दण्ड भोग रहा हूँ ।

---

219. उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ. 32.

यहाँ बड़ी सनसनाहट मालूम होती है ।" 220 रैक्व की पीठ आखिर में शुभा में हो ही जाता है तब वह अपने पीठ को दिखा कर कहता है कि पाप का फल भोग रहा हूँ ।

इन उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि रैक्व में अपराध भावना होने के कारण उसकी पीठ में लगातार खुजली होती थी । इसका कारण यह है कि रैक्व जब अपना पीठ दिखा कर शुभा को बैठ जाने के लिए कहता है पर वह अनुचित पाप, आदि शब्दों का प्रयोग करती है । इनको सुनकर तुरन्त रैक्व के पीठ में एक प्रकार की सनसनाहट शुरू हो जाती है जो आखिर तक बनी रहती है । तब से जब भी शुभा के बारे में सोचता तो तुरन्त उसके किये पाप अर्थात् अपराध की याद आ जाती जिसके कारण बिना उसके ज्ञान के ही उसका हाथ पीठ पर पहुँच जाता है । वह इतना अधिक भोला था कि वह सोचता था कि शुभा के कारण उसको कष्ट सहना पड़ रहा है । जिसका परिहार केवल उसके कारण ही हो सकता है । पीठ की खुजली का कारण एक और भी हो सकता है कि शुभा से बिछुड़ने के समय उसके पीठ मे खुजली शुरू हुई जो अभिलाषा के रूप में दबी हुई थी । उसकी पूर्ति उपन्यास के अन्त में होती हुई देखी जा सकती है ।

"तीसरा आदमी" :-

मानव के सम्बन्धों का बनने से अधिक टूटना आसान है जो कई कारणों से होता है । इनमें शंक एक है । जिससे व्यक्ति में अपराध के न करने पर भी उसका अहसास कराती है । इस उपन्यास के कथानक में कथा तीन पात्रों के बीच घूमती है ।

220• अनामदास का पोथा - मृदुला गर्ग - पृ• 342•

चित्रा, एक साधारण स्त्री है जो नरेश को पत्नी है और बुरे विचार न होने पर भी अपराध भावना की शिकार होती है। क्योंकि उसका पति नरेश मे कई प्रकार की ग्रान्थियाँ थी। तभी उसे चित्रा का उसके भाई सुमन्त के साथ मिलजुलकर रहना उसे अच्छा नही लगता था। और बात-बात पर पत्नी पर शंका करता है। जिसके कारण चित्रा में अपराध की भावना उत्पन्न होती है। जो इन वाक्यों से स्पष्ट होती है - " उसने मेरा प्याला ...। सुमन्त कुछ पढ़ने में गुम था। चाय मेरे सामने पड़ी थी और चित्रा अपराधी सी दरवाजे की चौखट के पास चिपकी खड़ी थी।"[221]

नरेश को भी अपराध को भावना से पीडित देखा जा सकता है लेकिन उसे खुद इस बात से परिचित नहीं था। उसके शक करने की आदत के कारण ही आज उसे सब कुछ त्यागना पड़ा था जो दुख और अपराध को भावना के रूप में उसमें थी। जो सुमन्त के आत्महत्या के बाद और बढ़ जाती है क्योंकि वह अपने-आप को दोषी ठहराता है। नरेश के इस भावना की पुष्टि इन दो सन्दर्भों मे किया जा सकता है --
1. "उन दोनो की सहज चलती जिन्दगी मे एक अवरोध बनकर मै वहाँ पहुँचूगा। अपने भीतर भी मैं बुरी तरह अपमानित महसूस कर रहा था। ऐसा लगता था कि सब गलती मेरी थी और मै भागा-भागा वहाँ जाकर उनका निर्णय सुनने के लिए मजबूर था।" 2. " किसी होटल के कमरे में जाकर सुमंत ने आत्महत्या कर ली थी। शायद किसी तीसरे आदमी के कारण, शायद वह मै।"[222]

---

221. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ. 36.
222. - वही - पृ. 66, 89.

" अकेली आवाज " :-

बंटू सिरफ अपनी मर्जी पर चलना सोखा था । वह किसी के सामने झुकना पसंद नहो करता था । उसके अहंकार को जानकर उसके इच्छा के विरुद्ध काम करने को कहते है । जिससे वह बहुत नाराज हो जाता है और गुस्से में विद्रोहात्मक व्यवहार करता है । जैसे कि कांच के सारे गिलास फोड़ दिये इतना ही नहो मनोज को भी बहुत कष्ट देता है । कुछ समय पश्चात वह अपराधित महसूस करता है । जो दुख मे परिवर्तित होने के कारण वह रोने लगता है । जो इन वाक्यों से पता चलता है -- " बंटू थोडी देर अपलक देखता रहा और फिर उसकी आँखों मे आँसू आ गए । वह वहो बैठ गया और फफक-फफक कर रोने लगा ।" 223

बंटू स्वभाव का बड़ा ही नटखट था हर किसी के नाक में दम कर देता था । वह न केवल लड़को को बल्कि लड़कियों को भी तंग किया करता था " आशा " नामक लड़की जो उसके साथ पढ़ती थी । उसका एक दिन चोटी काट देता है पहले तो उसे कुछ महसूस नहीं होता है किन्तु बाद में अपने अपराध को स्वोकार करता है जो उसके ही इस कथन से पता चलता है -- " तुम्हारी चोटियाँ काटते समय मैंने अपराध की गम्भीरता पर विचार नहीं किया था । अब मै अनुभव कर पा रहा हूँ ।"224

223· अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ· 52·

224· - वही - पृ· 109·

बंटू अच्छे वातावरण वाले विद्यालय मे पढ़ने के कारण उसके चाल-चलन में परिवर्तन तथा अपने द्वारा किये गये अपराधों को स्वीकार और दूसरो की भलाई की चिन्ता को देखा जा सकता है -- " कल से उसे तेज बुखार है । मै अपने को अपराधी पाता हूँ यह सब मेरे कारण हुआ है । न उस दिन हम घूमने बाहर जाते न पानी में हम भीगते और न मनोज बीमार पड़ता । मेरा मन कुरेद-कुरेदकर मुझे कोस रहा है ।" 225

"उखडे कदम" :-

इस उपन्यास का पात्र विश्वा जान कर भी अपराध करता है किन्तु वह अपने आप को ऐसे करने से रोक नही पाता है क्योंकि अपने दोस्त अशोक की पत्नी से अनजाने ही करीब का सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और वह यह जानता था कि वह अपने दोस्त के साथ धोखा कर रहा है और यह सबसे बड़ा अपराध है किन्तु दूसरी ओर अपने-आप को यह समझाने की कोशिश कर रहा है कि वह किसी का भला ही तो कर रहा है । उसकी भावनाओं को इन उदाहरणों मे देखा जा सकता है - १· कई बार मुझे अपने ऊपर ग्लानि भी होती थी कि दोस्त की बीबी के प्रति मेरे मन में कुछ साफ भावनाएँ नहीं है ।" 2· " मैं अपना अपराध स्वीकार करने में अपने को असमर्थ पाता था । साथ ही यह भी विश्वास मुझे नहीं था कि मै ठीक ही कर रहा हूँ ।" 226

225· अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ· 118·

226· उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ· 44, 46·

विश्वा और सुनीता विवाह तो कर लेते है किन्तु उन दोनो के मन में हमेशा अशोक के साथ धोखा करने के बात अपराध की भावना और भय मे परिवर्तित हो जाता है । सुनीता अब सामान्य जीवन बीता नहीं सकती है क्योंकि उसके मन मे ये भावनायें मानसिक सुख का सन्तुलन बिगड़ती है । तभी वह अपने-आप को अपराध की भावना आदि मे मुक्त करने के लिए रसोई में काम करती है ।

अंत तक विश्वा और सुनीता जब अपराध की भावना और भय के कारण को जानते हुए भी छुटकारा पाते नही । तब वे डाक्टर से इलाज भी करते हैं । किन्तु अभी भी सामान्य मानसिक सन्तुलन बना नहीं पाते क्योंकि वे चाहते थे कि अशोक से एक बार मिल कर माफी माँग ले पर इस इच्छा की पूर्ति नही हो पाती है और सब कुछ रहकर भी कुछ भी नहीं रहने के बराबर हो जाता है ।

"प्रतिध्वनियाँ" :-

मेहता एक ऐसा धनी मानव है । अपने जिन्दगी में जो कुछ प्राप्त नहीं हुआ उसे किसी अन्य को प्राप्त करते हुए देख नहीं सकता है । यही कारण है कि उसकी बेटी के इच्छानुसार शादी न करा कर जबर्दस्ती बहुत अमीर लडके से शादी करा देते हैं किन्तु उनके बेटी रागिनी इतना अधिक दुखित होती है और जो कुछ विवाह पश्चात अपने पिता से कहती है वह हमेशा मेहता के कानों में प्रतिध्वनित होते रहते हैं । तब वे अपने अपराध को जान कर तड़पते किन्तु उससे पीछा छुडा कर जा नहीं पाते है ।

रागिनी के साथ उनसे किये गये अन्याय मेहता के दिमाग में अपराध की भावना के रूप में छा जाती है । साथ ही इसका उनके दिमाग पर इतना अधिक प्रभाव पड़ कि दिल का दौरा पड़ता है । इसके बारे में मेहता खुद ही व्यक्त करते है -- " वे रागिनी की सिसकियाँ थी या मेरी ही धड़कने सिर पटकने लगी थी और उन दोनो समारोह के समाप्त होते-होते उस रात मुझे दिल का प्रबल दौरा पड़ गया था ।" 227

मेहता नीच से नीच कर्म करते अपने नाम और धन को बढ़ने के लिए और अपराध की भावना से बचने के लिए कोई ऐसा काम भी करते थे जिससे उसकी प्रतिष्ठा को नुकसान न पहुँचे । उदाहरण के लिए - फैक्टरी का उद्घाटन मैंने बलराम के बूढे पिता से करवाया । जिस क्षण बलराम का वृद्ध पिता उस सम्मान से गद्गद् हो रहा था और उसे वह सम्मान देने के लिए मेरा जय-जयकार हो रहा था । उन क्षणों बलराम अदृश्य रूप से मेरे सम्मुख खड़ा मुझसे पूछ रहा था ।" 228

"किसनुली" :-

काका का अपने गाँव में विद्वान के रूप में काफी प्रतिष्ठा थी । परन्तु किसी को भी उनके करनी के बारे में ज्ञान नहीं था वे अपनी जैविक आवश्यकता की पूर्ति कर तो लेते है किन्तु कालान्तर अपराध की भावना से बहुत पीडित रहने लगते है । जिससे बचने के लिए वे नहीं चाहते की किसनुली से उनका सामना हो परन्तु काकी को अपने पति की कमजोरियों के बारे में पता नहीं था । वह सीधी-सादी नारी

---

227. प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खन्डेलवाल - पृ. 101.
228. - वही - पृ. 94.

अपने आत्मतृप्ति के लिए पगली को अपने घर में ही रखते है जिससे काका में अपराध की भावना इतना अधिक बढ़ जाती है कि वे अपनी पत्नी से बातचीत करना भी छोड देते है । इसकी सूचना हमें काकी से ही मिलता है -- " घर भर से बैर लेकर ..... ? तेरे कक्का ने मुझसे बोलना ही छोड़ दिया है ।" 229

किशमुली बार-बार जब काका के कमरे में जाती थी तो वे इतना अधिक नाराज और किये गये अपराध की भावना से बचने के लिए " हीड-हीड " कह कर भागते थे शायद वे अपने-आप को अच्छा व्यक्ति साबित करना चाहते थे या पहले कि गयी गलती को पुन: करना नहीं चाहते थे । जिनकी पुष्टि इन वाक्यों से किया जा सकता है -- " वह निरर्थक झुला झुलती रही फिर गोली सी छिटककर शायद कक्का के कमरे में घूस गई थी क्योंकि उनके सताड़ना का चिर परिचित स्वर हीड-हीड सुनते ही काकी हबबडाकर शिशु को मेरे गोद मे पटक भागी और उसे खीच लाई ।" 230

जब किशमुली को सही रूप से देखा जाये तो वह पगाल नहीं थी और अपने हक की माँग के लिए जब हाथ धो कर पीछे पड़ जाती है । तब काका उससे पीछा छुडने के लिए घर छोड़कर तीर्थ यात्रा में चले जाते थे । और अपराध की भावना से तड़प-तड़प कर ही मर भी जाते है ।

---

229. किशमुली - शिवानी - पृ. 28.
230. - वही - पृ.

परछाइयों के पीछे :-

सुमित्रा ऐसे पति को जबर्दस्ती ढोये चली जा रही है जो हमेशा मात्र दुख पहुँचता है। उसके साथ न होने पर भी विरोध में कोई ऐसा-वैसा कार्य नहीं करना चाहती है ऐसे करने या सोचने मात्र से वह अपराध की भावना से पीड़ित होती है क्योंकि उसकी धारणा है कि महीपाल हमेशा उस पर कड़ी निगाह रखा हुआ है। सुमित्रा के मनोभावों को इन वाक्यों से पता चलता है -- "इसलिए नहीं कि मुझमें हिम्मत नहीं बल्कि इसलिए कि मुझ पर उस आदमी का एक विचित्र तरह का असर बैठा हुआ था जो हमेशा मेरी एक-एक हरकत पर कड़ी नजर रखता चल रहा है। जहाँ मैंने कोई गलत कदम रखा कि मेरा सर धड़ से अलग।"231

सुमित्रा न तो अपने पति के साथ न भाई-भावज और ना ही अपनी माँ के साथ खुश रह पाई थी क्योंकि कोई भी नहीं चाहता था कि वह खुश रहें सभी लोग अपने-अपने स्वार्थ को पूरा करना चाहते थे। वह मानसिक रूप से पूरी तरह हार चुकी थी तभी जब उसके मुलाकात अम्बरीश भटनागर से होती है तो वह उसके साथ जाने को तैयार हो जाती है क्योंकि व्यक्ति जब अत्यधिक दुखित होता, साहारा स्वीकार कर लेता है जो उसके दुख को बाँटने को तैयार होता है। और यहीं सुमित्रा के साथ भी होता है अम्बरिश से मिलने से किसी प्रकार हिच-किचाहट नहीं दिखती किन्तु उसे हमेशा लगता रहता है कि उसने कोई बड़ा सा अपराध किया हो क्योंकि अचेतन में स्थित अपने पति की ताकती हुई कड़ी निगाहें हमेशा उसका पीछा करती रहती है।

---

231. परछाइयों के पीछे - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 64.

"कोई तो" :-

ऐसे कई लोग मिल जाते है जो किसी प्रकार का अपराध न करने पर भी अपराध की भावना से पीडित रहते है। इसी श्रेणी में वर्तिका आती है जो निर्दोषी होने पर भी सदा अपराध की भावना से पीडित रहती थी। उस पर झूठा इलजाम लगाया गया था कि वह किसी मुसलमान लडके के साथ भाग निकली थी। वह नही चाहती थी उसकी इस बदकिस्मत के कारण उसकी बहन की जिन्दगी बर्बाद हो किन्तु वही थोड़ा-सा दुख कि उसकी बहन की शादी होने वाली है और उसकी कोई चिंता नही करता है। उदाहरण के लिए उसके विचारों को व्यक्त किया जा सकता है -- "मधुर को देखने आ रहे है कुछ लोग। वहीं कुछ कसक गया वर्तिका के अन्दर उदास मन से बोली - मै वहाँ न जाऊँ यहीं अच्छा है।" 232 वर्तिका मे जब कोई जानबूझ कर उसके बीते हुए दिनों की याद दिलाते है तो वह बहुत अपराधित महसूस करती थी।

वर्तिका मात्र ऐसी पात्र नहीं है जो अपराध की भावना से पीडित है बल्कि तुषार की माँ भी इसी भावना से पीडित दिखाई देती है क्योंकि उसके जीवन में कुछ अन्याय हुआ था जिसके कारण उसके पति को आत्महत्या कर लेनी पड़ी जिससे कई लोगों को उनके घर के बारे में पता चल चुका था हर कोई अपनी-अपनी इच्छा से परिवार का भला बुरा कहा करता था। जब तुषार वर्तिका के बारे में पूरा बता कर विवाह करने की बात को माँ के सामने प्रस्तुत करता है तो माँ घर

---

232. कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ. 70.

की स्थिति को ध्यान में रखकर साफ इनंकार कर देती है । क्योंकि वह मन ही मन अपराध की भावना से पीड़ित थी ।

वर्तिका के मामा की बहू भी अत्यधिक दुखित और अपराध की भावना से पीड़ित रहती है । क्योंकि बलात्कार स्वरूप गर्भवती हो गयी थी । इसका गहरा असर उसके दिमाग पर पड़ा था । तभी वह सोते-जागते भी चीखती रहती है और जब बच्चे की जन्म लेते ही मृत्यु हो जाती है तो उसे दुख होने की वजय सुख की अनुभूति होती है । क्योंकि उसे लगता है कि उसने अपराध की भावना से छूटकारा पा लिया है ।

उसमें स्थित अपराध की भावना की पुष्टि इस कथन से होती है - "दीदी आज तुमसे मन की बात कहती हूँ । माँ बन मैं फिर भी चाहती रही कि वह जन्म न ले । अब जब वह चला गया तो मैं जैसे राहत का अनुभव कर रही हूँ, कोई माँ ऐसा कह सकती है क्या ?[233]

"सुबह के इंतजार तक' :-

भानू के साथ अन्याय होता है । उसका विवाह कराने के लालच में उसके मामा-मामी उसे शहर ले जाते है किन्तु घर के काम-काज मे लगा देते है । भानू की सही ढंग से देखभाल करना छोड़ कर अपना सुखमयी जीवन बीताने में व्यस्त रहते है । घर पर आने-जाने वाले

233· कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ· 288·

मजदूरों ने घर की स्थिति को जान कर अवसर का फायदा उठा कर बलत्कार कर देते है । बिगडी स्थिति को जानकर भानू को वापस घर भेज दिया जाता है । घर पहुँच कर भानू मे अपराध की भावना की पीड़ा और अधिक हो जाती है । इस भावना से बचने के लिए ही वह अपने भाई के साथ भागजाती है । पर अपराध की भावना से छुटकारा कहीं नहीं पाती है । भानू को अच्छा नही लगता है कि उसका छोटा भाई उसकी अपराध की भावना से बचाने के लिए नौकरी आदि के लिए भटकता रहा है । इसका ज्ञात उसके ही विचारों से स्पष्ट होता है -- "जब तक बूलू नही लौटा मेरे अंदर आत्मविकृतियों का ताता लगा वहां कौ इस अजनबी शहर में कोठरी तलाशता भटकता होगा इस उम्र में उसे इन सारी प्रवचनाओं की आग में झोंक देनेवाली मै ही हूँ न क्यों चली आयी उसकी बात मानकर ? और बूते पर अपना कील्पत यथार्थ बखानती फिर रही हूँ ।" 234

अपराध की भावना के प्रतिफल वह आजीवन अविवाहित रहकर अपने भाई की तरक्की के मार्ग में चलने मे मदद कर अपना लक्ष्य की पूर्ति करती है ।

अन्तर्द्वन्द :-

अन्तर्द्वन्द सामान्यत: प्रत्येक मनुष्य झेलता है । अन्तर्द्वन्द मे व्यक्ति दो इच्छाओं के बीच होता है जो एक-दूसरे की तृप्ति मे बाधा उत्पन्न करती है ।

---

234. सुबह के इंतजार तक - सूर्यबाला - पृ. 46.

आठवें दशक के उपन्यासों में कई पात्रों को अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति में देखा जा सकता है । निम्न तालिका से इसकी पुष्टि होती है --

अन्तर्द्वन्द्व

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	अन्तर्द्वन्द्व के प्रकार	पृ॰सं॰
आपका बंटी	शकुन	अनुनाद-अनुनाद	38
		अभिगम-अनुनाद	121
परत-दर-परत	राजन	अभिगम-अनुनाद	100
अन्तराल	श्यामा	अनुनाद-अनुनाद	29
रिश्ते	पॉल	अनुनाद-अनुनाद	41
नावें	विजयेश	अनुगम-अनुनाद	94
	मालती	अनुदान-अनुदान	101
उसके हिस्से के धूप	मनीषा	अनुदान-अनुगम	21
अकेली आवाज	बंटू	अभिगम-अनुनाद	83
उखड़े कदम	अशोक	अभिगम-अनुनाद	62
	विश्वा	अनुनाद-अनुनाद	171
टुण्डा लाट	सुनील	अभिगम-अनुनाद	215
प्रतिध्वनियाँ	नीलकान्त	अभिगम-अनुनाद	49
दूसरा सूत्र	आनन्द मोहन	अभिगम-अनुनाद	103
परछाइयों के पीछे	सुमित्रा	अनुनाद-अनुनाद	136
कोई तो	वर्तिका	अभिगम-अनुनाद	62

"आपका बंटी" :-

शकुन और अजय में इतना अधिक अहम था कि दोनो एक दूसरें से समझौता कर साथ रहने को तैयार ही नहीं होते है। दोनो हमेशा एक-दूसरे की कमियों को ही देखते हैं। फलस्वरूप अजय अपनी पत्नी और बेटे को छोड़कर चला जाता है। और पुन: नयी जिन्दगी की शुरूआत करता है किन्तु शकुन यह निश्चि नहीकरपाती है कि आखिर उसे क्या करना चाहिये। उसके मन मे कई प्रकार के प्रश्न उठते है। उसे कभी लगता है कि जो हुआ अच्छा ही हुआ और कभी पश्चाताप।

शकुन को अनुनाद-अनुनाद अन्तर्द्वन्द से पीडित देखा जा सकता है क्योंकि वह एक ओर अजय का उसे छोड कर चले जाने को स्वीकार नहीं कर पा रही है तो दूसरी ओर अपने दुख को और सच्चाई को कि वह भी उससे मुक्त होना चाहती थी। शकुन के इस भाव की पुष्टि के लिए इस उद्धरण को दिया जा सकता है - " उसके अपने ही मन मे जाने कितने-कितने प्रश्न तैर रहे है। क्या खुद उसे अजय का सम्बन्ध भारी नहीं पड़ने लगा था? क्या वह खुद भी उससे मुक्त होना नहीं चाहती थी? तो फिर? कैसा है यह दंश? क्या वह आज तक अजय से कुछ अपेक्षा रखती आई है? " 235

शकुन, चाचा जी के कहने पर डॉ॰जोशी से शादी करने के लिए तैयार तो हो जाती है, किन्तु वह मन-ही-मन अभिगम-अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष करती है क्योंकि वह बेटी को त्यागना चाहती है। और दूसरी ओर डॉ॰जोशी को अपनाना है - " पर तभी बंटी का वही निरीह

235· आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ· 38·

सहसा और बेबस सा चेहरा उभर आया । ममी मैंने तो पापा से कह दिया कि ममी के बिना मैं कहीं जा ही नहीं सकता ममी मैं तुम्हें कभी-कभी नहीं छोड़ूंगा मत रोओ ममी मत रोओ और शकुन रो पड़ी फूट-फूटकर रोती रही । इस यातना से डॉक्टर भी उसे कैसे उबारेंगे ? उसके पास ऐसा कोई सुख नहीं पर ऐसी यातना जरूर है जिसे किसी के साथ शेयर नहीं कर सकती ।" 236

ऐसे कई सन्दर्भ मिल जाते है जहाँ शकुन अन्तर्द्वन्द्व से जूझते रहते है क्योंकि वह न तो डॉ॰जोशी को और न ही बेटे को त्यागना चाहती है । वही दूसरी ओर वह महसूस करती है कि डॉ॰जोशी को त्याग नही सकती है भले क्यों न बंटी को त्यागना पड़ जाये । कभी शकुन अजय से तुलना करती है तथा यह सोचती है कि जब वह बंटी को छोड सकता है तो वह क्यों नही ऐसा कर पा रही है । इसका मुख्य कारण है कि वह निरन्तर अभिगम-अनुदान अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष करती रहती है ।

"परत-दर-परत" :-

कुमुद और अजय के घर की स्थिति एक समान थी जो इन दोनो को इतना अधिक प्रभावित किया था कि किसी भी प्रकार के बन्धनों से बंधने में ही डरते थे । दोनो एक-दूसरे को समझते हुए भी दूरी को बनाये रखते है । राजन को अभिगम-अनुदान अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष करते देखा जा सकता है क्योंकि वह न ही कुमुन्द को छोड पा रहा है और

236· आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ॰ 121·

न ही साथ रहना चाहता है। उसकी मानसिक स्थिति इतनी असन्तुलित थी कि उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उदाहरण के लिए -- "इतने दिनों की निकटता के बाद भी जिस सीमा से अधिक वे आपस में नहीं खुल सके थे वह बाद-बाद में भी लेकिन उनके बीच कोई कमिटमेंट नहीं है फिर बिना मतलब किसी की नजरों से स्वयं को गिरा देने का क्या अर्थ हो सकता है ?" 237

कुमुद को भी अभिमान-अनुदान अन्तर्द्वन्द्व से पीड़ित देखा जा सकता है। कई दिनों तक तो राजन के साथ बिना किसी बन्धन के रहती है किन्तु बाद में शादी तो कर लेती है। पर पूरी तरह से जुड़ नहीं पाते हैं। वह कभी-कभी स्वतन्त्र होने के लिए तड़पती रहती है। साथ ही राजन को त्यागना भी नहीं चाहती है।

"अन्तराल" :-

श्यामा अपने-आप को कुमार को समर्पित करना चाहती है किन्तु वह हमेशा इस अन्तर्द्वन्द्व से जूझती रहती है कि क्या वह व्यक्ति ठीक है जिसके सामने वह अपने-आपको समर्पण करना चाहती है। यही द्वन्द्व के कारण ही वह कुमार को अपनी तरह से परख लेती है। उदाहरण के लिए - "श्यामा जब देर तक सीधे उसकी आँखों में देखती रहती थी उसके अपने विचारों में टूटने लगे। कोई चीज है उसे स्वीकार किया जा सके उसकी नजर में एक तोलने-परखने का सा भाव रहता है। यह जानने का कि सामने बैठा व्यक्ति कहाँ तक इस बात का अधिकार है।

---

237. परत-दर-परत - अन्नपूर्णा - पृ. 100.

कि उसके सामने अपने-आपको खोलकर जा सके और इस सम्बन्ध में उसका निर्णय हर कुछ क्षणों में बदलता रहता है ।" 238

श्यामा, देव को भूला नहीं पा रही है । उसे ऐसा लगता है कि प्रत्येक क्षण वह उसी के साथ है और उसके हर कार्य पर नजर रखता है । यह केवल श्यामा का भ्रम मात्र है । उसका मन तो करता है कि वह सही अर्थों से जीवन को जीये तभी वह कुमार की ओर आकर्षित होती है किन्तु अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष कर रही है ।

श्यामा और कुमार अपनी-शारीरिक जररतों की पूर्ति के लिए एक दूसरे की ओर आकर्षित होते है । इस तरह न चाह कर भी दोनो सम्बन्ध स्थापित कर लेते है । जब कभी वे एक-दूसरे से मिलते है तो अपनी जैविक आवश्यकता की पूर्ति के बारे में ही सोचते है ।

श्यामा को एक तरफ से कुमार से जुडना अच्छा लगता है और दूसरी ओर से नहीं क्योंकि उसे यह सम्बन्ध अनैतिक लगता है । मानसिक रुप से हमेशा अन्तर्द्वन्द्व से झूझती रहती है ।

"रिश्ते" :-

पॉल विवाहित था फिर भी उमी से सम्बन्ध जोड लेता है । बाद में वह अपराध की भावना, पश्चाताप और अन्तर्द्वन्द्व से पीडित रहता है । अनुदान-अनुदान अन्तर्द्वन्द्व से पॉल को संघर्ष करते पाया जाता

238· अन्तराल - मोहन राकेश - पृ· 29·

है । जिसे वह खुद स्पष्ट करता भी है - " मैंने अपने हाथों अपने ही भीतर का कुछ नीचे फेंक दिया है अगर बार-बार उसी के जज्बात को ठेस न पहुँचता तो वह हरगिज यहाँ से न जाती । पहले मुझे उसके कौमार्य से भय लगता था और आज उसकी शादी की सूचना पाकर कांप गया हूँ यह सब क्या है ? पॉल अपने अन्तर्द्वन्द्व से घबरा कर बड़बड़ा उठता है ।" 239

" नावें " :-

रेया निगम के कहने पर मालती, विजयेश से विवाह तो कर लेती है किन्तु उसको पति के रूप में स्वीकार नहीं कर पाती है क्योंकि वह हमेशा अपनी बेटी नीलिमा के भविष्य और उसकी धारणा के प्रति चिन्तित रहती है। विजयेश शुरू मे तो सब चुपचाप सह जाता है लेकिन बाद में कई बार उसका मन इच्छाओं को पूर्ति की माँग करना चाहता है पर अन्तर्द्वन्द्व के कारण कर नहीं पाती है । मानसिक पीड़ा को मात्र झेलता रहता है क्योंकि वह मालती को छोड़कर जा भी सकता है और न ही उसके साथ इस तरह अलग जी भी सकता है ।

अत: वह अनुगम-अनुदान अन्तर्द्वन्द्व से पीड़ित है । इस उदाहरण को यहाँ दिया जा सकता है -- " नहीं, मालती से वह कुछ भी नहीं कह सकेगा । कोई-कोई विषय इतने नाजुक होते है कि उन पर कुछ कहा बताया नहीं जा सकता, जिनके लिए भीख भी नहीं माँगी जा सकती कितनी नीची बात है कि वह अपने मुँह से कुछ कहे सुने ।" 240

---

239. रिश्ते - सुदर्शन चोपड़ा - पृ. 41.
240. नावें - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 94.

मालती भी अनुदान-अनुदान अन्तर्द्वन्द्व से पीडित है। वह कई बार विजयेश से आपने बाधा के बारे में चर्चा करना चाहती है किन्तु किसी दुख को झेलते देखा जा सकता है। वह कहती है कि -- "सच कहती हूँ मर जाउँगी मै अपना सिर फोड लूँगी सब मेरी जान के पीछे हाथ धोकर पड गए है इसके लिए इतना करो।" 241

'उसके हिस्से की धूप' :-

मनीषा की मानसिकता सामान्य नहीं है। वह जितेन से विवाह करने के पश्चात वह कभी किसी प्रकार की कमी महसूस नही करती है। किन्तु उसके बचपन की इच्छा की पूर्ति करने के लिए वह मधुकर से झूठे मोह मे पड़ जाती है जिसे वह प्यार समझ कर जितेन से जबरदस्ती मुक्त हो कर विवाह कर लेती है। सुख-सुविधा की दृष्टि से मधुकर वह सब दे नहीं पाता है जो जितेन देता है। कालान्तर वह मधुकर से ऊब कर पुन: जितेन के पास जाना चाहती है। किन्तु वह खुद इस विचार से स्पष्ट नहीं है। तभी कभी जितेन की ओर झुकती है तो कभी मधुकर की ओर। अत: कहा जा सकता है वह अनुदान-अनुगम अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष कर रही है। जैसे कि - "वह चिल्लाकर कहना चाहती थी, मेरा पीछा छोडो, नही जाना मुझे बाहर। पर वह भी मधुकर से प्यार का दम भरती थी इसलिए कभी-कभी हो अपने को ऐसा प्रदर्शन करने की अनुभूति देती थी। आखिर हुआ यह कि ओर बहस से बेजार होकर उसने कह दिया "ठीक है चलों बोटिंग कर आते है।" 242

241· नावें - शशिप्रभा शास्त्री - पृ· 101·

242· उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ· 21·

उसके मन मे अन्तर्द्वन्द्व होने के कारण ही वह देरी से निर्णय लेती है । वह अपने मन के द्वन्द्व से परिचित है ।

"अकेली आवाज" :-

बंटू बड़ा ही शरारती बालक था । वह किसी की बात कभी नहीं मानता था किन्तु मनोज का स्नेह और अच्छी बातें बंटू मे परिवर्तन लाती है । वह हमेशा मन-ही-मन अभिगम-अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष करता है । वह मनोज की बातों को मानकर अपने अस्तित्व को खोना नहीं चाहता है । इन शब्दों में इस बात का पता चलता है -- "मुझे यूँ धारणा ... अपने सोचे हुए के लिए खेद प्रकट करे, परन्तु यह विचार क्षणिक था, दूसरे ही क्षण उसके मन से एक लहर उठी । खेद प्रकट करना क्षमा मांगने की तरह है और क्षमा मांगना कमजोर लड़कों का काम है । उसने अपना पुराना विचार मजबूत बना लिया ।" 243

बंटू की शैतानी को देखकर स्कूल मे लगभग सभी विद्यार्थी उसके बारे में शिकायत करते थे । वह अपने बारे में हमेशा मात्र बुराई सुन कर कभी सोचता है कि उसे वापस अपने घर चले जाना चाहिये । जहाँ केवल आराम ही आराम है । पर दूसरी ओर उसका मन ऐसा करने को मानता नहीं है । इस तरह वह अपने-आप मे स्पष्ट नहीं है अतः अभिगम-अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व से झूझ रहा है ।

243· अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ· 83·

"उखड़े कदम" :-

सुनीता का इस तरह विश्वा के साथ सम्बन्ध जोड लेने पर अशोक सहन कर नही पाता है। और उसको राय पूछे बिना ही विवाह बंधन से मुक्त कर देता है। जब उसे स्टेशन छोड़ने के लिए जाता है तो उसके मन मे कई बार आता है कि सुनीता को न भेजे। परन्तु दूसरे ही क्षण उसे भेज देने में ही भलाई समझता है। इस तरह वह अभिगम-अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष कर रहा है। इसकी पुष्टि के लिए इस उदाहरण को दिया जा सकता है -- "उसे गले से लगाकर कहूँ कि तूने गलती ही तो की है। हर इन्सान गलती करता है। हर गलती का प्रायश्चित होता है। रुक जा मेरी सुनीता रुक जा। शब्द मेरे गले तक आकर रह गये। मै मूक खड़ा रहा। मेरी बायीं कुहानी खिड़की पर टिकी थी मेरे साथ रहकर इसे आखिर मिला भी क्या ? सिवाय अकेलेपन और कुढन के। उसके और मेरे शौक और जीवन दर्शन में आकाश-पाताल का अन्तर था। ठीक है, सुनीता से जो किया वह गलत तरिके से किया।" 244

सुनीता भी अन्तर्द्वन्द्व से झूझती है। विश्वा के साथ अपनी मर्जी के अनुसार रहते हुए भी अशोक के बारे में निरन्तर सोचती है। वह हमेशा अपराध की भावना से भी पीडित रहती है। वह विश्वा को भी छोड़ कर नही रह सकती है और न ही अशोक को। इस तरह अनुनाद-अनुनाद अर्न्तद्वन्द्व से संघर्ष करते देखा जा सकता है। इसका पता विश्वा के इन वाक्यों के, द्वारा होता है -- "सुनिता इन दिनों बिल्कुल अनमनी रहती थी और न सोती थी। उसके मन में क्या था ?

---

244. उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ. 62.

यह कौन जानता था ? इतना अवश्य है कि अशोक की याद अब उसे बेहद सताने लगी थी और शायद अब इतने वर्षों के बाद अपनी गलतियों का अहसास होने लगा था ।" 245

"टुण्डा लाट" :-

सुनील का युद्ध में दायाँ हाथ के कट जाने पर नौकरी से निकाल दिया जाता है । उसमें अब उदासी, दुख के सिवाय और कुछ नहीं रह जाता है । वह चाहता है कि पुन: संगीत की शिक्षा को आरंभ करें तभी वह म्यूजिक स्कूल जाना चाहता है । पर वह अपने कटे हाथ को देखकर निराश होता है । वह मन-ही-मन सोचता है कि सैनिकों के पुनर्वास कार्यालय से तो बहुत पास है क्यों न वह चला ही जाये । इस तरह सुनील को अभिगम-अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व से जुड़े देखा जा सकता है । जैसे "उसे बार-बार यह ख्याल सता रहा था कि इस जगह से सिर्फ छ: किलोमीटर की दूरी पर म्यूजिक स्कूल है । वह यह फैसला नहीं कर पा रहा था कि वह भूतपूर्व सैनिकों को पुनर्वास कार्यालय में अपनी नौकरी का अता-पता करके ही लौट जाये या म्यूजिक स्कूल मे भी जाये । अपने कटे हुए हाथ की याद करके सुनील पर एक बार फिर उदासी छा गयी ।"246

---

245. उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ. 171.

246. टुण्डा लाट - जगदीश चन्द्र - पृ. 215.

"प्रतिध्वनियाँ" :-

नीलकान्त को मुक्त में पैसा और प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो जाने पर अपने पिताजी के बारे मे सोचता नही है । मृत्यु शय्या पर पड़े पिता से वह मिलना तो चाहता है किन्तु अपने व्यापार के बारे में सोच कर इस निर्णय में आता है कि पिता से कल भी मिला जा सकता है । पर पैसा तो हमेशा नहीं आता है । अर्थात् वह अभिगम-अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष कर रहा है । यह इन वाक्यों से स्पष्ट होते है -- " मेरे कपड़े रखते हाथ रूक गये । काका के जिस झोंपड़े जैसे घर से राय बहादूर मेहता ने मुझे उठाकर अपनी विशाल अट्टालिका की ऊँची छत पर खड़ा कर दिया था । वहाँ से देखने पर काका उमाकान्त आकर बहुत नीचे होने के कारण अस्पष्ट हो उठा था ठीक ही तो कह रहे है ? वे बच भी तो सकते है उन्हें देखने के लिए फिर भी तो जाया जा सकता है । लेकिन " नीहार वनस्पति " की मीटिंग तो टाली नही जा सकती लाखों का मामला है बाजी बड़ी है । उसे हार गया तो मेहता जी क्या सोचेगे ? " 247

" दूसरा सूत्र ":-

आनन्द मोहन की दो पत्नीयों की मृत्यु के पश्चात् भी उनका नारी के प्रति कमजोरी कम नहीं हुयी । नौकरी के चक्कर में दूसरे शहर आते है और वहाँ उनकी दोस्ती प्रतिभा नामक स्त्री से होती है । जो दिन प्रतिदिन घनिष्ठता में परिवर्तित हो जाती है । इस रिश्ते के बारे में सोचने मात्र से उनके में अभिगम-अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है ।

---

247. प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल - पृ. 49.

एक तरफ तो वे अपनी इच्छा के पूर्ति करना चाहते है और यही दूसरी तरफ दूरी भी बनाये रखना चाहते है क्योंकि समाज से डर था । उनका कथन यहाँ दिया जा सकता है -- " मेरे मन मे एक द्वन्द सा छिड़ा हुआ था । मेरे सामने प्रश्न था प्रतिभा और अपने बीच के सम्बन्ध को मैं किस दिशा में और कितना विस्तृत और सीमित करें ।" 248

"परछाइयों के पीछे" :-

सुमित्रा हमेशा महीपाल के इशारे के अनुसार जीते थक गई थी । जिसे वह कभी व्यक्त भी कर देती है । परन्तु वह महीपाल से छुटकार पा कर भी जीना नही चाहती है यही उसकी विशेषता भी है । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वह अनुनाद-अनुनाद अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष कर रही है । वह न तो अपने पति को छोड़कर जी सकती है और न ही अपने जीने की इच्छा को दबा पा रही है । जो इस उद्धारण से स्पष्ट होता है -- " तो क्या तुम भी साथ देने की प्रार्थना कर रहे हो दस मिनट का साथ देना भी पाप हो गया ? आखिर मेरा भी तो मन है । एक बेमानी जिंदगी जीते-जीते मै भी तो थक गई हूँ ।" 249

सुमित्रा को मात्र अन्तर्द्वन्द्व से संघर्ष करते देखा जा सकता है । वह हमेशा दुखित और उदास रहती है । वह किसी भी समस्या का समाधान निकालना नहीं चाहती है ।

---

248. दूसरा सूत्र - देवराज - पृ. 103.
249. परछाईयों के पीछे - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 136.

"कोई तो" :-

वर्तिका का एक मुसलमान लडके के साथ मात्र शहर जाने पर लोग उसका गलत अन्दाजा लगाते है । और सब जगह उसे बदनामी सहन करना पड़ता है । अपराध न करने पर भी अपराध की भावना का उत्पन्न वर्तिका मे होता है । और इस भावना से बचने के लिए ही उसके मन मे कई बार आता है कि वह क्यों न असद का धर्म परिवर्तन करा कर विवाह कर ले । परन्तु जब वह दूसरी दृष्टि से विचार करती है तो उसे यह अच्छा नही लगता है । और निरन्तर अभिमान-अनुनाद-अन्तर्द्वन्द से संघर्ष करती है । उदाहरण के लिए वर्तिका के विचार यहाँ प्रस्तुत किया जा सकता है - "कितना सौम्य, कितना शान्त, कितना शरीफ है वह । वे धर्मधुरीण महानुभाव भी प्रसन्न होते क्योंकि वह हिन्दु बन गया है । नही, नही यह गलत है, पाप है "असित" हो जाने पर "असद" में क्या बदला ? न शरीर, न मन, न आत्मा बदला बस नाम या धर्म विश्वास ।" 250

अन्तर्द्वन्द से प्रत्येक मनुष्य संघर्ष करता है । यह सामान्यत: व्यक्ति मे तब उत्पन्न होता है जब दो इच्छाऐं व्यक्ति मे जन्म होते है । और वह यह निश्चय नहीं कर पाता है कि किस को वह पूर्ति करे और किसको नहीं । कभी-कभी ऐसे सन्दर्भ भी आते है जब व्यक्ति दोनो स्थिति से पीछा छुडाने चाहता है । इस तरह कई कारणों की वजह से अन्तर्द्वन्द उत्पन्न होता है ।

---

250. कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ. 62.

आठवें दशक के कुछ उपन्यासों के पात्रों को अन्तर्द्वन्द्व से पीड़ित पाया जाता है। पात्रों में अन्तर्द्वन्द्व के उत्पन्न के कई कारण है जिनमें स्थिति से समझौता न करना भी एक कारण है।

कुण्ठा :-

जब दो या दो से अधिक विरोधी प्रेरणाएँ व्यक्ति के सामने आती है तो उसे निश्चय करने में कठिनाई होती है कि आखिर किसको सन्तुष्ट करें और किसको नहीं। तभी वह कई प्रकार की दुविधाओं से झूलता है।

आठवें दशक के उपन्यासों में ऐसे कई पात्र मिल जाते है जो कुण्ठा ग्रस्त है।

कुण्ठा

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृ॰सं॰
1	2	3
आपका बंटी	शकुन	198,202
परत-दर-परत	कुमुद, भाभी	76, 175
अन्तराल	श्यामा	98
उस पार का अँधेरा	विभू	12
रिश्ते	पाल	98
नावें	विजयेश	93, 101

1	2	3
रेत की मछली	कुन्तल	13,172
तीसरा आदमी	नरेश	21
टुण्डा लाट	सुनील	219
प्रतिध्वनियाँ	नीलकान्त	69
किसनुली	किसनुली	9
परछाइयों के पीछे	सुमित्रा	11
सुबह के इंतजार तक	भानू	11

"आपका बंटी" :-

शकुन के मन में इस बात का दुख था कि अजय उसे छोड़कर चला गया है। चाचा और अन्य लोगों के कहने के कारण वह डॉ॰जोशी से शादी कर लेती है। बंटी इसको सहन नहीं कर पाता है। और उसका व्यवहार सब के प्रति विपरीत हो जाता है। शकुन की हर खुशी में वह मात्र बाधक ही बनता है। जिसके कारण कई बार वह सोचती है कि क्यों न वह उसे अजय के पास वापस भेज दे पर बंटी के प्रति मोह उसे ऐसा करने से रोक रहा था। वह इस विषय पर डॉ॰जोशी से भी बात करती है किन्तु कोई सलाह न पाने पर कुण्ठित हो जाती है।

शकुन को कई बार कुण्ठा से पीड़ित देखा जा सकता है। यहाँ शकुन और डॉ॰जोशी के वार्तालाप का एक अंश दिया जा सकता है - "वही तटस्थता वही उपेक्षा। बोलकर भी चुप रहना क्या इसी को नही कहते ? शकुन ! "क्यों ? अभी "बात बिल्कुल दूसरी है। "बात दूसरी नहीं है। बस यह कहो कि बच्चा दूसरा है। अभि तुम्हारा बच्चा है तुम उसके बारे में निर्णय ले सकते हो। बंटी तुम्हारा नहीं।" 251

उपर्युक्त वाक्यों में कुण्ठा के साथ आक्रोश किसी को खो देने की शंका भरी हुई है।

एक और उदाहरण यहाँ शकुन की कुण्ठा को स्पष्ट करने के दिया जा सकता है। "और कमरो का साथ समान। चारों ओर बिखरा वैभव जैसे एक बिन्दु में सिमट आया। मन मे कुछ बुरी तरह सुलगाने लगा। मन हुआ कि हाथ पकड़कर बंटी को भीतर ले जाए और कहें कि बैठकर पढ़ो। या एकदम बाहर निकाल दे कि जाओ अभी जाओ। पर कुछ नही कर सकती। यह आने के बाद मे बंटी पर रह अधिकार खोती जा रही है।" 252

"परत-दर-परत" :-

कुमुद के घर का वातावरण अच्छा न होने के कारण वह हमेशा दुखित और कुण्ठित रहती थी जिसकी वजह वह अधिकांश समय घर से बाहर रहना पंसद करती थी। "वही बार-बार दुहरायी जाती बातें

251• आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ॰ 198•
252• - वही - पृ॰ 202•

मै उनसे ऊब चुकी हूँ । जितनी बार दोहराया जाय उनकी नोक कुछ और तीखी चुभन कुछ और तेज हो जाती है । तुम कहा करते हो एक सीमा के बाद महसूस करने की शक्ति खतम हो जाती है पर पता नहीं वह कब होती है मै वहाँ तक पहुँच भी पाउँगी या हमेशा इसी तरह ।"[253]

कुमुद ही नहीं उसकी भाभी भी कुण्ठित है । बाहरी तौर पर देखा जाये तो उसे किसी प्रकार की कमी नहीं है । किन्तु उसमें निराशा और कुण्ठा भरपूर्ण है । जिसे वह खुद इन वाक्यों में व्यक्त करती है -- " कभी-कभी लगता है, कही ऐसा जगह चली जाऊँ जहाँ जान पहचान का कोई न हो तुम्हारे भैया भी न हो बाहर आकर घर लौटने के क्षण पास आते ही कभी-कभी मुझे कुछ हो जाता है । उस समय मै अपने से बहुत डर जाती हूँ ।"[254]

"<u>अन्तराल</u>" :-

श्यामा का व्यक्तित्व विकृतियों से भरा हुआ है । उसका पति देव कम उम्र मे ही मर गया । सास और ननद को इससे थोडा भी प्यार नही था । उनको केवल उसके पैरो से मतलब था । एक मात्र बेटी थी जो उसके पास भी कभी नहीं आती थी । इन सबके कारण ही वह उदास और कुण्ठित लगती है । श्यामा को हमेशा प्यार की तलाश करते देखा जा सकता है । किन्तु वह अपने-आप मे स्पष्ट नहीं है कि किस प्रकार का प्यार उसे चाहिये । वह कुण्ठा से पीडित है क्योंकि एक तरफ तो उसे प्यार की चाह है दूसरी ओर उसका अंह बीच में

---

253. परत-दर-परत - अन्नूपर्णा - पृ. 76.
254. - वही - पृ. 175.

आता है । जिसकी वजह से वह अपना अस्तित्व खोना नही चाहती है । जैसे -" मै नही जानती मै अपने से क्या चाहती हूँ । प्यार ? लेकिन प्यार का अर्थ क्या है ? कुछ क्षणों के लिए किसी की साँसों में स्था जाना इतना ही ? मै किसी के क्षण भर के आवेग का साधन बनकर रह जाऊँ, मेरा अहं इसे स्वीकार नहीं करता मै अपने लिए, प्यार के रूप मे, बहुत बड़ा कुछ चाहती हूँ ।" 255

"उस पार का अंधेरा" :-

चोपड़ा पलायनवादी था । तभी परिवार को आसानी से त्याग देता है । उसकी मानसिकता से मिलती-जुलती विभु है जो उसके साथ बिना किसी शर्त के रहना पसंद कर लेता है । किन्तु वे दोनो अतिशीघ्र एक दूसरे से ऊब जाते है । परन्तु दोनो चाह कर भी एक दूसरे को त्याग नहीं पा रहे है । अत: अतृप्त भावनाओं के कारण ही पीड़ित है । जिसके कारण ही विभु, चोपड़ा मे दोष देखती है -- " एक समय था जब मुझे छोड़ तुम कहीं जाना तक पसन्द नहीं करते जिनसे मैं असहन करती थी और अब तुममे स्वार्थ को साधने की बातें अधिक महत्वपूर्ण हो गई है ।" 256

चोपड़ा और विभू की कुण्ठा से सम्बन्धित कई और उदाहरण मिल जाते है । विभू एक प्रकार के जीवन से ऊब जाने के कारण साथ रहते हुए भी कभी-कभी अजनबी की तरह जीते है । जैसे कि विभू को चोपड़ा का उसके कमरे में बिना इजाजत से दाखिल करना भी अच्छा नही लगता है ।

255· अन्तराल - मोहन राकेश - पृ· 98·

256· उस पार का अंधेरा - सुदर्शन चोपड़ा - पृ· 12·

"रिश्ते" :-

पाल अनजाने में ही उमी की ओर आकर्षित हो जाता है और विवाहित होते हुए भी सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। किन्तु बाद में बहुत पश्चाताप करता है। वह कई बार उसे छोड देने की सोचता है पर ऐसा कर नहीं पाता है। उपन्यास में ऐसी कई स्थितियां मिल जाती है। जहाँ पाल अपने आप से झगड़ता हुआ और कुण्ठित पाया जाता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि सही मार्ग को न चुन पाना है। जैसे - "इन चन्द ही मिनटों में शायद बीसियों बार उसके भीतर से कुछ उफन-उफन फूट पड़ने को हो आता रहा कि वह दूं उतर जाओं उमी! उतर जाओ तुम नहीं जाओगी। जो होगा देख भुगत लेंगे। मगर फिर-फिर उसका विवेक उस तुफान पर ठक्कर लगा कर जोर से दबा देता पागल मत बनो पॉल। अपने-आपको कुतरने से बचाओं।"257

"नावें" :-

मालती के जीवन की त्रासदी को जानकर रेवा निगम ने उसकी शादी विजयेश से करा देती है। मालती मात्र उसके साथ रहती है किन्तु बेटी के डर से पति के रुप मे स्वीकार नहींकरती है। विजयेश को हमेशा अपने-आप से नफरत करते देखा जा सकता है। वह कई चीजों को मालती से उपेक्षा करता है न मिलने पर कुण्ठा ग्रस्त हो जाता है जो संभव है।

---

257. रिश्ते - सुदर्शन चोपडा - पृ. 78.

विजयेश इतना अधिक कुण्ठित हो जाता है कि कभी-कभी उसके मन मे आता है कि साफ-साफ मालती से बातचीत कर लें। वह इस तरह गुलाम बन कर जीना नहीं चाहता था। उदाहरण के लिए - "नहीं-नहीं यों नही चलेगा इस तरह को अंकुश और बंधनों की जिन्दगी वह नहीं जी सकता आज शाम को वह मालती से साफ कह देगा।" 258

कुण्ठा के कारण ही वह जब कभी अधिक दुखित होता था तो मालती को डांट भी देता था। क्योंकि वह किसी भी तरह अपने क्रोध को उस पर निकालना चाहता था। तभी विद्रोहात्मक व्यवहार करता है। जैसे -- "पुलिश, किसने कहा था तुमसे यह मेहरबानी करने के लिए ? मै कहती हूँ मुझे कुछ नही चाहिए कुछ भी नही।" 259

"रेत की मछली" :-

रमण इस उपन्यास का गौण पात्र है। वह कुण्ठित है क्योंकि उसके जीवनमें खुशी नही थी। वह कुमुद और शोभन के सुखमय जीवन को देख कर दुखित होता है। उस पर इतना अधिक जिम्मेदारियाँ थी कि वह चाह कर भी उनसे पीछा छोड़ नही पा रहा था। इसका पता कुन्तल से होता है -- "विधवा भाभी के जीवन से बंधे अपने भविष्य के साथ ही साथ रमण शायद यह भी देखता था कि उसके सामने नीले घर में जो जीवन, जो रस है वह उस झझोड़ता है। कुण्ठाओं की भार से

---

258. नावे - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 93.

259. - वही - पृ. 101.

वह तिलमिला उठा । अन्दर ही अन्दर एक विकृत विद्रोह से भर उठा ।" 260

कुन्तल के मन में दुख था कि शोभन उसकी चिन्ता न कर मोनल के पीछे पड़ा रहता है । अगर वह कुछ कहती है तो भी मात्र दुख के उसको कुछ मिलता है । वह आखिर ऐसी स्थिति में पहुँचती है कि न तो वह शोभन से दी गई यातनाओं को सह पाती है और न ही उसे छोड़ पाती है । उसको निरन्तर कुण्ठा से पीड़ित देखा जा सकता है । तभी एक बार जब वह बीमार हो जाती है तो दवाई लेने से साफ इनकार कर देती है । अपने-आपको अधिक दुख पहुँचाकर शोभन का ध्यान आकर्षित करना चाहती है ।

कुन्तल में कुण्ठा और अधिक हो जाती है, जब उसके बीमार रहते हुए भी शोभन, मोनल की अधिक परवाह करता है । पर कुछ कह न पाने के कारण कुन्तल सब सह लेती है । वह अपने-आप से संघर्ष करती है । किन्तु इस पर काबू न पाने के कारण कुण्ठा के साथ ईर्ष्या, दुख और असहाय की भावना भी उसमें बढ़ जाती है । इसकी पुष्टि इन वाक्यों से होती है - " यहाँ पंख कटे पंछी की तरह उड़ने में असमर्थ छटपटा रही हूँ इसी तरह छटपटाते पूरा दिन रात पूरी रात बीत गयी । मन उखड़ गया है । रेत में डूब गयी है । आँखों में, मुँह में हाथों और पैरों के कण-कण में रेत समा गयी है । उसकी घुमन से कराह उठाने के अतिरिक्त कुछ नही कर सकती । " 261

260· रेत की मछली - कान्ता भारती - पृ· 13·

261· - वही - पृ· 172·

"तीसरा आदमी" :-

नरेश सरकारी नौकरी में तो है किन्तु सन्तुष्ट नहीं है क्योंकि उसकी आर्थिक सुधारने के बदले स्थिर हो गयी थी । जिसके कारण न केवल वह बल्कि उसकी पत्नी चित्रा सुखी रह सकते थे । इन समस्याओं के कारण ही वह उदास कुण्ठित और शंकी स्वभाव का बन गया था एक बार उसे अपने दफ्तर की निन्दा करते देखा जा सकता है । " मेरी नौकरी ऊपर से चाहें जैसी लगती हो पर मैं वहाँ एक दिन के लिए भी सुरक्षित महसूस नही करता था । हम स्टाफ आर्टिस्टों के बड़ी पतली हालत रहती है । हर बेइज्जती हमें सहनी पड़ती थी और जरा जरा सी बातों पर नीचा देखना पड़ता था । इसके बावजूद नौकरी का कोई ठिकाना नहीं था ।" 262

नरेश शारीरिक रूप से स्वस्थ तो जरूर है किन्तु मानसिक रोगी है । जिसकी वजह से वह पत्नी पर संदेह करता है और उससे केवल अपनी जरूरतों की पूर्ति मात्र करने में विश्वास रखता है ।

एक ही कमरे में नरेश, चित्रा और सुमन्त रहते थे । सुमन्त के वही रहने के कारण नरेश, चित्रा से खुल नहीं पाता है । जिसके कारण उसकी काम लिप्सा पूरी नही होती है और वह सुमन्त को हमेशा दुश्मनी की दृष्टि से देखता है । वह मन ही मन यह विचार करता है कि काश यह कमरा बड़ा होता और मैं इच्छाओं की पूर्ति कर पाता । जैविक इच्छा की पूर्ति न होने के कारण ही नरेश में कुण्ठाओं का उदय होता है ।

262· तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ· 21·

जो इन वाक्यों से स्पष्ट होता है - " नरेश के बेचैन मन के विचार को यहाँ दिया जा सकता है । रात होते-होते मन इतना छटपटाता था कि दीवारें तोड़कर कमरे को कुछ और खुला करने के लिए अकुलाने लगता था ।" 263

कुण्ठाओं के कारण ही नरेश का असली अस्तित्व उभर कर नहीं आता है । उसे शुरू से अंत तक तड़पता, छटपटाता ही पाया जाता है ।

"टुण्डा लाट" :-

सुनील का युद्ध में दांया हाथ बुरी तरह जख्मी हो जाने के कारण काट दिया जाता है । जिसके फलस्वरूप उसे नौकरी से भी निकाल दिया जाता है । संगीत की विद्या को भी पूरा नहीं कर पाता । नौकरी से निकाल दिये जाने पर घरवालों को दुख के साथ क्रोध भी आता है जो एक-दूसरे पर दिखाते नजर आते हैं । पेंशन, ग्रेच्युइटी आदि के आने पर घरवालों का तनाव कम होता है किन्तु सुनील अपनी असहाय दशा को देखकर दुखित होता है । अपने जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति न होने के कारण कुण्ठाग्रस्त और निराश दिखाई देता है ।

सुनील जब कभी अपना कटा हाथ देखता तो उसमें अपने प्रति हीन भावना, तनाव और कुण्ठा बढ़ जाती है और वह लोगों से कटे हाथ को छिपाने की कोशिश करता था । इसका ज्ञात इन वाक्यों से

---

263. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ. 29.

होता है -- " अपने कटे हुए हाथ की चाह करके सुनील पर एक बार फिर उदासी छा गयी । कारीडार में चक्कर लगाना छोड़कर वह लोगों की नजरों से बचने के लिए बैक-लेन में चला गया और एक छोटे से रेस्टरां में घुस गया वहाँ उसने खाना खाया और चाय का कप सामने रखे रहा ।" 264

उसे एक हारे हुए सिपाही की तरह जिन्दगी के प्रति किसी प्रकार की इच्छा नहीं थी । सभी दिशाओं में उसे केवल निराशा-ही-निराशा नजर आता था ।

" प्रतिध्वनियाँ " :-

नीलकान्त को बचपन में अपने माता-पिता से प्यार नहीं मिला था । जो उसके व्यवहार से स्पष्ट होता है । तभी वह हमेशा प्यार की चाह में भटकता फिरता है । धन और यश की प्राप्ति के लिए वह अपना मान मर्यादा को भी खो देता है । नीलकान्त का व्यक्तित्व कुण्ठा से भरा हुआ है । जैसे -- " मोतीबाई शहर की मशहूर तबायत थी स्वर और सौन्दर्य अनिन्दय प्रतिभा । शुभा, अचला, जया और मोतीबाई मेरे प्राणों को स्वर की थी में ध्वनित ये चार नारी कंठ ।" 265

---

264. कुण्डा लाल - जगदीश चन्द्र - पृ. 219.

265. प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल - पृ. 69.

"किसमुली" :-

किसमुली अनाथ थी तभी यह स्वाभाविक था कि उससे न ही कोई ठीक ढंग से देखभाल या प्यार किया करता था । परन्तु वह इसको चाह में निरन्तर भटकते रहती है । काको के अपने बच्चे न होने का दुख था और इस कमी को किसमुली को सहारा देकर कुछ हद तक पूरा करती है ।

किसमुली की इच्छाओं की पूर्ति न होने के कारण ही कुण्ठित थी । तभी कभी-कभी बिना किसी शर्म के कपड़े भी उतार के फेंक देती है । वह पगलों के समान व्यवहार करती थी तभी लोग उसे पागल समझ बैठे थे किन्तु वह पूर्ण रूप से स्वस्थ थी । उसके कुण्ठा से सम्बन्धित उदाहरण इस प्रकार है - "कभी-कभी निःसंकोच अपने सारे कपड़े उतार वह टंको पर रख देती तो है मैं लज्जा से मुँह फेर लेती । कुछ क्षणों के लिए उसकी लज्जा जैसे स्वयं मेरी ही लज्जा बन जाती ।" 266

"परछाइयों के पीछे" :-

सुमित्रा नाम मात्र के लिए महीपाल की पत्नी थी । उसको दुख के सिवा और कुछ मिला ही नहीं था । महीपाल हमेशा परेशान रहता था और सुमित्रा को भी रखता था । महीपाल की आदतों से सुमित्रा ऊब चुकी थी किन्तु चाह कर भी उसे त्याग नहीं पाती है और रिश्ते के बोझ को ढोती चली जाती है । वह दुखित और कुण्ठित रहती थी ।

---

266. किसमुली - शिवानी - पृ.7.

उसकी स्मृति के अंश के द्वारा कुण्ठा का ज्ञात होता है - " हमेशा भागता ही रहा था, शुरू दिन से समस्याओं खडी कर दी थी । अच्छी खासी देहरादून में ही नौकरी थी । पैसा, सुविधा, स्थापित हर लिहाज से अच्छी पर बिना कुछ सलाह लिये-दिए आज पहुँच गए दिल्ली । एक बंधी बंधाई नौकरी छोड़कर एक प्राइवेट फर्म में नौकरी कर ली । जनाब के दिमाग को कोई क्या कर लें । "[267]

"सुबह के इंतजार तक" :-

भानू को दुख है कि उसका जन्म निम्न मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था । उसके घर में शान्ति नहीं थी क्योंकि घर को आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी । भानू खुद कहते हैं कि उसके माता-पिता कभी घर की स्थिति को सुधारने की कोशिश नहीं करते थे । पिता तो केवल नौकरी की तलाश करते थे वह भी कोई बड़ी छोटी नौकरी मिलने पर भी झूठी शान के कारण करते नहीं थे ।

घर के स्थिति का सीधा प्रभाव भानू और अन्य बच्चों पर पड़ता है । इन बच्चों के कई प्रकार की इच्छायें थी पर एक भी पूरी नहीं हो पाती है जिसके कारण हीन-भावना और कुण्ठा का उदय होता है । यहाँ भानू के विचार को दिया जा सकता है जो उसके घर की स्थिति को स्पष्ट करती है जो उसके कुण्ठा के उदय का कारण भी था -- " अपनी याददाश्त में हमने कभी पिताजी को कोई नौकरी करते नहीं, बस लगातार दिन के दिन कड़ी धूप, कड़ी ठंडक और बारिश

---

267. परछाइयों के पीछे - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 11.

में नौकरी तलाश करते हुए ही देखा । कभी-कभी बीच में कुछ-कुछ महीनों को नौकरी लग जाती । कुछ दिन अपेक्षाकृत चैन से कटते फिर वहीं पुरानी तलाश और दर-दर भटकने का सिलसिला शुरू हो जाता ।" 268

मनुष्य इच्छाओं से बंधा हुआ है । एक इच्छा की पूर्ति होते ही दूसरे की पूर्ति के बारे में सोचता है ।इस तरह इच्छाओं का अंत ही नहीं होता एक के बाद एक आता ही जाता है । कुण्ठा का उदय तभी होता है जब दो या दो से अधिक इच्छाओं का उदय हो जाता है तो किसकी पूर्ति किया जाय यह गंभीर प्रश्न व्यक्ति के सामने उत्पन्न होता है । ऐसी स्थिति में व्यक्ति मानसिक रुप से तड़प उठता है ।

आठवें दशक के उपन्यासों में कई पात्रों को कुण्ठा से पीडित देखा जा सकता है । इसके पीछे प्रमुख कारण कुछ इस प्रकार है -- अपनी इच्छा की पूर्ति करने का प्रयास किन्तु मार्ग न सूझना क्योंकि दूसरों के द्वारा दी गयी सलाह पर ध्यान देना । घर का वातावरण अनुकूल न होने पर भी कुण्ठा का उदय होते देखा जा सकता है । आर्थिक स्थिति का अच्छा न होना और प्रयास करने पर भी व्यर्थ हो जाने के कारण कुण्ठा का उद्भव होना । इस तरह कई और भी मिलते है जिनके कारण पात्रों में कुण्ठा का उदय होते देखा जाता है ।

268• सुबह के इंतजार तक - सूर्यबाला - पृ• 11•

4.8

निर्मूल भ्रम :- (Hallucination)

आठवें दशक के उपन्यासों में कुछ पात्रों को निर्मूल भ्रम से पीड़ित देखा जा सकता है । जो असामान्य व्यक्तित्व का सूचक है । नीचे पूर्ण विवरण के साथ तालिका दिया जा रहा है ।

निर्मूल भ्रम

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृ.सं.
काली आंधी	मालती	37
किसनुली	काकी	35
परछाइयों के पीछे	सुमित्रा	40

"काली आँधी" :-

मालती को राजनीति में उसके पति जग्गी बाबू लाते हैं। प्रोत्साहन पाकर दिन-प्रतिदिन-उन्नति करती चली जाती है । जिसके कारण दोनों के संबंध टूट जाते है । पुन: उनकी मुलाकात होती है वे फिर से संबंध जुड़ाना चाहकर भी जोड़ नही पाते है ।

मालती को हमेशा लगता है कि उसके पति फोन कर उससे बात करेंगे। तभी वह एक बार फोन की घंटी न बजते हुए भी सुनती है और अपने नौकर को बुला कर पूछती भी है। यह तो उसका निर्मूल भ्रम था अर्थात घंटी के न बजने पर भी घंटी का सुनाई देना। उदाहरण के लिए -- " मालती जी ने फोन का रिसीवर एकाएक झटके से उठाया था और कान से लगा लिया था। कोई नम्बर चाहिए। नहीं घंटी बजी थी न ? फोन को। फोन को हाँ मालती जी ने कहा था। मैंने तो नहीं सुनी बिंदा बोला था। अच्छा ! बुदबुदाते हुए मालती जी ने कहा था और रिसीवर रख दिया था और वे लस्त होकर लेट गई थी।" 269

" किशनुली " :-

काका और काकी कुछ कमियों के होते हुए भी सन्तुष्ट करते थे। किशनुली के आ जाने पर काकी का अधिक समय उसी के साथ बीतता था। काका के न चाहने पर भी अपने उपर काबू न होने पर बहुत बड़ा अपराध कर बैठते है और उस से बचने के लिए तीर्थ यात्रा में निकल जाते है। काकी को यथार्थ का ज्ञान नहीं था। वह हमेशा अपने पति को मात्र अच्छे व्यक्ति के रूप में ही देखती है। कई वर्षों के बीत जाने पर भी वह उस घर को त्याग कर नहीं जाना चाहती है क्योंकि उसका यह विश्वास है कि अभी भी उसका पति उसके साथ उसी घर में रहता है और बात भी करता है। यह सिरफ भ्रम है, सत्य नहीं।

---

269. काली आंधी - कमलेश्वर - पृ. 37.

उदाहरण के लिए काकी के कथन को दिया जा सकता है -
कैसे छोड दूँ परखों को दे लो ? लगता है उस कमरे में पंभिज्यू संध्या कर रहे है । अभी कहेंगे, चाय लाओं हो पन्याणी ज्यू । रात को भी सोती हूँ तो लगता है चुपचाप बगल में आकर लेट गए है अरी ! उतनी दूर चली गई तो कहाँ ढूढेगी उनकी आत्मा मुझे उस परदेश में ।"[270]

"परछाइयों के पीछे" :-

सुमित्रा कभी महीपाल के साथ खुश नहीं रह पाती है । वह किसी-न-किसी बहाने उसे दुख पहुँचाता रहता है । उसे न तो मुक्त करता है और बच्चों के साथ रहता था सुख प्रदान करता है । सुमित्रा जब पुत्र को जन्म देती है तो वह मन-ही-मन डर जाती है कि महीपाल बेटी की तरह इसे भी छिन ले जायेगा । यही डर उसके अचेतन मन में दमित होकर भ्रम के रूप में प्रकट होता है । वह जोर से चिल्लाने लगती है कि वह गिर रहा है आदि । इस उदाहरण को यहाँ दिया जा सकता है -- " भइया जमीन पर गिर रहें है उन्हें पकडो । भइया धरती पर गिर रहे है ? आँखे खोलकर देखों बिटिया रानी भइया तो तिहारी बगल में आराम में लेटे पडे है । इनमें अभी समरथ है हिलने-डुलने की ? अभी तो बिटिया तुम इन्हें जहाँ दुख दोगी वहीं लौटे से पडे रहेंगे ।"[271]

---

270. किमनुली - शिवानी - पृ. 35.
271. परछाइयों के पीछे - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 40.

5.9

लैंगिक विपर्यास एवं सन्दर्भ :-

लैंगिकइच्छा सामान्यतः सभी में पायी जाती है। समाज में कई ऐसे व्यक्ति मिल जाते है जिनका व्यवहार सन्तुलित होता है। किन्तु लैंगिक असामान्य होती है। इसके कारण वे स्वस्थ होकर भी अस्वस्थ है।

आठवें दशक में से चुने गये उपन्यासों में कई पात्रों में लैंगिक विपर्यास से जुड़ते देखा जा सकता है। इसका पूर्ण विवरण तालिका में दिया गया है।

लैंगिक विपर्यास एवं सन्दर्भ

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	लैंगिक विपर्यास	पृ॰स॰
आपका बंटी	शकुन, बंटी	परपीड़न	46, 163
रेत की मछली	शोभन	परपीड़न	191
अनामदास का पोथा	रैक्व	जड़सक्त प्रेमी	325, 378
अकेली आवाज	बंटु	परपीड़न रति	11, 67
उखड़े कदम	विश्वा	परपीड़नरति	34
प्रतिध्वनियाँ	नीलकान्त	परपीड़नरति	37, 85
किशनुली	किशनुली	प्रदर्शनवृत्ति	9
परछाइयों के पीछे	महीपाल	परपीड़नरति	142
कोई तो	राकेश	स्वपीड़नरति	226

"आपका बंटी" :-

शकुन को अपने पति से बिछुड़ने का दुख है किन्तु अपने-आप में समर्थ होने के कारण उसे व्यक्त नहीं करती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि अजय को दुखित करने का उसका लक्ष्य था। उसे यह पता था कि अजय को भी बंटी से बहुत प्यार है तभी बंटी को माध्यम बनाती हैं। अजय को दुख पहुँचाकर उसे आनन्द की प्राप्ति होती है। इस प्रकार के स्वभाव को परपीड़न कहते हैं। जैसे -- "बंटी के न मिल पाने की वजह से अजय को जो यातना होगी उसकी कल्पना मात्र से उसे एक क्रूर-सा सन्तोष मिलने लगा।"[272] एक और उद्धरण से उसकी क्रूर मानसिकता स्पष्ट होती है - "बंटी केवल उसका बेटा ही नहीं है वह हथियार भी है जिससे वह अजय को टारचर कर सकती है, करेगी।"[273]

डॉ॰जोशी के यहाँ आ जाने पर बंटी को मन-ही-मन दुख होता है कि उसकी मम्मी अब उस पर पूरा ध्यान नहीं दे रही है। अक्सर वह इस कोशिश में रहने लगता है कि किसी भी तरह अपनी मम्मी को दुखित करें। जब कभी मम्मी को चिन्ता करते या दुखित देखता है तो उसे बहुत सन्तोष होता। इसका मूल कारण यह है कि वह इस नये घर में खुश नहीं था किन्तु अपनी मम्मी को खुश देखकर वह सहन नहीं कर पा रहा है। उसे यह पता था कि मम्मी उसे बहुत प्यार करती है। इसलिए वह ऐसी हरकतें करता है जिससे मम्मी को दुख पहुँचे। अतः कहा जा सकता है कि बंटी में भी परपीड़न मानसिकता को देखा जा

272॰ आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ॰ 46॰

273॰ - वही -

सकता है । इस भाव की पुष्टि के लिए यह उद्धरण दिया जा सकता है -- " अभि और जोत-अपनी-अपनी मेज पर बैठकर काम करेंगे । उसने तो एक कोने में जमीन पर ही अपना सब कुछ जमा लिया । इन दोनों के साथ जब वह रोज-रोज जमीन पर बैठकर पढ़ा करेगा तो मम्मी कितनी दुखी होंगी, अच्छा है वह चाहता है कि मम्मी परेशान हो दुखी हो ।"[274] बंटी खुद अपने बदलते भावनाओं को महसूस करता है । जैसे -- " यहाँ आकर जाने कैसे मम्मी की परेशानी और दुख के साथ उसका सन्तोष और सुख जुड़ गया है, एक बदला ।"[275]

बंटी जान बुझकर कई बार ऐसी हरकत करता है जिससे उसकी मम्मी को दुख पहुँच जैसे कि अपने पिताजी को देखकर लिपट जाना । यह दिखाने के लिए कि वह अब उसकी माँ का नहीं है ।

"रेत की मछली" :-

शोभन का प्यार कुन्तल के प्रति, मीनल के आ जाने पर कम हो जाता है । कुन्तल अपने सामने ही शोभन का मीनल के साथ जाना सहन नहीं होता । जिसके कारण वह मीनल को भला-बुरा कहती है जो शोभन खुद की निंदा समझता है । मानसिक और शारीरिक यातनाओं को देकर खुश होता है । शोभन के इस तरह के व्यवहार से कहा जा सकता है कि वह स्वभाव से परपीड़न रति है । शोभन के स्वभाव की पुष्टि करने के लिए यहाँ कुन्तल किस प्रकार की यातना

---

274. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ. 163.

275. - वही -

सहती है दिया जा सकता है -- " झटके से बलपूर्वक जमीन पर पटके जाने के बाद कमर और पसलियाँ के पास जूते की नोक की भरपूर ठोकर और उठाकर दुबारा जमीन पर पटक दिया जाना । उन थोड़े से क्षणों में एक असहाय चीख भी गले में ही सूख गयी थी ।" 276

" अनामदास का पोथा" :-

इस उपन्यास में रैक्व में साधारण, विकृति देखी जाती है जिसे जड़ासक्त प्रेमी के नाम से जाना जाता है । किसी विशेष पदार्थ या चीज को प्रेम का प्रतीक बनाना जो प्रेमी के द्वारा उपयोग किया जाता हो । इस तरह के व्यवहार को जड़ासक्त प्रेमी कहा जाता है ।

रैक्व, शुभा की ओर आकर्षित होता है और उससे पुन: मिलने की आशा में रहता है किन्तु उससे जब मुलाकात नहीं होती है तब वह अधिकांश समय रथ के नीचे बैठ कर समय बिताता है और वही चिन्तन भी करता है । सत्य तो यह है कि रथ के प्रति उसके मन में एक प्रकार का लगाव उत्पन्न हो गया है । इस बात की पुष्टि करने के लिए उपन्यास में कई उदाहरण मिल जाते हैं । जिससे यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रैक्व जड़ासक्त प्रेमी था । " तीन दिन, तीन रात, ऋषिकुमार उस रथ के पास बैठे रहे । उन्हें आशा थी कि कोई-न-कोई उसे लेने आयेगा । राजकुमारी के कुछ समाचार मिलेंगे ।

276· रेत की मछली - कान्ता भारती - पृ· 18191·

कोई नहीं आया । उन्होंने रथ को खोपकर उस स्थान पर रखा जहाँ राजकुमारी बैठी थी । उसी की छाया में मैं बैठकर चिन्तन करने लगी ।"[277]

शुभा से मिलने पर भी वह तप और समाधि लगाने के लिए गाड़ी की जरूरत महसूस करता है क्योंकि उसने गाड़ी से भी एक प्रकार का सम्बन्ध जोड़ लिया है । रैक्व के अनुसार शुभा तो उसकी है ही साथ ही वह गाड़ी भी उसी की है । जो वह बड़े अभिमान के साथ माता ऋतुंभरा से कहता है -- " शुभा की है ? हाँ है तो । मगर लगता है माँ कि जो वस्तु शुभा की है वह मेरी भी है ।" [278]

"अकेली आवाज" :-

बंटू को अधिक लाड़-प्यार मिलने के कारण वह हद से अधिक बिगड़ गया था । अपने माता-पिता की बात तो कभी नहीं मानता था साथ ही नीता मिस की भी निंदा करता था । नीता मिस जब कभी उसे पढ़ाने के लिए जबर्दस्ती बैठती तो और अधिक नाराज हो जाता था । तभी वह अपने मिस के बारे में शिकायत कर खुश होता था । अर्थात् दूसरे को दुखित कर वह सुख का अनुभव करता था । उसने एक चित्र बनाया था । चित्र में दिखाया गया था कि नीता मिस रो रही है । उनके पास ही बंटू बैठा है और जोर-जोर से हंस रहा है ।"[279]

---

277. अनामदास का पोथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ. 325.
278. - वही - पृ. 378.
279. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 11.

बंटु न केवल नीता मिस को तंग करता है बल्कि स्कूल में अपने सहपाठियों को भी दुख पहुँचाकर आनन्द की प्राप्ति करता है ।

बंटु कभी भी दूसरो को आगे बढ़ते देख नहीं सकता था । अगर ऐसा कभी होने पर वह सहन नहीं कर पाता था । उसकी सहपाठी आशा को घुड़सवारी करना न आने पर भी उसके साहस को देखकर बंटू को जलन होता है और उसे तंग करने को सोचता है । थोड़े दूर जा कर आशा घोड़े से गिर जाती है जिसे देखकर वह खुश होता है । बंटु के इस तरह की मानसिकता को परपीड़न रति कहा जा सकता है । " बुटु ने पीछे से उसके घोड़े को एक कोड़ा लगा दिया फिर क्या था, घोड़ा हवा से बाते करने लगा थोड़ी दूर जाकर आशा नीचे गिर पड़ी बंटु ने पास जाकर घोड़ा रोका और खुब हंसा ।" 290

"उखड़े कदम" :-

विश्वा स्वार्थी है । पत्नी को माध्यम बना कर उच्च पद की प्राप्ति करना चाहता है । उसके प्रस्ताव को सुन कर सुनीता को दुख होता है और अपने मान-मर्यादा को खोने से जब साफ इनकार करती है तो विश्वा दिल दुख देने वाली बातों को कहता है । वह इतना नीच स्वभाव का है कि अपना काम करने के लिए पत्नी पर शंक करता है । हालांकि विश्वा और सुनीता गलती करते है किन्तु विश्वा यह अहसास दिलाना चाहता है कि उसने सुनीता को अपना कर महान

---

290. अकेली आवाज - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 67.

कार्य किया है । उसके कथन से यह साफ कहा जा सकता है कि वह पर पीड़न मानसिकता वाला व्यक्ति है — "अच्छा, अब गिरने का ख्याल आया है । श्रीनगर में नही गिरी थी जब एक की पत्नी होकर औरों के साथ मजे करती थी । वहाँ पता नही किनों के साथ पिकनिके की होगी । वह तो अपने दोस्त की वजह से घर में डाल लिया वरना .... । "231

विश्वा को अगर ब्रिट्रोसर से बदला ही लेना था कोई और मार्ग अपना सकता था किन्तु यह सोच कर कि जब अंग्रेज भारतीय नारियों के साथ बुरा व्यवहार कर सकते है तो क्यों नही वह कर सकता है । इस सोच के अलावा उसमें यह भी अहम था कि वह अब उच्च पद से भी है । वह हर किसी को दुख पहुँचता है जो उसका कुछ भी नही बिगाड़े थे और ऐसा कर सन्तुष्ट हो रहा है । ऐसा व्यवहार परपीड़न रति का ही उदाहरण है ।

"प्रतिध्वनियाँ" :-

नीलकान्त अपनी मर्जी से विवाह न करने के कारण अपनी बेटी को भी प्रेम विवाह करने से रोक देता है क्योंकि वह यह सहन नही कर पाता कि उसकी बेटी मनमौजी करें । रागिनी चुप न रह कर वह अपने पिता को बुरा-भला कहती है । नीलकान्त बाद में अपनी गलती को भी पहचानते है और अपने हाथों से फूल के समान बेटी का जीवन बरबाद करने पर अत्यधिक दुखित होते है । नीलकान्त

---

231. उखड़े कदम - राजेन्द्र अवस्थी - पृ. 34.

का इस प्रकार जान बूझकर बेटी का जीवन बिगाड़ने की क्रिया को परपीड़न रति या इस स्वभाव को परपीड़न कहा जाता है। जिस सुख से उसे वंचित किया गया था उसी सुख को अपनी बेटी को न देकर सन्तुष्ट का अनुभव कर रहा है।

नीलकान्त अपनी प्रियतम को याद करते हुए सोचता है कि उसकी बेटी भी तो वैसी ही थी। जैसे -- "फूलों सा यह नैसर्गिक आकर्षण तो शुभ्रा में था जिस कमल पंखुड़ियों सी आँखें मुझे उस मानसरोवर झील की याद दिला देती, जहाँ मानसरोवर के गहरे नीले जल में शुभ्र कमल खिलते हैं।" 282

नीलकान्त न केवल पत्नी के साथ अन्याय करता है बल्कि पत्नी के प्रति भी उसका व्यवहार अच्छा नहीं है। उसकी हमेशा एक ही धारणा है कि जब उसके जीवन में खुशी प्राप्त नहीं हो पाया तो दूसरों को क्यों खुशी दे। यही कारण है कि अपनी पत्नी को दुखित कर मन-ही-मन तुलना करता है कि यह पहली स्त्री तो नहीं है जिसे वह दुखित किया है। ऐसे कई और स्त्रियाँ थी जिनको वह दुखित किया था। जैसे -- "मैं अपला के साथ अन्याय कर रहा हूँ किन्तु यह पहला अन्याय तो नहीं था। शुभ्र के साथ, जया के साथ या मोतीबाई के साथ ही मैं न्याय कहाँ कर पाया था।" 283

---

282. प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खंडेलवाल - पृ. 37.
283. - वही - पृ. 85.

"किसनुली" :-

किसनुली जिसे पगली के नाम से बुलाया जाता था । उपन्यास के सम्पूर्ण अध्ययन के बाद कहा जा सकता है कि वह पगली नही थी किन्तु वह लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ऐसा व्यवहार किया करती थी ।

किसनुली में प्रदर्शनवृत्ति के गुण पाये जाते है । जो एक प्रकार का लैंगिक विपर्यास है । उसे कई बार बिना मतलब के कपड़े उतार के फेंकते देखा जाता है । जिसे देख कर यह सिद्ध होता है कि उसमें विकृति है । ऐसा वह दो कारणों से करती होगी एक तो कुण्ठा दूसरा उसका आकर्षण शास्त्री जी के प्रति है जिसे वह पश्चात पूरा करती है । किसनुली की कमजोरी का स्पष्टीकरण इस उदाहरण से किया जा सकता है -- " कभी-कभी नि:संकोच अपने सारे कपड़े उतार वह टंकी पर रख देती तो मै लज्जा से मुँह फेर लेती । कुछ क्षणों के लिए उसकी लज्जा जैसे स्वयं मेरी ही लज्जा बन जाती । हाय कैसे निर्मोही निर्दयी माँ-बाप होंगे कोई देख ले तो ।" 284

"परछाइयों के पीछे" :-

महीपाल में कई प्रकार की कमियां है जिनको छिपाने के लिए वह अपनी पत्नी को अपने नियंत्रण में रखता है । साथ ही पत्नी को दुख पहुँचा कर वह सन्तुष्ट होता है । वह अपनी जरुरतों की पूर्ति के

---

284. किसनुली - शिवानी - पृ. 7.

बाद कई बार पत्नी को घर से निकाल देता है जो उसके दुष्टता का परिचय देता है । अत: कहा जा सकता है कि महीपाल में परपीडन रति का स्वभाव है । उदाहरण के लिए उनके कथन का अंश यहाँ दिया जा सकता है -- "मुझे सब कुछ याद है पर मै तुम्हें लेने नहीं गया था मै अपने बच्चे को लेने गया था और उसे ले आया अब मुझे तुमसे कोई मतलब नहीं है । जाओ अपना रास्ता नापों ।" 285

महीपाल स्वभाव से इतना अधिक नीच है कि वह अपनी पत्नी के बारे में दूसरो से कहता फिरता है । उसकी दृष्टि से वह मात्र अच्छा है और बल्कि सब बेकार है ।

"कोई तो" :-

राकेश राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेता है उसमें सुरा और सुन्दरी के प्रति कमजोरी थी जिसके कारण वह मंत्री मंडल के पद को प्राप्ति नहीं कर पाता है । इसका पता चलने के साथ-साथ कारण से भी वह परिचित था । तभी वह पूँजीपति अजित केडिया की बेटी रति को बुलाता है जो उसकी बदनाम की मूल वजह थी । तभी वह बडे नाटकपूर्ण शादी का प्रस्ताव उसके सामने रखता है किन्तु वह साफ इनकार कर चली जाती है । जिससे वह अपने-आप से क्रोधित होता है । अपनी इच्छा की पूर्ति न होने के कारण वह अपने-आप को चोट पहुँचता है । इस प्रकार की क्रिया को स्वपीडनरति कहते है जो विकृति है ।

---

285. परछाइयों के पीछे - शशिप्रभा शास्त्री - पृ. 142.

इससे सम्बन्धित उद्धरण इस प्रकार है - "रति खिलखिला पड़ी और द्रुत गति से चली गयी । राक्षा की खोज का पार नहीं था वह कई क्षण बांकिमा की मुद्रा मे अपने पर ही आघात करता हुआ घूमता रहा ।" 286

4.10

मन: स्नायुविकृति (Psychoneurosis) मनोग्रस्तता बाध्यता मन -

स्नायुविकृति :-

प्राय: मनुष्य किसी न किसी मनोविकार का शिकार हो जाते है। यह जब तक अधिक समस्या का रूप नही लेता है तब तक इससे छुटकारा पाने के उपाय नहीं सोचता है । इनके बारे में ज्ञान तो साहित्यकार को होता है या नही । यह कहना कठिन है परन्तु साहित्य में इस तरह के लक्षणों को पाया जा सकता है । उदाहरण के लिए आचार्य द्विवेदी के " अनामदास का पोथा " उपन्यास के नायक रैक्व में यह मनोविकार पाया जाता है । अपराध भावना के साथ यह मनोग्रस्त-बाध्यता-विकार को इतनी अच्छी तरह से जोड़ा है कि ऐसा लगता है मानों आचार्य द्विवेदी को असामान्य मनोविज्ञान का ज्ञान है ।

रैक्व की पीठ में खुजली होती है । जिसके कई कारण है । एक तो वह जब कभी भी खुजलाता है तो तुरन्त शुभा को याद करता है । इसे " साहचर्य " कहते है । दूसरा कारण यह है कि उसके मन में अपराध की भावना दबी हुई है । इसलिए वह सोचता है कि पीठ की खुजली

---

286. कोई तो - विष्णु प्रभाकर - पृ. 226.

के द्वारा वह अपने पाप से मुक्ति पा सकता है । असामान्य मनोविज्ञान के अनुसार यह एक प्रकार का मनोविकार है जिसको मनोग्रस्ति बाध्यता विकार कहते हैं जिसमें व्यक्ति अपने अपराध-भावना से छुटकारा पाने के लिए कोई ऐसा शारीरिक क्रिया करता है जिससे थोड़े समय के लिए महसूस करता है कि उसने अपराध से छुटकारा पा लिया है । जैसे रैक्व के मन में अपराध की भावना इतने गहन रूप से बैठ गया था कि बार-बार बिना उसके ज्ञान के ही पीठ पर हाथ पहुँच जाता था क्योंकि वह खुजलाते हुए सोचता है कि वह जो पाप अर्थात् अपराध किया है उससे वह मुक्ति पा रहा है ।

4.11
मूल्यों (values) में परिवर्तन टूटते सम्बन्ध :-

प्रत्येक मनुष्य अपना कोई-न-कोई मूल्य बनाता है । वह अपने से पोषित मूल्यों ही मानने वाले लोगों के साथ ही रहना पसंद करता है । विशेषकर विवाह के पश्चात् पति-पत्नी के मूल्यों में परिवर्तन आ जाने पर ही कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती है और जिसका अंत सम्बन्धों को टूटते देखा जाता है । आठवें दशक के उपन्यासों के कई पात्र ऐसे मिल जाते है जिनमें मूल्यों में परिवर्तन आने के कारण सम्बन्धों का विच्छेद होते देखा जा सकता है ।

निम्नलिखित तालिका में इससे सम्बन्धित विवरण दिये गये है ।

मूल्यों में परिवर्तन टूटते सम्बन्ध

उपन्यासों के नाम	पात्रों के नाम	पृ.सं.
आपका बंटी	शकुन	115
उस पार का अंधेरा	चोपड़ा	70, 77
उसके हिस्से का धूप	मनीषा	72
उखड़े कदम	अशोक	10
कोई तो	वर्तिका	--

"आपका बंटी" :-

शकुन और अजय का सम्बन्ध टूटने का मुख्य कारण मूल्यों में परिवर्तन आ जाता है। शकुन अपने पद और प्रतिष्ठा की ओर अधिक ध्यान देती है उसके लिए घर से अधिक महत्वपूर्ण उसकी नौकरी है। इनके कारण ही उसमें अपने प्रति अहम भी बढ़ता गया। इस प्रकार की भावना अजय में भी पायी जाती है। वह भी किसी प्रकार से अपनी पत्नी से समझौता करना नहीं चाहता है।

मूल्यों के परिवर्तन के कारण ही शकुन, डॉ.जोशी से विवाह करने को तैयार हो जाती है और अपनी विचारधारा को पुन: बदलने में विश्वास करती है। इससे सम्बन्धित इस उदाहरण को दिया जा सकता है -- नहीं, नहीं चलेगा चल नहीं सकता ये दोनों ही अब

अपनी-अपनी जिन्दगी जिएगें और तभी तो धीरे-धीरे काटकर बंटी को और अधिक आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की है ।" 287

"उस पार का अंधेरा" :-

चौपड़ा अपनी पहली पत्नी और बेटो को इसलिए त्याग देता है क्योंकि उनके मूल्यों में परिवर्तन आ गया था । अर्थात् - चौपड़ा के जीवन के प्रति विचार धारा और आवश्यकता मे परिवर्तन आ गया है । इतना ही नहीं चौपड़ा यह महसूस करने लगा था कि उसकी पत्नी जरूरतें पूरी नहीं कर सकती है तभी उसे बड़े आसानी से त्याग कर चला जाता है । आगे चल कर विभु नामक स्त्री से बिना किसी प्रकार के बन्धन में बंधे सम्बन्ध जोड लेता है किन्तु कुछ समय के पश्चात उसे ऊबन महसूस होने लगती है । विभा और चौपड़ा के मूल्य शुरू-शुरू में एक ही होने के कारण दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित होते है पर बाद में ऊबन के कारण और विभा के मूल्यों में परिवर्तन आ जाने पर दोनों एक दूसरे से कट कर रहने लगते है । इस बात से चौपड़ा अच्छी तरह परिचित है ।

जिसे वह स्वयं स्पष्ट करता है - "शुरू में हम दोनो की रूचियाँ और आकाँक्षाओं में बहुत समानता थी । बाद में घिर आनेवाले तनाव मे विभु का व्यक्तिगत रूप मे शायद ही कोई दोष रहा हो । अपनी-अपनी आकांक्षा को लेकर ही हम लोगों का मतभेद बढ़ा था ।

---

287. आपका बंटी - मन्नू भण्डारी - पृ. 115.

विभु ने स्वयं को वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुसार ढाल रही थी । मै अन्त तक स्वप्नजीवी बना रहा था । यही से हम लोगों मे दरार पैदा हुई थी ।" 288

चौपड़ा में उदासहीनता और पलायनवादी प्रवृति होने के कारण वह किसी प्रकार की जिम्मेदारी को निभाना नहीं चाहता था । तभी विभा को त्यागने में उसे पहले दुख नहीं होता है । क्योंकि लम्बी-अवधि तक एक ही प्रकार की जिन्दगी जीते हुए वह उब चुकी थी और परिवर्तन की चाह सम्बन्ध विच्छेद में परिवर्तन हो जाता है । चौपड़ा बिगड़ते हुए मामला को समझ कर भी न समझ बना रहता है - " बच्चे न होने के बावजूद हम लोग सुखी थे और बारह वर्ष में इस ओर विभु ने कभी रुचि जाहिर नहीं की थी ढलती आयु में इस तरह उसका सख्त पड़ता मुझे अच्छा नहीं जान पड़ा था । समझ बुझकर कार्य किया था और जाल बिछाकर मुझे ठगा है । " 289

चौपड़ा और विभू के मूल्यों में परिवर्तन तो आ जाता है किन्तु दोनो का सम्बन्ध टूटता नही है । इसका मुख्य कारण यह है कि चौपड़ा में अब शक्ति नहीं है कि वह पुन: किसी और नारी की खोज में जायें और उसकी पहली पत्नी के पास जाने से पीछे हटता है तो अब एक ही मार्ग था कि वह विभा को ही अपना ले ।

---

288. उस पार का अंधेरा - सुदर्शन नारंग - पृ. 70.
289. - वही - पृ. 77.

"उसके हिस्से की धूप" :-

जितेन और मनीषा सभी रूप में समृद्ध है किन्तु दोनों साथ रह कर भी एक दूसरे से जोड़ नहीं पाये है। इसका प्रमुख कारण दोनों के मूल्यों में अन्तर होना है। जितेन अपने काम को अधिक मूल्य देता है। वह चाहता है कि किसी भी तरह उसकी प्रतिष्ठा बढ़े। इस दौड़ में अपनी पत्नी को पीछे छोड़ देता है। मनीषा के अनुसार जीवन मात्र मौज-मस्ती करने के लिए होता है और वह चाहती है कि उसके पति इस बात पर अधिक ध्यान दें किन्तु यह सम्भव न होने पर ही मनीषा जितेन को बड़े आसानी से त्याग देती है क्योंकि वह जिसको अधिक मूल्य देती वही मधुकर में पाती है।

मनीषा के विचार से ही उन दोनों के बीच आये मूल्यों में परिवर्तन के बारे में पता चलता है -- "उसका मन हुआ चिल्लाकर उससे पूछे क्यों हम कभी इकट्ठे कहीं बैठकर इधर-उधर की मामूली बाते नहीं कर सकें ? क्यों हम एक दूसरे से यूँ कटे-कटे इस आलीशान कोठी की चार दीवारी में सड़ रहें है ? क्यों तुम समझ नहीं सकते कि समय मुझे पल-पल करके खाता जा रहा है ? " 290

मनीषा, जितेन से छूट कर तो मधुकर से विवाह कर लेती है किन्तु पुन: कई कारणों की वजह से वह जितेन की ओर आकर्षित होती है। मधुकर के अपने कुछ आदर्श होने के कारण मनीषा को मुक्त

---

290. उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ. 72.

नही करता है । मनीषा न चाहते हुए भी सम्बन्ध को ढोये चली जाती है । अतः कहा जा सकता है कि मनीषा को अपनी आवश्यकताओं का स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है और उसके मूल्य समय के अनुसार आसानी से बदलते भी है ।

"उखड़े कदम" :-

अशोक और सुनील के मूल्यों में परिवर्तन आने पर ही दोनों का सम्बन्ध टूट जाता है । अशोक अपने विवाहिक जीवन को अधिक महत्व न देकर अपने पद के प्रति कर्तव्य का पालन करता है । उसका एक मात्र लक्ष्य रहता है कि किसी भी तरह वह राष्ट्रीय सम्मान की प्राप्त करें । सुनीता अपने पति के मूल्यों से परिचित होकर भी अपनी आवश्यकताओं को अधिक महत्व देती है । जैसे कि वह क्लब में नाचने, पार्टियों और पिकनिक में जाने आदि को अधिक महत्व देती है और इन सबको पूर्ति उसे विधवा से जब पूरा होने लगा तो वह अशोक को नहीं त्यागना चाहती है किन्तु अशोक त्यागने मे ही विश्वास करता है ।

अशोक अपने मूल्यों की पूर्ति कर पाता है किन्तु अब उसके साथ सुनीता नहीं है और आस्पताल में पड़े-पड़े वह कुछ ऐसे सोचता है "अगर आज वह मेरी पत्नी होती तो क्या इस राष्ट्रीय सम्मान पर उसे गर्व न होता ? लेकिन वह मेरी पत्नी रह पाती तब न ? ऐसी तो तभी सम्भव होता यदि मैं उसकी तबीयत की अनुसार चलता । क्लब, नाच पार्टियाँ, पिकनिकें फिर काम कैसे होता ? मिलिटरी की ड्यूटी ? तब क्या यह सम्मान मिलता ? नही ? दोनो साथ कैसे चल सकते है ।"291

---

291. उखड़े कदम - विपिन चतुर्वेदी - पृ. 10.

सुनील आशाओं को लेकर तो आता है और रोमिला की मानसिकता को जानकर उसे बहुत दुख होता है और अपने मूल्यों में परिवर्तन ला कर दुखी मन लौट जाता है ।

"कोई तो" :-

वार्तिका बचपन मे ही बदनाम होने के बाद हारती नहीं है । अपने ऊपर विश्वास होने के कारण पढ़ लिख आगे आती है । वह शादी करने से हमेशा डरती है क्योंकि उसे यह डर है कि कहीं किसी को उसके बारे में पता चल जायेगा तो कोई उससे शादी नहीं करेगा । तुषार से जब वह अपने बारे में सब कुछ बता देती है तो शादी करने के लिए मान जाता है । बाद में अपनी माँ के कहने के माना करने पर बहाने बनाता है ।

वार्तिका भी अपने मूल्यों को खोना नहीं चाहती थी अपने अस्तित्व को बचाकर रखने के लिए ही वह अपने आप तुषार के कहे अनुसार नहीं चलाती है । फलस्वरूप कुछ समय के बाद दोनों का सम्बन्ध टूट जाता है । अत: कहा जा सकता है कि मूल्यों में परिवर्तन आ जाने के कारण और अपने पद और प्रतिष्ठा को अधिक महत्त्व देने के कारण ही सम्बन्ध बनते-बनते टूट गये । वर्तिका पर आधुनिकता का इतना अधिक प्रभाव पड़ा था कि वह किसी के साथ जुड कर अपने-आप को समाप्त नहीं करना चाहती है । उसका विचार है कि बिना किसी बन्धन में बंधे आदमी साथ रह सकता है ।

5.12

निष्कर्ष :-

मनुष्य बुद्धिजीवी होने के कारण उसके विचार करने की शक्ति अन्य प्राणियों से उत्तम है। कई महान लोगों का जन्म हुआ जिन्होंने अपनी-अपनी विचारधाराओं से समाज के प्रत्येक दिशा को प्रभावित किया है। जिससे साहित्य भी एक है। उदाहरण के लिए डार्विन, मार्क्स और फ्रायड की विचारधाराओं ने विशेषकर समाज के सभी दिशाओं को प्रभावित किया।

उन्नीसवी शती के अंत में और बीसवी शती के शुरू में समाज पर मार्क्स और फ्रायड का प्रभाव बहुत पड़ा। इस प्रभाव ने कई साहित्यकारों के लेखन कार्य को प्रभावित किया। मेरा शोध की दिशा आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन होने के कारण यह कहा जा सकता है इस दशक के सभी उपन्यासकार मनो - विश्लेषण के सिद्धान्तो को ध्यान में रखकर अपनी रचना किये है पर कुछ इस श्रेणी के उपन्यासकार मिल ही जाते है। और अन्य उपन्यासों में निश्चित ऐसे कई सन्दर्भ मिल जाते है कि उनका मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इसका कारण यह है कि मनोविश्लेषण मानव का सम्पूर्ण अध्ययन करता है और हर क्रिया को स्पष्ट करता है। उपन्यास मानव के क्रियाकलाओं से ही जुडा हुआ है।

इस अध्याय मे फ्रायड, एडलर, युंग अन्य मनोविश्लेषकों के सिद्धान्तों के आधार पर अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए चुनें गये सभी उपन्यासों मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास के अन्तर्गत नहीं रखे जाने पर भी इनका सफल अध्ययन हो पाया है।

इन उपन्यासों में पायें जाने वाले विशिष्ट सिद्धान्तों से सम्बन्धित सन्दर्भों को एक ही स्थान पर रख कर विवेचन किया गया है। जैसे - पराहम अचेतन, उच्च,हीन और उच्चता प्रयास की भावना, लैंगिक विपार्यस, अपराध की भावना, अहंकार से पीडित, कुण्ठा और अन्तर्द्वन्द्व आदि। अतः कुल चौदहा उपशीर्षकों के अन्तर्गत बीस उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आठवें दशक के उपन्यासकारों ने मानव मन की क्रिया प्रतिक्रियाओं को पकड़ने कि अद्भुत शक्ति है जो विज्ञान की कसौटी पर भी खरा उतरता है। उपशीर्षकों में विवेचित अंश इस कथन की सार्थकता को पुष्ट करता है।

/:

पंचम अध्याय

आठवें दशक के उपन्यासों में उभरे बाहरी सामाजिक संघर्ष : मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

/:

आठवें दशक के उपन्यासों में उभरे बाहरी सामाजिक संघर्ष : मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

5.0 प्रास्ताविक× प्रस्तावना

उपन्यास की रचना में कई तत्व महत्त्वपूर्ण हैं। प्रत्येक रचना को प्रभावित करने वाले कई कारण होते है, जिनके आधार पर रचनाकार अपनी सृजन शक्ति के साथ रचना को सम्पूर्ण आकार देता है। समाज के अतिपरिचित मूल्यों तथा वर्तमान समस्याओं के मध्य संघर्ष को भलीभाँति चित्रित कर उसे किसी सन्तोषजनक और प्रेरक अन्त तक पहुँचाने में उपन्यास का संयोग होता है। प्रत्येक लेखन के पीछे कोई-न-कोई परिवेशगत बदलाव भी आता है जिससे लेखन की दिशा में बदलाव भी आता है। परिवेश केवल काल और स्थान से मात्र बंधा नहीं होता बल्कि वह उस काल विशेष से सामाजिक चिन्तन के स्वरूप से भी बंधा होता है। ऐसी स्थिति में परिवेश काल, स्थान और चिन्तन से जुड़कर सृजन को भूमिका प्रदान करते है।

लेखक न चाहते हुए भी किसी-न-किसी तरह से बाहरी सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है, और अपनी रचनाओं का आधार बनता है। इस सन्दर्भ में कई उदाहरण दिये जा सकते है, जैसे -- राजनीतिक दंगे या सत्ता का परिवर्तन, सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन, प्रकृति के प्रकोप के द्वारा हुए विनाश और दूसरे देशों के विचार आदि। इनका समाज पर प्रभाव आज से नहीं बल्कि कई युगों से देखा जा सकता है।

आठवें दशक के उपन्यासकारों पर भी उपर्युक्त प्रभाव मिलता है। इस कालखंड में ऐसी कोई ऐतिहासिक घटना नहीं घटी जिसको ध्यान में रखकर सम्पूर्ण काल खंड का विश्लेषण किया जा सकता है। 1971 में राजनीतिक परिवर्तन आया जो क्रान्ति नहीं थी पर युवा वर्ग ने अपनी शक्ति को इसी समय पहचाना था और विद्रोह की मानसिकता का जागरण हुआ था। तभी युवकों में भीतर-ही-भीतर आक्रोश को देखा जा सकता है और वह विवेक को खोता भी नजर नहीं आता है। बल्कि बुद्धि और साहस के समीकरण से नये समाज के निर्माण के लिए संकल्प बनाता है। जहाँ कि इस दशक के अन्त की परिस्थितियाँ इतनी अस्पष्ट एवं जटिल जान पड़ती है कि पक्ष और विपक्ष की भूमिका का रेखांकन संभव प्रतीत नहीं होता। लेकिन इस राजनीतिक स्थिति को तोड़ने के लिए लेखन के स्तर पर स्पष्ट प्रयास लक्षित हो जाता है जैसे कि " तीसरा आदमी " में।

इस दशक के उपन्यास भावना के अतिरेक से कटकर बुद्धि और संवेदना के स्वीकार से शक्तिशाली बन गये हैं। भावना का अतिरेक परिस्थिति की जटिलता को पहचानने में सफल होता है। आधुनिकता, अकेलापन, निर्वासन, मूल्यों में परिवर्तन जैसी स्थितियों से विलग होकर सामाजिक संघर्ष की गति और दिशा की पहचान में इस दशक के उपन्यासों को गतिशील देखा जा सकता है। निश्चय ही आठवें दशक का लेखन अधिक आक्रामक, सामाजिक जीवन की विसंगतियों के कारण आक्रोश से भरा हुआ है। इस दशक का लेखन अनुभव के प्रामाणिक यथार्थ से नियोजित हैं। " आपका बंटी ", " काली आंधी " आदि इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं।

पूर्ववर्ती दशकों के लेखकों के समान ही इस दशक के लेखकों ने भी बदलते हुए जीवन संदर्भ में स्त्री की बदलती मानसिकता पर पर्याप्त लिखा है। " आपका बंटी ", " सूरजमुखी अँधेरे के ", " अन्तराल " " रेत की मछली " आदि महत्वपूर्ण उपन्यास है। जिन्होंने नारी के बदलते हुए अनुभव संसार को देहगाथा के साथ प्रस्तुत किया है।

इस दशक में भी राजनीतिक जीवन की विसंगतियों अन्तर्द्वन्द्वों असफलताओं और विचारहीनता पर उपन्यास लिखे गये हैं। व्यक्तिवादी स्तर के अवशेष पर सांस्कृतिक बोध से कई उपन्यासों की रचना हुई है। इस छोटे से काल खंड में औपन्यासिक लेखन में विविधता मिल जाती है। युद्ध से संबन्धित उपन्यासों के अन्तर्गत " टुण्डालाट " को लिया जा सकता है। लेखक की वैचारिकता, शिल्प प्रयोग तथा विचार में निरन्तर बदलाव आता है। यह सत्य है कि परिवेश या परिस्थिति के बदलाव के साथ

रचनात्मक संसार में भी परिवर्तन हो जाता है । परिवेश और रचना एक साथ चलने के कारण लेखक का मन और परिवेश का आवेग ही आगे रचनात्मक संसार में परिवर्तन करते हैं । उपन्यास के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि जो युग जितना ही जटिल होता है उस युग के उपन्यासों में उतनी ही विविधता पायी जाती है । सत्य तो यह है कि आठवें दशक के उपन्यास पूर्ववर्ती दशकों के लेखन के विकास की अगली कड़ी है ।

आठवें दशक के लेखन में नव्यता, ताजगी और एक ही प्रकार की प्रवृत्ति से प्रेरित है । इस अध्याय की प्रमुख अध्ययन दिशा आठवें दशक में उभरे बाह्य संघर्षों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करना है । आठवें दशक के अनेक उपन्यासों की समस्या समान्य लगती है । पर संदर्भ का आविष्कार समस्या की जटिलता का सूचक अवश्य होता है ।

5.1 चयनित उपन्यासों में उभरे बाहरी सामाजिक संघर्ष

"आपका बंटी" :-

इस उपन्यास में मुख्य रूप से पति-पत्नी के बीच अस्तित्व और अपनी-अपनी पहचान का संघर्ष है । इस में यह स्पष्ट दिखायी देता है कि आधुनिकता के प्रभाव के कारण ही मनुष्य के मूल्यों में परिवर्तन और अहंकार के कारण सम्बन्धों का टूटना है । उदाहरण के लिए अजय और शकुन में अपने-अपने पद के प्रति गर्व होने के कारण किसी तरह कुछ वर्ष तक साथ रहते है किन्तु अति शीघ्र टूटते नजर आते है । पति पत्नी के इस तरह व्यवहार से ही उनका एक मात्र पुत्र बंटी मानसिक रूप से पीडित होता है ।

नारी ने अपने स्वतन्त्र होने की इच्छा को व्यक्त करना शुरू कर दिया है। इतना ही नहीं कई तारिखों से वह पुरुष की बराबारी करने लगी है। इसका जीता जागता उदाहरण शकुन के चरित्र में देखा जा सकता है। अजय और शकुन की मानसिकता एक न होने के कारण शकुन प्राचीन भारतीय नारी के समान पति के साथ जुड़े रहने में विश्वास नहीं करती है। उसके मन में निरन्तर एक ही बात काम करता रहता है कि "मैं" आर्थिक और अन्य तारिखों से स्वतन्त्र हूँ तो फिर किसी पुरुष के अधीन रहकर अपना जीवन क्यों बरबाद करूँ। यह अपने देश की विचारधारा नहीं थी। यह बाह्य विचार धारा का ही प्रभाव है।

प्राचीन भारतीय नारी अग्नि को साक्षी मान कर जिस किसी को पति मान लेती थी इसके बाद मृत्यु तक अन्य पुरुष की ओर देखती भी नहीं थी पर इस उपन्यास में शकुन का विधुर से विवाह कर लेना बाहरी विचार धारा का द्योतक है। स्त्री को " माँ " के रूप में मात्र अपने बच्चों की सुखशान्ति की चाह करते देखा गया है। पर शकुन को अपने बेटे के प्रति स्नेह था किन्तु वह यह सोचती है कि जब अजय सुखमयी जीवन बिता सकता है तो मैं क्यों नहीं, तभी उसके सुख में बाधा के रूप में आने-वाले बंटी को अजय के साथ भेज देती है। शकुन के विचार और व्यवहार से कहा जाता है कि वह बंटी को भले मन-ही-मन त्यागना नहीं चाहती थी किन्तु वह स्थितियों और विचारों से प्रभावित है। इस तरह शिक्षित मध्यवर्ग परिवारों में सम्बन्धों के टूटने के पीछे व्यक्ति के आन्तरिक कारणों से अधिक बाहरी कारण ही दिखाई देते है जो निरन्तर व्यक्ति के व्यक्तित्व को बिगाड़ देता है।

" आपका बंटी " उपन्यास के सभी पात्रों पर कहा जा सकता है कि ऐसे कोई भी स्थिति नहीं है जिससे लगे कि भारतीय संस्कृति से प्रभाणित हो । पति-पत्नी का अलग होना, अपने एक मात्र बेटे को जिन्दगी से खिलवाड़ करना और अंत में उसको अपने स्वार्थ के पूर्ति के लिए होस्टल भेज देना आदि में पश्चमी देशों का प्रभाव दिखाई देता है । व्यक्ति जैसे-जैसे बुद्धिमान और स्वतंत्र होता जा रहा है वैसे-वैसे वह किसी प्रकार के बन्धन से जुडने में विश्वास नहीं रखता है । व्यक्ति मुक्त और सन्तुष्ट से जीने में विश्वस्त है तभी वह लक्ष्य की पूर्ति की चिंता में रहता है ।

मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से इस उपन्यास के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि सचाई तो यह है कि व्यक्ति में कमजोरी के कारण वह आसानी से किसी भी तरह की विचारधारा से प्रभावित हो रहा है क्योंकि वह इस तरह व्यवहार कर अपने झूठे अस्तित्व को स्थापित कर रहा है । किन्तु उसे यह पता नही है कि वह अपने अस्तित्व को खोता जा रहा है । इस तरह व्यवहार करने के पीछे एक और भी कारण यह है कि वह अपने अस्तित्व को खोता जा रहा है । इस तरह व्यवहार करने के पीछे एक और भी कारण यह है कि आधुनिक व्यक्ति में विभिन्न प्रकार की ग्रान्थियों से पीडित देखा जाता है । जिनसे छुटकारा पाने के लिए वह अपने व्यवहारों में ही परिवर्तन लाता दिखाई देता है । इस उपन्यास के पात्रों को पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याओं के कारण भी मानसिक रूप से पीडित दिखा जा सकता है ।

"परत दर परत" :-

इस उपन्यास के पात्रों की स्थिति भी " आपका बंटी " से मिलती-जुलती है । माता-पिता का अपने बच्चों की भावनाओं को सही ढंग से न पहचान ने के कारण कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । माता-पिता के सोचने-विचारने के ढंग एक प्रकार के न होने के कारण वे दोनो नाम मात्र के लिए साथ रहते है या कभी-कभी मिलते है भी तो एक दूसरे से कटे रहते है । जिसका प्रभाव बच्चों पर सीधा पड़ता है । माता-पिता तो अपने जीवन को अर्थहीन तो बना देते ही है साथ ही बच्चों में जीवन के प्रति तरह-तरह की शंकायें और भय उत्पन्न होने का मार्ग अनजाने में ही दिखा देते है । इससे वें किसी भी तरह के बन्धन से बंध कर चलने को स्वीकार नहीं करते है । फलत: उनकी इच्छा तो होती है अन्य लोगों की तरह जीने की लेकिन खुशी से जी नहीं पाते है ।

इस उपन्यास मे उदाहरण के रूप में कुमुद और राजन की स्थिति को लिया जा सकता है । जिनमें जीवन के प्रति मात्र शंका और भय छिपा हुआ है । तभी वे दोनो एक-दूसरे से प्रेम करते रहने पर भी रिश्ते में बन्धने में विश्वास नहीं करते है । पर सोच विचार करने पर जब विवाह करलेते है तो उनको लगता है कि ऐसा जरूर कोई बिन्दु है जहाँ दोनों की मानसिकता मिलती नही है और दोनो साथ रहकर भी कटे हुए है । इसके पीछे कई कारण है जिनमें प्रमुख कारण यह है कि व्यक्ति का किसी बन्धन मे बन्धने की देरी है । उसके बाद वह उसे एक बोझ मानकर जीता है । तभी वह हर तरह के रिश्ते से ऊब जाता है क्योंकि व्यक्ति एक स्थिति मे रहकर दूसरी स्थिति के बारे में सोचने लगता है ।

इन सब से ज्यादा मन और कर्म पर काबू न होना । इस प्रकार की समस्याएँ प्राचीन लोगों में थी या नहीं यह स्पष्ट नही है अगर होंगी भी तो व्यक्त करने से घबराते थे । जैसे कि पहले नारी को इतनी छूट नहीं मिलती थी जितनी कि आज है । यह आधुनिकता का ही प्रभाव है जिससे प्रभावित होकर पढ़ी लिखी और आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के कारण अपने-आप को महान समझने लगी है । इस कारण पुरुष और स्त्री के सम्बन्धों में अनेक प्रकार की समस्याएँ खड़ी हो रही है जिनके समाधान खोजने मे वह भी असफल हो रही है । फलत: मानसिक पीड़ा से तड़पनेवालों की संख्या बढ़ती देखी जा सकती है ।

इस उपन्यास मे पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्या को अधिक देखा गया है । यह हो सकता है कि अगर कुमुद और राजन के घर की परिस्थिति अच्छी होती तो निश्चित ही उनमें जीवन के प्रति ऐसी धारणा नहीं आती थी । स्वतंत्र होने के नाते अपने इच्छानुसार ही जीते है । अत: कहा जा सकता है कि घर का वातावरण और माता-पिता का बच्चो से व्यवहार का गहरा प्रभाव बच्चो के व्यक्तित्व को बनाने मे मदद करता है । तभी माँ-बाप को चाहिए कि वे अपने बच्चों की जरूरतो को और मानसिकता को समझ कर व्यवहार करें । अगर वें अपनी पंसद और नपंसद को ध्यान में रखते है तो इससे नुकसान बच्चों का होता है । उनमें अनेक प्रकार की मनोविकृतियों का जन्म होता है । इस उपन्यास के पात्रों को इसी संदर्भ में अन्तर्द्वन्द्वों से संघर्ष करते हुए, कुण्ठित, उदास, अकेलेपन की भावना आदि से जूझते देखा जा सकता है ।

"अन्तराल" :-

पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव इस उपन्यास में पाया जाता है। भारतीय सांस्कृति के अनुसार विवाहित या विधावा स्त्री को कई प्रकार के सामाजिक बन्धनों में रहना पड़ता है किन्तु आधुनिकता का प्रभाव भारत में भी पड़ने के कारण नारी कई तरह से स्वतन्त्र हो रही है। पूर्ण बन्धन मुक्त और पुरुष से समानता करने की कोशिश मे है। यह संघर्ष पहले भी था किन्तु आधुनिकता की शुरुआत पर इसकी गति बढ़ गयी है।

"अन्तराल" में "श्यामा" विधवा होने पर भी "कुमार" की ओर आकर्षित है। दोनो बन्धन मे न बन्ध कर मात्र जैविक आवश्यकता की पूर्ति करने में विश्वास करते है। श्यामा शादी इसलिए नही करती है कि वह सोचती है कि ऐसा करने से उसके मरे हुए पति के साथ धोखा करना है। श्यामा की ऐसी मानसिकता से कहा जा सकता है कि वह अपने-आप से अस्पष्ट और किसी प्रकार की जिम्मे - दारी को निभाना नहीं चाती है। इसके अलावा यह भी हो सकता है कि समाज के डर से और पारिवारिक प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर श्यामा ऐसा व्यवहार करती है।

इस उपन्यास के अध्ययन के बाद कहा जा सकता है कि आधुनिकता का इतना अधिक समाज में प्रभाव पड़ रहा है कि सम्बन्धों को अर्थहीन होते देखा जा सकता है। मनुष्य में स्वार्थ भाव बढ़ रहा है। अपनी इच्छा की पुर्ति होते ही हर रिश्ते में ऊबन की महक आ रही है। आज की बदलती परिस्थितियों, बदलते जीवन मूल्यों के बीच आधुनिक मानव मन

में द्वन्द्व को महानगरीय सभ्यता के बीच जन्म लेते देखा जा सकता है। उसके पास सब कुछ होते हुए भी असन्तुष्ट ही नजर आता है। व्यक्ति नैतिक मूल्यों को खोता जा रहा है। वह खुद अपने-आप को मात्र अधिक महत्व दे रहा है। जिसकी वजह से मानवीय सम्बन्धों का ध्वंस हो रहा है।

वर्तमान नर-नारी के सम्बन्ध मे कहा जा सकता है ये भारतीय संस्कृति की झलक नहीं दिखाई देते है, पात्रों के सोचने और व्यवहार करने के ढंग से कहा जा सकता है कि ये विचारधारा और रहन सहन दूसरे देशों की है। इनको अपनाकर व्यक्ति भले बाहरी तौर पर कभी दुखित नहीं दिखाई देता हो। पर आन्तरिक रूप से उसे कई प्रकार की समस्याओं को झेलना पड़ रहा है। जैसे कि कुण्ठा, ग्रन्थियों से पूर्ण, सब कुछ रह कर भी अकेलेपन की भावना अन्तर्द्वन्द्वों से जूझता हुआ इस तरह कई और मनोविकारों को देखा जा सकता है।

इस उपन्यास के बाहरी परिवेश के बारे में अत: कहा जा सकता है कि व्यक्ति के मूल्यों और सोच-विचार में परिवर्तन दूसरों को देखा-देखी ही आया है। इसके साथ व्यक्ति के व्यवहार मे परिवर्तन होने पर भी उसमें जो संघर्ष देखा जाता है वह पारिवारिक और सामाजिक परिवेश एवं प्रभाव द्वारा खडी की गयी समस्याओं के कारण है।

"उस पार का अंधेरा" :-

अन्य उपन्यासों की तरह ही इस उपन्यास में भी पश्चिमी देशों की विचारधारा के प्रभाव को देखा जा सकता है । विशेष कर रिश्तों को लिया जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे जब चाहें जब आसानी से सम्बन्ध को तोड सकते हैं । इसी तरह इस उपन्यास का नायक मि•चोपडा जिसमें कई प्रकार की कमीयाँ और कर्त्तव्य के प्रति उदासहीनता और पलायनवादी दृष्टि होने के कारण ही अपनी पहली पत्नी को छोड़कर एक अन्य स्त्री के साथ बिना किसी बन्धन मे बंधे रहने लगते है । पात्र का इस तरह व्यवहार भारतोय विवाहित जीवन के विपरीत है । अब प्रश्न उठता है कि आखिर व्यक्ति में जीवन के प्रति ये धारणाएं आई कैसी ? तो उत्तर निश्चित है कि अन्य देशों के विचारों से । मि•चोपडा में आक्रोश और खोखलेपन को देखा जाता है विभा को पहले इस तरह के जीवन को व्यतीत करने में आनंद की प्राप्ति होती है तो बाद में ऊबन के कारण उसे छोड़कर चली जाती है । किन्तु मि• चोपड़ा को पुन: उसकी ही जरूरत पड़ने पर उसके पास ही लौट जाता है ।

इस उपन्यास मे पात्रों को समाज से भय नही है तभी वें जो चाहते है उसकी प्राप्ति के पीछे लग जाते है । परन्तु अतिशीघ्र ऊबन महसूस करने लगते है । इन पात्रों के जीने के तरिखे को देख कर कहा जा सकता है कि जीवन मे सही लक्ष्य और अच्छा सोच-विचार न होने पर व्यक्ति मात्र भटकने के और कुछ नही कर सकता है । इतना ही

नही ऐसे व्यक्ति के व्यक्तित्व की ऐसी कोई विशेषता भी नहीं होती है जिसको यथार्थ किया जा सकें। सत्य तो यह है कि व्यक्ति अपने नैतिक मूल्यों को भूल कर अर्थहीन जीवन को जी रहा है। वह लगातार अपने-आप से संघर्ष करता दिखाई देता रहा हैं।

"काली आँधी" :-

आजादी से पहले भारतीय नारी को किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए उतना प्रोत्साहित नही किया जाता था। आज लोगों के सोचने-देखने मे परिवर्तन आ जाने के कारण अब नारी हर क्षेत्र में निरन्तर प्रगति कर रही है।

इस उपन्यास के उपन्यासकार ने समाज में आये परिवर्तन को दिखाते हुए यह स्पष्ट किया है कि नारी भी राजनीति में भाग ले सकती है। और पुरूष की तरह सफल भी होती है किन्तु उसके उसे अपने पति और बच्चों से सम्बन्ध को तोड़ना पड़ता है। इसका कारण यह कि वह घर और बाहर को एक साथ सम्भल नही पाती है। हमारा समाज पुरूष-प्रधान होने के कारण पुरूष कभी भी नारी को उससे आगे बढ़ते देख नहीं सकता है फलत: दोनो के बीच अन्तर्द्वन्द और प्रति क्षण जीने के लिए संघर्ष को देखा जाता है। नारी भले कई बार पुरूष से अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करें किन्तु उस में अति शीघ्र ग्रान्थि को जन्म लेते देखा जाता है। जिसकी वजह से अनेक प्रकार के मनोविकारों का जन्म होता है।

इस तरह की मानसिकता व्यक्ति में समाज के द्वारा बनाये गये रीति-रिवाज से पाता है । वह पहले से चली आ रही रूढ़ियों से चाह कर भी मुक्ति नहीं पाता है । उदाहरण के लिए इस उपन्यास मे मालती और जग्गी बाबू को लिया जा सकता है । जग्गीबाबू को उनकी पत्नी मालती का निरन्तर राजनीतिक क्षेत्र में सफल होना अच्छा नहीं लगता । वे हमेशा अपने-आप को छोटा और अपमानित महसूस करते है । इनके इस तरह के व्यवहार का असर उनकी एकमात्र बेटी पर पड़ता है तभी वह छुट्टियों में अपने माता-पिता के पास आने से वहीं होस्टल में रहना पंसद करती है ।

जग्गी बाबू आधुनिक विचारधाराओं से प्रभावित होकर पहले तो नारी के समाज में पुरूष के समान पद पर विश्वास करते है । तभी अपनी पत्नी को प्रोत्साहित भी करते है किन्तु उनके सामने ही पत्नी को सम्मान को सहन नहीं कर पाते है । फलत: सभी प्रकार की सुख सुविधाओं के होते हुए भी निरन्तर संघर्ष करते देखा जाता है । भारतीय समाज के नियमों के विरुद्ध जहाँ वहीं भी स्त्री कदम उठाती है उसे कई प्रकार से संघर्ष करना पड़ता है । और व्यक्ति समीप होते हुए भी दूरी का अहसास होता है ।

" **रिश्ते** ' :-

इस उपन्यास मे पश्चिमी रहन-सहन के प्रभाव पड़ने के साथ आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव देखा जाता है । इच्छाएँ तो सामान्य तौर से हर व्यक्ति मे होती है अगर आर्थिक स्थिति अच्छी न हो तो वह सभी को पूरा नही कर पायेगा । और इनकी पूर्ति के लिए ही वह

अनेक मार्गों को ढूँढता है जो कभी अनैतिक भी हो सकता है। सुख-सुविधा को जुटाने के पीछे गलत कदम उठाते देखा जाता है। तभी पात्रों को आस्थाहीन, अन्तर्मुखी कुण्ठित, अन्तर्द्वन्द्वों से जूझता हुआ और मानसिक पीडाओं को सहता हुआ पाया जाता है।

इस उपन्यास का पात्र पाल विवाहित होते हुए भी उमी से सम्बन्ध जोडता है। उमी का किसी बन्धन में बन्धे बिना " पाल " के बच्चों को जन्म देना बड़ा अजीब लगता है। इससे भी अजीब बात यह है कि उसके द्वारा ही जन्म दिये गये बेटा-बेटी अपनी पहचान भाई-बहन के रूप में न जानकर एक-दूसरे से शादी कर लेते है जिसे विश्वास तो नहीं किया जा सकता है। उमी का बाद में पाल का साथ छोड देना और सुरेश से शादी कर लेना होते है। किन्तु पाल की मृत्यु हो जाने पर उसके मृतक शरीर पर गिर-गिर रोना एक विवाहित स्त्री को शोभा नहीं देता है। इस तरह कई और भी सन्दर्भ मिल जाते है जिसके बारे में व्यक्ति विचार भी नहीं कर सकता है। नारी का विचारों और मूल्यों में परिवर्तन देखा जा सकता है। उमी को अगर ले तो कहा जा सकता है कि घर की आर्थिक और पारिवारिक स्थिति ने उसे इस तरह स्वतन्त्र होकर अपनी इच्छानुसार रहने को प्रेरित किया है। इन सब के साथ बाह्य स्रोतों से प्रेरित आधुनिकता का प्रभाव भी है तभी वह समाज की परवाह नहीं करती दिखाई देती है।

" नावें ":-

इस उपन्यास में नारी को संघर्ष करते देखा जा सकता है। घर की आर्थिक स्थिति को ही देखकर सुख के स्वप्न देखकर घर को छोड़कर चली जाती है। मालती को निरन्तर अपराध की भावना और अन्तर्द्वन्द्वों से संघर्ष करते देखा जा सकता है। " सोम " को छोड़कर " विजयेश " से विवाह करने पर भी वह हमेशा डरी-डरी ही रहती है। इसके कारण ही घर की शान्ति भी भंग होती है। विजयेश को हमेशा लगता है कि उसकी जरूरत किसी को नही है, जिसके कारण उसमें अनेक प्रकार की मानसिक समस्यायें आ जाती है। वह कभी-भी कुण्ठित, उदास और घर के अन्य सदस्यों से कटा-कटा रहता है। मालती सब कुछ समझ कर भी अनजान बनी रहती है। जिससे उसका तनाव और बढ़ जाता है। मालती और विजयेश के व्यवहार का सीधा असर उनकी बेटी पर पड़ता है। इतना ही नही घर में सभी के रहते हुए भी वीरान लगता है। घर की अशान्ति के पीछे मालती का ही हाथ है क्योंकि अगर वह चाहती तो विजयेश से अच्छा व्यवहार करती और " सोम " को भुला सकती थी पर ऐसा न करने के कारण ही मालती तो मानसिक पीडा को सहती तो है ही साथ ही अन्य लोगों को भी पीड़ा पहुँचाती है।

इस उपन्यास का अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता है विवाह से पूर्व विवाहित पुरुष से सम्बन्ध रखना और बाद में उसे त्याग कर आदर्शों का पालन करना अजीब लगता है, जो यह स्पष्ट करता है कि मालती का ऐसे व्यवहार करने के पीछे उसके घर की आर्थिक स्थिति तो थी ही साथ ही किसी और से भी प्रभावित रही होगी जैसे कि पश्चिमी विचार धारा का। तभी मालती को मूल्यहीन और अर्थहीन दिशा मे

भटकते देखा जा सकता है। किन्तु उसकी बेटी के सोचने मे परिवर्तन देखा जा सकता है वह अपनी इच्छानुसार विवाह करती है और अपनी माँ की तरह किन्ही ग्रन्थियों का शिकार नही होती है। इतना ही अपनी मम्मी की कमजोरियों को पहचान कर पत्र के माध्यम से व्यक्त भी करती है। आधुनिक युग के एक सुन्दर उदाहरण के रूप में इस उपन्यास को लिया जा सकता है क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के समीप रहने पर भी अपने मन की बातो को व्यक्त नही कर पा रहा है और दुख-सुख खुद अपने कंधों पर लादे चला जा रहा है।

"रेत की मछली" :-

भारत में आधुनिकता का प्रभाव तो पड़ा है किन्तु अभी भी कई नारियों को पुरुषों की यातना सहन करनी पड़ती है। इस उपन्यास की शोभन अपनी इच्छानुसार ही मै " (कथा वाचक नायिका) से विवाह करता है और कुछ वर्षों बाद मोनल नामक स्त्री की ओर आकर्षित होता है और " मै " को अत्यधिक मानसिक और शारीरिक पीड़ा देता है। फिर भी " मै " में भारतीय नारी के गुण होने के कारण अपने पति को त्यागने में विश्वास नहीं करती है।

शोभन के चरित्र से पुरुष मनोविज्ञान का अध्ययन किया जा सकता है। उसका निडर होकर अपनी पत्नी के सामने अन्य स्त्री को घर में ले आना बदलते सामाजिक मूल्यों का सुन्दर उदाहरण है। शोभन चाहता तो अपनी पत्नी से अच्छा व्यवहार कर घर में शान्ति बनाये रख सकता था किन्तु किसी की परवाह न कर स्वार्थ भावना की पूर्ति करता है।

पत्नी को न त्यागने के पीछे यह कारण था कि उसकी समाज में प्रतिष्ठा जिसको बिगड़ना नहीं चाहता था । सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं के होते हुए भी पात्रों को असन्तुष्ट और मनोविकारो से पीड़ित देखा जा सकता है जो बिना सोचे-समझे अपनी इच्छा से कदम उठा रहे है । जिसका प्रतिफल उनको भोगते भी देखा जाता है । शोभन का पारि - वारिक बन्धनों से मुक्त होने के कारण ही अपनी इच्छा से प्रथम विवाह करता है और मोनल से भी रिश्ता जोड़ता है उसे किसी के लिए आदर्श बना कर जीने की आवश्यकता नहीं थी ।

" उसके हिस्से की धूप ":-

प्राय: नारी का संघर्ष अपने ऊपर किये जा रहे अत्याचारों का खुल कर विरोध रहा है । इस दिशा में उसकी सफलता आकस्मत न होकर कई वर्षों के कठिन परिश्रम का फल है । नारी की कोशिश है कि वह हर दिशा मे पुरूष से बराबरी करें । इस प्रयास की एक विकृति एक से अधिक पुरूष से सम्बन्ध रखने मे दिखाई देता ह । जैसे कि इस उपन्यास की मनीषा का जितेन से विवाह हो जाने पर भी मधुकर की ओर आकर्षित होना । इससे इस बात की शंका उठती है कि कहीं नारी स्वतंत्रता का दुरूपयोग तो नहीं कर रही है ? अगर मनीषा को ही उदाहरण के रूप से लिया जाये तो जीतेन मे किसी भी तरह की कमी नही है । फिर भी वह काल्पनिक इच्छा की पूर्ति के लिए मधुकर से विवाह भी कर लेती है । और अति शीघ्र इस रिश्ते से भी ऊब जाती है । इस तरह क्षण-प्रतिक्षण अपनी धारणा को बदलने वालो के बारे में कहा जा सकता है कि ये अपने मन और बुद्धि पर काबू नहीं रखते है । इनकी हर इच्छा केवल क्षण भर

के लिए होती है । उसकी पूर्ति होने पर पुनः दूसरी इच्छा के बारे में सोचने लगते है । मधुकर नारी को स्वतंत्र छोड़ने में विश्वास नहीं करता था । इसीलिए मनीषा को पुनः जीतेन के पास लौटने नही देता है जिससे कई समस्याओं का जन्म होता है,। घर मे आशान्ति फैलती है । दोनो पात्रों को कुण्ठा और उनके मूल्यों में परिवर्तन को भी देखा जा सकता है । इसकी एक वजह यह है कि जितेन की तुलना में मधुकर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । मनीषा के सोचने के ढंग में अस्पष्टता होने के कारण भी वह खुद यह समझ नहीं पा रही है कि उसे किस चीज की जरूरत है । आधुनिकता का प्रभाव मनीषा के व्यवहार में दिखाई देता है । कल्पना के माध्यम से जीने वाली मनीषा बाद में यथार्थ को समझ जाती है विशेषकर तब जब मधुकर भी जीतेन की तरह अपने काम मे जुट जाता है और इसकी परवाह कम करता है । इस उपन्यास के पात्रों को बाहरी परिवेश से अधिक आन्तरिक संघर्ष से अधिक जूझते देख सकते हैं । इनके पास सब कुछ रहकर भी अकेलेपन की भावना और ग्रन्थियाँ को देखा जाता है ।

"अनामदास का पोथा" :-

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के द्वारा लिखित यह उपन्यास इस दशक के अन्य उपन्यासों से भिन्न है । अधिकांश उपन्यास जीवन के संघर्ष को लेकर चलती है इसका कथानक " छान्दोग्योपनिषद " के चौथे प्रपाठक से ली गयी है । उपन्यासकार ने कथावस्तु के अनुसार परिवेश को भी रचा है ।

अनामदास का पोथा उपनिषदकाल के वातावरण को उपस्थित करता है । रैक्व जब जाबाला से मिलता है तो उसको चारों ओर का वातावरण सजीव लगता है । जाबाला का राजमहल में वापस चले जाने के बाद उसे किसी प्रकार की कमी नहीं होती हुई भी मानसिक कष्टों और अन्तर्द्वन्द्व के साथ राजमहल के सुख और सुविधाओं का वातावरण उसके कष्टों को परिहार करने मे व्यर्थ था । उस समय के आकाल ग्रस्त प्रान्तों के लोगों के नंगे-भूखे रूपों में आधुनिक भूख एवं गरीबी को दिखाने की कोशिश है । उपनिषद काल में समाज की परिस्थिति और उस समय के वातावरण को प्रतिबिम्बित करते हुए लेखक यह कहना चाहते है कि केवल समाधि, दार्शनिक चिन्तन से सामाजिक कष्टों का परिहार नहीं हो सकता है । लेखक ने वातावरण के निर्माण के साथ आधुनिक चिन्तन का पोषण किया है जिससे पात्रों की मानसिकता को भी प्रस्फुटन मे सहायता मिल सकी है ।

पात्रों को बाहरी परिवेश से प्रभावित होने के कारण आन्तरिक कष्टों को व्यक्त न कर मात्र झेलते है । रैक्व और जाबाला का मिलना और बिछुडने के बाद उन दोनों की प्रतिक्रियाओं का सुन्दर चित्रण मिलता है । मानसिक रूप से दोनो कष्ट सहते है । उस समय की सामाजिक परिस्थिति के अनुसार नारी को अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने का मौका नहीं दिया जाता था तभी जाबाला अपनी इच्छाओं को निरन्तर दबाती चली गई जिसके कारण शारीरिक रोगी बन जाती है । अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव इस उपन्यासों के पात्रों पर अधिक है । जिससे न चाह कर भी पात्रों को बन्धकर चलते देखा जा सकता है ।

"तीसरा आदमी" :-

शंका मनुष्य के सम्बन्धों में गिरावट लाती है । "तीसरा आदमी" स्त्री पुरुष के बनते बिगड़ते सम्बन्धों की कहानी है जिसकी मूल संवेदना का सम्बन्ध स्त्री-पुरुष (विशेष कर पति-पत्नी) के बीच तीसरा आदमी की स्थिति से है । आदिकाल से देखा गया है कि स्त्री-पुरुष के बीच तीसरे आदमी के रूप में खलनायक या माता-पिता या रीतिरिवाज आते है जो सम्बन्धों को पूर्ण रूप से समाप्त कर देते है । इस उपन्यास मे भी संशय का यह भुजंग न केवल नरेश-चित्रा के दाम्पत्य को डंसता है, बल्कि वह सुमन्त के जीवन को भी डंस लेता है ।

सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक स्थिति का अच्छा न होने के कारण व्यक्ति को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । इस उपन्यास मे नरेश का सुन्दर पत्नी को प्राप्त करना कई प्रकार की इच्छाओं को जन्म देता है । किन्तु उनको पूरा नही कर पाता है क्योकि उसकी कमाई बहुत कम थी । इस कारण वह विशेषकर हीन ग्रन्थि का शिकार होता है । फलस्वरूप वह अपनी पत्नी से अच्छा व्यवहार नही करता है । उनका सम्बन्ध टूट जाता है । चित्रा का चरित्र अच्छा होने पर भी नरेश की वजह से ही समस्याओं की शुरूआत होती है अगर वह चाहता तो घर में शान्ति बना कर रख सकता था । किन्तु घर का नाश खुद करता है ।

उपन्यासकार इस उपन्यास के माध्यम से समाज पर आधुनिकता के प्रभाव को दिखाते हुए यह बताना चाहते है कि व्यक्ति कल्पना के माध्यम से जीने के कारण यथार्थ को सह नही पाता है । सम्बन्धों में खोखले पन को देखा जा सकता है कोई किसी को सच्चे मन से स्वीकार नहीं कर पा रहा है जिसके कारण अनेक प्रकार के मनोविकारो से पात्रों को जूझते देखा जाता है । कुण्ठा से पीडित, अन्तर्द्वन्द्वों और प्रतिक्षण जीवन से संघर्ष करते पात्रों को अकेलेपन की भावना और ग्रन्थियों से तड़पते हुए पा सकते हैं । चित्रा जिसने कोई गलती नही की थी भी कुछ दिनों के बाद अपराध की भावना से पीडित होती है और उसमे व्यवहारो में परिवर्तन आते दिखाई देते हैं । किन्तु उसके भारतीय नारी के गुण होने के कारण वह नरेश को छोड़ कर चली नही जाती जब तक वह खुद उसे त्याग नहीं देता है ।

इस उपन्यास मै कोई बाहरी विचारधारा का प्रभाव दिखाई नहीं देता है । परन्तु व्यक्ति मे कई प्रकार की कमियाँ होने के कारण उनको छिपाने के लिए ही दूसरे व्यक्ति से बुरा व्यवहार करता है । इसके अलावा लेखक ने यह भी दिखाया है कि बदलते निम्नवर्गीय समाज में छोटे-छोटे कमरों में सड़ते देखे जा सकते है । जो मानसिक रूप से स्वस्थ होते हुए भी अपनी इच्छाओं की पूर्ति न कर पाने की वजह से जीवन के प्रति उदास और मानसिक रोगी होते दिखाई देते है ।

"अकेली आवाज" :-

किसी भी व्यक्ति की जिन्दगी में आर्थिक स्थिति का बहुत महत्व होता क्योकि इसका प्रभाव सीधे व्यक्ति के मन और मस्तिष्क पर पड़ता है जो व्यवहारों को अपने काबू मे रखता है । बंटु धनी माता-पिता

का इकलौता पुत्र होने के कारण उसकी हर इच्छा को पूरी की जाती थी। जिसके फलस्वरूप वह बहुत जिद्दी और नटखट बन गया था। बड़ों और छोटों से बुरा व्यवहार भी करता था। इस तरह बंटु के बिगड़ने के पीछे उसके माता-पिता है क्योंकि उन्होंने अपने पुत्र को सुधारने की जगह और खराब कर दिया था।

बंटु को जब जबरदस्ती होस्टल में भर्ती किया जाता है तो उसमे सुधार देखा जाता है क्योंकि वहाँ पर उसे अपने-आप को समझने का मौका मिलता है और अपनी आदातों को भी सुधारने लगता है। इस उदाहरण से कहा जा सकता है कि भले माँ-बाप अधिक लाड-प्यार कर बच्चे को बिगड़ दे किन्तु अच्छे स्कूल के वातावरण में पढ़ने-लिखने से बच्चों में सुधार देखा जा सकता है।

"उखड़े कदम" :-

सुनिता के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी थी और कान्वेंट में पढ़ने के कारण मन में अनेक स्वप्न लेकर चलती है। उसका विवाह एक ऐसे आर्मी आफिसर से होता है जो सादगी और कर्त्तव्यनिष्ठा से भरा हुआ था। उसकी इच्छायें जब पूरी नहीं होती है तो वह उदास और तनावपूर्ण रहने लगती है। जिसको अशोक समझ कर भी समझ नही पाता है। सुनीता की रुचियों और लगावों की विषमता के कारण ही उसके जीवन में अशोक का मित्र विश्वा आ जाता है। वह सुनीता की लगभग सभी इच्छायें पूरी करता है और कम समय में ही उसे अपना बना देता है। अशोक यह सह नही पाता है और तलाक ले लेता है। सुनीता बाद में विश्वा से विवाह तो कर लेती है किन्तु हमेशा पश्चाताप अपराध

की भावना आदि मनोग्रन्थियों से पीड़ित रहती है जिसका प्रभाव विश्वा पर भी थोड़ा बहुत पड़ता है । अत: दोनों के पास सभी सुविधायें होती हुई भी अनेक प्रकार के मनोविकारों को सहते रहते है । जो अंत तक इनका समाधान खोजने मे लगे रहते है पर प्राप्त कुछ नही होता है ।

आधुनिकता का प्रभाव उपन्यास मे तो देखा जा सकता है विशेषकर सुनीता के व्यवहारों से नारी के स्वतन्त्र होने की इच्छा को देखा जा सकता है । इसके अलावा मानव के बदलते मूल्यों का परिचय देता है । चीनी और बाद मे पाकिस्तानी आक्रमण का प्रभाव इस उपन्यास के पात्रों पर देख सकते है । विशेष कर अशोक पर क्योंकि वह युद्ध में भाग नहीं पाता है । जख्मी होकर अस्पताल जाता है और अतीत का विचार करता रहता है । अत: अशोक और सुनीता दोनों के बीच कोई सम्बन्ध नहीं होते हुए भी दोनो निरन्तर एक-दूसरे के बारे मे सोचते रहते है फलस्वरूप असन्तुष्ट रहते है । सुनीता कल्पना लोक मे जीने के कारण यथार्थ को जी नही पाती है और दुखित रहती है । इसके पीछे कुछ हद तक उसके बचपन मे बीते दिनों का भी प्रभाव है । वह चाहती तो अपना जीवन सुखमय बना सकती थी किन्तु अपनी इच्छाओं को अधिक महत्व देकर अपने को ही नुकसान पहुँचाती है ।

"टुण्डा लाट" :-

आधुनिक युग की एक विशेषता यह है कि मनुष्य बहुत स्वार्थी होता जा रहा है । इस गुण को रोमिला मे देखने को मिलता है । सुनील से दोस्ती वह केवल तब तक रखती है जब तक उसके काबिल वह रहता है जैसे ही उसका हाथ युद्ध में कट जाता है तो तुरन्त वह उसके प्रति अपनी धारणा

बदल लेती है । उसके घरवालों के सामने भी अब यही प्रश्न रहता है कि अब सुनील क्या करेगा ? कोई उसमें विश्वास जागना नहीं चाहता है अपने अपने मतलब की पूर्ति न होने पर निराशा ही उन्हें प्राप्त होती है । इस तरह अनेक प्रकार की मानसिकताओं से ग्रस्त लोगों से परिचय होता है । इसके अलावा उपन्यासकार यह भी बताना चाहता है कि युद्ध के कारण किस प्रकार नवयुवकों के स्वप्नों का भंग होता है । सुनील का दायाँ हाथ युद्ध में नष्ट हो जाने के कारण वायलिनिष्ट बनने का उसका सपना टूट जाता है । अपंग होने के कारण सेना से उसे मुक्त कर दिया जाता है । सुनील को हर दिशा में मात्र निराशा ही दिखाई देती है और वह बदली हुई स्थिति को समझ लेता है और संयमित रहते हुए उसे स्वीकार कर लेता है । रोमिला और सुनील पूरी औपचारिकता और शिष्टता निभाते हुए एक दूसरे से विदा लेते हैं जो मार्मिक दृश्य है ।

इस उपन्यास मे देखा गया कि युद्ध किस प्रकार आत्मीय सम्बन्धों को तोड़ता है और नौजवानों के सपनों को नष्ट करता है । पात्रों में बदलते हुए मूल्यों को कुण्ठा, ग्रन्थियों से पीड़ित देखा जा सकता है । रोमिला मे आधुनिक नारी के गुण देखे जा सकते है ।

"प्रतिध्वनियाँ" :-

परिस्थिति के अनुसार मनुष्य मे व्यवहारों में भी परिवर्तन आता है । इस उपन्यास के प्रमुख पात्र नीलकान्त मेहता गरीब माँ-बाप का एक मात्र बेटा है किन्तु भाग्यवश सेठ रामबहादुर हरीशचन्द्र मेहता के द्वारा दत्तक पुत्र बना लिया जाता है । फिर भी नीलकान्त मेहता की

आदतों और विचारधाराओं मे परिवर्तन नहीं आता है । वह भी अपने पिता की तरह ही पलायनवादी और अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर अन्यों को दुख दे कर सुख की प्राप्ति करने में विश्वास करता था । और बिना अधिक मेहनत किये ही सुख-सुविधा के मिल जाने के कारण ही उसमें अहंकार भी था । परिस्थितियों के कारण नीलकान्त मेहता को कुण्ठित देखा जा सकता है । सब कुछ होते हुए भी उसे अकेलेपन से पीडित देखा जा सकता है । इसका प्रमुख कारण यह है कि उसकी इच्छा की पूर्ति न होना । नीलकान्त मेहता शुभ्रा नामक स्त्री से विवाह करना चाहता था किन्तु स्वार्थ के कारण रामबहादुर मेहता जबरदस्ती अपनी बेटी से विवाह करा देते हैं । इसी तरह नीलकान्त मेहता भी अपने स्वार्थ की पूर्ति को ध्यान में रखकर अपनी बेटी की इच्छा पूरा नहीं करते है । इसकी वजह से ही आखरी दम तक अपने द्वारा किये की गयी गलती से पश्चाताप करते पाये जाते हैं ।

सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था के बन्धन में बंध कर इस उपन्यास के पात्रों को कई प्रकार के मानसिक कष्टो को झेलना पड़ता है । उनको लगातार समस्याओं से बचने की कोशिश करते तो देखा जाता है किन्तु असफल ही रहते है । नीलकान्त मेहता पर उनकी माँ का बचपन में ही मृत्यु हो जाना और पिता की आदतो का गहरा प्रभाव था । उसका व्यवहार और सोचने का ढंग सामान्य नहीं रहता और स्पष्ट मानसिक रूप से रोगी दिखाई देता है । उसके इस तरह बनने के पीछे घर का वातावरण जिम्मेदार है ।

" दूसरा सूत्र " :-

आनन्द मोहन का नारी के प्रति कमजोरी अन्य समस्या लगता है। पहले पुरूष अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद पुन: विवाह किया करता था और आज भी। आनन्द मोहन की दो पत्नीयों की मृत्यु जब एक के बाद एक हो जाती है तो वह पुन: अकेलेपन से तड़पता है। और अपने बेटे बटु के साथ रहना उसे अच्छा नही लगता तभी वह फिर से नौकरी के चक्कर मे निकलता है वहीं प्रतिभा की ओर आकर्षित भी होता हैं किन्तु इस बार विवाह से घबराता है क्योंकि समाज और अपने बच्चों से डरता है। आनन्द मोहन की आदतो को देखकर उसके बच्चे उससे कट जाते है क्योंकि वे अपने पिता के हर कार्य में गलती ही देखते है।

तभी कहा जा सकता है कि युवा पीढी खुद गलती करने पर बड़ो से माफी चाहती है पर वहीं बड़े कुछ करें तो माफ नही कर पाती है। अगर इस दिशा में विचार किया जाय तो कहा जा सकता है कि आयु भले छोटी या बड़ी हो पर जैविक आवश्यकता लगभग समान ही रहती हैं जिसकी पूर्ति करने का मार्ग हर मनुष्य ढूंढ निकालता है। किन्तु छोटे समझते है कि आयु के अनुसार मूल्यों में भी परिवर्तन आना चाहिये और जब नहीं आता तो दोनो के बीच संघर्ष होता है। पश्चिमी रहन-सहन युवा पीढ़ी अपना सकती है पर वही अपने बुजुर्ग लोगों को अपनाने नही देती है। इस विषय को लेकर भी दोनो के बीच तनाव पैदा होता है।

इस तरह कई आधुनिक युग में सोचने-विचारने में अन्तर होने के कारण युवा पीढी और बुजुर्गों को अनेक प्रकार के मानसिक कष्टो को निरन्तर सहना पड़ता है। इस उपन्यास का आनन्द मोहन और उसका

पुत्र ऐसे ही लोग है । उनमे कही भी कोई समान्नता नही मिलती है । दोनो मात्र एक-दूसरो से अलग रहना पसंद करते है क्योकि न तो पिता और न ही बेटा एक-दूसरे को समझने की कोशिश करते है । दोनो अपने मूल्यों को महत्वपूर्ण समझते है फलत: दोनो भटके हुए लगते है । समीप के रिश्तों में भी स्वार्थ भावना के आ जाने के कारण धीरे-धीरे आत्मीयता समाप्त होती दिखाई देती है । इस तरह शिथिल हो रहे मां बाप का अपने बच्चो के प्रति संबंन्धो का समाप्त होने का मुख्य कारण माता-पिता का बच्चों की जरूरतों को नही समझना और अपनी जरूरतों और इच्छाओं की पूर्ति करते रहना है । फलत: बच्चो में भी अपने माता-पिता के प्रति धारणा बदल जाती है । यही इस उपन्यास के केन्द्र में है ।

बुजुर्गो की शारीरिक, मानसिक सामाजिक और दर्शनिक रूप से आत्म निर्भर होना चाहिए न कि दूसरो पर बोझ बनना चाहिए । परिस्थिति और समयानुसार अपने से छोटो के साथ व्यवहार करना चाहिए । तभी परिवार मे शान्ति बनी रह सकती है और मानसिक तनावों से भी बचा जा सकता है ।

" किसनुली " :-

जैविक आवश्यकताओं को व्यक्ति चाह कर भी दबा नही सकता है । अगर कोई इसे दबा कर रखना चाहता भी हो तो दबा नही सकता है क्योकि किसी-न-किसी रूप मे बाहर निकल ही जाता है ।

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र काका विद्वान थे और समाज मे सभी उन्हें बहुत मानते थे। ऐसे व्यक्ति को अवसर मिलने पर किशनुली, जो पागलों की तरह व्यवहार करती थी पर देखने में बहुत सुन्दर थी, के साथ सम्बन्ध जोड लेते है। यह तो नीति संगत नहीं है और समाज के नियमों के विरोध मे ठहरता है। परिणामत: किशनुली पुत्र को जन्म देती है तो वह समाज मे प्राप्त प्रतिष्ठा को खोने के डर से और बदनामी से बचने के लिए घर छोडकर ही भाग निकलता है और काशी जाकर अपने पापों का प्रयश्चित करना है। किन्तु मानसिक रूप से वह बहुत तड़पता है उसे हमेशा अन्तर्द्वन्द्वों से जूझते देखा जा सकता है क्योंकि वह देवी समान पत्नी को अपने कर्मो के बारे मे सब कुछ बता कर माफी माँगना चाहता था किन्तु माँग नहीं पाता है। इसी दुख को लिये वह मर भी जाता है।

काका के गलत कदम उठाने के पीछे सामाजिक दबाव मुख्य रूप से है। समाज के द्वारा बनाये गये नियमों और मूल्यों के आधार पर काका को जबरदस्ती चलना पड़ता था। जब उनसे और अधिक अपनी जैविक आवश्यकता को दबाकर रखा नही गया तभी उसने समाज के नियमों के विरूद्ध कदम उठाते है। लेकिन बाद में कुण्ठा, अपराध की भावना, उदात्तीकरण आदि को उसके व्यक्तित्व मे देखा जा सकता हैं। लगभग सभी पात्र किसी-न-किसी मनोविकार से पीडित स्पष्ट दिखाई देते है। सामाजिक वातावरण और नियमों का गहरा प्रभाव पात्रों पर दिखाई देता है। इतना ही नही भले मनुष्य अपनी मेहनत और इच्छा से किसी भी क्षेत्र में विद्वान बन जाय पर वह अपनी मूल जरूरतों को समाप्त नहीं कर सकता है। वह निश्चित ही उनकी पूर्ति के मार्ग ढूंढ निकालेगा ही।

" परछाइयों के पीछे :-

आधुनिक युग में भारतीय परंपरा अनुसार चलने वाली पढ़ी-लिखी औरत की एक कहानी इस उपन्यास मे है । इस की नायिका पढ़ी-लिखी होने के साथ-साथ सरकारी नौकरी भी करती है । उसका पति उसे दुख के सिवा और कुछ नही देता किन्तु वह समाज और परिवार की चिन्ता कर कभी भी उसे त्यागने को सोचती नही है । इस पात्र को तरह-तरह की यातनाओं को सहते देखकर लगता है कि नारी नाम मात्र के लिए स्वतंत्र है किन्तु सत्य तो यह है कि वह अभी भी पुरूष के हाथो मे कठपुतली ही बन कर रह रही है । यह निर्भर करता है जिस वातावरण में नारी पल कर बड़ी हुई है उसपर क्योंकि परिवार में मां-बाप अपनी बेटी को हमेशा अपने काबू में रखते और उसे स्वतन्त्र विचार करने का मौका नहीं देते हो तो अक्सर आगे के जीवन में भी अपनी इच्छा-नुसार जी नहीं पाती है और जीवन के प्रति ठोस निर्णय नहीं ले पाती है । जिस प्रकार इस उपन्यास की नायिका के घर का वातावरण अनुकूल न होने के कारण ही उसका सीधा प्रभाव देखा जा सकता है ।

इन सबके अलावा एक और बात है जिसके कारण नायिका अपने आप को मुक्त कर नही पा रही है । वह है अपनी सन्तान के प्रति मोह जिनसे वह छुटकारा पाना नहीं चाहती है । आधुनिक युग की एक और सबसे बड़ी कमी यह है कि व्यक्ति के पास दूसरो को देने के लिए समय नहीं होता है हर व्यक्ति हमेशा अपने स्वार्थ को पूरा करता दिखाई देता वह भला रिश्तें में कुछ भी लगता हो । जिसके के कारण आदमी एक दूसरे से कटते नजर आता है । यही इस उपन्यास मे स्पष्ट दिखाई देता है ।

सामाजिक और पारिवारिक दबावों के कारण नारी इस उपन्यास मे सिरफ सांस लेती देखी जा सकती है । वह जीती दिखाई देती है क्योंकि उसे जीना है उसके जीवन मे थोडी सी भी खुशी नहीं है और जब खुशी के क्षण आते भी है तो वह खुश नहीं हो सकती है ।

"कोई तो" :-

समाज में कोई भी परिवर्तन आता है तो उसका सीधा प्रभाव मध्यवर्ग पर पड़ता है । इसका प्रमुख कारण यह है कि मध्यवर्गीय लोग निरन्तर विसंगत भावनाओं और नैतिक मूल्यों के बीच संघर्ष करते रहते है । " कोई तो " उपन्यास भी इसी मध्यवर्गीयता को मानसिकता से जुडा हुआ है ।

लेखक ने वर्तीक, तुषार, हरिराम, चन्दा आदि के माध्यम से यह स्पष्ट बताया है कि प्राचीन जड़-संस्कारों और परम्परागत नैतिक मूल्यों से चिपके रहने के कारण किस प्रकार समाज में प्रगति हो नही पा रही है । उपन्यास का केन्द्र बिन्दु है वर्तिका जिस पर झूठे आरोप लगाने के कारण वह समाज से डरते-डरते जीती है और आजीवन उसे सही ढंग से समझने वाले जीवन-साथी को खोज में लगी रहती है । परन्तु कोई उसके इच्छानुसार मिलता नहीं है । वर्तिका के लाख कोशिश करने पर भी उस पर लगे कलंक को मिटा नहीं पाती है क्योंकि समाज उसे कलंकित के रूप में स्वीकार कर चुकी थी और अपनी धारणा बदल नहीं पा रहा है ।

समाज के सड़ें गले नैतिक मूल्यों के कारण ही जातिवाद और आभिजात्य के संरक्षकों के कारण ही हरिराम और चन्दा का विवाह नही हो पाता है। इस तरह के रुढ़िवाद अभी तक समाज मे रहने के कारण- ही आधुनिकता का समाज मे प्रभाव होते हुए भी परिवर्तन सही दिशा में दिखाई नहीं दे रहे है। इतना ही नही इस उपन्यास में मध्यवर्गीय नैतिक मूल्यों से चिपके रहने के दुष्परिणामों के अतिरिक्त लेखक ने वर्तमान राजनीति मे फैले भ्रष्टाचार, नेताओं की स्वार्थपरता न्यायालयों में कानून के नाम पर होनेवाली न्याय की हत्या जातिवाद, पुलिस के हथकंडो, शासनवर्ग और पुलिस की मिली दुष्ट चाल, कानून एवं व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति और शासन-व्यवस्था से सम्बद्ध अनेक प्रश्नों को देखने को मिलता है।

विश्वविद्यालयों में व्याप्त असन्तोष छात्र और इस असन्तोष से लाभ उठाने वाले राजनीतिक दलो और छात्रों की बेबुनियाद मांगों और उनके मर्यादाहीन आचरण पर भी लेखक ने कहीं व्यंग्यपूर्ण और कहीं लेखनी से प्रदान किया है। समाज के कई कुरीतियों पर लेखक व्यंग्य करते है साथ ही उनके द्वारा पहुँचे रहे प्रभाव पर भी ध्यान देते है। इस उपन्यास के अनेक दृश्य सत्य लगते है क्योंकि आधुनिक मनुष्य में स्वार्थ के अधिक होने के कारण वह किसी को सुख-शान्ति से जीने नहीं देता है। इस कारण कई लाचार लोग समाज की कुरीतियों के सामने बलि होते देखे जा सकते हैं। फलत: समाज में अशान्ति बढ़ती जा रही है लोगों के मन में डर बैठा है। अच्छे लोग भी अपने मूल्यों, नीतियों में परिवर्तन ला रहें है। जो स्पष्ट रूप से उनके व्यवहार से दिखाई देता है।

अतः कहा जा सकता है कि बदलते सामाजिक परिवेश के कारण व्यक्ति के मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव है। तभी लोगों में अन्तर्द्वन्द्व से लगातार संघर्ष करते हुए देखा जा सकता है। इस उपन्यास के पात्रों को भी कुण्ठित, अकेलेपन की भावना से जूझते हुए अपना अस्तित्व बनाने के पीछे, स्वार्थ भाव से पूर्ण आदि मनोविकारों से पीड़ित देखा जा सकता है। पात्रों के पास सभी तरह की सुविधायें होती हुई भी दुखित और भटके हुए लगते है।

"सुबह के इंतजार तक" :-

इस उपन्यास मे लेखिका ने समाज में नारी के साथ हो रहें अत्याचार और उनके द्वारा किये गये संघर्ष का वर्णन किया है। इस उपन्यास में प्रमुख रूप से सामाजिक और आर्थिक समास्थाओं के कारण ही पात्रों को निरन्तर दुखित, पीड़ित और इतना ही नही तरह-तरह के मानसिक कष्टों को झेलते हुए पाया जाता है। फलतः वे सब मानसिक रोगी हो गये लगते है। झूठी शान के कारण छोटी-मोटी नौकरी कर अपने जीने के तरीके में परिवर्तन लाना नहीं चाहते है। जिसके कारण मानसिक और शारीरिक रूप से दिन-प्रतिदिन कमजोर होते जाते है। इसी कारण परिवार के सदस्यों की मृत्यु भी हो जाता है। जीवन में घटी दुख भरी घटनाओं से भी व्यक्ति बहुत कुछ सीखता है जैसे कि इस उपन्यास के पात्र जो अपने दुखमयी जीवन को बदल देने का निर्णय कर लेते है। और अपने लक्ष्य की पूर्ति करते है। समाज में कुरीतियों की मात्र बढ़ जाने के कारण ही गरीब और लाचार लोगों को पीड़ित देखा जा रहा है। लोगों में अभी तक इतना साहस नही है कि समाज में हो रहे अन्याय के विरूद्ध

आवाज उठाये और उनको अंत करने के तारिखे निकाले । इस तरह प्रयास नही होने के कारण ही लोगों के मूल्यों में परिवर्तन और गलत दिशा में भटकते लोगों को देखा जा सकता है ।

5.2 निष्कर्ष :-

आठवें दशक के उपन्यासों के अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक उपन्यास मे कोई-न-कोई बाहर से उभरा संघर्ष है जिससे जूझते पात्र पाये जाते है । ऊपर से देखने पर यह स्पष्ट नही होता है किन्तु थोडी गहराई में बैठने पर बाहरी तत्वों के प्रभाव को स्पष्ट देखा जा सकता है ।

लगभग सभी उपन्यासों मे दूसरे देशों की विचारधारा या रहन-सहन का प्रभाव दिखाई देता है । पुराने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को तोडने का प्रयास दिखाई देता है और आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट समाज पर दिखाई देता है । व्यक्ति यथार्थ को भूलकर कल्पना में रहने की कोशिश करते देखा जा सकता है । सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से हमेशा की तरह वह पीडित है । राजनीतिक दलों के द्वारा जबरदस्ती खडी की गयी समस्याओं का प्रभाव भी देखा जा सकता है ।

कई दिशाओं से खडी की गयी समस्याओं के कारण लोगों के व्यवहार के साथ उनके सोचने-विचारने के तारिखों में परिवर्तन आ गया है । तभी आजकल व्यक्ति अधिक मानसिक रोगी और कम शारीरिक रोगी पाया जाता है । आज का मनुष्य पद प्रतिष्ठा के पीछे भागता हुआ झूठी शान में जीने वाला भौतिकवादी, स्वार्थ प्रधान हो गया है ।

आधुनिकता के आ जाने पर व्यक्ति कुछ हद तक तो स्वतन्त्र तो हुआ किन्तु अकेलेपन की भावना, हर क्षण अन्तर्द्वन्द्वों से जूझता हुआ, कुण्ठित, पहचान और अस्तित्व की खोज करता हुआ हीन उच्च और अन्य प्रकार की ग्रन्थियों से जूझता हुआ मनुष्य अहंकार के कारण गलत कदम उठाता व्यक्ति स्पष्ट उभर कर आ रहा है ।

अंत में कहा जा सकता है कि आधुनिक और प्राचीन मानव में बहुत अन्तर है । आज का व्यक्ति जितना अपने-आप को स्वतन्त्र मानता है उतना ही वह तरह-तरह के मनोविकारों से बन्ध गया है । अपने-आप को एक के बाद एक से उलझते ही जा रहा है और मनःशान्ति खोकर लक्ष्यहीन दिशाहीन मार्ग में भटकता नजर आता है ।

छठवां अध्याय

उ प सं हा र

उपसंहार

मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी है । इसलिए वह संसार के सभी जीव जन्तुओं से उत्तम माना जाता है । वह मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ कला, साहित्य, विज्ञान आदि क्षेत्रों में उन्नति करता जा रहा है । आदिकाल से आधुनिक युग तक समाज की दो मुख्य समस्याएँ पाई जा सकती है - आर्थिक और मानसिक । कई विद्वानों ने इन समस्याओं का समाधान खोजने के प्रयास भी किये है । इन प्रयासों में कार्ल मार्क्स के सामाजिक और सिगमण्ड फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से संबन्धित सिद्धान्तों ने बहुत हद तक समाज की दोनो समस्याओं के समाधान ढूँढे । इसी कारण उनकी विचार धाराओं ने समाज के हर एक क्षेत्र को बहुत प्रभावित किया है ।

साहित्य मनुष्य की सृजनात्मक क्रियाओं में एक है और महत्वपूर्ण भी । साहित्य की हर विधा पर इन विचारधाराओं का प्रभाव पड़ा ।

उत्तर उन्नीसवी सदी में मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव पश्चिम के साहित्य तक ही न रह कर दूसरे देशों के साहित्य को भी प्रभावित किया । हिन्दी उपन्यास, कहानी, नाटक, काव्य आदि भी इसके अपवाद नहीं रहे । उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र, अज्ञेय जैसे लेखकों के उपन्यास मनोविश्लेषण सिद्धान्तों पर अधिक आधारित रहे है । इनके अलावा भी कई प्रमुख उपन्यास है जो किसी दूसरी विचारधारा या

दृष्टिकोण को ध्यान में रख कर रचे गये है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि इन उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक या मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन नहीं किया जा सकता है। मनोविश्लेषण शास्त्र मानव मन से सम्बन्धित होता है।

आठवें दशक के उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करने के पश्चात कहा जा सकता है कि इन में चित्रित आधुनिक मानव भौतिकवादी होने के कारण सुख-सुविधा जुटाने के लिए धन प्राप्ति के पीछे भाग रहा है। इसीलिए आज के मनुष्य के पास समय का अभाव देखा जा सकता है। वह चाह कर भी किसी के साथ बैठकर सुख चैन से समय व्यतित नही कर पाता है। फलत: वह हमेशा परेशान, बेचैन और व्यस्त रहने लगा है। वह चीजों को जुटा कर अपने-आप को सुखी समझने लगा है। पर इससे प्राप्त होने वाले सुख से वह खुद कुछ समय बाद " बोर " महसूस करने लगता है। आज का व्यक्ति बाहर से भले समृद्ध लगता हो पर मानसिक रूप से असन्तुष्ट ही रहता है। जिसे वह भला व्यक्त न करें। व्यक्ति आधुनिक समाज में अपने-आप से और अपनी जरूरतों से भी अस्पष्ट है। उसे देखकर ऐसा लगता है लक्ष्यहीन और दिशाहीन मार्ग पर चलते-चलते भटक गया है। तभी शारीरिक से अधिक मानसिक रोगी हो गया है। किन्तु इस बात से पूर्ण रूप से वह परिचित नहीं है।

आधुनिकता का प्रभाव हमारे देश पर पड़ने के कारण अब व्यक्ति पुराने विचारों को लगभग तोड़ने में लगा हुआ है पर यह आसान काम नहीं है क्योंकि अभी भी पुरानी धारणाओं पर विश्वास करने वाले लोग है। इसकी समाप्ति देख नहीं सकते है। इस सबके आलावा सामाजिक और

आर्थिक समस्याओं के कारण भी कई प्रकार के मनोविकारों से मनुष्य पीड़ित मिलता है। आज की अहम समस्या यह है कि व्यक्ति के अहं का विस्तार। व्यक्तिवादी-भौतिकवादी चिन्तन ने स्त्री-पुरुष दोनों के अहं को इतना उग्र व प्रखर बना दिया है कि व्यक्ति धीरे-धीरे अमा - नवीय होता जा रहा है।

आज के मनुष्य के मूल्यों में परिवर्तन आ जाने के कारण ही बने हुए और बनते हुए रिश्तों को टूटते देखा जा सकता है। व्यक्ति के व्यवहार, सोचने और देखने में भी अन्तर आ गया है। अतः व्यक्ति के हर प्रकार के व्यवहार में कृत्रिमता भरी हुई है। आज सभी तरह की सुविधाएँ होने पर भी व्यक्ति को अकेलेपन ने कुण्ठित, कई प्रकार की ग्रन्थियों से पीड़ित (उच्चता-हीनता आदि) अन्तर्द्वन्द्वों से जूझता हुआ, अपनी पहचान और अस्तित्व की खोज में निरन्तर संघर्ष करता हुआ, अपनी गलतियों को छिपाने के लिए रक्षा युक्तियों का प्रयोग करता हुआ पुतला बना दिया है। वह स्वार्थी अधिक और परोपकारी कम हो गया है। विज्ञान की देन से दुनियाँ में दूरियाँ तो समाप्त हो गयी हैं। व्यक्ति चाहें तो कहीं भी किसी भी क्षण पहुँच सकता है। पर जितनी सुविधाएँ बढ़ गयी हैं उतना ही व्यक्ति अन्य लोगों से कटता जा रहा है। मानव के सोचने के ढंग में, दिशा में परिवर्तन आ गये हैं।

आठवें दशक के उपन्यासों के अध्ययन से ये स्पष्ट ज्ञात होता है कि नारी के चिन्तन और व्यवहार में भी परिवर्तन देखा जा सकता है। वह पहले की तरह पुरुष के इशारों पर नाचना पसंद नहीं कर रही है। तभी " आपका बंटी " में शकुन, " सुबह के इंतजार तक " में " भानू ", " कोई तो " में वर्तिका आदि नारी पात्रों को स्वतन्त्र

हो कर जीने के मार्ग ढूँढ निकालते दिखाया गया है। तलाक और पुनर्विवाह जो पहले देखने को कम मिलता था आज सामान्य रूप से अधिक हो गया है। अधिकांश नारी अब अपने मूल्यों को पहचानने लगी है। हर क्षेत्र में समान अधिकार की माँग करने लगी है, जिसे पुरुष स्वीकार न करने के कारण ही दोनों अनेक प्रकार के मनोविकारों से पीड़ित हैं। फलस्वरूप दुखित:, उदास और अपने-आप में अस्पष्ट दिखाई देते है।

पुराने संस्कारों और रीति-रिवाजों से जुड़ी हुयी नारी भी मिल जाती है। वह पति के द्वारा दिये कष्टों को चुपचाप सहती जाती है पर विरोध में आवाज नहीं उठाती है। वह भी स्वतन्त्र होना चाहती है किन्तु घर के संस्कार और स्थिति उन्हें अपनी इच्छा से जीने नहीं देती हैं। जीने के नाम पर इस तरह के लोग जिन्दगी को घसीटते है।

मनुष्य के जीवन में इतना परिवर्तन आने के पीछे कई कारण है वे आन्तरिक से अधिक बाहरी परिवेश का प्रभाव है। विशेषकर दूसरे देशों की विचारधारायें, रहन-सहन आदि का सीधा प्रभाव देखा जा सकता है जिसको अपनाकर व्यक्ति समझता है कि महान प्रगति कर रहा है। किन्तु उसके व्यक्तित्व को यही खोखला बना रही है। और अपनत्व की भावना, अपनी सच्ची पहचान धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं।

अत: कहा जा सकता है कि आठवें दशक में उपन्यास आधुनिक समाज का सजीव चित्रण से युक्त है। पात्रों को मनोविकारों से पीड़ित पाया जाता है। झूठी सुख-शान्ति के बीच भटकता मनुष्य अपने नैतिक मूल्यों को खोता दिखाई देता है।

सहायक ग्रन्थ सूची

सहायक ग्रंथ सूची

(क) आधार ग्रन्थ :

1· आपका का बंटी : मन्नू भण्डारी, अक्षर प्रकाशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली – प्र·सं· 1971

2· परत-दर-परत : अन्नपूर्णा, अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, प्र·सं· 1971

3· अन्तराल : मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्र·सं· 1972

4· उस पार का अंधेरा : सुदर्शन नारंग – राधाकृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली – 6, प्र·सं·1973

5· काली आंधी : कमलेश्वर – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र·सं· 1974

6· रिश्ते : सुदर्शन चोपड़ा – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली , प्र·सं· 1974

7· नावें : शशिप्रभा शास्त्री, राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली – प्र·सं· 1974

8· रेत की मछली : कान्ता भारती – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र·सं· 1975

9· उसके हिस्से की धूप : मृदुला गर्ग – अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, प्र·सं· 1975·

10. अनामदास का पोथा : हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली भाग-2, राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली - 1976

11. तीसरा आदमी : कमलेश्वर - राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली प्र.सं. 1976

12. अकेली आवाज : राजेन्द्र अवस्थी - राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली - प्र.सं. 1976

13. उखड़े कदम : विपिन चतुर्वेदी - राजपाल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली - प्र.सं. 1977

14. टुण्डा लाट : जगदीश चन्द्र - राधाकृष्ण, प्रकाशन, नई दिल्ली - प्र.सं. 1978

15. प्रतिध्वनियाँ : दीप्ति खण्डेलवाल - राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, प्र.सं. 1978

16. दूसरा सूत्र : डॉ.देवराज, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली प्र.सं. 1978

17. किशनुली : शिवानी - सरस्वती विहार, दिल्ली प्र.सं. 1979

18. परछाइयों के पीछे : शशिप्रभा शास्त्री, नेशनल पब्लिशिंग, नयी दिल्ली, प्र.सं. 1979

19. कोई तो : विष्णु प्रभाकर, शब्दाकार प्रकाशक, प्र.सं. 1980

20. सुबह के इंतजार तक : सूर्यबाला, पराग,प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1980

(ख) सन्दर्भ ग्रंथ (हिन्दी) :

1. हिन्दी उपन्यास : अन्तरंग पहचान - डॉ.प्रेमकुमार गिरनार प्रकाशन - 1982
2. हिन्दी उपन्यास : आधुनिक विचार धाराएँ - सुमित्रा त्यागी, साहित्य प्रकाशन
3. हिन्दी उपन्यास उत्तरशती उपलब्धियाँ - विवेकी राय, इलाहाबाद, राजीव प्रकाशन 1983
4. हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा-रामदरश मिश्र राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1968
5. हिन्दी उपन्यास : एक नयी दृष्टि - इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली -
6. हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास - प्रतापनारायण टंडन कल्पकार प्रकाशन लखनऊ - 1977
7. हिन्दी उपन्यास कोश - गोपाल राय, ग्रन्थ निकेतन, पटना
8. हिन्दी उपन्यास : सामाजिक संदर्भ - बालकृष्ण गुप्त, कानपुर अभिलाषा प्रकाशन
9. हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन गिरिधर प्रसाद शर्मा, दिल्ली इन्द्रनाथ प्रकाशन
10. हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण विमल सहस्त्र बुद्धे कानपुर, पुस्तक संस्थान 1974
11. समकालीन हिन्दी कथा - साहित्य - डॉ.प्रेमकुमार भोपाल, राज्य श्री बुक सेण्टर 1984

12• भाषा साहित्य और मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति – देवराज उपाध्याय वासुदेव प्रकाशन, बिहार – 1977

13• देवराज उपाध्याय ग्रन्थावली – भाग-2, किसलाय प्रकाशन, इलाहाबाद 1978

14• उपन्यास कला एक विवेचन – डॉ•विश्वमित्र सरस्वती मन्दिर वाराणसी 1962

15• आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य विभू प्रकाशन साहिबाबाद – 201 005

16• चिन्तामणी भाग-2, काव्य में अभिव्यंजनवाद नागरीप्रचारिणी सभा, वारणासी

17• असमान्य मनोविज्ञान के मूल आधार डॉ•लाभ सिंह एंव डा•गोविन्द तिवारी विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

18• आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान डा• प्रीती वर्मा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

(ग) कोश :

1• मानविकी पारिभाषिक शब्दकोश – मनोविज्ञान खण्ड, पदमा अग्रवाल राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

2• मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्दकोश निर्मला शेरजंग, एस चन्द्र एण्ड कम्पनी दिल्ली

3• हिन्दी साहित्य कोश – ज्ञानमंडली लिमिटेड, वारणासी